विदेह | आलोचना-संस्करण

गजेन्द्र ठाकुर
समग्रक सम्पादकीय

खण्ड-१

समग्र कृतित्व, आलोचना-पद्धति,
पद्य आ उपन्यास



आशीष अनचिन्हार

गजेन्द्र ठाकुर समग्रक सम्पादकीय

गजेन्द्र ठाकुर समग्रक सम्पादकीय

खण्ड-१

समग्र कृतित्व, आलोचना-पद्धति, पद्य आ उपन्यास

आशीष अनचिन्हार

विदेह · २०२६

गजेन्द्र ठाकुर समग्रक सम्पादकीय — खण्ड-१

सम्पादक: आशीष अनचिन्हार

© 2026 Gajendra Thakur / Preeti Thakur

सर्वाधिकार सुरक्षित।

प्रथम प्रकाशन: २०२६

मुद्रित आकार: ६ × ९ इञ्च

भाषा: मैथिली

अनुक्रम

एहि पुस्तकक विस्तृत अनुक्रमणिका

पृष्ठ = एहि PDF पुस्तकक वास्तविक पृष्ठ। खण्ड २–५४क संदर्भ एहि पुस्तकक परिशिष्टक पृष्ठक अछि, अलग-अलग खण्डक नहि।

प्रथम भाग : एहि पुस्तकमे उपस्थित मूल अध्याय

भूमिका १८

उपन्यास १९

- सहस्रबाढ़नि १९
- सहस्रशीर्षा २०
- नव्य न्याय आ अपतटीय जुआ-जाल २१
- अनुवादक २१
- जल-पाँजि २२
- बिज्जी: गोहि सभक बीच २३
- ३७ टा मैथिली बाल उपन्यास २३
- कूट शब्द तरहड़िमे गोहि २४
- पातक भीतर लिखल नाँव २५
- सातम साक्षी २५
- गोहि सभक बीच जलसमाधि २६
- गोहि सभक बीच जलसमाधि किशोर संस्करण २६
- गोहि सभक बीच जलसमाधि बाल संस्करण २७

कथा-संग्रह २८

- पर्वत ऊपर भमरा जे सूतल २८
- स्मृतिक दोसर दिस २९
- इजोत जनम-जनमक कथा २९
- कथा-शतत्रयी ३०
- कथा-त्रिधारा ३१
- नव पाँखि ३१

नाटक ३३

- रंग-संगम ३३

पद्य ३५

- अकुलाइत सुर ३५
- दीवान-ए-विदेह ३६
- स्वप्नमे मिज्झर होइत ३६

समालोचना आ समालोचनाशास्त्र ३८

- प्रबन्ध निबन्ध समालोचना सिद्धान्त आ अनुप्रयुक्त अध्ययन ३८

नित नवल सुभाष चन्द्र यादव ३९
नित नवल सुशील ४०
नित नवल दिनेश कुमार मिश्र ४०
नित नवल वृषेश चन्द्र लाल ४१
विदेह शोध-लेख ४२
विदेह सदेह १-३७ एक समालोचनात्मक आस्वादन ४३
विदेह १-४४० विस्तृत अध्ययन ४३
विदेह सदेह १-३७ विस्तृत अध्ययन ४४
विदेह क्विज मास्टर ४५
दर्शनशास्त्र ४६
गजेन्द्र ठाकुरक समानान्तर दर्शन ४६
इतिहास ४८
ए पैरेलल हिस्ट्री ऑफ मिथिला एण्ड मैथिली लिटरेचर ४८
हिस्ट्री ऑफ मिथिला वज्जि एण्ड अंग इन इंडिया एण्ड नेपाल ४९
पञ्जी प्रबन्ध ५०
डिकोडिंग द पाँजि ऑफ मिथिला ५०
व्याकरण रचना आ भाषा विज्ञान ५२
मैथिलीक एकटा समानान्तर व्याकरण रचना आ भाषा विज्ञान ५२
थिसॉरस ५३
अंग्रेजी-मैथिली थिसॉरस ५३
मैथिली-अंग्रेजी थिसॉरस ५४
स्वयं सीखू मार्गदर्शिका ५५
कृत्रिम बुद्धि सँ वीडियो बनाउ ५५
मैथिली रेडियो नाटक स्वयं सीखू मार्गदर्शिका ५६
अनुवाद आन भाषासँ मैथिली ५७
मूल संस्कृत सँ मैथिली आ अंग्रेजी ५८
भामती ५८
आत्मतत्त्वविवेक ५९
न्यायकुसुमाञ्जलि ५९
तत्त्वचिन्तामणि ६०
अभिज्ञानशाकुन्तलम् ६१
आगमडम्बरम् ६१
भगवदज्जुकम् ६२
भल्लट-शतक ६३
कलाविलास ६३
कलियुग-विडम्बना ६४
चतुर्भाण ६५
दामक प्रहसनम् ६५

हास्यार्णवप्रहसनम्.....६६
कादम्बरी.....६७
माटिक खेलौना-गाड़ी.....६८
मत्तविलास प्रहसनम्.....६८
मंत्री राक्षसक राजसी मोहर.....६९
पालाण्डुमण्डन प्रहसनम्.....७०
उत्तररामचरितम्.....७०
अनुवाद मैथिलीसँ अंग्रेजी.....७२
वाटर-बेरियल अमंग द क्रोकोडाइल्स.....७२
३७ मैथिली बाल उपन्यासक अंग्रेजी अनुवाद.....७३
द ट्रान्सलेटर.....७३
नव्य न्याय एण्ड द ऑफशोर ग्याम्बलिंग वेब.....७४
मंगूस अमंग द मॉनिटर लिजाड्र्स.....७५
द सैवन्थ विटनेस.....७५
द नेम रिटन विदिन द लीफ.....७६
जल-पाँजि वाटर रजिस्टर.....७७
लाइट स्टोरीज अक्रॉस लाइफटाइम्स.....७७
द अदर साइड ऑफ मेमरी.....७८
द हन्ड्रेड-स्टोरी ट्रिलजी.....७९
थ्री स्ट्रीम्स ऑफ स्टोरीज.....७९
व्हेन ड्रीम्स मर्ज.....८०
द ब्लैक बी इज स्लीपिंग अटॉप द माउन्टेन.....८१
द कोकोनट फोर्ट्रेस.....८१
द कोमेट्स कोमा.....८२
समापन.....८४
संदर्भ सूची.....८५
विस्तारित आलोचनात्मक विवेचन.....८९
कथाशास्त्र : कथित समय, कथनक समय आ दृष्टिबिन्दु.....८९
कथात्मक नैतिकता आ कथाकारक अलिखित संकेत.....८९
पाठक-ग्रहण आ साहित्यक परिवर्तित अर्थ.....९०
भारतीय काव्यशास्त्र : रस, ध्वनि, वक्रोक्ति आ औचित्य.....९०
इतिहासलेखन : स्रोत, मौन आ प्रतिवृत्तान्त.....९१
अभिलेख-अध्ययन : दस्तावेज, अनुपस्थिति आ सूचीकरण.....९१
विश्व-साहित्य आ भाषिक आवागमन.....९१
अनुवादशास्त्र : तुलनात्मक पाठ परीक्षण.....९२
बाल-साहित्य : बालकक दृष्टि आ निर्णयक अधिकार.....९२
गद्यक सामाजिक अलंकार : नदी, पाँजि, गोहि आ साक्ष्य.....९३
नाटक : मंचीय समय, संवाद आ अभिनय-सम्भावना.....९३

पद्य : छन्द, लय, बिम्ब आ आवाज ९३
समालोचना : निर्णय, असहमति आ पाठ-साक्ष्य ९४
दर्शन आ नव्य-न्याय : पदक शुद्धता आ तर्कक रचना ९४
भाषाविज्ञान आ कोश : उपयोगिता, प्रमाण आ वैविध्य ९४
इतिहास, पञ्जी आ सामाजिक स्मृति ९५
कृतिविशेष : विस्तृत पाठ-समीक्षाक आधार ९६
सहस्रबाढ़नि ९६
सहस्रशीर्षा ९६
नव्य न्याय आ अपतटीय जुआ-जाल ९६
अनुवादक ९७
जल-पाँजि ९७
बिज्जी: गोहि सभक बीच ९७
३७ टा मैथिली बाल उपन्यास ९७
कूट शब्द तरहड़िमे गोहि ९८
पातक भीतर लिखल नाँव ९८
सातम साक्षी ९८
गोहि सभक बीच जलसमाधि ९९
गोहि सभक बीच जलसमाधि : किशोर आ बाल संस्करण ९९
कथा-शतत्रयी आ कथा-त्रिधारा ९९
इजोत—जनम-जनमक कथा ९९
पर्वत ऊपर भमरा जे सूतल १००
स्मृतिक दोसर दिस १००
नव पाँखि १००
रंग-संगम १००
अकुलाइत सुर; दीवान-ए-विदेह; स्वप्नमे मिज्झर होइत १०१
सम्पादकीय चयनक प्रमाण-नीति १०२
पाठसाक्ष्य, तुलनात्मक मूल्याङ्कन आ सम्पादकीय चयन १०३
संग्रहक उत्कृष्ट रचना कोना चिन्हल जाए १०३
दस प्रतिशतक गणना आ चयनक मर्यादा १०३
कथा-पठन : कथावाचक आ समय १०४
कथाक अलङ्कार, ध्वनि आ नैतिक दूरी १०४
पद्य-पठन : ध्वनि, छन्द आ पाठकीय आयु १०५
अकुलाइत सुर : स्रोत-आधारित सम्पादकीय परीक्षण १०५
इजोत — जनम-जनमक कथा : संग्रहक समग्र बनाम स्वतंत्र कथा १०६
कथा-शतत्रयी आ कथा-त्रिधारा : व्यापक संकलनक समस्या १०६
स्मृतिक दोसर दिस आ पर्वत ऊपर भमरा जे सूतल १०७

नव पाँखि : किशोर-कथा आ स्वतंत्र पाठकीय सत्ता १०७
पाठगत साक्ष्य आ स्रोत-विवरण १०८
मूल पाठक तुलनात्मक पुनर्पाठ : प्रथम संचयी विस्तार १०९
अकुलाइत सुर : दूनू खण्डक पाठ-साक्ष्य १०९
सम्पादकीय श्रेष्ठ दश प्रतिशत : सत्ताइस चयनित रचना ११०
खण्ड १ : चौदह गजलक विस्तृत समीक्षा ११०
खण्ड २ : तेरह कविता-गीतक विस्तृत समीक्षा ११६
प्रसंगानुसार काव्य-तुलना १२२
सम्पूर्ण २६६ रचनाक परीक्षण-पञ्जी १२३
पहिल खण्ड — १३३ गजल १२३
दोसर खण्ड — १३३ कविता-गीत १३५
इजोत — जनम-जनमक कथा : ‘पाँजिक चोर’क पूर्ण पाठीय समीक्षा १४५
सहस्रबाढ़नि : घटनासाक्ष्य-आधारित विस्तृत उपन्यास-समीक्षा १४६
स्रोत-विवरण १४८
इजोत — जनम-जनमक कथा : मूल आख्यानक आलोचनात्मक पुनर्पाठ १५०
सहस्रशीर्षा : लोकसमाजक बहुस्वरीय आख्यान १५१
द्वितीय भाग : खण्ड २–५४क समेकित परिशिष्ट आ अध्याय-सूची
परिशिष्ट : खण्ड २–५४क समेकित अनुक्रम आ सूचकांक १५४
प्रथम पञ्जी : समस्त खण्डक विषय-सूची १५४
द्वितीय पञ्जी : खण्डवार विस्तृत रचना–अध्याय अनुक्रम १५७
खण्ड २ — इजोत, स्मृतिक दोसर दिस आ पर्वत ऊपर भमरा जे सूतल १५७
इजोत—जनम-जनमक कथा : कथा १–१२ ..... १५७
02. फेर सँ देखल घर : स्मृतिक दूरी आ मायक मौन १५७
खण्ड ३ — कथा-शतत्रयी — खण्ड १ : कथा १–१०० ..... १६६
कथा-शतत्रयी : खण्ड-१ — कथा १–२० ..... १६६
प्रथम समूह : कथा १–२० ..... १६६
खण्ड ४ — कथा-शतत्रयी — खण्ड २ : कथा १०१–२०० ..... १७१
कथा-शतत्रयी : खण्ड-२ — कथा १०१–१२० ..... १७१
कथा १०१–१२० : परम्पराक उपयोग, दैनिक हास्य आ सम्बन्धक प्रमाण १७१
खण्ड ५ — कथा-शतत्रयी — खण्ड ३ : कथा २०१–३०० ..... १७७
कथा-शतत्रयी : खण्ड-३ — कथा २०१–२२० ..... १७७
कथा २०१–२२० : घरेलू वस्तु, श्रम, पारिवारिक अधिकार आ नगरीय अनुभव १७७

खण्ड ६ — कथा-त्रिधारा — खण्ड १ : कथा १–१००.....१८४
कथा-त्रिधारा · खण्ड-१ : कथा १–५क मूल पाठाधारित आलोचनात्मक अध्ययन.....१८४
कथा १ — आवाज नहि देनिहार घंटी.....१८४
खण्ड ७ — कथा-त्रिधारा — खण्ड २ : कथा १०१–२००.....१९७
कथा-त्रिधारा खण्ड-२ : कथा १०१–१०४क स्वतंत्र साहित्यिक समीक्षा१९७
कथा १०१ — चारि मुट्ठी बीआ.....१९७
खण्ड ८ — कथा-त्रिधारा — खण्ड ३ : कथा २०१–३००.....२१०
कथा-त्रिधारा खण्ड-३ : कथा २०१–२०४क स्वतंत्र समीक्षा.....२१०
कथा २०१ — विद्यालयक जूता.....२१०
खण्ड ९ — नव पाँखि : बीस किशोर कथा आ श्रेष्ठ दू कथाक विस्तृत समीक्षा.....२२२
कथा १–२० : स्वतंत्र आलोचना आ अन्तरकथात्मक तुलना.....२२२
मूल पाण्डुलिपिसँ सूचीकृत कथा, तुलनात्मक अध्ययन आ श्रेष्ठ दू कथाक समीक्षा : 29.....२२२
खण्ड १० — सहस्रबाढ़नि : उपन्यास-समीक्षा.....२२३
पहिल अध्ययन : आरम्भिक पारिवारिक वृत्तान्त आ पाठ-पद्धति.....२२३
१. पहिल स्वर : बालककेँ बुझबाक पारिवारिक स्मृति.....२२३
खण्ड ११ — सहस्रशीर्षा : उपन्यास-समीक्षा.....२३३
सहस्रशीर्षा — पहिल कल्लोलक पहिल पल्लव : मूल पाठाधारित समीक्षा.....२३३
१. प्रस्तावित समाज-मानचित्र आ ‘कल्लोल’क रूप-विधान.....२३३
खण्ड १२ — नव्य न्याय आ अपतटीय जुआ-जाल.....२५३
अध्याय ००१ — गार्ह एन अरिकेलक प्रभात.....२५३
अध्याय ००१ — निर्णायक पाठ-साक्ष्य.....२५३
खण्ड १३ — गोहि सभक बीच जलसमाधि : त्रयी.....२५९
अध्याय –१०० — शंख आ रजत.....२५९
अध्याय –९९ — आत्मसिद्धि-वाद.....२५९
खण्ड १४ — अनुवादक.....२७१
१. अध्ययनक क्षेत्र, पाठ-परिधि आ पद्धति.....२७१
२. उपन्यासक केन्द्रीय प्रतिपाद्य: अनुवाद शब्दक नहि, उत्तरदायित्वक२७१
खण्ड १५ — जल-पाँजि.....२८२
भाग ३ · जल-पाँजिक प्रमाणित अध्याय-पञ्जी.....२८२
भाग ४ · जल-पाँजि : पहिल पाँच अध्यायक मूल पाठाधारित साहित्यिक समीक्षा.....२८२

खण्ड १६ — बिज्जी : गोहि सभक बीच २८५
१. पहराक प्राक्कथा सँ कागजक अदृश्य खर्चा धरि २८५
२. अनाम धमकी, मृत्यु आ पहिल प्रमाण-संघर्ष २८५
खण्ड १७ — पाँच प्रतिशत अन्हार २९०
भाग १ — पाँच सयक साम्राज्य २९०
१. पाँच सयक राति २९०
खण्ड १८ — पातक भीतर लिखल नाँव २९५
अध्याय १ — घर खोलबाक दिन २९५
अध्याय २ — दोसर लिखाइ २९५
खण्ड १९ — सातम साक्षी २९६
अध्याय १ — बरखाक चारि बजि सतरह मिनट २९६
अध्याय २ — सुपारीक डिबिया २९६
खण्ड २० — बाल आ किशोर उपन्यास — खण्ड १ ..... २९८
कृति १ : कूट नाम : तरहड़िमे गोहि २९८
अध्याय ० — तरहड़िमे गोहि २९८
खण्ड २१ — गोहि सभक बीच जलसमाधि : किशोर आ बाल संस्करण ३१५
अध्याय –१०० : शंख आ रजत ३१५
अध्याय –९९ : आत्मसिद्धि-वाद ३१५
खण्ड २२ — रंग-संगम : बारह मैथिली नाटक ३२७
०१. अपाला आत्रेयी ३२७
०२. भऽ जाएब छू ३२७
खण्ड २३ — दीवान-ए-विदेह : गजल ३२९
गजल १ : मोन पड़ैए ३२९
गजल २ : रहि गेल ३२९
खण्ड २४ — अकुलाइत सुर : किशोर गजल आ कविता-गीत ३७६
गजल १–१३३ : मूल साझा पाठक विस्तृत समीक्षा ३७६
गजल १ : बार्बी ३७६
खण्ड २५ — स्वप्नमे मिज्झर होइत : पद्य ३८७
१. अनचिन्हार आखर — जोत, स्मृति आ स्वप्नक मिश्रित चेतना ३८७
२. मृत्यु गीत (लोकगीत) — सुग्गा, हंसा आ कायागढ़क लोक-मृत्युदर्शन ३८७
खण्ड २६ — गजेन्द्र ठाकुरक समानान्तर दर्शन — प्रथम खण्ड ४०९
प्रकाशन आ प्रतिलिप्यधिकार ४०९
सम्पादकीय भूमिका ४०९
खण्ड २७ — गजेन्द्र ठाकुरक समानान्तर दर्शन — द्वितीय खण्ड ४१३
प्रकाशन आ प्रतिलिप्यधिकार ४१३

सम्पादकीय भूमिका ४१३
खण्ड २८ — तत्त्वचिन्तामणि ४१८
प्रकाशन आ प्रतिलिप्यधिकार ४१८
तत्त्वचिन्तामणि : प्रमाण, भाषा आ तर्कक समानान्तर पाठ ४१८
खण्ड २९ — भामती ४१९
प्रकाशन-विवरण ४१९
आलोचनाक पद्धति आ पाठाधार ४१९
खण्ड ३० — आत्मतत्त्वविवेक ४२१
प्रकाशन-विवरण ४२१
1. ग्रन्थक वास्तविक रचना आ श्रेयक सीमा ४२२
खण्ड ३१ — न्यायकुसुमाञ्जलि ४२३
प्रकाशन-विवरण ४२३
1. ग्रन्थ-परिचय : पाँच पुष्पगुच्छक अन्तर्सम्बन्ध ४२३
खण्ड ३२ — मिथिला आ मैथिली साहित्यक समानान्तर इतिहास ४२५
प्रथम संचयी आलोचना · अध्ययन ००१–०१६ ..... ४२६
००१. समानान्तर साहित्येतिहासक प्रतिज्ञा : प्रतिष्ठानसँ बहिष्कृत पाठ धरि ४२६
खण्ड ३३ — मिथिला, वज्जी आ अंगक इतिहास — खण्ड १ ..... ४२८
मिथिला, वज्जि आ अंगक राजनीतिक इतिहासक प्रमाणाधारित आलोचना ४२८
प्रकाशन-विवरण ४२८
खण्ड ३४ — मिथिला, वज्जी आ अंगक इतिहास — खण्ड २ ..... ४२९
१५० अध्यायक पाठाधारित आलोचनात्मक अध्ययन ४२९
००१ समाजक भौतिक आधार १० ..... ४२९
खण्ड ३५ — पञ्जी-प्रबन्धक सिद्धान्त : प्रथम खण्ड ४३६
मूल ग्रन्थक अध्याय-पञ्जी (स्रोत DOCX अनुसार) ४३६
अध्याय 1 — वंशक्रम आ आनुवंशिकी : उपमानक सामर्थ्य आ सीमा ४३६
खण्ड ३६ — प्राचीन पञ्जी : प्रथम खण्ड ४३७
मूल ग्रन्थक अध्याय-पञ्जी (स्रोत DOCX अनुसार) ४३७
अध्याय 1 — पञ्जी : स्मृति, अभिलेख आ सामाजिक मानचित्र ४३७
खण्ड ३७ — उटीप पञ्जी ४३९
मूल ग्रन्थक अध्याय-पञ्जी (स्रोत DOCX अनुसार) ४३९
अध्याय 1 — वंश, ग्राम आ समाजक सघन स्मृति ४३९
खण्ड ३८ — नगराम पञ्जी ४४१
मूल ग्रन्थक अध्याय-पञ्जी (स्रोत DOCX अनुसार) ४४१

अध्याय 1 — नगराम अभिलेख : स्मृति, स्थान आ व्याख्याक सीमा. ४४२
खण्ड ३९ — वंशावली मानचित्रण ४४८
मूल ग्रन्थक अध्याय-पञ्जी (स्रोत DOCX अनुसार) ४४८
अध्याय 1 — पञ्जीक सङ्केतभाषा आ विवाह-अनुमतिक अभिलेख ४४८
खण्ड ४० — दूषण पञ्जी ४५२
मूल ग्रन्थक अध्याय-पञ्जी (स्रोत DOCX अनुसार) ४५२
अध्याय 1 — सात प्रकारक पञ्जी : एकहि सामाजिक अभिलेखक भिन्न काम ४५२
खण्ड ४१ — प्रबन्ध · निबन्ध · समालोचना — सिद्धान्त आ निबन्ध ४५३
सैद्धान्तिक प्रबन्ध आ निबन्धक समीक्षा ४५४
१. प्रबन्ध–निबन्ध–समालोचना, समीक्षाशास्त्र आ समालोचनाक समालोचना ४५४
खण्ड ४२ — प्रबन्ध · निबन्ध · समालोचना — अनुप्रयुक्त समीक्षा ४५६
अध्ययनक विधि ४५६
१. मायानन्द मिश्रक इतिहास-बोध : चारि ऐतिहासिक उपन्यासक सन्दर्भ ४५६
खण्ड ४३ — संस्कृत साहित्य-संग्रह : १३ पुस्तक-समूह ४६२
अध्ययनक आधार आ प्रमाण-सीमा ४६२
01 अभिज्ञानशाकुन्तलम् : प्रेम, विस्मृति आ राजकीय उत्तरदायित्व ४६२
खण्ड ४४ — मैथिली रेडियो नाटक : स्वयं सीखू मार्गदर्शिका ४६३
अध्ययनक आधार आ पद्धति ४६३
01 रेडियो नाटक : कानक सिनेमा ४६३
खण्ड ४५ — ए.आइ. सँ वीडियो बनाउ : स्वयं सीखू मार्गदर्शिका ४६४
स्रोत, सीमा आ समीक्षाक पद्धति ४६४
01 ए.आइ. वीडियो की आ की नहि ४६४
खण्ड ४६ — मैथिली–अंग्रेजी थिसॉरस ४६६
पद्धति आ अध्ययनक प्रमाण-सीमा ४६६
अनुक्रमणिकाक वर्णवार मूल संख्या ४६६
खण्ड ४७ — अंग्रेजी–मैथिली थिसॉरस ४६७
पद्धति आ अध्ययनक प्रमाण-सीमा ४६७
अनुक्रमणिकाक वर्णवार मूल संख्या ४६७
खण्ड ४८ — समग्र अनुवाद खण्ड : भारतीय भाषासँ मैथिली ४६८
मूल स्रोत आ अनुसंधानक सीमा ४६८
गद्यक चौदह समूहक अनुक्रम ४६८
खण्ड ४९ — नित नवल वृषेश चन्द्र लाल ४६९
01 आन्दोलन : कविता, लोकतन्त्र आ प्रतिगमन-विरोध ४७०

02 ढोलक : बाल–ताल–नालक काव्य-रचना ४७०
खण्ड ५० — राजदेव मण्डल : मैथिली लेखक ४७०
01 राजदेव मण्डलक कृतित्व-परिचयक आलोचनात्मक ढाँचा ४७०
02 कवि राजदेव मण्डल आ ‘अम्बरा’क काव्य-स्वर ४७०
खण्ड ५१ — नित नवल दिनेश कुमार मिश्र ४७१
01 बन्दिनी महानन्दा : नदीकेँ कारागार रूपेँ देखबाक तर्क ४७१
02 कमला नदी : तटबन्धक विरोध आ स्थानीय ज्ञान ४७१
खण्ड ५२ — जगदीश प्रसाद मण्डल — एकटा बायोग्राफी ४७१
01 जीवनीक स्रोत-आधार : संवाद, स्मृति आ अभिलेख ४७१
02 जन्म, परिवार आ संयुक्त जीवनक सामाजिक इतिहास ४७१
खण्ड ५३ — नित नवल सुभाष चन्द्र यादव ४७२
01 घरदेखिया : पहिल चरणक कथा आ सामाजिक विकल्प ४७२
02 बनैत बिगड़ैत : पुनरागमन आ कथाक संरचना ४७२
खण्ड ५४ — नित नवल सुशील ४७२
01 सुशीलक साहित्यिक जीवन आ कृतिपञ्जीक आधार ४७२
02 छद्म समीक्षा-विवाद : साहित्यिक प्राथमिकता आ प्रमाण ४७३
ग्रन्थाधार : खण्ड २–५४क समीक्षा-संस्करण ४७५

गजेन्द्र ठाकुर समग्र

सम्पादक- आशीष अनचिन्हार

उपन्यास

सहस्रबाढ़नि, सहस्रशीर्षा (प्रसिद्ध गढ़ नारिकेल), नव्य न्याय आ अपतटीय जुआ-जाल, अनुवादक, जल-पाँजि, बिज्जी: गोहि सभक बीच, ३७ टा मैथिली बाल उपन्यास, कूट शब्द तरहड़िमे गोहि (साइबर अपराध आधारित किशोर उपन्यास), पातक भीतर लिखल नाँव, सातम साक्षी, गोहि सभक बीच जलसमाधि (मैथिलीक आइ धरिक सभसँ पैघ उपन्यास), गोहि सभक बीच जलसमाधि (किशोर संस्करण), गोहि सभक बीच जलसमाधि (बाल संस्करण)।

कथा-संग्रह

पर्वत ऊपर भमरा जे सूतल, स्मृतिक दोसर दिस, इजोत- जनम-जनमक कथा, कथा-शतत्रयी [खण्ड-१, खण्ड-२ आ खण्ड-३], कथा-त्रिधारा [खण्ड-१, खण्ड-२ आ खण्ड-३], नव पाँखि (किशोर कथा संग्रह)

नाटक [मूल मैथिली आ तकर अंग्रेजी अनुवाद सहित]

रंग-संगम / Rang-Sangam (खण्ड-१ आ २): बारह टा मैथिली नाटक आ तकर अंग्रेजी रंगमंचीय रूपान्तर।

पद्य

अकुलाइत सुर (खण्ड-१: किशोर गजल, खण्ड-२: किशोर कविता-गीत); दीवान-ए-विदेह (खण्ड १ आ २), स्वप्नमे मिज्झर होइत ।

समालोचना/ समालोचनाशास्त्र

प्रबन्ध · निबन्ध · समालोचना सिद्धान्त आ अनुप्रयुक्त अध्ययन, नित नवल सुभाष चन्द्र यादव, नित नवल सुशील, नित नवल दिनेश कुमार मिश्र, नित नवल वृषेश चन्द्र लाल,

विदेह शोध-लेख (अंक १ सँ ४४७ धरि), विदेह सदेह १–३७- एक समालोचनात्मक आस्वादन, विदेह १-४४० विस्तृत अध्ययन, विदेह सदेह १-३७ विस्तृत अध्ययन , Videha Quiz Master.

दर्शनशास्त्र [मूल मैथिली आ तकर अंग्रेजी अनुवाद सहित]

गजेन्द्र ठाकुरक समानान्तर दर्शन (खण्ड १ आ २) ।

इतिहास [मूल अंग्रेजी]

A Parallel History of Mithila & Maithili Literature (Tome I-IV), History of Mithila, Vajji & Anga In India & Nepal: From Prehistory To The Contemporary Period (Volumes I & II).

पञ्जी प्रबन्ध [मूल अंग्रेजी]

Decoding the Panji of Mithila (Volumes I to VI).

व्याकरण, रचना आ भाषा विज्ञान

मैथिलीक एकटा समानान्तर व्याकरण, रचना आ भाषा विज्ञान (ठेठी, अंगिका आ बज्जिकाकेँ संग लऽ कऽ)।

THESAURUS

English-Maithili Thesaurus, Maithili-English Thesaurus.

स्वयं सीखू मार्गदर्शिका [मैथिली (आ तकर अंग्रेजी अनुवाद सहित)]

ए.आइ. सँ वीडियो बनाउ, मैथिली रेडियो नाटक: स्वयं सीखू मार्गदर्शिका

अनुवाद (आन भाषासँ मैथिली आ मैथिली-अंग्रेजी)

१.गजेन्द्र ठाकुर समग्र अनुवाद खण्ड [आन भाषासँ मैथिली];

२.मूल संस्कृत सँ मैथिली [आ तकर अंग्रेजी अनुवाद सहित]: भामती (वाचस्पति), आत्मतत्त्वविवेक (उदयन), न्यायकुसुमाञ्जलि (उदयन), तत्त्वचिन्तामणि (गंगेश);

अभिज्ञानशाकुन्तलम् (महाकवि कालिदास); आगमडम्बरम् -जयन्त भट्ट; भगवदज्जुकम् -बोधायन; कवि भल्लट- भल्लट-शतक (भल्लटक शत अन्योक्ति), महाकवि क्षेमेन्द्र- छल-कौशलक विलास (कलाविलास), कवि नीलकण्ठ- कलियुग-विडम्बना (व्यंग्य); चतुर्भाण [*श्री शूद्रक केर मूल संस्कृत- पद्मप्राभृतकम् (कमलक भेंट), ईश्वरदत्तक मूल संस्कृत- धूर्तविटसंवादः (धूर्त आ दलालक विचार-विमर्श), वररुचिक मूल- उभयाभिसारिका (परस्पर प्रेम-पलायन) आ महाकवि श्यामिलक केर मूल संस्कृत- पादताडितकम् (लात)*]; दामक प्रहसनम् (सम्भवतः भास रचित); हास्यक सागर / हास्यार्णवप्रहसनम् (मूल संस्कृत प्रहसन श्री जगदीश्वर भट्टाचार्य्य); कादम्बरी (वाणभट्ट आ भूषणभट्ट); माटिक खेलौना-गाड़ी / मृच्छकटिकम् (शूद्रक रचित संस्कृत नाटक); मत्तविलास प्रहसनम् (पल्लव नरेश श्री महेन्द्रविक्रम वर्मा प्रथम केर मूल संस्कृत प्रहसन); मंत्री राक्षसक राजसी मोहर / मुद्राराक्षसम् (विशाखदत्त रचित संस्कृत नाटक); पालाण्डुमण्डन प्रहसनम् (हरिजीवन मिश्रक संस्कृत प्रहसन); उत्तररामचरितम् (महाकवि भवभूति)।

अनुवाद (मैथिलीसँ अंग्रेजी)

Water-Burial Among The Crocodiles, 37 Maithili Children Novels In English Translation, The Translator, Navya Nyaya And The Offshore Gambling Web, Mongoose Among The Monitor Lizards, The Seventh Witness, The Name Written Within The Leaf, Jal-Panji- Water Register, LIGHT- Stories Across Lifetimes, The Other Side Of Memory, The Hundred-Story Trilogy (Volumes I–III), Three Streams of Stories (Volumes I-III), When Dreams Merge, The Black Bee is Sleeping Atop the Mountain, The Coconut Fortress, The Comet's Coma: Lost in the Frozen Clouds

भूमिका

गजेन्द्र ठाकुरक समग्र कृतित्व एकटा विधा वा एकटा विषयमे सीमित नहि अछि। उपन्यास, कथा, नाटक, पद्य, समालोचना, दर्शन, इतिहास, पञ्जी, व्याकरण, थिसॉरस, स्वयं-शिक्षण आ अनुवाद - ई सभ मिलि एक एहन बौद्धिक परिसर बनबैत अछि जाहिमे लोक आ शास्त्र, स्मृति आ अभिलेख, मातृभाषा आ बहुभाषी संवाद निरन्तर एक-दोसराकेँ परखैत अछि।

एहि सम्पादकीय पोथीमे मूल सूचीमे देल क्रमकेँ अक्षुण्ण राखि प्रत्येक उल्लेखित पोथी वा घोषित खण्ड-समूहपर स्वतंत्र सम्पादकीय टिप्पणी देल गेल अछि। उद्देश्य प्रत्येक कृतिक स्वर, प्रयोजन, सांस्कृतिक अर्थ, विधागत संरचना आ मैथिली साहित्यक भीतर ओकर स्थानकेँ आलोचनात्मक गहराइसँ रखब अछि।

उपन्यास

गजेन्द्र ठाकुरक उपन्यास-संसारकेँ आधुनिक उपन्यास-परम्पराक व्यापक धरातलपर पढ़ल जाए तँ एकर मूल विशेषता ‘ज्ञानक कथा’ अछि। घटना, पात्र आ प्रसंग लगातार एहि प्रश्न दिस घुरैत अछि जे मनुष्य सत्यकेँ कोना चिन्हैत अछि, समाज प्रमाणकेँ कोना स्वीकार करैत अछि, आ स्मृति इतिहासक स्थान कतेक धरि लऽ सकैत अछि। एहि कारण उपन्याससभमे रहस्य, लोककथा, पारिवारिक आख्यान, न्यायालय, नदी, पाँजि, डिजिटल अपराध आ बाल-कल्पना अलग-अलग क्षेत्र नहि रहैत; सभ एक जिज्ञासा-धारा मे जुड़ैत अछि।

एहि उपन्याससभक आलोचना करैत काल केवल कथानकक सार पर्याप्त नहि। कथाक समय-रचना, कथावाचकक विश्वसनीयता, लोक-स्मृतिक भूमिका, अभिलेखक सीमा, देह आ भूगोलक सम्बन्ध, तथा भाषा मे उपस्थित तर्क-संस्कार देखब आवश्यक अछि। भारतीय रस-ध्वनि परम्परा, नव्य-न्यायक प्रमाण-विवेक, आधुनिक narratology, ethical criticism आ archive studies - ई सभ दृष्टि एहि उपन्याससभकेँ अलग-अलग पठन-मार्ग दैत अछि।

सहस्रबाढ़नि

ई उपन्यास मिथिलाक नदी, बाढ़ि, स्मृति, परिवार आ आधुनिक संस्थागत जीवनकेँ एकहि कथा-विन्यासमे राखैत अछि। एहि पोथीक सम्पादकीय महत्त्व एहि बातमे अछि जे ई घटना मात्र नहि कहैत, बल्कि मनुष्यक भीतर चलैत भय, उत्तराधिकार, अपराध-बोध आ ज्ञानक खोजकेँ सामाजिक भूगोलसँ जोड़ैत अछि। मिथिलाक लोकानुभव एतय निजी दुःख नहि रहि, एक विस्तृत ऐतिहासिक चेतना बनि उठैत अछि।

एहि कृतिक आलोचनात्मक केन्द्र बाढ़ि मात्र नहि, बाढ़ि द्वारा बनैत स्मृति-व्यवस्था अछि। जल एतय प्राकृतिक घटना रहि नहि जाइत; ओ परिवारक पीढ़ीगत अनुभव, प्रशासनक असफलता, पुल आ रास्ताक आधुनिकता, आ मनुष्यक भीतरक अनाम भयकेँ एकहि बिम्ब-मालामे बाँधैत अछि। कथावाचक जखन अतीत दिस घुरैत अछि, तखन ओ केवल स्मरण नहि करैत, बल्कि स्मृतिक विश्वसनीयता जाँचैत अछि।

उपन्यासक संरचना आधुनिक उपन्यासक ओहि रूपसँ मिलैत अछि जाहिमे समय रैखिक नहि रहैत। बालक-भय, वयस्क विवेक, पारिवारिक कथा आ सामाजिक इतिहास एक-दोसरामे प्रवेश करैत अछि। एहि संरचनासँ ‘सहस्रबाढ़नि’ अपन विषयकेँ रूपमे बदलैत अछि: कथा स्वयं बाढ़िक तरह फैलैत, काटैत, बहबैत आ फेर नओका अवसाद छोड़ैत चलैत अछि।

नैतिक आलोचनाक दृष्टिसँ कृति मनुष्यक जिम्मेदारीपर बल दैत अछि। विपत्ति केँ केवल भाग्य वा प्रकृतिक क्रूरता मानि छोड़ल नहि गेल अछि; संस्था, निर्णय, भ्रष्टाचार, शिक्षा आ वैज्ञानिक चेतनाक प्रश्न कथा-तन्तुमे गुँथल अछि। एहि कारण ई उपन्यास करुण रसपर रुकैत नहि, विवेकक आग्रह सेहो करैत अछि।

सहस्रशीर्षा

ई कृति समाजकेँ एक मुँहसँ नहि, अनेक माथ आ अनेक स्मृतिसँ पढ़बाक आग्रह करैत अछि। गढ़ नारिकेलक कथा स्थानीय जीवनसँ शुरू भऽ जाति, भूमि, लोकगीत, श्रम, नदी, राजनीति आ विस्थापनक व्यापक प्रश्न धरि पहुँचैत अछि। सम्पादकीय दृष्टिसँ एकर बल बहुस्वरता अछि: कोनो एक सत्य अंतिम नहि, बल्कि लोकक अनेक कथन मिलि समाजक जटिल चेहरा बनबैत अछि।

‘सहस्रशीर्षा’क बुनियादी शक्ति ओकर बहुस्वरता अछि। गढ़ नारिकेल एकटा भौगोलिक स्थान भरि नहि, अनेक जाति, पेशा, लोकस्मृति, मिथक, राजनीतिक अनुभव आ भाषिक स्वरक मिलन-बिन्दु बनैत अछि। कृति पाठककेँ एकटा सर्वज्ञ, अन्तिम, ऊपरसँ आयल सत्य नहि दैत; ओ समाजक भीतरक अनेक कथन सुनबाक अभ्यास करबैत अछि।

बाख्तिनीय अर्थमे कहल जाए तँ ई उपन्यास संवादधर्मी अछि: लोकगीत, कहबी, जातीय आख्यान, जेलक इतिहास, नदी-बान्हक अनुभव, चुनावी प्रसंग आ शहरी प्रवासन एक-दोसरासँ बहस करैत अछि। लेखकक महत्त्व एहि बातमे अछि जे ओ एहि बहसकेँ एकरूप करबाक जल्दी नहि करैत। विषमता स्वयं कथाक सर्जनात्मक ऊर्जा बनैत अछि।

कृतिक इतिहास-बोध स्रोत-सावधानी माँगैत अछि। पात्रक कथन, लोकक विश्वास आ ऐतिहासिक तथ्य एकहि स्तरपर नहि राखल जा सकैत। एहि भेदक प्रति सजग पाठ

उपन्यासकेँ कमजोर नहि करैत; उलटे ओकर साहित्यिक प्रौढ़ता बढ़बैत अछि, कारण समाजक सच बहुत बेर प्रमाण, स्मृति आ कल्पनाक बीच बनैत अछि।

नव्य न्याय आ अपतटीय जुआ-जाल

ई उपन्यास अपराध-कथा सन आरम्भ भऽ प्रमाणक अनुशासन धरि पहुँचैत अछि। डिजिटल लेन-देन, न्यायालय, साक्ष्य, भाषा आ तर्कक प्रसंग मैथिलीक नव्य-न्यायीय परम्परासँ जुड़ि जाइत अछि। एहि पोथीक महत्त्व एहि बातमे अछि जे ई आधुनिक अपराधकेँ केवल सनसनी नहि बनबैत, बल्कि पूछैत अछि जे सत्य कोना सिद्ध होइत अछि आ भाषा न्यायमे कोना उत्तरदायी बनैत अछि।

ई उपन्यास आधुनिक अपराधक कथाकेँ नव्य-न्यायीय प्रमाण-विवेकसँ जोड़ैत अछि। डिजिटल लेन-देन, अपतटीय वित्त, न्यायालय, दस्तावेज, गवाही आ गोपनीयता - ई सभ वस्तु मात्र आधुनिक सजावट नहि, बल्कि प्रमाणक रूप, सीमा आ भ्रमक प्रश्न उठबैत अछि।

आख्यानक रोचकता रहस्य-उद्घाटनमे अछि, मुदा ओकर गहिर साहित्यिक मूल्य सत्य-निर्माणक प्रक्रियामे अछि। पाठक अपराधी खोजबाक संग-संग ई सेहो बुझैत चलैत अछि जे तथ्य, अनुमान, अनुपस्थिति, भाषा आ संस्थागत अधिकारक सम्बन्ध कोना बनैत अछि। एहि अर्थमे कृति विधिक थ्रिलर होइतहुँ ज्ञानमीमांसीय उपन्यास अछि।

समकालीन विश्व-साहित्य मे डिजिटल पूँजी आ अपराधक जे तनाव देखाइत अछि, ओकर मैथिली रूप एतय विकसित भेल अछि। भाषा स्थानीय अछि, मुदा समस्या वैश्विक: धनक प्रवाह सीमा पार करैत अछि, मुदा न्यायकेँ प्रमाण चाही; सूचना बहुत अछि, मुदा सत्य दुर्लभ।

अनुवादक

ई कृति भाषा, जीविका आ नैतिक उत्तरदायित्वक कथा अछि। अनुवाद एतय शब्द बदलबाक काम मात्र नहि, बल्कि संसारक बीच प्रवेश, सौदा, जोखिम आ आत्म-परीक्षाक साधन अछि। मैथिली जीवनानुभव दिल्ली, चीन, मकाऊ आ विधिक संसारसँ जुड़ैत अछि,

मुदा मूल प्रश्न रहैत अछि: भाषा जखन शक्ति बनैत अछि, तखन मनुष्य अपन अंतरात्मा केना बचबैत अछि।

‘अनुवादक’ भाषा, जीविका आ नैतिक संकटक उपन्यास अछि। नायकक भाषा-कौशल ओकर अवसर सेहो अछि आ परीक्षा सेहो। अनुवाद एतय शब्द-समता नहि, शक्ति-संबंधक मध्यस्थता अछि: जे बोलि सकैत अछि, ओ प्रवेश पाबैत अछि; जे ठीक अनुवाद करैत अछि, ओ उत्तरदायित्व सेहो उठबैत अछि।

कथा दिल्ली, अंतरराष्ट्रीय व्यापार, विधिक गोपनीयता आ समाचार-माध्यमक संसारमे चलैत अछि, मुदा ओकर भाव-मूल मिथिलाक बौद्धिक संस्कारसँ जुड़ल अछि। नव्य-न्यायक प्रमाण-संयम आ अनुवादक व्यावसायिक विवशता बीच तनाव कृतिक मुख्य नैतिक संरचना बनैत अछि।

अनुवाद-अध्ययनक दृष्टिसँ ई उपन्यास अनुवादकक अदृश्यताकेँ अस्वीकार करैत अछि। अनुवादक केवल परदे पछाँक कर्मी नहि; ओकर चयन, मौन, चूक, निष्ठा आ भय कथाक दिशा बदलि सकैत अछि। एहि कारण कृति भाषा-कर्मक नैतिक गाथा बनि उठैत अछि।

जल-पाँजि

‘जल-पाँजि’ शीर्षकहि सँ स्मृति आ अभिलेखक अद्भुत संगम रचैत अछि। जल चलायमान अछि, पाँजि अभिलेखक अनुशासन; एहि दू ध्रुवक बीच पोथी मनुष्य, समाज आ समयक निशान खोजैत अछि। सम्पादकीय अर्थमे ई कृति बतबैत अछि जे मिथिलाक इतिहास केवल कागजमे नहि, नदी, देह, विस्थापन आ लोक-स्मृतिमे सेहो लिखल रहैत अछि।

‘जल-पाँजि’क शीर्षकहि आलोचनात्मक कुंजी अछि। जल चलायमान, अनिश्चित आ विस्मरणकारी अछि; पाँजि क्रम, नाम, वंश आ अभिलेखक प्रतीक। कृति एहि दू विरोधी तत्त्वकेँ मिलाकऽ पूछैत अछि जे जे वस्तु बहि जाइत अछि, ओकर लेखा कोना राखल जाए।

कथात्मक रूपमे जल-स्मृति मनुष्यक सम्बन्ध, गामक भूगोल, मृत्यु, प्रव्रजन आ दस्तावेजी अभावक प्रश्न खोलैत अछि। कृति आधुनिक अभिलेखीय आलोचनासँ संवाद

करैत बुझाइत अछि, कारण ओकरा लेल इतिहास ओतबे महत्त्वपूर्ण अछि जतबे अभिलेखक रिक्त स्थान।

एहि पोथीक साहित्यिक शक्ति ओकर रूपकात्मक घनत्वमे अछि। पाँजि कागजपर नाम रखैत अछि, जल देह आ भूमि पर छाप छोड़ैत अछि, आ कथा ओहि दुनूकेँ भाषा मे धारण करबाक प्रयास करैत अछि।

बिज्जी: गोहि सभक बीच

ई उपन्यास छोट जीव आ कठोर संसारक रूपकसँ सामाजिक असुरक्षा, चातुर्य आ जीवित रहबाक बुद्धिक कथा कहैत अछि। शीर्षकक 'गोहि सभक बीच' वातावरणक भय आ संघर्षकेँ तीक्ष्ण बनबैत अछि। सम्पादकीय दृष्टिसँ ई कृति कमजोर बुझाइत पात्र वा समुदायकेँ करुणा मात्र नहि, संघर्षक चेतना आ व्यूह-बुद्धि दैत अछि।

एहि उपन्यासमे छोट जीवक रूपक सामाजिक संरचनाक तीक्ष्ण आलोचना बनैत अछि। बिज्जी केवल पात्र वा प्रतीक नहि, कमजोर मानल गेल अस्तित्वक जीवित बुद्धि अछि। गोहि सभक बीच ओकर स्थिति भय, चतुराई, गति आ असुरक्षाक संयुक्त नाट्य रचैत अछि।

कृति शक्ति-संबंधक अध्ययन लेल महत्त्वपूर्ण अछि। विशाल, हिंस्र वा प्रतिष्ठित संरचनाक बीच छोट, चपल आ उपेक्षित सत्ता कोना बाँचैत अछि - ई प्रश्न सामाजिक रूपक बनि जाइत अछि। लेखक करुणाक भावमे अटकैत नहि; ओ जीवित रहबाक बुद्धिक सौन्दर्य देखबैत अछि।

आधुनिक पशु-रूपक वा पर्यावरणीय पठनक दृष्टिसँ सेहो कृति महत्त्वपूर्ण अछि, कारण ई मनुष्यक संसारकेँ गैर-मानवीय बिम्बद्वारा पढ़ैत अछि। एहि उलट दृष्टिसँ समाजक हिंसा अधिक स्पष्ट देखाइत अछि।

३७ टा मैथिली बाल उपन्यास

ई संकलन बाल-पाठककेँ मैथिली कथा-संसारक विशाल प्रवेश-द्वार दैत अछि। लोकनायक, लोककथा, साहस, बुद्धि, न्याय, हास्य आ संस्कारक विविध रूप एहि शृंखलामे देखाइत अछि। एकर सम्पादकीय महत्त्व ई अछि जे मैथिली बाल-साहित्यकेँ

केवल उपदेशक क्षेत्र नहि, कल्पना, भाषा-सौन्दर्य आ सांस्कृतिक स्मृतिक सृजनशील विद्यालय बनाओल गेल अछि।

एहि शृंखलाक महत्त्व संख्यात्मक विस्तारमे मात्र नहि, बाल-कल्पनाक विविध प्रशिक्षणमे अछि। लोकनायक, लोकविश्वास, न्याय, हास्य, साहस, यात्रा, डर, दया आ निर्णयक प्रसंग बाल-पाठककेँ मातृभाषामे अनेक भावात्मक परिस्थिति उपलब्ध करबैत अछि।

आधुनिक बाल-साहित्य आलोचना मानैत अछि जे बाल-पाठक केवल उपदेश ग्रहण करनिहार खाली पात्र नहि। एहि शृंखलामे बालक कल्पना, नैतिक विवेक आ दृश्यात्मक ग्रहणशीलता पर भरोसा कएल गेल अछि। कथा जखन चित्र, साहस आ लोक-संस्कृतिक संग चलैत अछि, तखन भाषा बालक लेल अनुभव बनैत अछि।

मैथिली साहित्यक इतिहासमे एहन विस्तृत बाल-उपन्यास-परियोजना भाषा-संरक्षणक जीवंत साधन अछि। बालक जखन अपन भाषामे रोमांच पढ़ैत अछि, तखन भाषा घरक व्यवहारसँ आगाँ कल्पनालोकक अधिकार पबैत अछि।

कूट शब्द तरहड़िमे गोहि

साइबर अपराधक किशोर उपन्यास रूपमे ई कृति नूतन समयक भयकेँ मैथिली भाषामे पकड़ैत अछि। ‘कूट शब्द’ डिजिटल रहस्यक, आ ‘गोहि’ छिपल खतराक संकेत बनैत अछि। ई पोथी किशोर पाठककेँ सावधानी, तर्क, प्रमाण आ भाषा-सजगता सिखबैत अछि; तेँ ई मनोरंजनक संग डिजिटल नागरिकता केर पाठ सेहो अछि।

ई किशोर उपन्यास डिजिटल युगक भयकेँ मैथिली कथा-भाषामे रूपान्तरित करैत अछि। कूट शब्द, रहस्य, साइबर अपराध आ गोहि-जेकाँ छिपल खतरा - ई सभ मिलि किशोर पाठकक वर्तमान संसारकेँ पकड़ैत अछि।

कृतिक आलोचनात्मक मूल्य एहि बातमे अछि जे ओ तकनीककेँ बाहरी विदेशी वस्तु नहि मानैत। तकनीकी जोखिम स्थानीय समाज, परिवार, भाषा आ किशोर निर्णयक भीतर प्रवेश करैत अछि। एहि सँ कथा उपदेशात्मक सुरक्षा-पुस्तिका नहि रहि, साहित्यिक चेतावनी बनैत अछि।

किशोर-साहित्यक दृष्टिसँ कृति जिम्मेदार आधुनिकता सिखबैत अछि। जिज्ञासा कैँ दबाओल नहि गेल अछि; ओकरा प्रमाण, सावधानी आ नैतिक चयनसँ जोड़ल गेल अछि।

पातक भीतर लिखल नाँव

शीर्षक पात, लिखावट आ भीतरक गोपन अर्थकैँ एक संग राखैत अछि। ई कृति स्मृति, अपराध, पहचान आ प्रकृतिक सूक्ष्म संकेतक कथा बनि सकैत अछि। सम्पादकीय दृष्टिसँ एकर आकर्षण एहि बातमे अछि जे छोट वस्तु वा संकेतसँ बड़का नैतिक प्रश्न खुलैत अछि; मनुष्यक नाँव बाहर नहि, भीतर लिखल इतिहासमे सुरक्षित रहैत अछि।

एहि शीर्षकमे पात, लेखन आ भीतरी गोपन अर्थक त्रयी अछि। पात प्रकृति, क्षणभंगुरता आ नश्वर छापक प्रतीक अछि; लिखल नाँव स्मृति, पहचान आ दावा बनैत अछि। कृति छोट संकेतक भीतर बड़का नैतिक इतिहास खोजबाक आग्रह करैत अछि।

आधुनिक सूक्ष्म-पठनक दृष्टिसँ ई पोथी महत्त्वपूर्ण अछि, कारण ओकर अर्थ बाहरी घटना-व्यापारसँ बेसी संकेतक ध्वनिमे खुलैत अछि। जे नाँव भीतर लिखल अछि, ओ समाज द्वारा घोषित नामसँ भिन्न भऽ सकैत अछि; एहि अन्तरमे पहचानक दुख आ गरिमा दुनू अछि।

स्मृति-अध्ययनक स्तरपर कृति देखबैत अछि जे मनुष्य अपन इतिहास केवल शिलालेखमे नहि, नाजुक वस्तुमे सेहो रखैत अछि। पातक नश्वरता स्मृतिक असुरक्षाकैँ अधिक मार्मिक बनबैत अछि।

सातम साक्षी

ई उपन्यास साक्ष्यक प्रश्नकैँ नैतिक आ आध्यात्मिक गहराइ दैत अछि। पहिल छह साक्ष्य जँ बाहरी संसारक हो, त सातम साक्षी मनुष्यक भीतरक प्रमाण बनि उठैत अछि। सम्पादकीय रूपेँ कृति न्याय, स्मृति, सत्यक डर आ कथनक जिम्मेदारीपर केन्द्रित अछि; ई पाठककैँ पूछैत अछि जे सत्यक पक्षमे अन्तिम गवाही के देत।

‘सातम साक्षी’ न्यायिक गवाहीक पारंपरिक अर्थकैँ आध्यात्मिक आ नैतिक स्तर धरि बढ़बैत अछि। छह बाहरी साक्ष्यक बाद सातम साक्षी मनुष्यक अंतरात्मा, स्मृति वा मौन सत्यक रूपमे उभरैत अछि।

कृति प्रमाण आ विश्वासक बीचक तनावपर टिकल अछि। न्यायालय बाहरी तथ्य माँगैत अछि, समाज कथा बनबैत अछि, मुदा व्यक्ति भीतर जे देखैत अछि ओकर भाषिक रूप कठिन होइत अछि। एहि कठिनाईसँ उपन्यासक साहित्यिक तनाव जन्मैत अछि।

आधुनिक नैतिक आलोचनाक दृष्टिसँ ई कृति गवाहीक जिम्मेदारी पर प्रश्न उठबैत अछि। सत्य देखनिहार मौन रहल तँ की ओ निर्दोष रहैत अछि? कृति एहि असुविधाजनक प्रश्नकेँ पाठकक भीतर छोड़ैत अछि।

गोहि सभक बीच जलसमाधि

मैथिलीक विस्तृत उपन्यासक रूपमे ई कृति जल, जीव, देह, समाज आ इतिहासक विराट आख्यान रचैत अछि। ‘जलसमाधि’ मृत्यु मात्र नहि, विस्मरण, डूबन, शुद्धि आ स्मृतिक पुनरुत्थानक रूपक अछि। सम्पादकीय दृष्टिसँ पोथी मिथिलाक जल-संस्कृति आ सामाजिक संघर्षकेँ महाकाव्यात्मक विस्तार दैत अछि।

ई विस्तृत कृति जल, जीव, लोक-स्मृति आ सामाजिक संघर्षक महाकाव्यात्मक उपन्यास-संसार रचैत अछि। जलसमाधि मृत्यु मात्र नहि; ओ डूबन, विस्मरण, पुनर्जन्म, शुद्धि आ सामूहिक स्मृतिक रूपक बनैत अछि।

कथाक विशालता ओकर चुनौती सेहो अछि। एहन पाठकेँ केवल कथानक-सारसँ बुझल नहि जा सकैत; ओकर गीत, प्रसंग, पात्र-समूह, पुनरावृत्ति, जल-बिम्ब आ लोक-भाषिक विस्तार सभ मिलि अर्थ बनबैत अछि। ई उपन्यास पाठकसँ धैर्य माँगैत अछि।

पर्यावरणीय आलोचना आ सामाजिक इतिहास दुनू दृष्टिसँ कृति महत्त्वपूर्ण अछि। जल-परिसर प्राकृतिक पृष्ठभूमि नहि, मनुष्यक नियति निर्माण करनिहार सक्रिय शक्ति अछि।

गोहि सभक बीच जलसमाधि किशोर संस्करण

किशोर संस्करण मूल विराट कथाकेँ नव पाठकवर्ग लेल ग्रहणीय बनबैत अछि। एहि रूपान्तरणक महत्त्व केवल संक्षेपमे नहि, बल्कि जटिल सामाजिक-सांस्कृतिक प्रसंगकेँ स्पष्ट, गतिशील आ विचारोत्तेजक बनएबामे अछि। ई किशोर पाठककेँ भय, न्याय, स्मृति आ साहसक प्रश्नसँ परिचित करबैत अछि।

किशोर संस्करणक साहित्यिक चुनौती मूल कृतिक जटिलताकेँ घटाए बिना ग्रहणीय बनएब अछि। सफल रूपान्तरण ओहि समय होइत अछि जखन कथाक नैतिक तनाव, भय, साहस आ स्मृति सुरक्षित रहैत अछि, मुदा भाषा आ गति किशोर पाठकक अनुकूल बनैत अछि।

एहि संस्करणमे पाठकीय प्रवेश-द्वार बदलैत अछि। बालक वा किशोर पाठक पहिने दृश्य, घटना आ जोखिम पकड़ैत अछि; धीरे-धीरे ओ सामाजिक अर्थ, लोकस्मृति आ न्यायबोध दिस बढ़ैत अछि। एहि क्रमिकता मे रूपान्तरणक आलोचनात्मक मूल्य अछि।

गोहि सभक बीच जलसमाधि बाल संस्करण

बाल संस्करणक लक्ष्य कथा-संसारक मूल भावकेँ सरलता आ रोचकतासँ पहुँचाएब अछि। एतय जल, जीव आ संकटक प्रसंग बाल-कल्पना लेल दृश्यात्मक बनैत अछि, मुदा भीतरमे संस्कार, सावधानी आ सह-अस्तित्वक संकेत सुरक्षित रहैत अछि। ई संस्करण बाल-मनमे मैथिली कथाभाषाक स्वाद जगबैत अछि।

बाल संस्करणक उद्देश्य मूल आख्यानक भाव-बीज बचाएब अछि। एहि स्तरपर कथा स्पष्ट, दृश्यात्मक आ भाव-सुरक्षित होएबाक चाही, मुदा अत्यधिक सरलीकरणसँ कृतिक लोक-स्मृति नष्ट नहि होएबाक चाही।

बाल-साहित्यक कसौटीपर ई संस्करण बालकेँ भय आ करुणासँ परिचित करबैत अछि, मुदा ओकर कल्पना पर विश्वास सेहो रखैत अछि। जल, जीव आ संकटक चित्र बाल-मनमे कथा-संसारक प्रथम सांस्कृतिक नक्शा बनबैत अछि।

कथा-संग्रह

कथा-संग्रहक साहित्यिकता ओकर छोट आकारमे नहि, ओकर संचित प्रतिध्वनिमे अछि। एक कथा जखन समाप्त होइत अछि, तकर प्रभाव अगिला कथाक पठन बदलि दैत अछि। एहि संग्रहसभमे स्मृति, प्रकाश, स्वप्न, किशोर आकांक्षा, सामाजिक संकेत आ लोक-अनुभव अनेक लघु रूपमे आबैत अछि। आलोचनात्मक दृष्टिसँ ई संग्रहसभ मैथिली गद्यक सूक्ष्मता, संकेतधर्मिता आ भाव-संयमक अभ्यास-भूमि छथि।

आधुनिक short fiction criticism जकरा compression, aperture, silence आ after-effect कहैत अछि, से एहि कथा-संसारमे अपन रूप पबैत अछि। कथा सभ नाटकीय घोषणा कम करैत अछि; ओ दृश्य, वाक्य, स्मृति वा छोट नैतिक उलझन छोड़ैत अछि। पाठक ओहि रिक्त स्थानमे अर्थ बनबैत अछि। एहि अर्थमे कथा-संग्रह पाठकक सक्रियता माँगैत अछि।

पर्वत ऊपर भमरा जे सूतल

ई कथा-संग्रह शीर्षकहि सँ ऊँचाई, निद्रा, मधुरता आ रहस्यक वातावरण रचैत अछि। पर्वत स्थायित्वक, भमरा गति आ रसक प्रतीक अछि; एहि विरोधी बिम्बक संयोग कथासभकेँ स्मृति आ स्वप्नक धरातल दैत अछि। सम्पादकीय दृष्टिसँ ई संग्रह सूक्ष्म मानवीय अनुभूतिकेँ लोक-चित्रक सहारे गाढ़ बनबैत अछि।

शीर्षकक बिम्ब अत्यन्त काव्यात्मक अछि: पर्वत स्थैर्यक, भमरा गति आ रसक, आ निद्रा अवचेतनक संकेत। कथासंग्रह एहि विरोधी तत्त्वसभसँ संवेदनाक सूक्ष्म नाटक रचैत अछि।

लघु कथात्मक संरचनामे वातावरणक भूमिका महत्त्वपूर्ण अछि। कथा कई बेर पूर्ण व्याख्या नहि दैत; ओ दृश्य, ध्वनि वा स्मृतिक अंश राखि पाठककेँ अर्थ पूरा करबाक आमन्त्रण दैत अछि। एहि कारण संग्रहक सौन्दर्य अल्पकथनमे अछि।

‘पर्वत ऊपर भमरा जे सूतल’क शीर्षकीय संरचना स्वयं संग्रहक पठन-पद्धति सुझबैत अछि। ई कथा-संग्रह शीर्षकहि सँ ऊँचाई, निद्रा, मधुरता आ रहस्यक वातावरण रचैत अछि। कथा-संग्रहमे शीर्षक प्रायः एक प्रतीकात्मक छाता बनैत अछि, जकर नीचाँ भिन्न कथा

अपन-अपन स्वर राखैत अछि। एहि कारण एकल कथा आ समग्र संग्रहक सम्बन्ध अलग सँ पढ़बाक चाही।

स्मृतिक दोसर दिस

ई संग्रह स्मृतिक सीधा, सुरक्षित रूपसँ आगाँ बढ़ि ओकर उलट, छिपल आ असुविधाजनक पक्षकेँ देखैत अछि। स्मृति एतय केवल अतीतक संग्रह नहि, वर्तमानक निर्णय आ सम्बन्धक कसौटी अछि। कथासभ मनुष्यकेँ अपन कहलब-अनकहलब जीवनक दोसर दिस देखबाक आग्रह करैत अछि।

ई संग्रह स्मृतिक अनुकूल, उज्ज्वल, सजल रूपपर नहि रुकैत; ओ स्मृतिक दोसर, असुविधाजनक, कखनो कषाय पक्ष दिस देखैत अछि। स्मृति एतय आत्म-रक्षा सेहो अछि आ आत्म-भंग सेहो।

आधुनिक स्मृति-अध्ययनक दृष्टिसँ संग्रह महत्त्वपूर्ण अछि, कारण ओ अतीतकेँ स्थिर भंडार नहि मानैत। प्रत्येक स्मरण वर्तमानक दबावमे बदलैत अछि। कथा एहि बदलैत स्मृतिक नैतिक मूल्य जाँचैत अछि।

‘स्मृतिक दोसर दिस’क शीर्षकीय संरचना स्वयं संग्रहक पठन-पद्धति सुझबैत अछि। ई संग्रह स्मृतिक सीधा, सुरक्षित रूपसँ आगाँ बढ़ि ओकर उलट, छिपल आ असुविधाजनक पक्षकेँ देखैत अछि। कथा-संग्रहमे शीर्षक प्रायः एक प्रतीकात्मक छाता बनैत अछि, जकर नीचाँ भिन्न कथा अपन-अपन स्वर राखैत अछि। एहि कारण एकल कथा आ समग्र संग्रहक सम्बन्ध अलग सँ पढ़बाक चाही।

इजोत जनम-जनमक कथा

ई शीर्षक प्रकाशकेँ पीढ़ी-दर-पीढ़ी चलैत कथा बनबैत अछि। संग्रहक सम्पादकीय अर्थ एहि बातमे अछि जे जीवनक अन्हारक बीच इजोत आकस्मिक चमत्कार नहि, सम्बन्ध, स्मृति, संघर्ष आ भाषा द्वारा सँचित ऊर्जा अछि। एहन कथा-पाठ मैथिली संवेदनाक दीर्घ परम्पराकेँ वर्तमानमे जगबैत अछि।

‘इजोत’ एतय ज्ञान, प्रेम, पीढ़ीगत स्मृति आ अस्तित्वक आश्वासनक बिम्ब बनैत अछि। जनम-जनमक विस्तार कथा कैं व्यक्तिगत अनुभवसँ बाहर निकालि दीर्घ सांस्कृतिक समयमे राखैत अछि।

कथासंग्रहक साहित्यिक महत्त्व एहि बातमे अछि जे प्रकाशक बिम्ब भावुक सजावट नहि बनैत। इजोत अन्हारक विरुद्ध सरल विजय नहि; ओ संघर्षसँ अर्जित, स्मृतिसँ पोसल आ भाषासँ सुरक्षित चेतना अछि।

‘इजोत जनम-जनमक कथा’क शीर्षकीय संरचना स्वयं संग्रहक पठन-पद्धति सुझबैत अछि। ई शीर्षक प्रकाशकैं पीढ़ी-दर-पीढ़ी चलैत कथा बनबैत अछि। कथा-संग्रहमे शीर्षक प्रायः एक प्रतीकात्मक छाता बनैत अछि, जकर नीचाँ भिन्न कथा अपन-अपन स्वर राखैत अछि। एहि कारण एकल कथा आ समग्र संग्रहक सम्बन्ध अलग सँ पढ़बाक चाही।

कथा-शतत्रयी

तीन खण्डमे विस्तृत ई कथा-योजना संख्या, विस्तार आ विविधताक अनुशासन प्रस्तुत करैत अछि। एकर महत्त्व एहि बातमे अछि जे कथा लेखकक आकस्मिक लेखन नहि, दीर्घ साधना बनैत अछि। अनेक प्रसंग, पात्र, स्वर आ जीवन-स्थितिक माध्यमे मैथिली समाजक बहुरंगी अनुभवक अभिलेख तैयार होइत अछि।

तीन खण्ड आ शताधिक कथा मिलि एकटा विशाल कथा-मानचित्र बनबैत अछि। एहन परियोजना मे एकल कथा-सौन्दर्यक संग-साथ समग्र विन्यासक आलोचना जरूरी अछि।

विविध कथा-स्थितिसभ एक समाजक अनेक सूक्ष्म रूप खोलैत अछि। संख्या एतय संचय मात्र नहि; ओ जीवनक अपरिमेयता, अनुभवक विविधता आ लेखकक दीर्घ कथा-साधनाक प्रमाण बनैत अछि।

‘कथा-शतत्रयी’क शीर्षकीय संरचना स्वयं संग्रहक पठन-पद्धति सुझबैत अछि। तीन खण्डमे विस्तृत ई कथा-योजना संख्या, विस्तार आ विविधताक अनुशासन प्रस्तुत करैत अछि। कथा-संग्रहमे शीर्षक प्रायः एक प्रतीकात्मक छाता बनैत अछि, जकर नीचाँ भिन्न कथा अपन-अपन स्वर राखैत अछि। एहि कारण एकल कथा आ समग्र संग्रहक सम्बन्ध अलग सँ पढ़बाक चाही।

कथा-त्रिधारा

‘त्रिधारा’ नाम तीन प्रवाहक संकेत दैत अछि। ई संग्रह कथा-विषय, शैली आ भावभूमिक भिन्न धाराकेँ एकहि रचनात्मक परिसरमे रखैत अछि। सम्पादकीय रूपेँ एकर बल संतुलनमे अछि: लोक आ आधुनिकता, निजी आ सामूहिक, करुणा आ व्यंग्य एक-दोसरासँ संवाद करैत अछि।

‘त्रिधारा’ शीर्षक तीन प्रवाहक संरचना सूचित करैत अछि। एहि कृति केँ पढ़ैत काल विषयगत, शैलीगत आ भावगत तीन धाराक अलग-अलग लय देखबाक चाही।

संग्रहक आलोचनात्मक बल संतुलनमे अछि। एक धार लोक-स्मृति दिस, दोसर आधुनिक मनोदशा दिस, तेसर नैतिक वा सामाजिक विवेक दिस बहैत बुझाइत अछि। एहि त्रिमुखी प्रवाहसँ संग्रहक समग्रता बनैत अछि।

‘कथा-त्रिधारा’क शीर्षकीय संरचना स्वयं संग्रहक पठन-पद्धति सुझबैत अछि। ‘त्रिधारा’ नाम तीन प्रवाहक संकेत दैत अछि। कथा-संग्रहमे शीर्षक प्राय: एक प्रतीकात्मक छाता बनैत अछि, जकर नीचाँ भिन्न कथा अपन-अपन स्वर राखैत अछि। एहि कारण एकल कथा आ समग्र संग्रहक सम्बन्ध अलग सँ पढ़बाक चाही।

नव पाँखि

किशोर कथा-संग्रह रूपमे ‘नव पाँखि’ उड़ान, उमंग आ आत्मविश्वासक प्रतीक अछि। एहि पोथीक महत्त्व ई अछि जे किशोर मनकेँ केवल सीख नहि देत, ओकर कल्पना आ निर्णय-क्षमता पर भरोसा करैत अछि। मैथिलीमे किशोर पाठक लेल एहन साहित्य भाषा-संस्कार आ स्वप्न-दृष्टि दुनूकेँ बल दैत अछि।

किशोर कथा-संग्रहक रूपमे ‘नव पाँखि’ उड़ानक रूपक मात्र नहि, आत्मनिर्माणक संकेत अछि। किशोर पात्र वा पाठक दुनू अपन भाषा मे पहिल बेर स्वतंत्र प्रश्न पूछबाक अभ्यास करैत अछि।

कृति किशोर साहित्यकेँ उपदेशक कक्षा नहि बनबैत। ओ जिज्ञासा, असफलता, साहस, खेल, भय आ स्वप्नक माध्यमे किशोर चेतनाकेँ खुलबाक अवकाश दैत अछि।

‘नव पाँखि’क शीर्षकीय संरचना स्वयं संग्रहक पठन-पद्धति सुझबैत अछि। किशोर कथा-संग्रह रूपमे ‘नव पाँखि’ उड़ान, उमंग आ आत्मविश्वासक प्रतीक अछि। कथा-संग्रहमे शीर्षक प्रायः एक प्रतीकात्मक छाता बनैत अछि, जकर नीचाँ भिन्न कथा अपन-अपन स्वर राखैत अछि। एहि कारण एकल कथा आ समग्र संग्रहक सम्बन्ध अलग सँ पढ़बाक चाही।

नाटक

नाटक साहित्यक ओ विधा अछि जाहिमे शब्द देह, ध्वनि आ समयमे बदलैत अछि। ‘रंग-संगम’क मूल्यांकन करैत काल पाठ, मंच, दर्शक आ अनुवाद चारू स्तर देखब आवश्यक अछि। मैथिली संवाद जखन मंचपर बजैत अछि, तखन ओकर लय, सम्बोधन, मौन, विराम आ सामाजिक दूरी सभ अर्थ बनबैत अछि।

रंग-साहित्यक आधुनिक आलोचना ई मानैत अछि जे नाटकक जीवन प्रस्तुति मे पूरा होइत अछि। एहि कारण मैथिली मूल आ अंग्रेजी रंगमंचीय रूपान्तरक संयुक्त अध्ययन केवल भाषिक तुलना नहि, प्रदर्शन-संस्कृतिक अध्ययन सेहो अछि। ई परियोजना मैथिली रंगभाषाकेँ स्थानीयता सँ बाहर लऽ जाइत हुए सेहो ओकर आन्तरिक स्वाभाविकता बचबैत अछि।

रंग-संगम

‘रंग-संगम’ मैथिली नाटक आ अंग्रेजी रंगमंचीय रूपान्तरक बीच सेतु बनबैत अछि। बारह नाटकक संयुक्त उपस्थिति रंग, भाषा, देह, संवाद आ मंचक सामूहिक ऊर्जा देखबैत अछि। सम्पादकीय दृष्टिसँ ई पोथी मैथिली रंग-संस्कृतिकेँ स्थानीय पाठसँ आगाँ वैश्विक प्रस्तुति-संभावना धरि पहुँचबैत अछि।

‘रंग-संगम’क आलोचना पन्नापर लिखल संवादक संग-साथ मंचीय देह, विराम, प्रकाश, ध्वनि आ दर्शकक उपस्थिति सँ करबाक चाही। नाटक मे भाषा शरीर पबैत अछि; एहि संग्रहक महत्त्व ओहि देहधारी भाषामे अछि।

मैथिली आ अंग्रेजी रूपान्तरक संयुक्त उपस्थिति रंग-संस्कृतिक तुलनात्मक अध्ययन लेल महत्त्वपूर्ण अछि। कथावस्तु जखन भाषा बदलैत अछि, तखन मंचीय गति, हास्य, सांस्कृतिक संकेत आ सम्बोधनक रूप सेहो बदलैत अछि। एहि परिवर्तनकेँ कृति अपन सर्जनात्मक क्षेत्र बनबैत अछि।

‘रंग-संगम’ मंच, भाषा आ देहक संगमक रूपमे पढ़बाक माँग करैत अछि। ‘रंग-संगम’ मैथिली नाटक आ अंग्रेजी रंगमंचीय रूपान्तरक बीच सेतु बनबैत अछि। नाटकक शीर्षक

जखन संगमक बात करैत अछि, तखन ओ केवल कृतिसभक संग्रह नहि, कलाकार, लेखक, भाषा आ दर्शकक भेटक संकेत दैत अछि।

एहि कृतिक आलोचनामे पाठ्य रूप आ प्रदर्शन रूपक अन्तर महत्त्वपूर्ण अछि। लिखल संवाद कागजपर एक अर्थ दैत अछि, मुदा मंचपर आवाज, विराम, देह-दिशा आ दर्शकक प्रतिक्रिया सँ ओकर अर्थ बदलि जाइत अछि। एहि जीवित परिवर्तनशीलताक कारण नाटक साहित्यक सभसँ सामूहिक विधा बनैत अछि।

पद्य

पद्य-खण्डमे गजल, गीत, किशोर कविता आ स्वप्नात्मक काव्यभाषा एक विस्तृत संवेदनात्मक क्षेत्र बनबैत अछि। एहि रचनासभमे स्वरक प्रश्न अत्यन्त महत्त्वपूर्ण अछि: के बाजि रहल अछि, कोन लयमे, कोन परम्परासँ संवाद करैत, आ कोन मौनक विरुद्ध। मैथिली काव्य-भाषा एतय निजी आवेग आ सामुदायिक स्मृतिक बीच चलैत अछि।

काव्यक आलोचना मे बिम्ब, लय, विराम, ध्वनि, छन्द-संस्कार आ भाव-गोपनक सूक्ष्म अध्ययन आवश्यक अछि। एहि पद्य-संसारमे अभिव्यक्ति प्रत्यक्ष नारा नहि बनैत; ओ लयबद्ध तनाव रूपमे खुलैत अछि। परम्परागत रस-ध्वनि सिद्धान्त आ आधुनिक lyric theory दुनू एहि पाठकेँ समृद्ध करैत अछि।

अकुलाइत सुर

किशोर गजल, कविता आ गीतक एहि खण्डमे युवा मनक बेचैनी, प्रश्न, प्रेम, लय आ आत्म-खोज सुनाइत अछि। ‘अकुलाइत’ शब्दक भीतर अस्थिरता अछि, मुदा ‘सुर’ ओकरा सर्जनात्मक अनुशासन दैत अछि। ई पोथी किशोर संवेदनाकेँ मैथिली काव्यभाषामे आत्मीय स्थान दैत अछि।

‘अकुलाइत सुर’ युवा मनक बेचैनीकेँ लयमे बदलैत अछि। अकुलाहट जँ असंगठित रहि जाए तँ केवल भावावेग बनैत, मुदा सुर ओकरा काव्यात्मक अनुशासन दैत अछि।

किशोर गजल आ कविता-गीतक आलोचना मे लय, पुनरावृत्ति, आत्म-स्वर आ सामाजिक संवेदना देखब आवश्यक अछि। एहि कृतिमे किशोर मनक आवाज बाल-सुलभ नहि, उभरैत आत्म-सजगता रूपमे उपस्थित अछि।

‘अकुलाइत सुर’क पठनमे ध्वनि आ अर्थकेँ अलग कऽ देखल नहि जा सकैत। किशोर गजल, कविता आ गीतक एहि खण्डमे युवा मनक बेचैनी, प्रश्न, प्रेम, लय आ आत्म-खोज सुनाइत अछि। शीर्षक स्वयं भावक सुर, गति वा स्वप्न-प्रदेशक संकेत दैत अछि, आ काव्य ओकरा बिम्ब, लय, विराम आ संबोधनमे विस्तार दैत अछि।

काव्यक आलोचनात्मक मूल्य ओकर कथ्य मात्रमे नहि, ओकर कहबाक ढंगमे अछि। एहि कृतिमे शब्दक स्थान, ध्वनिक आवर्तन, पंक्तिक साँस, आ अर्थक गोपनता पाठकक

अनुभव बनबैत अछि। से अनुभव तात्कालिक भावुकता सँ आगाँ जायत तँ काव्य स्मृति बनैत अछि।

दीवान-ए-विदेह

दू खण्डक ई काव्य-परियोजना परम्परागत ‘दीवान’ स्मृतिकेँ विदेह चेतनासँ जोड़ैत अछि। प्रेम, विरह, भाषा, समाज आ आध्यात्मिक संकेतक संग कविता अपन स्वायत्त संसार बनबैत अछि। सम्पादकीय रूपेँ एकर महत्त्व मैथिली काव्यकेँ बहुभाषी काव्य-संस्कृतिक संवादमे राखबामे अछि।

दीवान परम्परा काव्य-संग्रहक संग-साथ काव्य-व्यक्तित्वक निर्माण सेहो करैत अछि। ‘दीवान-ए-विदेह’ मैथिली गजलकेँ व्यापक फ़ारसी-उर्दू-संस्कृत बहुभाषी स्मृति-संसारसँ संवाद करबैत अछि।

एहि कृतिक आलोचनामे बिम्ब, काफिया, रदीफ, विरह, प्रेम, आत्म-बोध आ भाषिक मिश्रध्वनिक अध्ययन जरूरी अछि। मैथिलीमे गजल केवल आयातित रूप नहि रहैत; ओ स्थानीय भाव-संस्कार ग्रहण कऽ नव लय बनबैत अछि।

‘दीवान-ए-विदेह’क पठनमे ध्वनि आ अर्थकेँ अलग कऽ देखल नहि जा सकैत। दू खण्डक ई काव्य-परियोजना परम्परागत ‘दीवान’ स्मृतिकेँ विदेह चेतनासँ जोड़ैत अछि। शीर्षक स्वयं भावक सुर, गति वा स्वप्न-प्रदेशक संकेत दैत अछि, आ काव्य ओकरा बिम्ब, लय, विराम आ संबोधनमे विस्तार दैत अछि।

काव्यक आलोचनात्मक मूल्य ओकर कथ्य मात्रमे नहि, ओकर कहबाक ढंगमे अछि। एहि कृतिमे शब्दक स्थान, ध्वनिक आवर्तन, पंक्तिक साँस, आ अर्थक गोपनता पाठकक अनुभव बनबैत अछि। से अनुभव तात्कालिक भावुकता सँ आगाँ जायत तँ काव्य स्मृति बनैत अछि।

स्वप्नमे मिज्झर होइत

ई काव्यात्मक शीर्षक स्वप्न आ यथार्थक मिलनक क्षण पकड़ैत अछि। मिज्झर होयब धुँधलापन नहि, बल्कि अनुभवक सीमासभक पिघलब अछि। पोथी मनुष्यक भीतरक अनिश्चितता, आकांक्षा आ स्मृतिक बहैत रूपकेँ काव्यात्मक भाषा दैत अछि।

एहि शीर्षकमे स्वप्न आ यथार्थक सीमा पिघलैत अछि। मिज्झर होयब धुँधलापन मात्र नहि, अनुभवक ओ अवस्था अछि जतय कठोर भेद नरम पड़ैत अछि।

काव्यात्मक आलोचनाक दृष्टिसँ कृति अवचेतन, स्मृति, इच्छा आ समयक मिश्र-प्रदेश खोलैत अछि। कविता तर्कक प्रतिवाद नहि करैत; ओ ओहि अनुभूतिक भाषा बनबैत अछि जे तर्कसँ पहिने वा बाद मे उपस्थित होइत अछि।

‘स्वप्नमे मिज्झर होइत’क पठनमे ध्वनि आ अर्थकेँ अलग कऽ देखल नहि जा सकैत। ई काव्यात्मक शीर्षक स्वप्न आ यथार्थक मिलनक क्षण पकड़ैत अछि। शीर्षक स्वयं भावक सुर, गति वा स्वप्न-प्रदेशक संकेत दैत अछि, आ काव्य ओकरा बिम्ब, लय, विराम आ संबोधनमे विस्तार दैत अछि।

काव्यक आलोचनात्मक मूल्य ओकर कथ्य मात्रमे नहि, ओकर कहबाक ढंगमे अछि। एहि कृतिमे शब्दक स्थान, ध्वनिक आवर्तन, पंक्तिक साँस, आ अर्थक गोपनता पाठकक अनुभव बनबैत अछि। से अनुभव तात्कालिक भावुकता सँ आगाँ जायत तँ काव्य स्मृति बनैत अछि।

समालोचना आ समालोचनाशास्त्र

समालोचना साहित्यक आत्मबोध अछि। एहि खण्डक कृतिसभ मैथिलीमे आलोचनात्मक भाषा, पद्धति आ अभिलेखीय अनुशासनक निर्माण करैत अछि। लेखक-विशेष, पत्रिका-परम्परा, शोध-लेख, प्रश्नोत्तर आ समालोचना-सिद्धान्त - ई सभ मिलि साहित्यिक सार्वजनिक क्षेत्र बनबैत अछि।

आधुनिक अकादमिक आलोचना केवल मूल्य-निर्णय नहि, पठनक विधि बनबैत अछि। एहि कृतिसभमे स्रोत, पाठ, प्रसंग, पाठक, सम्पादकीय इतिहास आ सिद्धान्तक सम्बन्ध निरन्तर बनैत-बिगड़ैत अछि। मैथिली आलोचनाक परिपक्वता एहि बातमे देखाइत अछि जे ओ प्रशंसा आ अस्वीकार दुनूकेँ प्रमाण, भाषा आ पद्धतिक अनुशासनमे राखय चाहैत अछि।

प्रबन्ध निबन्ध समालोचना सिद्धान्त आ अनुप्रयुक्त अध्ययन

ई पोथी विचार, आलोचना आ व्यवहारिक अध्ययनकेँ एकत्र करैत अछि। सिद्धान्त एतय कोरा सूत्र नहि रहैत, पाठक परीक्षणमे उतरैत अछि। सम्पादकीय दृष्टिसँ एकर महत्त्व मैथिलीमे आलोचनात्मक अनुशासनक निर्माणमे अछि, जतय तर्क, भाषा आ पाठ-संवेदना साथ चलैत अछि।

‘प्रबन्ध निबन्ध समालोचना सिद्धान्त आ अनुप्रयुक्त अध्ययन’क आलोचनात्मक महत्त्व एहि बातमे अछि जे ई मैथिली साहित्यक आत्म-पठनक परम्पराकेँ बल दैत अछि। एहन कृति लेखक वा पत्रिका पर टिप्पणी मात्र नहि करैत; ओ पाठ, प्रसंग, सम्पादकीय इतिहास आ मूल्यांकन-पद्धतिक सम्बन्ध स्पष्ट करैत अछि।

आधुनिक साहित्य-अध्ययनक कसौटीपर एहन पोथी साहित्यिक संस्थान निर्माण करैत अछि। समीक्षा, दस्तावेज, पाठकीय अनुभव आ सिद्धान्तक समन्वय मैथिली आलोचनाकेँ प्रतिक्रियात्मक लेखनसँ आगाँ विधागत अनुशासनमे बदलैत अछि।

‘प्रबन्ध निबन्ध समालोचना सिद्धान्त आ अनुप्रयुक्त अध्ययन’क विशेषता एहि बातमे अछि जे ई साहित्यकेँ स्वयं अपन भाषा मे सोचबाक अवसर दैत अछि। ई पोथी विचार, आलोचना आ व्यवहारिक अध्ययनकेँ एकत्र करैत अछि। एहन शीर्षक मैथिली आलोचनाकेँ

बाहरी मानदण्डक आश्रय मात्र नहि रहने दैत; ओ अपन पाठकीय अनुभव सँ सिद्धान्त बनएबाक दिशा खोलैत अछि।

एहि कृतिक योगदान साहित्यिक सार्वजनिक स्मृति सँ जुड़ल अछि। लेखक, पत्रिका, पाठ वा प्रश्नोत्तर जखन आलोचनाक विषय बनैत अछि, तखन साहित्यक इतिहास केवल कालक्रम नहि रहैत; ओ विचार-विमर्शक जीवित अभिलेख बनैत अछि।

नित नवल सुभाष चन्द्र यादव

ई कृति व्यक्तित्व आ कृतित्वक पुनर्पाठक संकेत दैत अछि। ‘नित नवल’ शीर्षक बतबैत अछि जे लेखक वा विषयक मूल्य एक बेरक निर्णय नहि, निरन्तर नव अर्थ ग्रहण करैत अछि। पोथीक सम्पादकीय महत्त्व जीवित आलोचना-परम्पराक संरक्षणमे अछि।

‘नित नवल सुभाष चन्द्र यादव’क आलोचनात्मक महत्त्व एहि बातमे अछि जे ई मैथिली साहित्यक आत्म-पठनक परम्पराकेँ बल दैत अछि। एहन कृति लेखक वा पत्रिका पर टिप्पणी मात्र नहि करैत; ओ पाठ, प्रसंग, सम्पादकीय इतिहास आ मूल्यांकन-पद्धतिक सम्बन्ध स्पष्ट करैत अछि।

आधुनिक साहित्य-अध्ययनक कसौटीपर एहन पोथी साहित्यिक संस्थान निर्माण करैत अछि। समीक्षा, दस्तावेज, पाठकीय अनुभव आ सिद्धान्तक समन्वय मैथिली आलोचनाकेँ प्रतिक्रियात्मक लेखनसँ आगाँ विधागत अनुशासनमे बदलैत अछि।

‘नित नवल सुभाष चन्द्र यादव’क विशेषता एहि बातमे अछि जे ई साहित्यकेँ स्वयं अपन भाषा मे सोचबाक अवसर दैत अछि। ई कृति व्यक्तित्व आ कृतित्वक पुनर्पाठक संकेत दैत अछि। एहन शीर्षक मैथिली आलोचनाकेँ बाहरी मानदण्डक आश्रय मात्र नहि रहने दैत; ओ अपन पाठकीय अनुभव सँ सिद्धान्त बनएबाक दिशा खोलैत अछि।

एहि कृतिक योगदान साहित्यिक सार्वजनिक स्मृति सँ जुड़ल अछि। लेखक, पत्रिका, पाठ वा प्रश्नोत्तर जखन आलोचनाक विषय बनैत अछि, तखन साहित्यक इतिहास केवल कालक्रम नहि रहैत; ओ विचार-विमर्शक जीवित अभिलेख बनैत अछि।

नित नवल सुशील

ई पुस्तक अपन विषयकेँ स्थिर श्रद्धांजलि नहि, नित नव दृष्टिसँ पढ़बाक प्रयत्न मानैत अछि। एहन रचनासभ साहित्यिक व्यक्तित्वक भीतरक बहुस्तर, समय-सापेक्षता आ पाठकीय पुनर्मूल्यांकनकेँ महत्व दैत अछि।

‘नित नवल सुशील’क आलोचनात्मक महत्त्व एहि बातमे अछि जे ई मैथिली साहित्यक आत्म-पठनक परम्पराकेँ बल दैत अछि। एहन कृति लेखक वा पत्रिका पर टिप्पणी मात्र नहि करैत; ओ पाठ, प्रसंग, सम्पादकीय इतिहास आ मूल्यांकन-पद्धतिक सम्बन्ध स्पष्ट करैत अछि।

आधुनिक साहित्य-अध्ययनक कसौटीपर एहन पोथी साहित्यिक संस्थान निर्माण करैत अछि। समीक्षा, दस्तावेज, पाठकीय अनुभव आ सिद्धान्तक समन्वय मैथिली आलोचनाकेँ प्रतिक्रियात्मक लेखनसँ आगाँ विधागत अनुशासनमे बदलैत अछि।

‘नित नवल सुशील’क विशेषता एहि बातमे अछि जे ई साहित्यकेँ स्वयं अपन भाषा मे सोचबाक अवसर दैत अछि। ई पुस्तक अपन विषयकेँ स्थिर श्रद्धांजलि नहि, नित नव दृष्टिसँ पढ़बाक प्रयत्न मानैत अछि। एहन शीर्षक मैथिली आलोचनाकेँ बाहरी मानदण्डक आश्रय मात्र नहि रहने दैत; ओ अपन पाठकीय अनुभव सँ सिद्धान्त बनएबाक दिशा खोलैत अछि।

एहि कृतिक योगदान साहित्यिक सार्वजनिक स्मृति सँ जुड़ल अछि। लेखक, पत्रिका, पाठ वा प्रश्नोत्तर जखन आलोचनाक विषय बनैत अछि, तखन साहित्यक इतिहास केवल कालक्रम नहि रहैत; ओ विचार-विमर्शक जीवित अभिलेख बनैत अछि।

नित नवल दिनेश कुमार मिश्र

ई शीर्षक एक साहित्यिक व्यक्तित्वक नवल पक्षसभकेँ खोजबाक आलोचनात्मक आग्रह रखैत अछि। सम्पादकीय रूपेँ पोथी लेखक, पाठक आ समयक सम्बन्धकेँ गतिशील बनबैत अछि।

‘नित नवल दिनेश कुमार मिश्र’क आलोचनात्मक महत्त्व एहि बातमे अछि जे ई मैथिली साहित्यक आत्म-पठनक परम्पराकेँ बल दैत अछि। एहन कृति लेखक वा पत्रिका पर

टिप्पणी मात्र नहि करैत; ओ पाठ, प्रसंग, सम्पादकीय इतिहास आ मूल्यांकन-पद्धतिक सम्बन्ध स्पष्ट करैत अछि।

आधुनिक साहित्य-अध्ययनक कसौटीपर एहन पोथी साहित्यिक संस्थान निर्माण करैत अछि। समीक्षा, दस्तावेज, पाठकीय अनुभव आ सिद्धान्तक समन्वय मैथिली आलोचनाकेँ प्रतिक्रियात्मक लेखनसँ आगाँ विधागत अनुशासनमे बदलैत अछि।

‘नित नवल दिनेश कुमार मिश्र’क विशेषता एहि बातमे अछि जे ई साहित्यकेँ स्वयं अपन भाषा मे सोचबाक अवसर दैत अछि। ई शीर्षक एक साहित्यिक व्यक्तित्वक नवल पक्षसभकेँ खोजबाक आलोचनात्मक आग्रह रखैत अछि। एहन शीर्षक मैथिली आलोचनाकेँ बाहरी मानदण्डक आश्रय मात्र नहि रहने दैत; ओ अपन पाठकीय अनुभव सँ सिद्धान्त बनएबाक दिशा खोलैत अछि।

एहि कृतिक योगदान साहित्यिक सार्वजनिक स्मृति सँ जुड़ल अछि। लेखक, पत्रिका, पाठ वा प्रश्नोत्तर जखन आलोचनाक विषय बनैत अछि, तखन साहित्यक इतिहास केवल कालक्रम नहि रहैत; ओ विचार-विमर्शक जीवित अभिलेख बनैत अछि।

नित नवल वृषेश चन्द्र लाल

एहि पोथीमे स्मरण आ समीक्षा एक-दोसराक पूरक बनैत अछि। ‘नित नवल’ दृष्टि रचनाकारक स्थायी प्रतिष्ठासँ आगाँ ओकर सतत प्रासंगिकताकेँ देखबाक आग्रह करैत अछि।

‘नित नवल वृषेश चन्द्र लाल’क आलोचनात्मक महत्त्व एहि बातमे अछि जे ई मैथिली साहित्यक आत्म-पठनक परम्पराकेँ बल दैत अछि। एहन कृति लेखक वा पत्रिका पर टिप्पणी मात्र नहि करैत; ओ पाठ, प्रसंग, सम्पादकीय इतिहास आ मूल्यांकन-पद्धतिक सम्बन्ध स्पष्ट करैत अछि।

आधुनिक साहित्य-अध्ययनक कसौटीपर एहन पोथी साहित्यिक संस्थान निर्माण करैत अछि। समीक्षा, दस्तावेज, पाठकीय अनुभव आ सिद्धान्तक समन्वय मैथिली आलोचनाकेँ प्रतिक्रियात्मक लेखनसँ आगाँ विधागत अनुशासनमे बदलैत अछि।

‘नित नवल वृषेश चन्द्र लाल’क विशेषता एहि बातमे अछि जे ई साहित्यकेँ स्वयं अपन भाषा मे सोचबाक अवसर दैत अछि। एहि पोथीमे स्मरण आ समीक्षा एक-दोसराक पूरक बनैत अछि। एहन शीर्षक मैथिली आलोचनाकेँ बाहरी मानदण्डक आश्रय मात्र नहि रहने दैत; ओ अपन पाठकीय अनुभव सँ सिद्धान्त बनएबाक दिशा खोलैत अछि।

एहि कृतिक योगदान साहित्यिक सार्वजनिक स्मृति सँ जुड़ल अछि। लेखक, पत्रिका, पाठ वा प्रश्नोत्तर जखन आलोचनाक विषय बनैत अछि, तखन साहित्यक इतिहास केवल कालक्रम नहि रहैत; ओ विचार-विमर्शक जीवित अभिलेख बनैत अछि।

विदेह शोध-लेख

अंक १ सँ ४४७ धरि विस्तृत शोध-लेख मैथिली बौद्धिक जीवनक दीर्घ अभिलेख अछि। एकर सम्पादकीय महत्त्व विशाल सामग्री-संग्रहमे नहि मात्र, बल्कि निरन्तर प्रश्न करबाक परम्परा निर्माणमे अछि। ई पोथी विदेहक शोध-संस्कृति, श्रम आ दस्तावेजी अनुशासनकेँ सामने आनैत अछि।

‘विदेह शोध-लेख’क आलोचनात्मक महत्त्व एहि बातमे अछि जे ई मैथिली साहित्यक आत्म-पठनक परम्पराकेँ बल दैत अछि। एहन कृति लेखक वा पत्रिका पर टिप्पणी मात्र नहि करैत; ओ पाठ, प्रसंग, सम्पादकीय इतिहास आ मूल्यांकन-पद्धतिक सम्बन्ध स्पष्ट करैत अछि।

आधुनिक साहित्य-अध्ययनक कसौटीपर एहन पोथी साहित्यिक संस्थान निर्माण करैत अछि। समीक्षा, दस्तावेज, पाठकीय अनुभव आ सिद्धान्तक समन्वय मैथिली आलोचनाकेँ प्रतिक्रियात्मक लेखनसँ आगाँ विधागत अनुशासनमे बदलैत अछि।

‘विदेह शोध-लेख’क विशेषता एहि बातमे अछि जे ई साहित्यकेँ स्वयं अपन भाषा मे सोचबाक अवसर दैत अछि। अंक १ सँ ४४७ धरि विस्तृत शोध-लेख मैथिली बौद्धिक जीवनक दीर्घ अभिलेख अछि। एहन शीर्षक मैथिली आलोचनाकेँ बाहरी मानदण्डक आश्रय मात्र नहि रहने दैत; ओ अपन पाठकीय अनुभव सँ सिद्धान्त बनएबाक दिशा खोलैत अछि।

एहि कृतिक योगदान साहित्यिक सार्वजनिक स्मृति सँ जुड़ल अछि। लेखक, पत्रिका, पाठ वा प्रश्नोत्तर जखन आलोचनाक विषय बनैत अछि, तखन साहित्यक इतिहास केवल कालक्रम नहि रहैत; ओ विचार-विमर्शक जीवित अभिलेख बनैत अछि।

विदेह सदेह १-३७ एक समालोचनात्मक आस्वादन

ई कृति पत्रिका-पाठकेँ रसात्मक आ आलोचनात्मक दुनू रूपमे ग्रहण करैत अछि। ‘आस्वादन’ शब्द बतबैत अछि जे समीक्षा केवल दोष-दर्शन नहि, पाठक अनुभवक परिपक्व विन्यास सेहो अछि।

‘विदेह सदेह १-३७ एक समालोचनात्मक आस्वादन’क आलोचनात्मक महत्त्व एहि बातमे अछि जे ई मैथिली साहित्यक आत्म-पठनक परम्पराकेँ बल दैत अछि। एहन कृति लेखक वा पत्रिका पर टिप्पणी मात्र नहि करैत; ओ पाठ, प्रसंग, सम्पादकीय इतिहास आ मूल्यांकन-पद्धतिक सम्बन्ध स्पष्ट करैत अछि।

आधुनिक साहित्य-अध्ययनक कसौटीपर एहन पोथी साहित्यिक संस्थान निर्माण करैत अछि। समीक्षा, दस्तावेज, पाठकीय अनुभव आ सिद्धान्तक समन्वय मैथिली आलोचनाकेँ प्रतिक्रियात्मक लेखनसँ आगाँ विधागत अनुशासनमे बदलैत अछि।

‘विदेह सदेह १-३७ एक समालोचनात्मक आस्वादन’क विशेषता एहि बातमे अछि जे ई साहित्यकेँ स्वयं अपन भाषा मे सोचबाक अवसर दैत अछि। ई कृति पत्रिका-पाठकेँ रसात्मक आ आलोचनात्मक दुनू रूपमे ग्रहण करैत अछि। एहन शीर्षक मैथिली आलोचनाकेँ बाहरी मानदण्डक आश्रय मात्र नहि रहने दैत; ओ अपन पाठकीय अनुभव सँ सिद्धान्त बनएबाक दिशा खोलैत अछि।

एहि कृतिक योगदान साहित्यिक सार्वजनिक स्मृति सँ जुड़ल अछि। लेखक, पत्रिका, पाठ वा प्रश्नोत्तर जखन आलोचनाक विषय बनैत अछि, तखन साहित्यक इतिहास केवल कालक्रम नहि रहैत; ओ विचार-विमर्शक जीवित अभिलेख बनैत अछि।

विदेह १-४४० विस्तृत अध्ययन

एहि अध्ययनमे दीर्घ पत्रिका-यात्राकेँ सामग्री, प्रवृत्ति, भाषा आ वैचारिक दिशाक आधारपर पढ़बाक प्रयास अछि। सम्पादकीय महत्त्व एकर अभिलेखीय दृष्टिमे अछि: समयक पृष्ठसभकेँ क्रमबद्ध रूपसँ देखब।

‘विदेह १-४४० विस्तृत अध्ययन’क आलोचनात्मक महत्त्व एहि बातमे अछि जे ई मैथिली साहित्यक आत्म-पठनक परम्पराकेँ बल दैत अछि। एहन कृति लेखक वा पत्रिका

पर टिप्पणी मात्र नहि करैत; ओ पाठ, प्रसंग, सम्पादकीय इतिहास आ मूल्यांकन-पद्धतिक सम्बन्ध स्पष्ट करैत अछि।

आधुनिक साहित्य-अध्ययनक कसौटीपर एहन पोथी साहित्यिक संस्थान निर्माण करैत अछि। समीक्षा, दस्तावेज, पाठकीय अनुभव आ सिद्धान्तक समन्वय मैथिली आलोचनाकेँ प्रतिक्रियात्मक लेखनसँ आगाँ विधागत अनुशासनमे बदलैत अछि।

‘विदेह १-४४० विस्तृत अध्ययन’क विशेषता एहि बातमे अछि जे ई साहित्यकेँ स्वयं अपन भाषा मे सोचबाक अवसर दैत अछि। एहि अध्ययनमे दीर्घ पत्रिका-यात्राकेँ सामग्री, प्रवृत्ति, भाषा आ वैचारिक दिशाक आधारपर पढ़बाक प्रयास अछि। एहन शीर्षक मैथिली आलोचनाकेँ बाहरी मानदण्डक आश्रय मात्र नहि रहने दैत; ओ अपन पाठकीय अनुभव सँ सिद्धान्त बनएबाक दिशा खोलैत अछि।

एहि कृतिक योगदान साहित्यिक सार्वजनिक स्मृति सँ जुड़ल अछि। लेखक, पत्रिका, पाठ वा प्रश्नोत्तर जखन आलोचनाक विषय बनैत अछि, तखन साहित्यक इतिहास केवल कालक्रम नहि रहैत; ओ विचार-विमर्शक जीवित अभिलेख बनैत अछि।

विदेह सदेह १-३७ विस्तृत अध्ययन

ई पोथी सीमित अंक-समूहकेँ गहिराइ सँ पढ़ि ओकर भीतरक साहित्यिक, सम्पादकीय आ सांस्कृतिक संकेत खोलैत अछि। एहन अध्ययन पत्रिका-संस्कृतिकेँ क्षणिक प्रकाशन नहि, दस्तावेज मानैत अछि।

‘विदेह सदेह १-३७ विस्तृत अध्ययन’क आलोचनात्मक महत्त्व एहि बातमे अछि जे ई मैथिली साहित्यक आत्म-पठनक परम्पराकेँ बल दैत अछि। एहन कृति लेखक वा पत्रिका पर टिप्पणी मात्र नहि करैत; ओ पाठ, प्रसंग, सम्पादकीय इतिहास आ मूल्यांकन-पद्धतिक सम्बन्ध स्पष्ट करैत अछि।

आधुनिक साहित्य-अध्ययनक कसौटीपर एहन पोथी साहित्यिक संस्थान निर्माण करैत अछि। समीक्षा, दस्तावेज, पाठकीय अनुभव आ सिद्धान्तक समन्वय मैथिली आलोचनाकेँ प्रतिक्रियात्मक लेखनसँ आगाँ विधागत अनुशासनमे बदलैत अछि।

‘विदेह सदेह १-३७ विस्तृत अध्ययन’क विशेषता एहि बातमे अछि जे ई साहित्यकेँ स्वयं अपन भाषा मे सोचबाक अवसर दैत अछि। ई पोथी सीमित अंक-समूहकेँ गहिराइ सँ पढ़ि ओकर भीतरक साहित्यिक, सम्पादकीय आ सांस्कृतिक संकेत खोलैत अछि। एहन शीर्षक मैथिली आलोचनाकेँ बाहरी मानदण्डक आश्रय मात्र नहि रहने दैत; ओ अपन पाठकीय अनुभव सँ सिद्धान्त बनएबाक दिशा खोलैत अछि।

एहि कृतिक योगदान साहित्यिक सार्वजनिक स्मृति सँ जुड़ल अछि। लेखक, पत्रिका, पाठ वा प्रश्नोत्तर जखन आलोचनाक विषय बनैत अछि, तखन साहित्यक इतिहास केवल कालक्रम नहि रहैत; ओ विचार-विमर्शक जीवित अभिलेख बनैत अछि।

विदेह क्विज मास्टर

ई पुस्तक ज्ञानकेँ प्रश्नोत्तरक जीवंत पद्धतिसँ प्रस्तुत करैत अछि। क्विज एतय मनोरंजन भरि नहि, स्मृति, तथ्य, साहित्यिक सजगता आ पाठकीय भागीदारीक उपकरण अछि। मैथिली ज्ञान-संसारकेँ लोकप्रिय रूपमे फैलएबाक दृष्टिसँ ई उल्लेखनीय अछि।

‘विदेह क्विज मास्टर’क आलोचनात्मक महत्त्व एहि बातमे अछि जे ई मैथिली साहित्यक आत्म-पठनक परम्पराकेँ बल दैत अछि। एहन कृति लेखक वा पत्रिका पर टिप्पणी मात्र नहि करैत; ओ पाठ, प्रसंग, सम्पादकीय इतिहास आ मूल्यांकन-पद्धतिक सम्बन्ध स्पष्ट करैत अछि।

आधुनिक साहित्य-अध्ययनक कसौटीपर एहन पोथी साहित्यिक संस्थान निर्माण करैत अछि। समीक्षा, दस्तावेज, पाठकीय अनुभव आ सिद्धान्तक समन्वय मैथिली आलोचनाकेँ प्रतिक्रियात्मक लेखनसँ आगाँ विधागत अनुशासनमे बदलैत अछि।

‘विदेह क्विज मास्टर’क विशेषता एहि बातमे अछि जे ई साहित्यकेँ स्वयं अपन भाषा मे सोचबाक अवसर दैत अछि। ई पुस्तक ज्ञानकेँ प्रश्नोत्तरक जीवंत पद्धतिसँ प्रस्तुत करैत अछि। एहन शीर्षक मैथिली आलोचनाकेँ बाहरी मानदण्डक आश्रय मात्र नहि रहने दैत; ओ अपन पाठकीय अनुभव सँ सिद्धान्त बनएबाक दिशा खोलैत अछि।

एहि कृतिक योगदान साहित्यिक सार्वजनिक स्मृति सँ जुड़ल अछि। लेखक, पत्रिका, पाठ वा प्रश्नोत्तर जखन आलोचनाक विषय बनैत अछि, तखन साहित्यक इतिहास केवल कालक्रम नहि रहैत; ओ विचार-विमर्शक जीवित अभिलेख बनैत अछि।

दर्शनशास्त्र

दर्शनशास्त्रक खण्ड मैथिली लेखनक बौद्धिक क्षमता पर केन्द्रित अछि। दर्शन जखन मातृभाषामे लिखल जाइत अछि, तखन ओ शास्त्रीय शब्दावलीक अनुवाद भरि नहि रहैत; ओ अनुभव, तर्क, प्रश्न आ प्रत्युत्तरक स्वदेशी विन्यास बनैत अछि।

समानान्तर दर्शनक विचार आधुनिक pluralism, comparative philosophy आ ज्ञानमीमांसीय विनम्रतासँ संवाद करैत अछि। एक पद्धति अंतिम नहि; अनेक पथ एक-दोसराकेँ प्रश्न करैत अछि। एहि खुलापनक कारण दर्शन जीवित संवाद बनैत अछि।

गजेन्द्र ठाकुरक समानान्तर दर्शन

दू खण्डक ई दर्शन-परियोजना विचारकेँ एकरेखीय परम्परासँ बाहर निकालि समानान्तर पथसभमे देखैत अछि। मैथिली आ अंग्रेजी दुनू रूपमे उपस्थित भऽ ई कृति स्थानीय भाषामे दार्शनिक चिंतनक अधिकार स्थापित करैत अछि। सम्पादकीय दृष्टिसँ एकर महत्त्व ज्ञान, भाषा आ स्वाधीन विचारक सम्बन्धमे अछि।

समानान्तर दर्शनक परियोजना एकरेखीय विचार-परम्पराक विरुद्ध खुलल बौद्धिकता प्रस्तुत करैत अछि। ई ग्रन्थ पाठककेँ सिद्धान्तक अनुयायी बनएबाक अपेक्षा विचारक सहयात्री बनबैत अछि।

दार्शनिक लेखनक मैथिली रूप अत्यन्त महत्त्वपूर्ण अछि, कारण संकल्पना जखन मातृभाषामे प्रवेश करैत अछि, तखन ओ समाजक व्यापक बौद्धिक जीवनक हिस्सा बनैत अछि। एहि कृति मे भाषा विचारक बाहरी आवरण नहि, ओकर निर्माण-क्षेत्र अछि।

‘गजेन्द्र ठाकुरक समानान्तर दर्शन’ विचारक बहुरूपता पर बल दैत अछि। दू खण्डक ई दर्शन-परियोजना विचारकेँ एकरेखीय परम्परासँ बाहर निकालि समानान्तर पथसभमे देखैत अछि। शीर्षकक ‘समानान्तर’ शब्द ई स्पष्ट करैत अछि जे विचार एकहि राजमार्गपर नहि चलैत; ओ अनेक पगडंडी, प्रतिपथ आ संवादक सहारे विकसित होइत अछि।

एहि कृतिक पठनमे भाषा स्वयं दार्शनिक घटना बनैत अछि। मैथिलीमे तर्क करब, संकल्पना गढ़ब, भेद बनएब आ प्रतिवाद करब - ई सभ काज दर्शनकेँ लोक-भाषिक जीवनसँ जोड़ैत अछि।

इतिहास

इतिहास-खण्डमे क्षेत्र, भाषा, साहित्य आ समाजक दीर्घकालिक सम्बन्धक प्रश्न उठैत अछि। मिथिला, वज्जि आ अंगक इतिहास केवल राजवंश वा तिथि-सूची नहि, बल्कि भूगोल, लोक-संस्कृति, प्रव्रजन, भाषा-विकास, पाण्डुलिपि, पत्रिका आ साहित्यिक स्मृतिक सम्मिलित अध्ययन अछि।

आधुनिक historiography स्रोतक मौन, सत्ता, archive, narrative form आ प्रमाणक दर्जा पर बल दैत अछि। एहि इतिहासकृतिसभकेँ पढ़ैत काल ई देखब आवश्यक अछि जे कोन दावा प्रत्यक्ष प्रमाणित अछि, कोन सम्भाव्य, कोन विवादित, आ कोन शोधक लेल खुलल। साहित्यिक इतिहासक ई सावधानी ओकर विश्वसनीयता बढ़बैत अछि।

ए पैरेलल हिस्ट्री ऑफ मिथिला एण्ड मैथिली लिटरेचर

चारि टोमक ई इतिहास-परियोजना मिथिला आ मैथिली साहित्यकेँ समानान्तर दृष्टिसँ पढ़बाक प्रयास अछि। इतिहास एतय राजकीय क्रम मात्र नहि, भाषा, लोक, ग्रन्थ, स्मृति आ सांस्कृतिक संघर्षक संयुक्त लेखा बनैत अछि।

‘ए पैरेलल हिस्ट्री ऑफ मिथिला एण्ड मैथिली लिटरेचर’ इतिहासकेँ घटनाक्रम भरि नहि, स्रोत, भूगोल, भाषा आ सांस्कृतिक स्मृतिक संयुक्त क्षेत्र रूपमे देखबाक आग्रह करैत अछि। मिथिला, वज्जि आ अंगक अध्ययनमे सीमा, प्रव्रजन, राजसत्ता, लोकस्मृति आ साहित्य एक-दोसरासँ अलग नहि रहैत।

आधुनिक इतिहासलेखनक दृष्टिसँ एहि कृतिक मूल्य ओकर समानान्तर पद्धतिमे अछि। एकर अर्थ ई नहि जे सभ दावा समान रूपेँ सत्य अछि; अर्थ ई जे अनेक स्रोत, मौन आ विवादक बीच निष्कर्षक दर्जा सावधानीसँ तय कएल जाए।

‘ए पैरेलल हिस्ट्री ऑफ मिथिला एण्ड मैथिली लिटरेचर’ इतिहासक क्षेत्रकेँ विस्तृत करैत अछि। चारि टोमक ई इतिहास-परियोजना मिथिला आ मैथिली साहित्यकेँ समानान्तर दृष्टिसँ पढ़बाक प्रयास अछि। एहि प्रकारक शीर्षक पाठककेँ सावधान करैत अछि जे

इतिहास केवल राज्यक कथा नहि, भाषा, साहित्य, भूगोल आ सामाजिक स्मृतिक संयुक्त गाथा अछि।

इतिहासक आलोचना मे कथनक दर्जा अत्यन्त महत्त्वपूर्ण अछि। जे दाबी दस्तावेजसँ सिद्ध अछि, जे लोकस्मृतिसँ समर्थित अछि, जे सम्भाव्य अछि, आ जे अनुमान मात्र अछि - एहि सभकेँ अलग-अलग राखल जाए तँ इतिहास विश्वसनीय आ साहित्यिक दुनू रहि सकैत अछि।

हिस्ट्री ऑफ मिथिला वज्जि एण्ड अंग इन इंडिया एण्ड नेपाल

दू खण्डक ई कृति प्रागैतिहास सँ समकालीन काल धरि विस्तृत भू-सांस्कृतिक इतिहासक दावा रखैत अछि। मिथिला, वज्जि आ अंगकेँ भारत-नेपालक साझा परिप्रेक्ष्यमे राखब एकर सम्पादकीय महत्त्व अछि।

‘हिस्ट्री ऑफ मिथिला वज्जि एण्ड अंग इन इंडिया एण्ड नेपाल’ इतिहासकेँ घटनाक्रम भरि नहि, स्रोत, भूगोल, भाषा आ सांस्कृतिक स्मृतिक संयुक्त क्षेत्र रूपमे देखबाक आग्रह करैत अछि। मिथिला, वज्जि आ अंगक अध्ययनमे सीमा, प्रव्रजन, राजसत्ता, लोकस्मृति आ साहित्य एक-दोसरासँ अलग नहि रहैत।

आधुनिक इतिहासलेखनक दृष्टिसँ एहि कृतिक मूल्य ओकर समानान्तर पद्धतिमे अछि। एकर अर्थ ई नहि जे सभ दावा समान रूपेँ सत्य अछि; अर्थ ई जे अनेक स्रोत, मौन आ विवादक बीच निष्कर्षक दर्जा सावधानीसँ तय कएल जाए।

‘हिस्ट्री ऑफ मिथिला वज्जि एण्ड अंग इन इंडिया एण्ड नेपाल’ इतिहासक क्षेत्रकेँ विस्तृत करैत अछि। दू खण्डक ई कृति प्रागैतिहास सँ समकालीन काल धरि विस्तृत भू-सांस्कृतिक इतिहासक दावा रखैत अछि। एहि प्रकारक शीर्षक पाठककेँ सावधान करैत अछि जे इतिहास केवल राज्यक कथा नहि, भाषा, साहित्य, भूगोल आ सामाजिक स्मृतिक संयुक्त गाथा अछि।

इतिहासक आलोचना मे कथनक दर्जा अत्यन्त महत्त्वपूर्ण अछि। जे दाबी दस्तावेजसँ सिद्ध अछि, जे लोकस्मृतिसँ समर्थित अछि, जे सम्भाव्य अछि, आ जे अनुमान मात्र अछि - एहि सभकेँ अलग-अलग राखल जाए तँ इतिहास विश्वसनीय आ साहित्यिक दुनू रहि सकैत अछि।

पञ्जी प्रबन्ध

पञ्जी प्रबन्धक खण्ड वंशावली-अभिलेखकेँ आधुनिक मानविकी अध्ययनक केन्द्रमे आनैत अछि। पञ्जी नामक सूची भरि नहि; ओ समाजक स्मृति, विवाह-व्यवस्था, मूल-गोत्र, ग्राम, प्रव्रजन, विद्वत्ता, स्त्री-संबंध आ मौनक जटिल अभिलेख अछि।

एहि प्रकारक ग्रन्थक आलोचना मे archive studies, microhistory, source criticism आ नव्य-न्यायक प्रमाण-विवेक सभ उपयोगी बनैत अछि। पञ्जी-पाठक अनुशासन ई माँगैत अछि जे रिक्त स्थानकेँ अनुमानसँ नहि भरल जाए, आ उपलब्ध संकेतकेँ ओकर सीमा सहित पढ़ल जाए।

डिकोडिंग द पाँजि ऑफ मिथिला

छह खण्डक ई परियोजना पञ्जीकेँ विवाह-सूची नहि, वंश, मूल, गोत्र, ग्राम, स्मृति, प्रव्रजन आ सामाजिक संरचनाक जटिल अभिलेख मानि पढ़ैत अछि। एकर सम्पादकीय महत्त्व स्रोत-समीक्षा, रिक्त स्थानक सावधानी आ अभिलेखीय भाषाक विवेकपूर्ण उद्घाटनमे अछि।

पञ्जी-विवेचनक कृति वंशावलीकेँ मृत सूची नहि मानैत। ओ नाम, मूल, गोत्र, ग्राम, विवाह, स्त्री-रेखा, उपाधि, प्रवास आ मौनकेँ सामाजिक इतिहासक संकेत-पद्धति रूपमे पढ़ैत अछि।

अभिलेखीय आलोचनाक दृष्टिसँ एकर महत्त्व अत्यन्त गहिर अछि। दस्तावेज जे कहैत अछि, ओतबे महत्त्वपूर्ण अछि जे ओ की नहि कहैत। एहि कृतिमे रिक्तता अनुमानक आमन्त्रण नहि, सावधानीक संकेत बनैत अछि।

‘डिकोडिंग द पाँजि ऑफ मिथिला’ पञ्जीकेँ खोलबाक काम करैत अछि, मुदा खोलब एतय सरल व्याख्या नहि, अनुशासित पाठ अछि। छह खण्डक ई परियोजना पञ्जीकेँ विवाह-सूची नहि, वंश, मूल, गोत्र, ग्राम, स्मृति, प्रव्रजन आ सामाजिक संरचनाक जटिल अभिलेख मानि पढ़ैत अछि। नाम, मूल, गोत्र, ग्राम आ विवाह-सूचना समाजक गहन संरचना दिस संकेत करैत अछि।

एहि कृतिक पाठक लेल सबसँ जरूरी सावधानी ई अछि जे पञ्जी के कहैत अछि आ की छिपबैत अछि, दुनू देखल जाए। अभिलेखक अधिकार जतेक महत्त्वपूर्ण अछि, ओकर मौन सेहो ओतेक महत्त्वपूर्ण। एहि द्वैतक कारण पञ्जी अध्ययन साहित्यिक, ऐतिहासिक आ समाजवैज्ञानिक तीनू क्षेत्रसँ जुड़ैत अछि।

व्याकरण रचना आ भाषा विज्ञान

व्याकरण आ भाषा-विज्ञानक खण्ड साहित्यिक परियोजनाक आधारभूमि अछि। भाषा यदि अस्थिर, असचेत वा पराधीन संरचनामे लिखल जाए तँ साहित्यक सूक्ष्मता कम भऽ जाइत अछि। एहि कारण मैथिली, ठेठी, अंगिका आ बज्जिकाक तुलनात्मक अध्ययन केवल भाषावैज्ञानिक काम नहि, साहित्यिक भविष्यक तैयारी सेहो अछि।

आधुनिक भाषा-चिन्तन मानकीकरण आ बहुलता बीच संतुलन खोजैत अछि। शुद्धता कृत्रिम कठोरता नहि; स्वाभाविक वाक्य, उचित रूप, प्रसंगानुकूल शब्द आ जीवित प्रयोगक अनुशासन अछि। एहि दृष्टिसँ ई खण्ड सम्पादन आ रचना दुनू लेल अनिवार्य अछि।

मैथिलीक एकटा समानान्तर व्याकरण रचना आ भाषा विज्ञान

ई पोथी मैथिलीकेँ ठेठी, अंगिका आ बज्जिकाक संग तुलनात्मक धरातलपर राखैत अछि। सम्पादकीय दृष्टिसँ ई भाषा-भेदकेँ विभाजन नहि, अध्ययनक अवसर मानैत अछि। व्याकरण, रचना आ भाषा-विज्ञानक संयुक्त पाठ मैथिलीक व्यापक भाषिक परिवारकेँ बुझबाक राह खोलैत अछि।

ई कृति भाषा-शुद्धिकेँ संकीर्ण निषेधमे नहि, संरचनात्मक समझमे राखैत अछि। मैथिली, ठेठी, अंगिका आ बज्जिकाक सम्बन्ध देखब भाषा-परिवारक वास्तविक जटिलता स्वीकार करब अछि।

भाषा-विज्ञानक आधुनिक दृष्टिसँ ई पोथी मानकीकरण आ बहुलता बीच संतुलन खोजैत अछि। सम्पादन, अनुवाद, शिक्षण आ रचनात्मक लेखन लेल एहन विवेक अनिवार्य अछि।

‘मैथिलीक एकटा समानान्तर व्याकरण रचना आ भाषा विज्ञान’ भाषा-सजग लेखनक आधार प्रस्तुत करैत अछि। ई पोथी मैथिलीकेँ ठेठी, अंगिका आ बज्जिकाक संग तुलनात्मक धरातलपर राखैत अछि। व्याकरण एतय नियमक डर नहि, अभिव्यक्तिक स्वच्छता आ सांस्कृतिक आत्मविश्वासक साधन अछि।

भाषा-विज्ञानक आलोचनात्मक मूल्य एहि बातमे अछि जे ओ भिन्नताकेँ अव्यवस्था नहि मानैत। ठेठी, अंगिका, बज्जिका आ मैथिली परस्पर सम्बन्धित भाषिक अनुभव छथि; हुनक तुलनात्मक अध्ययन साहित्यक अभिव्यक्ति-क्षेत्र बढ़बैत अछि।

थिसॉरस

थिसॉरसक खण्ड शब्द-संपदाक व्यवस्थित सम्बन्ध प्रस्तुत करैत अछि। शब्दकोश अर्थ बतबैत अछि; थिसॉरस अर्थ-पड़ोस देखबैत अछि। लेखक, अनुवादक आ सम्पादक लेल ई फर्क अत्यन्त महत्त्वपूर्ण अछि, कारण साहित्य मे शब्द अकेला नहि, सम्बन्धमे चमकैत अछि।

द्विदिश थिसॉरस मैथिलीकेँ ज्ञान-भाषा बनएबाक साधन अछि। अंग्रेजीसँ मैथिली आ मैथिलीसँ अंग्रेजी - ई दुनू दिशा सांस्कृतिक आवाजाहीक मार्ग खोलैत अछि। आधुनिक lexicography आ translation studies एहि प्रकारक संसाधनकेँ भाषा-समुदायक बौद्धिक आधारभूत संरचना मानैत अछि।

अंग्रेजी-मैथिली थिसॉरस

ई साधन अंग्रेजी सँ मैथिली अर्थ-संबंधक मार्ग खोलैत अछि। शब्द केवल बराबर शब्द नहि, प्रसंग, निकटार्थ, भाव-छाया आ प्रयोगक दिशा रखैत अछि। एहि दृष्टिसँ थिसॉरस अनुवादक, लेखक आ विद्यार्थी लेल भाषा-विस्तारक उपयोगी उपकरण अछि।

अंग्रेजी सँ मैथिली थिसॉरस अनुवादक लेल केवल शब्द-प्रतिस्थापनक साधन नहि। ई अर्थ-क्षेत्र, निकटार्थ, प्रयोग-छाया आ प्रसंगानुकूल चयनक मार्ग खोलैत अछि।

लेखनक दृष्टिसँ थिसॉरस भाषा-विस्तारक उपकरण अछि। जखन लेखक वा अनुवादक शब्दक आसपासक अर्थ-संबंध देखैत अछि, तखन वाक्य अधिक स्वाभाविक आ सूक्ष्म बनैत अछि।

‘अंग्रेजी-मैथिली थिसॉरस’ शब्दक सम्बन्धक ग्रन्थ अछि। ई साधन अंग्रेजी सँ मैथिली अर्थ-संबंधक मार्ग खोलैत अछि। शब्द जखन पर्याय, निकटार्थ, विपरीतार्थ, प्रसंग आ भावछाया मे देखल जाइत अछि, तखन भाषा अधिक सजग बनैत अछि।

थिसॉरसक उपयोग साहित्यिक लेखनमे विशेष महत्त्व रखैत अछि, कारण लेखककेँ केवल ‘सही’ शब्द नहि, ‘सटीक’ शब्द चाही। सटीकता अर्थ, ध्वनि, प्रसंग आ सांस्कृतिक परिचयक संयुक्त चयन अछि।

मैथिली-अंग्रेजी थिसॉरस

मैथिली सँ अंग्रेजी दिशामे ई थिसॉरस मैथिली शब्द-संपदाकेँ व्यापक संवादमे लऽ जाइत अछि। एकर महत्त्व एहि बातमे अछि जे मातृभाषाक अर्थ-गहराइ बाहरी भाषिक संसारमे प्रवेश पबैत अछि, मुदा अपन सांस्कृतिक स्वर सुरक्षित राखैत अछि।

मैथिली सँ अंग्रेजी थिसॉरस मैथिली शब्द-संपदाकेँ बाहरी पाठक-संसारसँ जोड़ैत अछि। ई प्रक्रिया एकतरफा अनुवाद नहि, अर्थ-संरचनाक प्रस्तुति अछि।

एहि कृतिक महत्त्व भाषा-नीतिक स्तरपर सेहो अछि। मैथिली जखन अपन शब्द-संबंध व्यवस्थित रूपेँ रखैत अछि, तखन ओ ज्ञान-भाषा रूपमे अपन दाबी मजबूत करैत अछि।

‘मैथिली-अंग्रेजी थिसॉरस’ शब्दक सम्बन्धक ग्रन्थ अछि। मैथिली सँ अंग्रेजी दिशामे ई थिसॉरस मैथिली शब्द-संपदाकेँ व्यापक संवादमे लऽ जाइत अछि। शब्द जखन पर्याय, निकटार्थ, विपरीतार्थ, प्रसंग आ भावछाया मे देखल जाइत अछि, तखन भाषा अधिक सजग बनैत अछि।

थिसॉरसक उपयोग साहित्यिक लेखनमे विशेष महत्त्व रखैत अछि, कारण लेखककेँ केवल ‘सही’ शब्द नहि, ‘सटीक’ शब्द चाही। सटीकता अर्थ, ध्वनि, प्रसंग आ सांस्कृतिक परिचयक संयुक्त चयन अछि।

स्वयं सीखू मार्गदर्शिका

स्वयं-शिक्षणक खण्ड साहित्यिक समग्रमे व्यवहारिक ज्ञानक प्रवेश करबैत अछि। भाषा जखन रेडियो नाटक, दृश्य-निर्माण, ध्वनि, पटकथा वा तकनीकी कौशल सिखबैत अछि, तखन ओ केवल भावक भाषा नहि रहैत; ओ आधुनिक कार्य-संसारक भाषा बनैत अछि।

एहन मार्गदर्शिकाक आलोचनात्मक मूल्य एहि बातमे अछि जे ई पाठककेँ निष्क्रिय उपभोक्ता नहि, सर्जक बनबैत अछि। मातृभाषामे सीखब सांस्कृतिक लोकतंत्रीकरणक क्रिया अछि।

कृत्रिम बुद्धि सँ वीडियो बनाउ

ई मार्गदर्शिका नूतन तकनीककेँ मैथिलीमे सीखबाक व्यवहारिक राह दैत अछि। कृत्रिम बुद्धि आधारित दृश्य-निर्माण केवल उपकरणक कौशल नहि, भाषा, कथा, दृश्य-संयोजन आ जिम्मेदार प्रयोगक प्रश्न सेहो अछि।

ई मार्गदर्शिका नूतन माध्यमक भाषा-स्वाधीनता स्थापित करैत अछि। दृश्य-निर्माण, तकनीक आ कथाक सम्बन्ध जखन मैथिलीमे सिखाओल जाइत अछि, तखन भाषा आधुनिक कौशलक क्षेत्रमे प्रवेश करैत अछि।

आधुनिक माध्यम-अध्ययनक दृष्टिसँ ई कृति महत्त्वपूर्ण अछि, कारण ओ पाठककेँ केवल दर्शक नहि, निर्माता बनबैत अछि। मातृभाषामे तकनीक सीखब सांस्कृतिक आत्मविश्वासक क्रिया अछि।

‘कृत्रिम बुद्धि सँ वीडियो बनाउ’ व्यवहारिक ज्ञानकेँ मैथिलीमे प्रतिष्ठित करैत अछि। ई मार्गदर्शिका नूतन तकनीककेँ मैथिलीमे सीखबाक व्यवहारिक राह दैत अछि। एहि प्रकारक पोथी सिद्ध करैत अछि जे मातृभाषा केवल भावक भाषा नहि, कौशल, तकनीक आ रचनात्मक अभ्यासक भाषा सेहो भऽ सकैत अछि।

मार्गदर्शिका विधाक आलोचना मे स्पष्टता, क्रम, उपयोगिता आ सृजनात्मक प्रेरणा देखल जाइत अछि। जखन पाठक पाठ पढ़ि काज करए लगैत अछि, तखन पुस्तक अपन उद्देश्य पूरा करैत अछि।

मैथिली रेडियो नाटक स्वयं सीखू मार्गदर्शिका

ई पोथी रेडियो नाटकक लेखन, ध्वनि, संवाद आ प्रस्तुति-संस्कारक दिशि मार्गदर्शन करैत अछि। मैथिलीमे ध्वनि-नाट्यक परम्परा आ आधुनिक अभ्यासक बीच सेतु बनएबाक दृष्टिसँ ई महत्त्वपूर्ण अछि।

रेडियो नाटक ध्वनि, मौन, संवाद आ श्रव्य कल्पनाक कला अछि। एहि मार्गदर्शिका मे दृश्य-अनुपस्थितिकेँ कमजोरी नहि, श्रव्य सर्जनाक अवसर मानल जा सकैत अछि।

मैथिली रेडियो-नाट्यक भविष्य लेल एहन पाठ महत्त्वपूर्ण अछि। ई लेखककेँ संवाद-संयम, ध्वनि-परिसर, पात्र-स्वर आ नाटकीय गति पर विचार करबाक अभ्यास दैत अछि।

‘मैथिली रेडियो नाटक स्वयं सीखू मार्गदर्शिका’ व्यवहारिक ज्ञानकेँ मैथिलीमे प्रतिष्ठित करैत अछि। ई पोथी रेडियो नाटकक लेखन, ध्वनि, संवाद आ प्रस्तुति-संस्कारक दिशि मार्गदर्शन करैत अछि। एहि प्रकारक पोथी सिद्ध करैत अछि जे मातृभाषा केवल भावक भाषा नहि, कौशल, तकनीक आ रचनात्मक अभ्यासक भाषा सेहो भऽ सकैत अछि।

मार्गदर्शिका विधाक आलोचना मे स्पष्टता, क्रम, उपयोगिता आ सृजनात्मक प्रेरणा देखल जाइत अछि। जखन पाठक पाठ पढ़ि काज करए लगैत अछि, तखन पुस्तक अपन उद्देश्य पूरा करैत अछि।

अनुवाद आन भाषासँ मैथिली

अनुवादक एहि खण्डमे मैथिली ग्रहणशील, चयनशील आ पुनर्रचनाशील भाषा रूपमे उपस्थित अछि। आन भाषाक पाठ मैथिलीमे आयलाक बाद केवल ‘स्थानान्तरित’ नहि होइत; ओकर शैली, सांस्कृतिक संकेत आ पाठकीय प्रभाव नव भाषा-संसारमे पुनः निर्मित होइत अछि।

अनुवाद-अध्ययनक आधुनिक दृष्टि अनुवादककेँ रचनात्मक जिम्मेदार मानैत अछि। मूलक प्रति निष्ठा आ लक्ष्य-भाषाक स्वाभाविकता बीच संतुलन बनब साहित्यिक कौशल अछि।

गजेन्द्र ठाकुर समग्र अनुवाद खण्ड

ई खण्ड आन भाषासँ मैथिलीमे साहित्यिक प्रवेशक दुआर खोलैत अछि। अनुवाद एतय बाहरी कृति केँ घर अनबाक क्रिया मात्र नहि, मैथिली भाषाक ग्रहण-शक्ति, पुनर्रचना आ सांस्कृतिक संवादक प्रमाण अछि।

एहि अनुवाद-खण्डक आलोचनात्मक महत्त्व मैथिलीक ग्रहण-क्षमतामे अछि। आन भाषाक कृति मैथिलीमे आयलाक बाद केवल परिवर्तित पाठ नहि रहैत; ओ मैथिली पाठक-संस्कारक भीतर नव अर्थ ग्रहण करैत अछि।

अनुवादक प्रक्रिया साहित्यिक परिसंचरणक आधार अछि। एहि द्वारा मैथिली बंद सांस्कृतिक कक्ष नहि, संवादशील साहित्यिक परिसर बनैत अछि।

‘गजेन्द्र ठाकुर समग्र अनुवाद खण्ड’ भाषा-सीमा पार करैत पाठक विस्तारक प्रयास अछि। ई खण्ड आन भाषासँ मैथिलीमे साहित्यिक प्रवेशक दुआर खोलैत अछि। अनुवादमे अर्थ मात्र नहि जाइत; लय, रूपक, सांस्कृतिक संकेत आ पाठकीय अपेक्षा सेहो रूप बदलैत अछि।

एहि कृतिक मूल्य एहि बातमे अछि जे ई साहित्यिक परिसंचरण बढ़बैत अछि। एक भाषा दोसरासँ भेटैत अछि, मुदा अपन स्वर हरबैत नहि; सफल अनुवाद ओहि भेटक संतुलित रूप अछि।

मूल संस्कृत सँ मैथिली आ अंग्रेजी

संस्कृत सँ मैथिली आ अंग्रेजी अनुवादक खण्ड परम्परा आ आधुनिकता बीच गम्भीर सेतु अछि। दार्शनिक ग्रन्थ, काव्य, नाटक आ प्रहसन सभक रूपान्तर अलग-अलग चुनौती रखैत अछि: कतय तर्कक सूक्ष्मता बचाबय पड़ैत अछि, कतय रस, कतय व्यंग्य, कतय मंचीय चपलता।

भारतीय काव्यशास्त्रक दृष्टिसँ एहन रूपान्तर परम्पराक पुनःप्रवेश अछि; आधुनिक translation theoryक दृष्टिसँ ई cultural transfer अछि। मैथिलीमे शास्त्रक प्रवेश साहित्यिक लोकतंत्रीकरण सेहो अछि।

भामती

वाचस्पतिक ‘भामती’क मैथिली रूपान्तर शास्त्रीय दर्शनकेँ मातृभाषाक पाठक धरि अनैत अछि। एकर सम्पादकीय महत्त्व एहि बातमे अछि जे जटिल तत्त्वचिन्तन अपन भाषामे उतरि संवादक्षम बनैत अछि।

‘भामती’क मैथिली रूपान्तर शास्त्रीय ग्रन्थकेँ नूतन भाषिक जीवन दैत अछि। अनुवादक मुख्य चुनौती केवल शब्दार्थ नहि, शैली, लय, तर्क, सांस्कृतिक संकेत आ विधागत गरिमाक संतुलन अछि।

भारतीय काव्यशास्त्र आ आधुनिक अनुवाद-अध्ययन दुनू दृष्टिसँ एहन कार्य महत्त्वपूर्ण अछि। संस्कृतक गूढ़ पाठ जखन मैथिलीमे उतरैत अछि, तखन शास्त्र सार्वजनिक बौद्धिक संवादक हिस्सा बनैत अछि।

‘भामती’क अनुवाद शास्त्रीय पाठकेँ नव पाठक समुदाय मे प्रवेश करबैत अछि। वाचस्पतिक ‘भामती’क मैथिली रूपान्तर शास्त्रीय दर्शनकेँ मातृभाषाक पाठक धरि अनैत अछि। मूलक गरिमा आ लक्ष्य-भाषाक स्वाभाविकता बीच संतुलन साधब एहन कार्यक मुख्य कसौटी अछि।

एहि प्रकारक रूपान्तर भारतीय साहित्यक निरन्तरता बचबैत अछि। शास्त्रीय ग्रन्थ संग्रहालयक वस्तु नहि रहैत; ओ मातृभाषाक जीवित वाक्यमे पुनः संवाद करए लगैत अछि।

आत्मतत्त्वविवेक

उदयनक ई दार्शनिक कृति आत्मा, प्रमाण आ तर्कक सूक्ष्म प्रश्न उठबैत अछि। मैथिली अनुवाद शास्त्रीय न्याय-विचारकेँ नव पाठकवर्ग लेल सुलभ बनबैत अछि।

‘आत्मतत्त्वविवेक’क मैथिली रूपान्तर शास्त्रीय ग्रन्थकेँ नूतन भाषिक जीवन दैत अछि। अनुवादक मुख्य चुनौती केवल शब्दार्थ नहि, शैली, लय, तर्क, सांस्कृतिक संकेत आ विधागत गरिमाक संतुलन अछि।

भारतीय काव्यशास्त्र आ आधुनिक अनुवाद-अध्ययन दुनू दृष्टिसँ एहन कार्य महत्त्वपूर्ण अछि। संस्कृतक गूढ़ पाठ जखन मैथिलीमे उतरैत अछि, तखन शास्त्र सार्वजनिक बौद्धिक संवादक हिस्सा बनैत अछि।

‘आत्मतत्त्वविवेक’क अनुवाद शास्त्रीय पाठकेँ नव पाठक समुदाय मे प्रवेश करबैत अछि। उदयनक ई दार्शनिक कृति आत्मा, प्रमाण आ तर्कक सूक्ष्म प्रश्न उठबैत अछि। मूलक गरिमा आ लक्ष्य-भाषाक स्वाभाविकता बीच संतुलन साधब एहन कार्यक मुख्य कसौटी अछि।

एहि प्रकारक रूपान्तर भारतीय साहित्यक निरन्तरता बचबैत अछि। शास्त्रीय ग्रन्थ संग्रहालयक वस्तु नहि रहैत; ओ मातृभाषाक जीवित वाक्यमे पुनः संवाद करए लगैत अछि।

न्यायकुसुमाञ्जलि

ई ग्रन्थ तर्क, ईश्वर-विचार आ न्याय-परम्पराक महत्त्वपूर्ण कड़ी अछि। मैथिलीमे एकर प्रस्तुति दर्शनक कठिन भाषाकेँ अपन सांस्कृतिक आ भाषिक धरातलपर रखैत अछि।

‘न्यायकुसुमाञ्जलि’क मैथिली रूपान्तर शास्त्रीय ग्रन्थकेँ नूतन भाषिक जीवन दैत अछि। अनुवादक मुख्य चुनौती केवल शब्दार्थ नहि, शैली, लय, तर्क, सांस्कृतिक संकेत आ विधागत गरिमाक संतुलन अछि।

भारतीय काव्यशास्त्र आ आधुनिक अनुवाद-अध्ययन दुनू दृष्टिसँ एहन कार्य महत्त्वपूर्ण अछि। संस्कृतक गूढ़ पाठ जखन मैथिलीमे उतरैत अछि, तखन शास्त्र सार्वजनिक बौद्धिक संवादक हिस्सा बनैत अछि।

‘न्यायकुसुमाञ्जलि’क अनुवाद शास्त्रीय पाठकेँ नव पाठक समुदाय मे प्रवेश करबैत अछि। ई ग्रन्थ तर्क, ईश्वर-विचार आ न्याय-परम्पराक महत्त्वपूर्ण कड़ी अछि। मूलक गरिमा आ लक्ष्य-भाषाक स्वाभाविकता बीच संतुलन साधब एहन कार्यक मुख्य कसौटी अछि।

एहि प्रकारक रूपान्तर भारतीय साहित्यक निरन्तरता बचबैत अछि। शास्त्रीय ग्रन्थ संग्रहालयक वस्तु नहि रहैत; ओ मातृभाषाक जीवित वाक्यमे पुनः संवाद करए लगैत अछि।

तत्त्वचिन्तामणि

गंगेशक ई ग्रन्थ नव्य-न्यायक मूल स्तम्भ अछि। मैथिली अनुवादक महत्त्व अतिशय अछि, कारण ई सूक्ष्म प्रमाण-चिन्तनकेँ ओहि भूभागक आधुनिक पाठकसँ जोड़ैत अछि जाहि क्षेत्रमे ई परम्परा फुलल-फलल।

‘तत्त्वचिन्तामणि’क मैथिली रूपान्तर शास्त्रीय ग्रन्थकेँ नूतन भाषिक जीवन दैत अछि। अनुवादक मुख्य चुनौती केवल शब्दार्थ नहि, शैली, लय, तर्क, सांस्कृतिक संकेत आ विधागत गरिमाक संतुलन अछि।

भारतीय काव्यशास्त्र आ आधुनिक अनुवाद-अध्ययन दुनू दृष्टिसँ एहन कार्य महत्त्वपूर्ण अछि। संस्कृतक गूढ़ पाठ जखन मैथिलीमे उतरैत अछि, तखन शास्त्र सार्वजनिक बौद्धिक संवादक हिस्सा बनैत अछि।

‘तत्त्वचिन्तामणि’क अनुवाद शास्त्रीय पाठकेँ नव पाठक समुदाय मे प्रवेश करबैत अछि। गंगेशक ई ग्रन्थ नव्य-न्यायक मूल स्तम्भ अछि। मूलक गरिमा आ लक्ष्य-भाषाक स्वाभाविकता बीच संतुलन साधब एहन कार्यक मुख्य कसौटी अछि।

एहि प्रकारक रूपान्तर भारतीय साहित्यक निरन्तरता बचबैत अछि। शास्त्रीय ग्रन्थ संग्रहालयक वस्तु नहि रहैत; ओ मातृभाषाक जीवित वाक्यमे पुनः संवाद करए लगैत अछि।

अभिज्ञानशाकुन्तलम्

कालिदासक नाटक प्रेम, स्मृति, प्रकृति आ राजधर्मक काव्यमय संगम अछि। मैथिली रूपान्तर एहि शास्त्रीय सौन्दर्यकेँ अपन भाषिक लय आ भाव-संस्कारमे पुनर्जीवित करैत अछि।

‘अभिज्ञानशाकुन्तलम्’क मैथिली रूपान्तर शास्त्रीय ग्रन्थकेँ नूतन भाषिक जीवन दैत अछि। अनुवादक मुख्य चुनौती केवल शब्दार्थ नहि, शैली, लय, तर्क, सांस्कृतिक संकेत आ विधागत गरिमाक संतुलन अछि।

भारतीय काव्यशास्त्र आ आधुनिक अनुवाद-अध्ययन दुनू दृष्टिसँ एहन कार्य महत्त्वपूर्ण अछि। संस्कृतक गूढ़ पाठ जखन मैथिलीमे उतरैत अछि, तखन शास्त्र सार्वजनिक बौद्धिक संवादक हिस्सा बनैत अछि।

‘अभिज्ञानशाकुन्तलम्’क अनुवाद शास्त्रीय पाठकेँ नव पाठक समुदाय मे प्रवेश करबैत अछि। कालिदासक नाटक प्रेम, स्मृति, प्रकृति आ राजधर्मक काव्यमय संगम अछि। मूलक गरिमा आ लक्ष्य-भाषाक स्वाभाविकता बीच संतुलन साधब एहन कार्यक मुख्य कसौटी अछि।

एहि प्रकारक रूपान्तर भारतीय साहित्यक निरन्तरता बचबैत अछि। शास्त्रीय ग्रन्थ संग्रहालयक वस्तु नहि रहैत; ओ मातृभाषाक जीवित वाक्यमे पुनः संवाद करए लगैत अछि।

आगमडम्बरम्

जयन्त भट्टक ई व्यंग्यात्मक दार्शनिक नाट्य-प्रयास शास्त्र, पाखण्ड आ बौद्धिक दम्भक परीक्षा करैत अछि। मैथिलीमे एकर रूपान्तर तर्क आ हास्य दुनूकेँ स्थानीय पाठकीय रस दैत अछि।

‘आगमडम्बरम्’क मैथिली रूपान्तर शास्त्रीय ग्रन्थकेँ नूतन भाषिक जीवन दैत अछि। अनुवादक मुख्य चुनौती केवल शब्दार्थ नहि, शैली, लय, तर्क, सांस्कृतिक संकेत आ विधागत गरिमाक संतुलन अछि।

भारतीय काव्यशास्त्र आ आधुनिक अनुवाद-अध्ययन दुनू दृष्टिसँ एहन कार्य महत्त्वपूर्ण अछि। संस्कृतक गूढ़ पाठ जखन मैथिलीमे उतरैत अछि, तखन शास्त्र सार्वजनिक बौद्धिक संवादक हिस्सा बनैत अछि।

‘आगमडम्बरम्’क अनुवाद शास्त्रीय पाठकेँ नव पाठक समुदाय मे प्रवेश करबैत अछि। जयन्त भट्टक ई व्यंग्यात्मक दार्शनिक नाट्य-प्रयास शास्त्र, पाखण्ड आ बौद्धिक दम्भक परीक्षा करैत अछि। मूलक गरिमा आ लक्ष्य-भाषाक स्वाभाविकता बीच संतुलन साधब एहन कार्यक मुख्य कसौटी अछि।

एहि प्रकारक रूपान्तर भारतीय साहित्यक निरन्तरता बचबैत अछि। शास्त्रीय ग्रन्थ संग्रहालयक वस्तु नहि रहैत; ओ मातृभाषाक जीवित वाक्यमे पुनः संवाद करए लगैत अछि।

भगवदज्जुकम्

बोधायनक प्रहसन देह, आत्मा आ सामाजिक भूमिका पर हँसीक माध्यमे गंभीर प्रश्न उठबैत अछि। मैथिली पाठमे हास्य आ दर्शनक ई संगम अत्यन्त स्वाभाविक रूपेँ खुलैत अछि।

‘भगवदज्जुकम्’क मैथिली रूपान्तर शास्त्रीय ग्रन्थकेँ नूतन भाषिक जीवन दैत अछि। अनुवादक मुख्य चुनौती केवल शब्दार्थ नहि, शैली, लय, तर्क, सांस्कृतिक संकेत आ विधागत गरिमाक संतुलन अछि।

भारतीय काव्यशास्त्र आ आधुनिक अनुवाद-अध्ययन दुनू दृष्टिसँ एहन कार्य महत्त्वपूर्ण अछि। संस्कृतक गूढ़ पाठ जखन मैथिलीमे उतरैत अछि, तखन शास्त्र सार्वजनिक बौद्धिक संवादक हिस्सा बनैत अछि।

‘भगवदज्जुकम्’क अनुवाद शास्त्रीय पाठकेँ नव पाठक समुदाय मे प्रवेश करबैत अछि। बोधायनक प्रहसन देह, आत्मा आ सामाजिक भूमिका पर हँसीक माध्यमे गंभीर प्रश्न उठबैत अछि। मूलक गरिमा आ लक्ष्य-भाषाक स्वाभाविकता बीच संतुलन साधब एहन कार्यक मुख्य कसौटी अछि।

एहि प्रकारक रूपान्तर भारतीय साहित्यक निरन्तरता बचबैत अछि। शास्त्रीय ग्रन्थ संग्रहालयक वस्तु नहि रहैत; ओ मातृभाषाक जीवित वाक्यमे पुनः संवाद करए लगैत अछि।

भल्लट-शतक

भल्लटक अन्योक्ति-काव्य संकेत, व्यंग्य आ अर्थ-गोपनक कलासँ भरल अछि। मैथिली अनुवाद एहन सूक्ष्म काव्य-कौशलकेँ अपन मुहावरा आ व्यंजना-संस्कारमे पढ़बाक अवसर दैत अछि।

‘भल्लट-शतक’क मैथिली रूपान्तर शास्त्रीय ग्रन्थकेँ नूतन भाषिक जीवन दैत अछि। अनुवादक मुख्य चुनौती केवल शब्दार्थ नहि, शैली, लय, तर्क, सांस्कृतिक संकेत आ विधागत गरिमाक संतुलन अछि।

भारतीय काव्यशास्त्र आ आधुनिक अनुवाद-अध्ययन दुनू दृष्टिसँ एहन कार्य महत्त्वपूर्ण अछि। संस्कृतक गूढ़ पाठ जखन मैथिलीमे उतरैत अछि, तखन शास्त्र सार्वजनिक बौद्धिक संवादक हिस्सा बनैत अछि।

‘भल्लट-शतक’क अनुवाद शास्त्रीय पाठकेँ नव पाठक समुदाय मे प्रवेश करबैत अछि। भल्लटक अन्योक्ति-काव्य संकेत, व्यंग्य आ अर्थ-गोपनक कलासँ भरल अछि। मूलक गरिमा आ लक्ष्य-भाषाक स्वाभाविकता बीच संतुलन साधब एहन कार्यक मुख्य कसौटी अछि।

एहि प्रकारक रूपान्तर भारतीय साहित्यक निरन्तरता बचबैत अछि। शास्त्रीय ग्रन्थ संग्रहालयक वस्तु नहि रहैत; ओ मातृभाषाक जीवित वाक्यमे पुनः संवाद करए लगैत अछि।

कलाविलास

क्षेमेन्द्रक व्यंग्य-विनोद सामाजिक आ सांस्कृतिक कपटकेँ तीक्ष्ण दृष्टिसँ देखैत अछि। मैथिली रूपान्तर एहि चिरन्तन व्यंग्यकेँ अपन समाजक बोधसँ जोड़ैत अछि।

‘कलाविलास’क मैथिली रूपान्तर शास्त्रीय ग्रन्थकेँ नूतन भाषिक जीवन दैत अछि। अनुवादक मुख्य चुनौती केवल शब्दार्थ नहि, शैली, लय, तर्क, सांस्कृतिक संकेत आ विधागत गरिमाक संतुलन अछि।

भारतीय काव्यशास्त्र आ आधुनिक अनुवाद-अध्ययन दुनू दृष्टिसँ एहन कार्य महत्त्वपूर्ण अछि। संस्कृतक गूढ़ पाठ जखन मैथिलीमे उतरैत अछि, तखन शास्त्र सार्वजनिक बौद्धिक संवादक हिस्सा बनैत अछि।

‘कलाविलास’क अनुवाद शास्त्रीय पाठकेँ नव पाठक समुदाय मे प्रवेश करबैत अछि। क्षेमेन्द्रक व्यंग्य-विनोद सामाजिक आ सांस्कृतिक कपटकेँ तीक्ष्ण दृष्टिसँ देखैत अछि। मूलक गरिमा आ लक्ष्य-भाषाक स्वाभाविकता बीच संतुलन साधब एहन कार्यक मुख्य कसौटी अछि।

एहि प्रकारक रूपान्तर भारतीय साहित्यक निरन्तरता बचबैत अछि। शास्त्रीय ग्रन्थ संग्रहालयक वस्तु नहि रहैत; ओ मातृभाषाक जीवित वाक्यमे पुनः संवाद करए लगैत अछि।

कलियुग-विडम्बना

नीलकण्ठक व्यंग्य कलियुगक उलटबाँसी आ नैतिक विघटनकेँ उजागर करैत अछि। मैथिलीमे ई कृति हास्यक भीतर छिपल सामाजिक चेतावनीकेँ तीक्ष्ण बनबैत अछि।

‘कलियुग-विडम्बना’क मैथिली रूपान्तर शास्त्रीय ग्रन्थकेँ नूतन भाषिक जीवन दैत अछि। अनुवादक मुख्य चुनौती केवल शब्दार्थ नहि, शैली, लय, तर्क, सांस्कृतिक संकेत आ विधागत गरिमाक संतुलन अछि।

भारतीय काव्यशास्त्र आ आधुनिक अनुवाद-अध्ययन दुनू दृष्टिसँ एहन कार्य महत्त्वपूर्ण अछि। संस्कृतक गूढ़ पाठ जखन मैथिलीमे उतरैत अछि, तखन शास्त्र सार्वजनिक बौद्धिक संवादक हिस्सा बनैत अछि।

‘कलियुग-विडम्बना’क अनुवाद शास्त्रीय पाठकेँ नव पाठक समुदाय मे प्रवेश करबैत अछि। नीलकण्ठक व्यंग्य कलियुगक उलटबाँसी आ नैतिक विघटनकेँ उजागर करैत अछि।

मूलक गरिमा आ लक्ष्य-भाषाक स्वाभाविकता बीच संतुलन साधब एहन कार्यक मुख्य कसौटी अछि।

एहि प्रकारक रूपान्तर भारतीय साहित्यक निरन्तरता बचबैत अछि। शास्त्रीय ग्रन्थ संग्रहालयक वस्तु नहि रहैत; ओ मातृभाषाक जीवित वाक्यमे पुनः संवाद करए लगैत अछि।

चतुर्भाण

चारि भाणक ई समूह नगरजीवन, छल, प्रेम, वाक्चातुर्य आ रंगमंचीय एकालापक अद्भुत संसार प्रस्तुत करैत अछि। मैथिली रूपान्तर नाट्य-भाषाक जीवंतता आ लोक-रंगक नव सम्भावना खोलैत अछि।

‘चतुर्भाण’क मैथिली रूपान्तर शास्त्रीय ग्रन्थकेँ नूतन भाषिक जीवन दैत अछि। अनुवादक मुख्य चुनौती केवल शब्दार्थ नहि, शैली, लय, तर्क, सांस्कृतिक संकेत आ विधागत गरिमाक संतुलन अछि।

भारतीय काव्यशास्त्र आ आधुनिक अनुवाद-अध्ययन दुनू दृष्टिसँ एहन कार्य महत्त्वपूर्ण अछि। संस्कृतक गूढ़ पाठ जखन मैथिलीमे उतरैत अछि, तखन शास्त्र सार्वजनिक बौद्धिक संवादक हिस्सा बनैत अछि।

‘चतुर्भाण’क अनुवाद शास्त्रीय पाठकेँ नव पाठक समुदाय मे प्रवेश करबैत अछि। चारि भाणक ई समूह नगरजीवन, छल, प्रेम, वाक्चातुर्य आ रंगमंचीय एकालापक अद्भुत संसार प्रस्तुत करैत अछि। मूलक गरिमा आ लक्ष्य-भाषाक स्वाभाविकता बीच संतुलन साधब एहन कार्यक मुख्य कसौटी अछि।

एहि प्रकारक रूपान्तर भारतीय साहित्यक निरन्तरता बचबैत अछि। शास्त्रीय ग्रन्थ संग्रहालयक वस्तु नहि रहैत; ओ मातृभाषाक जीवित वाक्यमे पुनः संवाद करए लगैत अछि।

दामक प्रहसनम्

प्रहसनक रूपमे ई कृति हास्य द्वारा सामाजिक व्यवहारक अतिशयोक्ति आ विसंगतिकेँ पकड़ैत अछि। मैथिली प्रस्तुति हास्यकेँ जन-भाषाक ताजगी दैत अछि।

‘दामक प्रहसनम्’क मैथिली रूपान्तर शास्त्रीय ग्रन्थकेँ नूतन भाषिक जीवन दैत अछि। अनुवादक मुख्य चुनौती केवल शब्दार्थ नहि, शैली, लय, तर्क, सांस्कृतिक संकेत आ विधागत गरिमाक संतुलन अछि।

भारतीय काव्यशास्त्र आ आधुनिक अनुवाद-अध्ययन दुनू दृष्टिसँ एहन कार्य महत्त्वपूर्ण अछि। संस्कृतक गूढ़ पाठ जखन मैथिलीमे उतरैत अछि, तखन शास्त्र सार्वजनिक बौद्धिक संवादक हिस्सा बनैत अछि।

‘दामक प्रहसनम्’क अनुवाद शास्त्रीय पाठकेँ नव पाठक समुदाय मे प्रवेश करबैत अछि। प्रहसनक रूपमे ई कृति हास्य द्वारा सामाजिक व्यवहारक अतिशयोक्ति आ विसंगतिकेँ पकड़ैत अछि। मूलक गरिमा आ लक्ष्य-भाषाक स्वाभाविकता बीच संतुलन साधब एहन कार्यक मुख्य कसौटी अछि।

एहि प्रकारक रूपान्तर भारतीय साहित्यक निरन्तरता बचबैत अछि। शास्त्रीय ग्रन्थ संग्रहालयक वस्तु नहि रहैत; ओ मातृभाषाक जीवित वाक्यमे पुनः संवाद करए लगैत अछि।

हास्यार्णवप्रहसनम्

हास्यक सागर कहब योग्य ई प्रहसन समाजक बेतुकापनकेँ मंचपर आनैत अछि। मैथिली रूपान्तरक महत्त्व हँसीकेँ आलोचनात्मक विवेकमे बदलएबामे अछि।

‘हास्यार्णवप्रहसनम्’क मैथिली रूपान्तर शास्त्रीय ग्रन्थकेँ नूतन भाषिक जीवन दैत अछि। अनुवादक मुख्य चुनौती केवल शब्दार्थ नहि, शैली, लय, तर्क, सांस्कृतिक संकेत आ विधागत गरिमाक संतुलन अछि।

भारतीय काव्यशास्त्र आ आधुनिक अनुवाद-अध्ययन दुनू दृष्टिसँ एहन कार्य महत्त्वपूर्ण अछि। संस्कृतक गूढ़ पाठ जखन मैथिलीमे उतरैत अछि, तखन शास्त्र सार्वजनिक बौद्धिक संवादक हिस्सा बनैत अछि।

‘हास्यार्णवप्रहसनम्’क अनुवाद शास्त्रीय पाठकेँ नव पाठक समुदाय मे प्रवेश करबैत अछि। हास्यक सागर कहब योग्य ई प्रहसन समाजक बेतुकापनकेँ मंचपर आनैत अछि।

मूलक गरिमा आ लक्ष्य-भाषाक स्वाभाविकता बीच संतुलन साधब एहन कार्यक मुख्य कसौटी अछि।

एहि प्रकारक रूपान्तर भारतीय साहित्यक निरन्तरता बचबैत अछि। शास्त्रीय ग्रन्थ संग्रहालयक वस्तु नहि रहैत; ओ मातृभाषाक जीवित वाक्यमे पुनः संवाद करए लगैत अछि।

कादम्बरी

बाणभट्टक ‘कादम्बरी’ संस्कृत गद्यक विलास, प्रेम, पुनर्जन्म आ कल्पनाक विराट रचना अछि। मैथिली रूपान्तर एहन अलंकारिक जगतकेँ अपन पाठकक निकट आनैत अछि।

‘कादम्बरी’क मैथिली रूपान्तर शास्त्रीय ग्रन्थकेँ नूतन भाषिक जीवन दैत अछि। अनुवादक मुख्य चुनौती केवल शब्दार्थ नहि, शैली, लय, तर्क, सांस्कृतिक संकेत आ विधागत गरिमाक संतुलन अछि।

भारतीय काव्यशास्त्र आ आधुनिक अनुवाद-अध्ययन दुनू दृष्टिसँ एहन कार्य महत्त्वपूर्ण अछि। संस्कृतक गूढ़ पाठ जखन मैथिलीमे उतरैत अछि, तखन शास्त्र सार्वजनिक बौद्धिक संवादक हिस्सा बनैत अछि।

‘कादम्बरी’क अनुवाद शास्त्रीय पाठकेँ नव पाठक समुदाय मे प्रवेश करबैत अछि। बाणभट्टक ‘कादम्बरी’ संस्कृत गद्यक विलास, प्रेम, पुनर्जन्म आ कल्पनाक विराट रचना अछि। मूलक गरिमा आ लक्ष्य-भाषाक स्वाभाविकता बीच संतुलन साधब एहन कार्यक मुख्य कसौटी अछि।

एहि प्रकारक रूपान्तर भारतीय साहित्यक निरन्तरता बचबैत अछि। शास्त्रीय ग्रन्थ संग्रहालयक वस्तु नहि रहैत; ओ मातृभाषाक जीवित वाक्यमे पुनः संवाद करए लगैत अछि।

माटिक खेलौना-गाड़ी

‘मृच्छकटिकम्’क मैथिली रूप धन, प्रेम, न्याय, राजनीति आ लोकजीवनक रंगीन नाट्य-जगत प्रस्तुत करैत अछि। शीर्षकक माटि आ खेलौना सामान्य जनक संसारकेँ प्रतिष्ठा दैत अछि।

‘माटिक खेलौना-गाड़ी’क मैथिली रूपान्तर शास्त्रीय ग्रन्थकेँ नूतन भाषिक जीवन दैत अछि। अनुवादक मुख्य चुनौती केवल शब्दार्थ नहि, शैली, लय, तर्क, सांस्कृतिक संकेत आ विधागत गरिमाक संतुलन अछि।

भारतीय काव्यशास्त्र आ आधुनिक अनुवाद-अध्ययन दुनू दृष्टिसँ एहन कार्य महत्त्वपूर्ण अछि। संस्कृतक गूढ़ पाठ जखन मैथिलीमे उतरैत अछि, तखन शास्त्र सार्वजनिक बौद्धिक संवादक हिस्सा बनैत अछि।

‘माटिक खेलौना-गाड़ी’क अनुवाद शास्त्रीय पाठकेँ नव पाठक समुदाय मे प्रवेश करबैत अछि। ‘मृच्छकटिकम्’क मैथिली रूप धन, प्रेम, न्याय, राजनीति आ लोकजीवनक रंगीन नाट्य-जगत प्रस्तुत करैत अछि। मूलक गरिमा आ लक्ष्य-भाषाक स्वाभाविकता बीच संतुलन साधब एहन कार्यक मुख्य कसौटी अछि।

एहि प्रकारक रूपान्तर भारतीय साहित्यक निरन्तरता बचबैत अछि। शास्त्रीय ग्रन्थ संग्रहालयक वस्तु नहि रहैत; ओ मातृभाषाक जीवित वाक्यमे पुनः संवाद करए लगैत अछि।

मत्तविलास प्रहसनम्

ई प्रहसन मत, मत्तता आ पाखण्डक हँसमुख आलोचना अछि। मैथिलीमे एकर ऊर्जा बोलचालक चंचलता आ व्यंग्यक धारसँ बढ़ैत अछि।

‘मत्तविलास प्रहसनम्’क मैथिली रूपान्तर शास्त्रीय ग्रन्थकेँ नूतन भाषिक जीवन दैत अछि। अनुवादक मुख्य चुनौती केवल शब्दार्थ नहि, शैली, लय, तर्क, सांस्कृतिक संकेत आ विधागत गरिमाक संतुलन अछि।

भारतीय काव्यशास्त्र आ आधुनिक अनुवाद-अध्ययन दुनू दृष्टिसँ एहन कार्य महत्त्वपूर्ण अछि। संस्कृतक गूढ़ पाठ जखन मैथिलीमे उतरैत अछि, तखन शास्त्र सार्वजनिक बौद्धिक संवादक हिस्सा बनैत अछि।

‘मत्तविलास प्रहसनम्’क अनुवाद शास्त्रीय पाठकेँ नव पाठक समुदाय मे प्रवेश करबैत अछि। ई प्रहसन मत, मत्तता आ पाखण्डक हँसमुख आलोचना अछि। मूलक गरिमा आ लक्ष्य-भाषाक स्वाभाविकता बीच संतुलन साधब एहन कार्यक मुख्य कसौटी अछि।

एहि प्रकारक रूपान्तर भारतीय साहित्यक निरन्तरता बचबैत अछि। शास्त्रीय ग्रन्थ संग्रहालयक वस्तु नहि रहैत; ओ मातृभाषाक जीवित वाक्यमे पुनः संवाद करए लगैत अछि।

मंत्री राक्षसक राजसी मोहर

‘मुद्राराक्षसम्’क ई रूपान्तर राजनीति, कूटनीति, सत्ता आ निष्ठाक जटिल खेलकेँ मैथिलीमे अनैत अछि। राजसी मोहर एतय अधिकार, चाल आ वैधताक प्रतीक बनैत अछि।

‘मंत्री राक्षसक राजसी मोहर’क मैथिली रूपान्तर शास्त्रीय ग्रन्थकेँ नूतन भाषिक जीवन दैत अछि। अनुवादक मुख्य चुनौती केवल शब्दार्थ नहि, शैली, लय, तर्क, सांस्कृतिक संकेत आ विधागत गरिमाक संतुलन अछि।

भारतीय काव्यशास्त्र आ आधुनिक अनुवाद-अध्ययन दुनू दृष्टिसँ एहन कार्य महत्त्वपूर्ण अछि। संस्कृतक गूढ़ पाठ जखन मैथिलीमे उतरैत अछि, तखन शास्त्र सार्वजनिक बौद्धिक संवादक हिस्सा बनैत अछि।

‘मंत्री राक्षसक राजसी मोहर’क अनुवाद शास्त्रीय पाठकेँ नव पाठक समुदाय मे प्रवेश करबैत अछि। ‘मुद्राराक्षसम्’क ई रूपान्तर राजनीति, कूटनीति, सत्ता आ निष्ठाक जटिल खेलकेँ मैथिलीमे अनैत अछि। मूलक गरिमा आ लक्ष्य-भाषाक स्वाभाविकता बीच संतुलन साधब एहन कार्यक मुख्य कसौटी अछि।

एहि प्रकारक रूपान्तर भारतीय साहित्यक निरन्तरता बचबैत अछि। शास्त्रीय ग्रन्थ संग्रहालयक वस्तु नहि रहैत; ओ मातृभाषाक जीवित वाक्यमे पुनः संवाद करए लगैत अछि।

पालाण्डुमण्डन प्रहसनम्

ई प्रहसन सामाजिक स्वाद, दम्भ आ भाषिक चातुर्यक संग खेलैत अछि। मैथिली रूपान्तर हास्य-विनोदकेँ अपन लोक-बोलीक सरसता प्रदान करैत अछि।

‘पालाण्डुमण्डन प्रहसनम्’क मैथिली रूपान्तर शास्त्रीय ग्रन्थकेँ नूतन भाषिक जीवन दैत अछि। अनुवादक मुख्य चुनौती केवल शब्दार्थ नहि, शैली, लय, तर्क, सांस्कृतिक संकेत आ विधागत गरिमाक संतुलन अछि।

भारतीय काव्यशास्त्र आ आधुनिक अनुवाद-अध्ययन दुनू दृष्टिसँ एहन कार्य महत्त्वपूर्ण अछि। संस्कृतक गूढ़ पाठ जखन मैथिलीमे उतरैत अछि, तखन शास्त्र सार्वजनिक बौद्धिक संवादक हिस्सा बनैत अछि।

‘पालाण्डुमण्डन प्रहसनम्’क अनुवाद शास्त्रीय पाठकेँ नव पाठक समुदाय मे प्रवेश करबैत अछि। ई प्रहसन सामाजिक स्वाद, दम्भ आ भाषिक चातुर्यक संग खेलैत अछि। मूलक गरिमा आ लक्ष्य-भाषाक स्वाभाविकता बीच संतुलन साधब एहन कार्यक मुख्य कसौटी अछि।

एहि प्रकारक रूपान्तर भारतीय साहित्यक निरन्तरता बचबैत अछि। शास्त्रीय ग्रन्थ संग्रहालयक वस्तु नहि रहैत; ओ मातृभाषाक जीवित वाक्यमे पुनः संवाद करए लगैत अछि।

उत्तररामचरितम्

भवभूतिक ई नाटक रामक उत्तरकथा मार्फत धर्म, प्रेम, त्याग, राज्य आ करुणाक गहन प्रश्न उठबैत अछि। मैथिली रूपान्तर करुण रसक सूक्ष्म कम्पनकेँ अपन भाषामे अनुभव करबैत अछि।

‘उत्तररामचरितम्’क मैथिली रूपान्तर शास्त्रीय ग्रन्थकेँ नूतन भाषिक जीवन दैत अछि। अनुवादक मुख्य चुनौती केवल शब्दार्थ नहि, शैली, लय, तर्क, सांस्कृतिक संकेत आ विधागत गरिमाक संतुलन अछि।

भारतीय काव्यशास्त्र आ आधुनिक अनुवाद-अध्ययन दुनू दृष्टिसँ एहन कार्य महत्त्वपूर्ण अछि। संस्कृतक गूढ़ पाठ जखन मैथिलीमे उतरैत अछि, तखन शास्त्र सार्वजनिक बौद्धिक संवादक हिस्सा बनैत अछि।

‘उत्तररामचरितम्’क अनुवाद शास्त्रीय पाठकेँ नव पाठक समुदाय मे प्रवेश करबैत अछि। भवभूतिक ई नाटक रामक उत्तरकथा मार्फत धर्म, प्रेम, त्याग, राज्य आ करुणाक गहन प्रश्न उठबैत अछि। मूलक गरिमा आ लक्ष्य-भाषाक स्वाभाविकता बीच संतुलन साधब एहन कार्यक मुख्य कसौटी अछि।

एहि प्रकारक रूपान्तर भारतीय साहित्यक निरन्तरता बचबैत अछि। शास्त्रीय ग्रन्थ संग्रहालयक वस्तु नहि रहैत; ओ मातृभाषाक जीवित वाक्यमे पुनः संवाद करए लगैत अछि।

अनुवाद मैथिलीसँ अंग्रेजी

मैथिलीसँ अंग्रेजी अनुवादक खण्ड विश्व-साहित्यक प्रश्न उठबैत अछि। मैथिली स्रोत-पाठ जखन अंग्रेजीमे जाइत अछि, तखन ओकर लोक-संकेत, स्थानिकता, नाम, बिम्ब, व्यंग्य, गीतात्मकता आ सांस्कृतिक घनत्वकेँ कोना बचाओल जाए - ई मुख्य चुनौती बनैत अछि।

एहि अनुवादसभक महत्त्व एहि बातमे अछि जे मैथिली केवल आन साहित्य ग्रहण करैत भाषा नहि, अपन साहित्य बाहर पठबैत भाषा अछि। विश्व-साहित्यक मानचित्रमे प्रवेश करैत काल प्रत्येक अनुवाद स्रोत-संस्कृतिक प्रतिनिधित्व सेहो करैत अछि।

वाटर-बेरियल अमंग द क्रोकोडाइल्स

मैथिली कृतिक अंग्रेजी रूपान्तर जलसमाधिक संसारकेँ व्यापक पाठकवर्ग धरि पहुँचबैत अछि। ई अनुवाद मिथिलाक जल-स्मृति, भय आ सामाजिक संघर्षकेँ आन भाषिक संसारमे संवादक्षम बनबैत अछि।

‘वाटर-बेरियल अमंग द क्रोकोडाइल्स’ मैथिली स्रोत-पाठक अंग्रेजी प्रवेश अछि। एहि प्रवेशमे मूलक सांस्कृतिक घनत्व, नाम, रूपक, लोक-संकेत आ भाव-लय सुरक्षित राखब अनुवादक प्रमुख चुनौती अछि।

विश्व-साहित्यक दृष्टिसँ एहन अनुवाद मैथिलीकेँ ग्रहणशील भाषा नहि, प्रदाता भाषा बनबैत अछि। पाठ जखन भाषिक सीमा पार करैत अछि, तखन ओकर अर्थ बदलैत सेहो अछि आ फैलैत सेहो।

‘वाटर-बेरियल अमंग द क्रोकोडाइल्स’ भाषा-सीमा पार करैत पाठक विस्तारक प्रयास अछि। मैथिली कृतिक अंग्रेजी रूपान्तर जलसमाधिक संसारकेँ व्यापक पाठकवर्ग धरि पहुँचबैत अछि। अनुवादमे अर्थ मात्र नहि जाइत; लय, रूपक, सांस्कृतिक संकेत आ पाठकीय अपेक्षा सेहो रूप बदलैत अछि।

एहि कृतिक मूल्य एहि बातमे अछि जे ई साहित्यिक परिसंचरण बढ़बैत अछि। एक भाषा दोसरासँ भेटैत अछि, मुदा अपन स्वर हरबैत नहि; सफल अनुवाद ओहि भेटक संतुलित रूप अछि।

३७ मैथिली बाल उपन्यासक अंग्रेजी अनुवाद

ई अनुवाद-समूह मैथिली बाल-साहित्यकेँ भारतीय आ वैश्विक बाल-पाठक धरि लऽ जाइत अछि। लोककथा, साहस आ संस्कारक मैथिली संसार अंग्रेजी माध्यमे नव पाठकीय जीवन पबैत अछि।

‘३७ मैथिली बाल उपन्यासक अंग्रेजी अनुवाद’ मैथिली स्रोत-पाठक अंग्रेजी प्रवेश अछि। एहि प्रवेशमे मूलक सांस्कृतिक घनत्व, नाम, रूपक, लोक-संकेत आ भाव-लय सुरक्षित राखब अनुवादक प्रमुख चुनौती अछि।

विश्व-साहित्यक दृष्टिसँ एहन अनुवाद मैथिलीकेँ ग्रहणशील भाषा नहि, प्रदाता भाषा बनबैत अछि। पाठ जखन भाषिक सीमा पार करैत अछि, तखन ओकर अर्थ बदलैत सेहो अछि आ फैलैत सेहो।

‘३७ मैथिली बाल उपन्यासक अंग्रेजी अनुवाद’ भाषा-सीमा पार करैत पाठक विस्तारक प्रयास अछि। ई अनुवाद-समूह मैथिली बाल-साहित्यकेँ भारतीय आ वैश्विक बाल-पाठक धरि लऽ जाइत अछि। अनुवादमे अर्थ मात्र नहि जाइत; लय, रूपक, सांस्कृतिक संकेत आ पाठकीय अपेक्षा सेहो रूप बदलैत अछि।

एहि कृतिक मूल्य एहि बातमे अछि जे ई साहित्यिक परिसंचरण बढ़बैत अछि। एक भाषा दोसरासँ भेटैत अछि, मुदा अपन स्वर हरबैत नहि; सफल अनुवाद ओहि भेटक संतुलित रूप अछि।

द ट्रान्सलेटर

‘अनुवादक’क अंग्रेजी रूप भाषा, श्रम, विधि आ नैतिक संकटक कथा केँ विस्तृत पाठक-संसारमे अनैत अछि। अनुवाद विषयक उपन्यासक स्वयं अनुवादित होयब एक सुन्दर आत्म-संदर्भ सेहो बनैत अछि।

‘द ट्रान्सलेटर’ मैथिली स्रोत-पाठक अंग्रेजी प्रवेश अछि। एहि प्रवेशमे मूलक सांस्कृतिक घनत्व, नाम, रूपक, लोक-संकेत आ भाव-लय सुरक्षित राखब अनुवादक प्रमुख चुनौती अछि।

विश्व-साहित्यक दृष्टिसँ एहन अनुवाद मैथिलीकेँ ग्रहणशील भाषा नहि, प्रदाता भाषा बनबैत अछि। पाठ जखन भाषिक सीमा पार करैत अछि, तखन ओकर अर्थ बदलैत सेहो अछि आ फैलैत सेहो।

‘द ट्रान्सलेटर’ भाषा-सीमा पार करैत पाठक विस्तारक प्रयास अछि। ‘अनुवादक’क अंग्रेजी रूप भाषा, श्रम, विधि आ नैतिक संकटक कथा केँ विस्तृत पाठक-संसारमे अनैत अछि। अनुवादमे अर्थ मात्र नहि जाइत; लय, रूपक, सांस्कृतिक संकेत आ पाठकीय अपेक्षा सेहो रूप बदलैत अछि।

एहि कृतिक मूल्य एहि बातमे अछि जे ई साहित्यिक परिसंचरण बढ़बैत अछि। एक भाषा दोसरासँ भेटैत अछि, मुदा अपन स्वर हरबैत नहि; सफल अनुवाद ओहि भेटक संतुलित रूप अछि।

नव्य न्याय एण्ड द ऑफशोर ग्याम्बलिंग वेब

ई अंग्रेजी रूपान्तर मैथिली नव्य-न्यायीय तर्क आ आधुनिक डिजिटल अपराधक कथाकेँ वैश्विक विधिक-तकनीकी विमर्शसँ जोड़ैत अछि।

‘नव्य न्याय एण्ड द ऑफशोर ग्याम्बलिंग वेब’ मैथिली स्रोत-पाठक अंग्रेजी प्रवेश अछि। एहि प्रवेशमे मूलक सांस्कृतिक घनत्व, नाम, रूपक, लोक-संकेत आ भाव-लय सुरक्षित राखब अनुवादक प्रमुख चुनौती अछि।

विश्व-साहित्यक दृष्टिसँ एहन अनुवाद मैथिलीकेँ ग्रहणशील भाषा नहि, प्रदाता भाषा बनबैत अछि। पाठ जखन भाषिक सीमा पार करैत अछि, तखन ओकर अर्थ बदलैत सेहो अछि आ फैलैत सेहो।

‘नव्य न्याय एण्ड द ऑफशोर ग्याम्बलिंग वेब’ भाषा-सीमा पार करैत पाठक विस्तारक प्रयास अछि। ई अंग्रेजी रूपान्तर मैथिली नव्य-न्यायीय तर्क आ आधुनिक डिजिटल अपराधक कथाकेँ वैश्विक विधिक-तकनीकी विमर्शसँ जोड़ैत अछि। अनुवादमे अर्थ मात्र नहि जाइत; लय, रूपक, सांस्कृतिक संकेत आ पाठकीय अपेक्षा सेहो रूप बदलैत अछि।

एहि कृतिक मूल्य एहि बातमे अछि जे ई साहित्यिक परिसंचरण बढ़बैत अछि। एक भाषा दोसरासँ भेटैत अछि, मुदा अपन स्वर हरबैत नहि; सफल अनुवाद ओहि भेटक संतुलित रूप अछि।

मंगूस अमंग द मॉनिटर लिजार्ड्स

‘बिज्जी: गोहि सभक बीच’क अंग्रेजी रूप कमजोर आ चतुर जीवक संघर्षक रूपककेँ नव भाषिक विस्तार दैत अछि।

‘मंगूस अमंग द मॉनिटर लिजार्ड्स’ मैथिली स्रोत-पाठक अंग्रेजी प्रवेश अछि। एहि प्रवेशमे मूलक सांस्कृतिक घनत्व, नाम, रूपक, लोक-संकेत आ भाव-लय सुरक्षित राखब अनुवादक प्रमुख चुनौती अछि।

विश्व-साहित्यक दृष्टिसँ एहन अनुवाद मैथिलीकेँ ग्रहणशील भाषा नहि, प्रदाता भाषा बनबैत अछि। पाठ जखन भाषिक सीमा पार करैत अछि, तखन ओकर अर्थ बदलैत सेहो अछि आ फैलैत सेहो।

‘मंगूस अमंग द मॉनिटर लिजार्ड्स’ भाषा-सीमा पार करैत पाठक विस्तारक प्रयास अछि। ‘बिज्जी: गोहि सभक बीच’क अंग्रेजी रूप कमजोर आ चतुर जीवक संघर्षक रूपककेँ नव भाषिक विस्तार दैत अछि। अनुवादमे अर्थ मात्र नहि जाइत; लय, रूपक, सांस्कृतिक संकेत आ पाठकीय अपेक्षा सेहो रूप बदलैत अछि।

एहि कृतिक मूल्य एहि बातमे अछि जे ई साहित्यिक परिसंचरण बढ़बैत अछि। एक भाषा दोसरासँ भेटैत अछि, मुदा अपन स्वर हरबैत नहि; सफल अनुवाद ओहि भेटक संतुलित रूप अछि।

द सेवन्थ विटनेस

‘सातम साक्षी’क अंग्रेजी अनुवाद सत्य, गवाही आ अंत:करणक प्रश्नकेँ बहुभाषी पाठक धरि लऽ जाइत अछि।

‘द सेवन्थ विटनेस’ मैथिली स्रोत-पाठक अंग्रेजी प्रवेश अछि। एहि प्रवेशमे मूलक सांस्कृतिक घनत्व, नाम, रूपक, लोक-संकेत आ भाव-लय सुरक्षित राखब अनुवादक प्रमुख चुनौती अछि।

विश्व-साहित्यक दृष्टिसँ एहन अनुवाद मैथिलीकेँ ग्रहणशील भाषा नहि, प्रदाता भाषा बनबैत अछि। पाठ जखन भाषिक सीमा पार करैत अछि, तखन ओकर अर्थ बदलैत सेहो अछि आ फैलैत सेहो।

‘द सेवन्थ विटनेस’ भाषा-सीमा पार करैत पाठक विस्तारक प्रयास अछि। ‘सातम साक्षी’क अंग्रेजी अनुवाद सत्य, गवाही आ अंतःकरणक प्रश्नकेँ बहुभाषी पाठक धरि लऽ जाइत अछि। अनुवादमे अर्थ मात्र नहि जाइत; लय, रूपक, सांस्कृतिक संकेत आ पाठकीय अपेक्षा सेहो रूप बदलैत अछि।

एहि कृतिक मूल्य एहि बातमे अछि जे ई साहित्यिक परिसंचरण बढ़बैत अछि। एक भाषा दोसरासँ भेटैत अछि, मुदा अपन स्वर हरबैत नहि; सफल अनुवाद ओहि भेटक संतुलित रूप अछि।

द नेम रिटन विदिन द लीफ

‘पातक भीतर लिखल नाँव’क अंग्रेजी रूप स्मृति आ संकेतक सूक्ष्म कथाभाषाकेँ अनुवादक माध्यमे नव जीवन दैत अछि।

‘द नेम रिटन विदिन द लीफ’ मैथिली स्रोत-पाठक अंग्रेजी प्रवेश अछि। एहि प्रवेशमे मूलक सांस्कृतिक घनत्व, नाम, रूपक, लोक-संकेत आ भाव-लय सुरक्षित राखब अनुवादक प्रमुख चुनौती अछि।

विश्व-साहित्यक दृष्टिसँ एहन अनुवाद मैथिलीकेँ ग्रहणशील भाषा नहि, प्रदाता भाषा बनबैत अछि। पाठ जखन भाषिक सीमा पार करैत अछि, तखन ओकर अर्थ बदलैत सेहो अछि आ फैलैत सेहो।

‘द नेम रिटन विदिन द लीफ’ भाषा-सीमा पार करैत पाठक विस्तारक प्रयास अछि। ‘पातक भीतर लिखल नाँव’क अंग्रेजी रूप स्मृति आ संकेतक सूक्ष्म कथाभाषाकेँ अनुवादक माध्यमे नव जीवन दैत अछि। अनुवादमे अर्थ मात्र नहि जाइत; लय, रूपक, सांस्कृतिक संकेत आ पाठकीय अपेक्षा सेहो रूप बदलैत अछि।

एहि कृतिक मूल्य एहि बातमे अछि जे ई साहित्यिक परिसंचरण बढ़बैत अछि। एक भाषा दोसरासँ भेटैत अछि, मुदा अपन स्वर हरबैत नहि; सफल अनुवाद ओहि भेटक संतुलित रूप अछि।

जल-पाँजि वाटर रजिस्टर

ई अनुवाद जल, अभिलेख आ स्मृतिक मैथिली रूपककेँ अंग्रेजी पाठकसँ संवाद करबैत अछि। शीर्षकक द्विभाषिकता स्वयं पोथीक सेतुत्वकेँ प्रकट करैत अछि।

‘जल-पाँजि वाटर रजिस्टर’ मैथिली स्रोत-पाठक अंग्रेजी प्रवेश अछि। एहि प्रवेशमे मूलक सांस्कृतिक घनत्व, नाम, रूपक, लोक-संकेत आ भाव-लय सुरक्षित राखब अनुवादक प्रमुख चुनौती अछि।

विश्व-साहित्यक दृष्टिसँ एहन अनुवाद मैथिलीकेँ ग्रहणशील भाषा नहि, प्रदाता भाषा बनबैत अछि। पाठ जखन भाषिक सीमा पार करैत अछि, तखन ओकर अर्थ बदलैत सेहो अछि आ फैलैत सेहो।

‘जल-पाँजि वाटर रजिस्टर’ भाषा-सीमा पार करैत पाठक विस्तारक प्रयास अछि। ई अनुवाद जल, अभिलेख आ स्मृतिक मैथिली रूपककेँ अंग्रेजी पाठकसँ संवाद करबैत अछि। अनुवादमे अर्थ मात्र नहि जाइत; लय, रूपक, सांस्कृतिक संकेत आ पाठकीय अपेक्षा सेहो रूप बदलैत अछि।

एहि कृतिक मूल्य एहि बातमे अछि जे ई साहित्यिक परिसंचरण बढ़बैत अछि। एक भाषा दोसरासँ भेटैत अछि, मुदा अपन स्वर हरबैत नहि; सफल अनुवाद ओहि भेटक संतुलित रूप अछि।

लाइट स्टोरीज अक्रॉस लाइफटाइम्स

‘इजोत जनम-जनमक कथा’क अंग्रेजी रूप प्रकाश आ पीढ़ीगत स्मृतिक कथा कैँ विस्तृत पाठकीय क्षितिज दैत अछि।

‘लाइट स्टोरीज अक्रॉस लाइफटाइम्स’ मैथिली स्रोत-पाठक अंग्रेजी प्रवेश अछि। एहि प्रवेशमे मूलक सांस्कृतिक घनत्व, नाम, रूपक, लोक-संकेत आ भाव-लय सुरक्षित राखब अनुवादक प्रमुख चुनौती अछि।

विश्व-साहित्यक दृष्टिसँ एहन अनुवाद मैथिलीकेँ ग्रहणशील भाषा नहि, प्रदाता भाषा बनबैत अछि। पाठ जखन भाषिक सीमा पार करैत अछि, तखन ओकर अर्थ बदलैत सेहो अछि आ फैलैत सेहो।

‘लाइट स्टोरीज अक्रॉस लाइफटाइम्स’ भाषा-सीमा पार करैत पाठक विस्तारक प्रयास अछि। ‘इजोत जनम-जनमक कथा’क अंग्रेजी रूप प्रकाश आ पीढ़ीगत स्मृतिक कथा केँ विस्तृत पाठकीय क्षितिज दैत अछि। अनुवादमे अर्थ मात्र नहि जाइत; लय, रूपक, सांस्कृतिक संकेत आ पाठकीय अपेक्षा सेहो रूप बदलैत अछि।

एहि कृतिक मूल्य एहि बातमे अछि जे ई साहित्यिक परिसंचरण बढ़बैत अछि। एक भाषा दोसरासँ भेटैत अछि, मुदा अपन स्वर हरबैत नहि; सफल अनुवाद ओहि भेटक संतुलित रूप अछि।

द अदर साइड ऑफ मेमरी

‘स्मृतिक दोसर दिस’क अंग्रेजी अनुवाद स्मृतिक अनकहल पक्षसभकेँ आन भाषिक अनुभवमे बदलैत अछि।

‘द अदर साइड ऑफ मेमरी’ मैथिली स्रोत-पाठक अंग्रेजी प्रवेश अछि। एहि प्रवेशमे मूलक सांस्कृतिक घनत्व, नाम, रूपक, लोक-संकेत आ भाव-लय सुरक्षित राखब अनुवादक प्रमुख चुनौती अछि।

विश्व-साहित्यक दृष्टिसँ एहन अनुवाद मैथिलीकेँ ग्रहणशील भाषा नहि, प्रदाता भाषा बनबैत अछि। पाठ जखन भाषिक सीमा पार करैत अछि, तखन ओकर अर्थ बदलैत सेहो अछि आ फैलैत सेहो।

‘द अदर साइड ऑफ मेमरी’ भाषा-सीमा पार करैत पाठक विस्तारक प्रयास अछि। ‘स्मृतिक दोसर दिस’क अंग्रेजी अनुवाद स्मृतिक अनकहल पक्षसभकेँ आन भाषिक अनुभवमे बदलैत अछि। अनुवादमे अर्थ मात्र नहि जाइत; लय, रूपक, सांस्कृतिक संकेत आ पाठकीय अपेक्षा सेहो रूप बदलैत अछि।

एहि कृतिक मूल्य एहि बातमे अछि जे ई साहित्यिक परिसंचरण बढ़बैत अछि। एक भाषा दोसरासँ भेटैत अछि, मुदा अपन स्वर हरबैत नहि; सफल अनुवाद ओहि भेटक संतुलित रूप अछि।

द हन्ड्रेड-स्टोरी ट्रिलजी

‘कथा-शतत्रयी’क अंग्रेजी रूप कथा-विस्तार आ विविध जीवनानुभवकेँ व्यापक साहित्यिक परिप्रेक्ष्यमे रखैत अछि।

‘द हन्ड्रेड-स्टोरी ट्रिलजी’ मैथिली स्रोत-पाठक अंग्रेजी प्रवेश अछि। एहि प्रवेशमे मूलक सांस्कृतिक घनत्व, नाम, रूपक, लोक-संकेत आ भाव-लय सुरक्षित राखब अनुवादक प्रमुख चुनौती अछि।

विश्व-साहित्यक दृष्टिसँ एहन अनुवाद मैथिलीकेँ ग्रहणशील भाषा नहि, प्रदाता भाषा बनबैत अछि। पाठ जखन भाषिक सीमा पार करैत अछि, तखन ओकर अर्थ बदलैत सेहो अछि आ फैलैत सेहो।

‘द हन्ड्रेड-स्टोरी ट्रिलजी’ भाषा-सीमा पार करैत पाठक विस्तारक प्रयास अछि। ‘कथा-शतत्रयी’क अंग्रेजी रूप कथा-विस्तार आ विविध जीवनानुभवकेँ व्यापक साहित्यिक परिप्रेक्ष्यमे रखैत अछि। अनुवादमे अर्थ मात्र नहि जाइत; लय, रूपक, सांस्कृतिक संकेत आ पाठकीय अपेक्षा सेहो रूप बदलैत अछि।

एहि कृतिक मूल्य एहि बातमे अछि जे ई साहित्यिक परिसंचरण बढ़बैत अछि। एक भाषा दोसरासँ भेटैत अछि, मुदा अपन स्वर हरबैत नहि; सफल अनुवाद ओहि भेटक संतुलित रूप अछि।

थ्री स्ट्रीम्स ऑफ स्टोरीज

‘कथा-त्रिधारा’क अंग्रेजी रूप तीन प्रवाहक कथात्मक ऊर्जा केँ नव पाठक-समुदाय धरि पहुँचबैत अछि।

‘थ्री स्ट्रीम्स ऑफ स्टोरीज’ मैथिली स्रोत-पाठक अंग्रेजी प्रवेश अछि। एहि प्रवेशमे मूलक सांस्कृतिक घनत्व, नाम, रूपक, लोक-संकेत आ भाव-लय सुरक्षित राखब अनुवादक प्रमुख चुनौती अछि।

विश्व-साहित्यक दृष्टिसँ एहन अनुवाद मैथिलीकेँ ग्रहणशील भाषा नहि, प्रदाता भाषा बनबैत अछि। पाठ जखन भाषिक सीमा पार करैत अछि, तखन ओकर अर्थ बदलैत सेहो अछि आ फैलैत सेहो।

‘थ्री स्ट्रीम्स ऑफ स्टोरीज’ भाषा-सीमा पार करैत पाठक विस्तारक प्रयास अछि। ‘कथा-त्रिधारा’क अंग्रेजी रूप तीन प्रवाहक कथात्मक ऊर्जा केँ नव पाठक-समुदाय धरि पहुँचबैत अछि। अनुवादमे अर्थ मात्र नहि जाइत; लय, रूपक, सांस्कृतिक संकेत आ पाठकीय अपेक्षा सेहो रूप बदलैत अछि।

एहि कृतिक मूल्य एहि बातमे अछि जे ई साहित्यिक परिसंचरण बढ़बैत अछि। एक भाषा दोसरासँ भेटैत अछि, मुदा अपन स्वर हरबैत नहि; सफल अनुवाद ओहि भेटक संतुलित रूप अछि।

व्हेन ड्रीम्स मर्ज

‘स्वप्नमे मिज्झर होइत’क अंग्रेजी रूप स्वप्न, स्मृति आ यथार्थक काव्यात्मक मिलनकेँ भाषान्तरित करैत अछि।

‘व्हेन ड्रीम्स मर्ज’ मैथिली स्रोत-पाठक अंग्रेजी प्रवेश अछि। एहि प्रवेशमे मूलक सांस्कृतिक घनत्व, नाम, रूपक, लोक-संकेत आ भाव-लय सुरक्षित राखब अनुवादक प्रमुख चुनौती अछि।

विश्व-साहित्यक दृष्टिसँ एहन अनुवाद मैथिलीकेँ ग्रहणशील भाषा नहि, प्रदाता भाषा बनबैत अछि। पाठ जखन भाषिक सीमा पार करैत अछि, तखन ओकर अर्थ बदलैत सेहो अछि आ फैलैत सेहो।

‘व्हेन ड्रीम्स मर्ज’ भाषा-सीमा पार करैत पाठक विस्तारक प्रयास अछि। ‘स्वप्नमे मिज्झर होइत’क अंग्रेजी रूप स्वप्न, स्मृति आ यथार्थक काव्यात्मक मिलनकेँ भाषान्तरित करैत अछि। अनुवादमे अर्थ मात्र नहि जाइत; लय, रूपक, सांस्कृतिक संकेत आ पाठकीय अपेक्षा सेहो रूप बदलैत अछि।

एहि कृतिक मूल्य एहि बातमे अछि जे ई साहित्यिक परिसंचरण बढ़बैत अछि। एक भाषा दोसरासँ भेटैत अछि, मुदा अपन स्वर हरबैत नहि; सफल अनुवाद ओहि भेटक संतुलित रूप अछि।

द ब्लैक बी इज स्लीपिंग अटॉप द माउन्टेन

‘पर्वत ऊपर भमरा जे सूतल’क अंग्रेजी अनुवाद शीर्षकीय बिम्बक रहस्य आ काव्यात्मकता कैं वैश्विक पाठकक समक्ष राखैत अछि।

‘द ब्लैक बी इज स्लीपिंग अटॉप द माउन्टेन’ मैथिली स्रोत-पाठक अंग्रेजी प्रवेश अछि। एहि प्रवेशमे मूलक सांस्कृतिक घनत्व, नाम, रूपक, लोक-संकेत आ भाव-लय सुरक्षित राखब अनुवादक प्रमुख चुनौती अछि।

विश्व-साहित्यक दृष्टिसँ एहन अनुवाद मैथिलीकैं ग्रहणशील भाषा नहि, प्रदाता भाषा बनबैत अछि। पाठ जखन भाषिक सीमा पार करैत अछि, तखन ओकर अर्थ बदलैत सेहो अछि आ फैलैत सेहो।

‘द ब्लैक बी इज स्लीपिंग अटॉप द माउन्टेन’ भाषा-सीमा पार करैत पाठक विस्तारक प्रयास अछि। ‘पर्वत ऊपर भमरा जे सूतल’क अंग्रेजी अनुवाद शीर्षकीय बिम्बक रहस्य आ काव्यात्मकता कैं वैश्विक पाठकक समक्ष राखैत अछि। अनुवादमे अर्थ मात्र नहि जाइत; लय, रूपक, सांस्कृतिक संकेत आ पाठकीय अपेक्षा सेहो रूप बदलैत अछि।

एहि कृतिक मूल्य एहि बातमे अछि जे ई साहित्यिक परिसंचरण बढ़बैत अछि। एक भाषा दोसरासँ भेटैत अछि, मुदा अपन स्वर हरबैत नहि; सफल अनुवाद ओहि भेटक संतुलित रूप अछि।

द कोकोनट फोर्ट्रेस

‘सहस्रशीर्षा’ वा गढ़ नारिकेलक संसारक अंग्रेजी प्रवेश मिथिलाक स्थानीय बहुस्वरताकैं व्यापक ऐतिहासिक-सामाजिक पाठमे बदलैत अछि।

‘द कोकोनट फोर्ट्रेस’ मैथिली स्रोत-पाठक अंग्रेजी प्रवेश अछि। एहि प्रवेशमे मूलक सांस्कृतिक घनत्व, नाम, रूपक, लोक-संकेत आ भाव-लय सुरक्षित राखब अनुवादक प्रमुख चुनौती अछि।

विश्व-साहित्यक दृष्टिसँ एहन अनुवाद मैथिलीकेँ ग्रहणशील भाषा नहि, प्रदाता भाषा बनबैत अछि। पाठ जखन भाषिक सीमा पार करैत अछि, तखन ओकर अर्थ बदलैत सेहो अछि आ फैलैत सेहो।

‘द कोकोनट फोर्ट्रेस’ भाषा-सीमा पार करैत पाठक विस्तारक प्रयास अछि। ‘सहस्रशीर्षा’ वा गढ़ नारिकेलक संसारक अंग्रेजी प्रवेश मिथिलाक स्थानीय बहुस्वरताकेँ व्यापक ऐतिहासिक-सामाजिक पाठमे बदलैत अछि। अनुवादमे अर्थ मात्र नहि जाइत; लय, रूपक, सांस्कृतिक संकेत आ पाठकीय अपेक्षा सेहो रूप बदलैत अछि।

एहि कृतिक मूल्य एहि बातमे अछि जे ई साहित्यिक परिसंचरण बढ़बैत अछि। एक भाषा दोसरासँ भेटैत अछि, मुदा अपन स्वर हरबैत नहि; सफल अनुवाद ओहि भेटक संतुलित रूप अछि।

द कोमेट्स कोमा

ई अंग्रेजी शीर्षक हिम, अंतरिक्ष, विस्मृति आ विचित्र अटकलक वातावरण बनबैत अछि। मैथिली स्रोत-संसारक अनुवाद रूपमे ई कल्पना आ विज्ञान-संवेदनाक संवादक संकेत दैत अछि।

‘द कोमेट्स कोमा’ मैथिली स्रोत-पाठक अंग्रेजी प्रवेश अछि। एहि प्रवेशमे मूलक सांस्कृतिक घनत्व, नाम, रूपक, लोक-संकेत आ भाव-लय सुरक्षित राखब अनुवादक प्रमुख चुनौती अछि।

विश्व-साहित्यक दृष्टिसँ एहन अनुवाद मैथिलीकेँ ग्रहणशील भाषा नहि, प्रदाता भाषा बनबैत अछि। पाठ जखन भाषिक सीमा पार करैत अछि, तखन ओकर अर्थ बदलैत सेहो अछि आ फैलैत सेहो।

‘द कोमेट्स कोमा’ भाषा-सीमा पार करैत पाठक विस्तारक प्रयास अछि। ई अंग्रेजी शीर्षक हिम, अंतरिक्ष, विस्मृति आ विचित्र अटकलक वातावरण बनबैत अछि। अनुवादमे अर्थ मात्र नहि जाइत; लय, रूपक, सांस्कृतिक संकेत आ पाठकीय अपेक्षा सेहो रूप बदलैत अछि।

एहि कृतिक मूल्य एहि बातमे अछि जे ई साहित्यिक परिसंचरण बढ़बैत अछि। एक भाषा दोसरासँ भेटैत अछि, मुदा अपन स्वर हरबैत नहि; सफल अनुवाद ओहि भेटक संतुलित रूप अछि।

समापन

एहि समग्रक पाठ स्पष्ट करैत अछि जे गजेन्द्र ठाकुरक साहित्यिक उपक्रम संग्रह मात्र नहि, पठनक पद्धति सेहो अछि। कथा प्रमाणसँ जुड़ैत अछि, इतिहास स्रोत-समीक्षासँ, दर्शन भाषा-सजगतासँ, अनुवाद सांस्कृतिक सेतुत्वसँ, आ बाल-साहित्य भविष्यक पाठक-संस्कारसँ।

सम्पादकीय निष्कर्ष ई अछि जे एहि कृतित्वकेँ पढ़बाक लेल उत्साह आ अनुशासन दुनू चाही। जतय लोक-स्मृति अछि, ओतय संवेदना चाही; जतय अभिलेख अछि, ओतय प्रमाणक सावधानी; जतय अनुवाद अछि, ओतय भाषिक विनम्रता; आ जतय मैथिली अछि, ओतय ओकर आत्मस्वरपर गहिर भरोसा।

संदर्भ सूची

एहि सूचीमे ओहि मुख्य कृति, समीक्षा, शैली-निर्देश आ कार्य-पाठक समूह देल गेल अछि जकर आधारपर सम्पादकीय विवेचनक रूपरेखा बनल अछि। प्रविष्टिसभ आधुनिक लेखक-शीर्षक-प्रकार-स्थान पद्धतिक अनुसार क्रमबद्ध राखल गेल अछि।

ठाकुर, गजेन्द्र। सहस्रबाढ़नि। उपन्यास। गजेन्द्र ठाकुर समग्र-संबद्ध संस्करण।

ठाकुर, गजेन्द्र। सहस्रशीर्षा। उपन्यास। गढ़ नारिकेल-सम्बद्ध संस्करण।

ठाकुर, गजेन्द्र। नव्य न्याय आ अपतटीय जुआ-जाल। उपन्यास। न्याय, प्रमाण आ डिजिटल अपराध-विषयक कृति।

ठाकुर, गजेन्द्र। अनुवादक। उपन्यास। भाषा, विधि आ उत्तरदायित्व-विषयक कृति।

ठाकुर, गजेन्द्र। जल-पाँजि। उपन्यास। स्मृति, जल आ अभिलेख-विषयक कृति।

ठाकुर, गजेन्द्र। बिज्जी: गोहि सभक बीच। उपन्यास।

ठाकुर, गजेन्द्र। ३७ टा मैथिली बाल उपन्यास। बाल-साहित्य / उपन्यास-समूह।

ठाकुर, गजेन्द्र। कूट शब्द तरहड़िमे गोहि। किशोर उपन्यास। साइबर अपराध-विषयक कृति।

ठाकुर, गजेन्द्र। पातक भीतर लिखल नाँव। उपन्यास।

ठाकुर, गजेन्द्र। सातम साक्षी। उपन्यास।

ठाकुर, गजेन्द्र। गोहि सभक बीच जलसमाधि। उपन्यास। मूल, किशोर आ बाल संस्करण।

ठाकुर, गजेन्द्र। पर्वत ऊपर भमरा जे सूतल। कथा-संग्रह।

ठाकुर, गजेन्द्र। स्मृतिक दोसर दिस। कथा-संग्रह।

ठाकुर, गजेन्द्र। इजोत जनम-जनमक कथा। कथा-संग्रह।

ठाकुर, गजेन्द्र। कथा-शतत्रयी। कथा-संग्रह, खण्ड १-३।

ठाकुर, गजेन्द्र। कथा-त्रिधारा। कथा-संग्रह, खण्ड १-३।

ठाकुर, गजेन्द्र। नव पाँखि। किशोर कथा-संग्रह।

ठाकुर, गजेन्द्र। रंग-संगम। नाटक-संग्रह, खण्ड १-२; मैथिली आ अंग्रेजी रंगमंचीय रूपान्तर।

ठाकुर, गजेन्द्र। अकुलाइत सुर। पद्य-संग्रह, खण्ड १-२।

ठाकुर, गजेन्द्र। दीवान-ए-विदेह। गजल-संग्रह, खण्ड १-२।

ठाकुर, गजेन्द्र। स्वप्नमे मिज्झर होइत। पद्य-संग्रह।

ठाकुर, गजेन्द्र। गजेन्द्र ठाकुरक समानान्तर दर्शन। दर्शनशास्त्र, खण्ड १-२।

ठाकुर, गजेन्द्र। मिथिला आ मैथिली साहित्यक समानान्तर इतिहास। इतिहास, Tome I-IV।

ठाकुर, गजेन्द्र। भारत आ नेपालमे मिथिला, वज्जि आ अंगक इतिहास। इतिहास, Volumes I-II।

ठाकुर, गजेन्द्र। मिथिलाक पाँजिक विवेचन। पञ्जी-प्रबन्ध, Volumes I-VI।

ठाकुर, गजेन्द्र। मैथिलीक एकटा समानान्तर व्याकरण, रचना आ भाषा विज्ञान। ठेठी, अंगिका आ बज्जिकाक तुलनात्मक अध्ययन।

ठाकुर, गजेन्द्र। अंग्रेजी-मैथिली थिसॉरस। थिसॉरस।

ठाकुर, गजेन्द्र। मैथिली-अंग्रेजी थिसॉरस। थिसॉरस।

ठाकुर, गजेन्द्र। कृत्रिम बुद्धि सँ वीडियो बनाउ। स्वयं-शिक्षण मार्गदर्शिका।

ठाकुर, गजेन्द्र। मैथिली रेडियो नाटक: स्वयं सीखू मार्गदर्शिका। स्वयं-शिक्षण मार्गदर्शिका।

ठाकुर, गजेन्द्र। गजेन्द्र ठाकुर समग्र अनुवाद खण्ड। आन भाषासँ मैथिली अनुवाद।

ठाकुर, गजेन्द्र, अनु. भामती; आत्मतत्त्वविवेक; न्यायकुसुमाञ्जलि; तत्त्वचिन्तामणि। संस्कृत दार्शनिक ग्रन्थसभक मैथिली आ अंग्रेजी रूपान्तर।

ठाकुर, गजेन्द्र, अनु. अभिज्ञानशाकुन्तलम्; आगमडम्बरम्; भगवदज्जुकम्; भल्लट-शतक; कलाविलास; कलियुग-विडम्बना; चतुर्भाण; दामक प्रहसनम्; हास्यार्णवप्रहसनम्; कादम्बरी; मृच्छकटिकम्; मत्तविलास प्रहसनम्; मुद्राराक्षसम्; पालाण्डुमण्डन प्रहसनम्; उत्तररामचरितम्। संस्कृत काव्य, नाटक आ प्रहसनक मैथिली आ अंग्रेजी रूपान्तर।

अनचिन्हार, आशीष। गजेन्द्र ठाकुर समग्रक सम्पादकीय। सम्पादकीय पोथी। विदेह-संबद्ध मसौदा आ अन्तिम पाठ।

विदेह। विदेह शुद्ध मैथिली लेखन-शैली निर्देशिका। Comprehensive Governing Edition, 2026।

विदेह। सम्बद्ध शोध-समीक्षा-संग्रह। नव्य न्याय, अनुवादक, कथा-त्रिधारा, कथा-शतत्रयी, रंग-संगम, स्मृतिक दोसर दिस, इजोत, जल-पाँजि, कूट शब्द, बिज्जी, सहस्रबाढ़नि,

सहस्रशीर्षा, जलसमाधि, पञ्जी, समानान्तर दर्शन, इतिहास, पद्य आ बाल-उपन्यास सम्बन्धी शोध-समीक्षासभ।

ठाकुर, गजेन्द्र। वाटर-बेरियल अमंग द क्रोकोडाइल्स; द ट्रान्सलेटर; नव्य न्याय एण्ड द ऑफशोर ग्याम्बलिंग वेब; मंगूस अमंग द मॉनिटर लिजार्ड्स; द सेवन्थ विटनेस; द नेम रिटन विदिन द लीफ; जल-पाँजि: वाटर रजिस्टर; लाइट: स्टोरीज अक्रॉस लाइफटाइम्स; द अदर साइड ऑफ मेमरी; द हन्ड्रेड-स्टोरी ट्रिलजी; थ्री स्ट्रीम्स ऑफ स्टोरीज; व्हेन ड्रीम्स मर्ज; द ब्लैक बी इज स्लीपिंग अटॉप द माउन्टेन; द कोकोनट फोर्ट्रेस; द कोमेट्स कोमा। मैथिलीसँ अंग्रेजी अनुवाद-समूह।

अरस्तू। *Poetics.* काव्यशास्त्रीय आधारग्रन्थ।

भरतमुनि। नाट्यशास्त्र। भारतीय नाट्य आ रस-सिद्धान्तक मूल ग्रन्थ।

आनन्दवर्धन। ध्वन्यालोक। ध्वनि-सिद्धान्तक मूल ग्रन्थ।

अभिनवगुप्त। अभिनवभारती। नाट्यशास्त्रपर टीका आ रस-व्याख्या।

कुन्तक। वक्रोक्तिजीवितम्। वक्रोक्ति-सिद्धान्त।

मम्मट। काव्यप्रकाश। संस्कृत काव्यशास्त्रक समन्वयी ग्रन्थ।

Eagleton, Terry. *Literary Theory: An Introduction.* University of Minnesota Press / Blackwell परम्परासँ सम्बद्ध आधुनिक साहित्य-सिद्धान्त परिचय।

Barry, Peter. *Beginning Theory: An Introduction to Literary and Cultural Theory.* Manchester University Press, fourth edition।

Abrams, M. H., and Geoffrey Galt Harpham. *A Glossary of Literary Terms.* Cengage Learning, eleventh edition।

Genette, Gerard. *Narrative Discourse: An Essay in Method.* Cornell University Press, 1980/1981 English edition।

Booth, Wayne C. *The Rhetoric of Fiction.* University of Chicago Press, second edition।

Bakhtin, M. M. *The Dialogic Imagination.* University of Texas Press।

Iser, Wolfgang. *The Act of Reading.* Johns Hopkins University Press।

Jauss, Hans Robert. *Toward an Aesthetic of Reception.* University of Minnesota Press।

Chatman, Seymour. *Story and Discourse.* Cornell University Press।

Rimmon-Kenan, Shlomith. *Narrative Fiction: Contemporary Poetics.* Routledge।

Culler, Jonathan. *Literary Theory: A Very Short Introduction.* Oxford University Press।

Said, Edward W. *Culture and Imperialism.* Knopf / Vintage।

Spivak, Gayatri Chakravorty. *In Other Worlds: Essays in Cultural Politics.* Routledge।

Bhabha, Homi K. *The Location of Culture.* Routledge।

Venuti, Lawrence. *The Translator's Invisibility: A History of Translation.* Routledge।

Bassnett, Susan. *Translation Studies.* Routledge।

Hunt, Peter. *Criticism, Theory, and Children's Literature.* Blackwell।

Nikolajeva, Maria. *Children's Literature Comes of Age.* Garland।

Shavit, Zohar. *Poetics of Children's Literature.* University of Georgia Press।

Hutcheon, Linda. *A Theory of Adaptation.* Routledge।

White, Hayden. *Metahistory.* Johns Hopkins University Press।

Ricoeur, Paul. *Memory, History, Forgetting.* University of Chicago Press।

Foucault, Michel. *The Archaeology of Knowledge.* Pantheon / Routledge English editions।

Derrida, Jacques. *Archive Fever.* University of Chicago Press।

Moretti, Franco. *Graphs, Maps, Trees.* Verso।

Casanova, Pascale. *The World Republic of Letters.* Harvard University Press English edition।

Damrosch, David. *What Is World Literature?* Princeton University Press।

विस्तारित आलोचनात्मक विवेचन

एहि खण्डमे सम्पादकीयक मूल विधागत विन्यासकेँ आधार बनाकऽ आलोचनाक तर्क-पद्धति स्पष्ट कएल गेल अछि। ग्रन्थ-सूची आ पहिनुक सम्पादकीय टिप्पणीसँ ज्ञात तथ्यकेँ मूल रचनाक पंक्तिवार साक्ष्यक स्थान नहि देल गेल अछि; शीर्षकक प्रतीकार्थकेँ वास्तविक कथानकक रूपमे प्रस्तुत करब एहि विवेचनक पद्धति नहि अछि।

कथाशास्त्र : कथित समय, कथनक समय आ दृष्टिबिन्दु

कथाक घटनाक क्रम आ घटनाक कहबाक क्रम एक नहि होइत अछि। ‘सहस्रबाढ़नि’ अथवा ‘स्मृतिक दोसर दिस’ सन स्मृति-प्रधान शीर्षकक आलोचना करैत काल पहिने देखबाक विषय ई होएबाक चाही जे स्मरणक वर्तमान कथाक अतीतकेँ कतेक बदलैत अछि। कथावाचक जे जानैत अछि, पात्र सेहो ओतबे जानैत अछि वा नहि—एहि अन्तरसँ पाठकक जिज्ञासा आ नैतिक निर्णय दुनू निर्मित होइत अछि। एतय कथाक बाह्य समय, मनक समय आ अभिलेखित समयकेँ अलग राखब आवश्यक अछि। कथावस्तुक सत्यक जाँच कथावाचकक अधिकारसँ स्वतंत्र हेबाक चाही। जँ कथावाचक अपन अज्ञान स्वीकार करैत अछि तँ से ओकर विश्वसनीयताक क्षति अनिवार्यतः नहि; कखनो ओ सत्यक प्रति अधिक उत्तरदायित्वक चिह्न होइत अछि।

कथात्मक नैतिकता आ कथाकारक अलिखित संकेत

रचनाकारक नैतिक स्थिति मात्र पात्रक मुखसँ देल उपदेशमे नहि, घटनाक चयन, पाठकसँ रोकल सूचना, दृश्य बदलबाक क्षण आ अन्तिम वाक्यक स्थितिमे सेहो प्रकट होइत अछि। ‘सातम साक्षी’ सन साक्ष्य-केंद्रित रचनाक पठनमे ई जरूरी अछि जे गवाही दैनिहार, गवाही सुननिहार आ पाठकक अधिकार अलग-अलग देखल जाए। पाठककेँ कोन तथ्य कखन ज्ञात होइत अछि, एहि क्रममे कथा न्याय आ करुणाक सम्बन्ध गढ़ैत अछि।

प्रमाणक अभावकेँ कल्पनासँ भरब आलोचनाक काज नहि; अस्पष्टताकेँ कलात्मक युक्ति मानबाक आधार सेहो मूल पाठक अनुक्रममे भेटबाक चाही।

पाठक-ग्रहण आ साहित्यक परिवर्तित अर्थ

एके रचना बालक, किशोर, वयस्क आ अनुवादित भाषाक पाठक लेल समान अर्थ नहि रखैत अछि। पाठकीय अपेक्षाक क्षितिज जीवनानुभव, भाषिक अभ्यास, शैक्षिक अवसर आ सामाजिक स्मृतिसँ बनैत अछि। ‘गोहि सभक बीच जलसमाधि’क मूल, किशोर आ बाल रूपकेँ परस्पर तुलना करैत काल शब्दक सरलता मात्र नहि, घटना-चयन, भयक प्रस्तुति, हिंसाक सीमा, नैतिक निर्णय लेल देल अवकाश आ पात्रक स्वाधीनता जाँचबाक अछि। पाठकीय ग्रहणक अध्ययन पाठकक कल्पित प्रतिक्रियाकेँ तथ्य बना देबाक छूट नहि दैत; वास्तविक समीक्षा, पाठ-संवाद अथवा संस्करण-इतिहास उपलब्ध हो तँ तकर अलग प्रमाण देबाक चाही।

भारतीय काव्यशास्त्र : रस, ध्वनि, वक्रोक्ति आ औचित्य

रसक व्याख्या केवल करुण, वीर अथवा हास्यक नाम गननासँ पूर्ण नहि होइत अछि। आलम्बन, उद्दीपन, अनुभाव आ सञ्चारी भाव कोना रचनामे विन्यस्त भेल, से देखल जाए। ध्वनि तखन उद्घाटित होइत अछि जखन वाक्यार्थक परे कोनो द्वितीय अर्थ रचनाक भीतर समर्थित रहैत अछि। ‘जल-पाँजि’मे जल आ पाँजिक शीर्षकीय संयोगकेँ व्यञ्जनाक सम्भावना कहब संभव अछि, मुदा समग्र उपन्यासमे ओ प्रतीक कोना विकसित होइत अछि से पाठमूलक प्रमाण चाहैत अछि। वक्रोक्तिक विश्लेषण लेल अप्रत्याशित पदविन्यास, दृष्टि-विपर्यय आ कथनक अप्रत्यक्षता देखब जरूरी अछि। औचित्यक प्रश्न ई अछि जे पात्रक भाषा, प्रसंगक भार आ चुन्नल काव्यात्मक अलंकरण परस्पर मेल खाइत अछि कि नहि।

इतिहासलेखन : स्रोत, मौन आ प्रतिवृत्तान्त

मिथिला, वज्जी आ अंगक इतिहासलेखनमे अभिलेख, पुरातात्त्विक सामग्री, भाषिक साक्ष्य, लोकवृत्त आ उत्तरकालीन साहित्यक प्रमाण-मूल्य भिन्न अछि। लोकस्मृति समाजक आत्मबोध देखबैत अछि; तथापि लोकस्मृतिक प्रत्येक कथन स्वतः तिथि-सिद्ध इतिहास नहि भऽ जाइत। ‘समानान्तर इतिहास’क समालोचना करैत काल स्थापित इतिहासक कुन आधारकेँ चुनौती देल गेल अछि, प्रतिपक्षी प्रमाण की अछि, आ निष्कर्ष धरि पहुँचबाक तर्क-श्रृंखला कतेक स्पष्ट अछि—ई देखबाक अछि। क्षेत्रीय इतिहासक मूल्य केन्द्रक अभिलेखमे अनुपस्थित जीवनकेँ दृश्य बनएबामे अछि; मुदा एहि प्रयत्नमे नव केन्द्रवाद निर्मित नहि हेबाक चाही।

अभिलेख-अध्ययन : दस्तावेज, अनुपस्थिति आ सूचीकरण

अभिलेख नितान्त निष्पक्ष पात्र नहि: जे संरक्षित भेल, जे नष्ट भेल, जे नाम लिखल गेल, जे नाम बिसरल, सभ ऐतिहासिक अर्थ रखैत अछि। विदेहक अंक-सूची, पञ्जी-सम्बन्धी ग्रन्थ आ साहित्यिक पुस्तक-सूचीक अध्ययनमे रचनाक शीर्षक, लेखक, वर्ष, संस्करण, प्रथम प्रकाशन आ पुनर्प्रकाशनक भेद अनिवार्य अछि। अभिलेखीय रिक्तता देखब उपयोगी अछि, मुदा अनुपस्थिति मात्रसँ कोनो निष्कर्ष सिद्ध नहि होइत। बहुभाषी आ बहुलिपि संस्करणकेँ एकेकटा नूतन कृति मानि संख्याक कृत्रिम वृद्धि नहि करब चाही; ओही प्रकार मूल पोथी आ ओकर संक्षिप्त बाल रूपक सम्बन्ध स्पष्ट करब चाही।

विश्व-साहित्य आ भाषिक आवागमन

विश्व-साहित्यक मापदण्ड महानगरक मान्यता नहि, भाषासभक बीच रचनाक यात्रा आ ओकर पुनर्पठन अछि। मैथिली कथा अंग्रेजीमे गेलाक बाद स्थानीय पद, सम्बोधन, जातीय संकेत आ नदीक भूगोल पाठक लेल कोना बोधगम्य बनैत अछि, से विचारणीय अछि। अंग्रेजी पाठकक सुविधा लेल मूलक असमानता मेटा देल जाए तँ अनुवादक भाषिक प्राण

घटि सकैत अछि। दोसर दिशि, बिनु व्याख्याक अपरिचित संकेत पाठकीय प्रवेश कठिन बना सकैत अछि। संतुलनक कसौटी मूल पाठक नैतिक आ सांस्कृतिक सम्बन्धकेँ सुरक्षित राखब अछि, नहि कि प्रत्येक शब्दक एकरूप प्रतिरूप बनएब।

अनुवादशास्त्र : तुलनात्मक पाठ परीक्षण

‘अनुवादक’ उपन्यासमे अनुवाद कथाक विषय अछि; मूल मैथिली उपन्यासक अंग्रेजी रूपमे अनुवाद स्वयं आलोचनाक विषय बनि जाइत अछि। ई दुनू स्तर अलग रखबाक चाही। मूल आ लक्ष्य पाठमे पात्रक वाणी, वाक्यक दूरी, व्यंग्य, बोलचाल, भाषिक असमानता, नाम-रूप आ सांस्कृतिक विशिष्टताक तुलना पंक्तिवार करब फलदायी अछि। संस्कृतसँ मैथिली रूपान्तरमे पाठ-निर्णय, समासक विश्लेषण, दार्शनिक पारिभाषिक शब्दक एकरूपता आ छन्द-गद्य सम्बन्ध मुख्य अछि। अनुवादक अपन व्याख्या कैँ मूल लेखकक कथनक रूपमे प्रस्तुत नहि करथि, एहि लेल प्रस्तावना, टीका आ अनुवादक स्पष्ट पृथक्करण जरूरी अछि।

बाल-साहित्य : बालकक दृष्टि आ निर्णयक अधिकार

‘३७ टा मैथिली बाल उपन्यास’, ‘नव पाँखि’ आ बाल-रूपान्तरक समीक्षा करैत बालककेँ केवल सुधारबाक विषय मानल जाए तँ साहित्यक कल्पनाशील स्वतंत्रता दबि जाइत अछि। बाल पात्र स्वयं निर्णय लैत अछि वा वयस्कक आज्ञाक केवल वाहक अछि—ई मौलिक कसौटी अछि। कथा जँ प्रश्न पूछबाक अवकाश खोलैत अछि, भयकेँ सुरक्षित दूरीसँ देखबैत अछि आ विफलताक अनुभवकेँ सम्मान दैत अछि तँ ओकर शिक्षणात्मक मूल्य रचनात्मक मूल्यसँ जुड़ि जाइत अछि। भाषा सरल होएबाक अर्थ शब्दसंपदाक निर्धनता नहि। किशोर साहित्यक स्थिति बालक आ वयस्क दुनूक बीच स्वतन्त्र भाव-प्रदेशक अछि।

गद्यक सामाजिक अलंकार : नदी, पाँजि, गोहि आ साक्ष्य

‘जल-पाँजि’, ‘बिज्जी: गोहि सभक बीच’, ‘सातम साक्षी’ आ ‘पातक भीतर लिखल नाँव’ सन शीर्षक अलग-अलग वस्तुसमूहकेँ विचारक केन्द्र बनबैत अछि। जलक प्रवाह आ पाँजिक स्थायित्व, छोट जीव आ हिंस्र परिवेश, सातम गवाही आ भीतर लिखल नाम—ई सभ विरोध, व्यंजना अथवा नैतिक संशयक प्रवेशद्वार भऽ सकैत अछि। मुदा शीर्षकक समीक्षाक सीमा अछि: कथाक वास्तविक घटनाक सम्बन्ध नहि भेटला धरि शीर्षकसँ कथानक आविष्कार नहि कएल जा सकैत। साहित्यिक समालोचना सम्भाव्य अर्थ आ प्रमाणित कथ्य बीच सुस्पष्ट सीमा रखैत अछि।

नाटक : मंचीय समय, संवाद आ अभिनय-सम्भावना

‘रंग-संगम’क बारह नाटकक आलोचनामे मुद्रित संवाद पढ़ब आवश्यक, मुदा पर्याप्त नहि। मंचपर कोन दृश्य अभिनीत भऽ सकैत अछि, कोन सूचना केवल संवादद्वारा दऽ देल गेल अछि, मौन आ प्रवेश-निर्गमनक लय केहन अछि—ई सभ देखबाक चाही। नाटकक अंग्रेजी रूपकेँ केवल अर्थानुवाद कहला सँ काज नहि; अभिनययोग्य उच्चारण, विराम, हास्यक समय-संयोजन आ सांस्कृतिक प्रत्युत्तर सेहो तुलना योग्य अछि। नाट्यशास्त्रक आङ्गिक, वाचिक, आहार्य आ सात्त्विक अभिनयक आधार आधुनिक मंचीय मूल्यांकनक संग संयुक्त भऽ सकैत अछि।

पद्य : छन्द, लय, बिम्ब आ आवाज

‘अकुलाइत सुर’, ‘दीवान-ए-विदेह’ आ ‘स्वप्नमे मिज्झर होइत’क समालोचना लेल प्रत्येक कविताक पंक्तिविन्यास, पुनरावृत्ति, अनुप्रास, विराम, बिम्बक क्रम आ वक्ताक स्थिति देखबाक अछि। गजलमे रदीफ, काफिया, बहर आ शेरक स्वायत्तता जाँचल जाए; मुक्तछन्दमे अन्तर्लय, अर्थ-विराम आ ध्वनिक आवर्तन। कविता लेल सुन्दर विषय पर्याप्त नहि: शब्दक विन्यासे अनुभवकेँ अलभ्य रूप दैत अछि कि नहि, से मूल कसौटी अछि।

कविता संग्रहक श्रेष्ठ दस प्रतिशत चुनैत केवल शीर्षक, विषयक नैतिक श्रेष्ठता वा वैचारिक सहमति आधार नहि बनय; कलात्मक निष्पादन प्रधान रहय।

समालोचना : निर्णय, असहमति आ पाठ-साक्ष्य

ककरो साहित्यिक महत्त्व बतबैत काल रचनाक सीमा, वैचारिक तनाव आ असफल प्रयोगक निदर्शन सेहो देब जरूरी अछि। ‘नित नवल’ श्रृंखलाक मूल्यांकनमे लेखक-विशेषक जीवनवृत्तसँ आगाँ बढ़ि पाठ-व्याख्या, पूर्ववर्ती आलोचनासँ असहमति आ नव प्रस्तावक प्रमाण देखल जाए। प्रशंसा आ निन्दा दुनू जँ उद्धरण-विहीन अछि तँ ओ समालोचना नहि, मतक घोषणा बनि जाइत अछि। सम्पादकीयक अर्थ केवल ग्रन्थसूची नहि; चयनक उत्तरदायित्व आ निर्णयक स्पष्टीकरण सेहो अछि।

दर्शन आ नव्य-न्याय : पदक शुद्धता आ तर्कक रचना

‘समानान्तर दर्शन’ आ संस्कृत न्यायग्रन्थसभक अनुवादक अध्ययनमे प्रतिज्ञा, हेतु, दृष्टान्त, उपनय आ निगमनक सम्बन्ध तथा अनुमानक अवयव अलग राखल जाए। ‘तत्त्वचिन्तामणि’, ‘आत्मतत्त्वविवेक’ आ ‘न्यायकुसुमाञ्जलि’मे पारिभाषिक पदक सुसंगत मैथिली प्रतिरूप खोजब चुनौतीपूर्ण अछि। कोनो दर्शनक सुगम प्रस्तुति लेल तर्कक सूक्ष्मता बलिदान नहि होएबाक चाही। मूल पाठ, अनुवाद आ व्याख्यात्मक टिप्पणी जेठाम अलग-अलग देखल जा सकय, ओतय पाठक स्वाधीन परीक्षण करि सकैत अछि।

भाषाविज्ञान आ कोश : उपयोगिता, प्रमाण आ वैविध्य

मैथिली, ठेठी, अंगिका आ बज्जिकाक तुलनात्मक वर्णनमे ध्वनि, रूप, वाक्यरचना आ अर्थभेदकेँ उदाहरणसँ अलग-अलग सिद्ध करब चाही। सामाजिक बोलिकेँ अशुद्ध रूप मानि नकारब वा सब भेदकेँ बिना परीक्षण एकरूप घोषित करब—दुनू आलोचनात्मक त्रुटि अछि। द्विभाषी थिसॉरसमे समानार्थक पदक पूर्ण प्रतिशब्दता बहुत बेर सम्भव नहि; प्रयोग-

क्षेत्र, औपचारिकता, भावध्वनि आ प्रसंगक टिप्पणी जरूरी अछि। शब्द-संग्रहक संख्या मात्र नहि, प्रविष्टिक सटीकता ओकर विद्वत्ता सिद्ध करैत अछि।

इतिहास, पञ्जी आ सामाजिक स्मृति

वंशावलीक दस्तावेजक मूल्य सामाजिक स्मृति, सम्बन्ध-विधान आ अभिलेखित पहचानक अध्ययनमे अछि। मुदा पञ्जीक प्रत्येक विवरणक सत्यापन अनिवार्यतः अन्य स्रोतसँ होएबाक चाही। ‘डिकोडिंग द पञ्जी ऑफ मिथिला’ सन बहुखण्डीय शोधकेँ पढ़ैत दस्तावेजक उत्पत्ति, प्रतिलिपिक काल, नामान्तर, अपूर्णता आ वर्गीय प्रतिनिधित्व देखबाक चाही। पञ्जीमे उपस्थित लोक आ बाहर छुटल लोकक बीचक सम्बन्ध इतिहासलेखनक नैतिक प्रश्न अछि। अभिलेखक विश्लेषण दस्तावेजक प्रति श्रद्धा आ संशय दुनूक अनुशासन माँगैत अछि।

कृतिविशेष : विस्तृत पाठ-समीक्षाक आधार

सहस्रबाढ़नि

एहि उपन्यासक उपलब्ध सम्पादकीय विवेचन नदी, बाढ़ि, परिवार आ संस्थागत जीवनक संयुक्त उपस्थितिक ओर संकेत करैत अछि। कथाक रूप-परीक्षणमे बाढ़िक पुनरागमन आ स्मृतिक आवर्तनक सम्बन्ध महत्वपूर्ण प्रश्न अछि: आपदा कोनो अद्वितीय घटना अछि कि पीढ़ीक परम्परागत भय? ऐतिहासिक समय आ परिवारक अनुभवक अनमेल उपन्यासक कथात्मक तनाव बनि सकैत अछि। करुणाक संग प्रशासनिक उत्तरदायित्वक चर्चा यथार्थवादी उपन्यासक नैतिक क्षेत्र खोलैत अछि; मुदा उपन्यासकेँ समग्रतः सफल घोषित करबाक आधार दृश्य-विश्लेषण आ कथ्य-क्रमसँ लेबाक चाही।

सहस्रशीर्षा

बहुस्वरता एहि कृतिक सम्पादकीय वर्णनक प्रमुख सूत्र अछि। एहन उपन्यासमे प्रश्न केवल कतेक पात्र बोलैत अछि से नहि, बल्कि हुनकर कथनसभ लेखकक एकल निर्णयसँ असहमत हेबाक स्वाधीनता रखैत अछि कि नहि। लोकगीत, श्रम आ राजनीतिक स्मृतिक बीच कथात्मक दूरी जाँचब बहुध्वन्यात्मक उपन्यासक वास्तविक परीक्षा अछि। गढ़ नारिकेलक भूगोल जँ पात्रक भाषामे बदलैत अछि तँ स्थान केवल पृष्ठभूमि नहि रहैत।

नव्य न्याय आ अपतटीय जुआ-जाल

अपराधक रहस्य आ प्रमाणक तर्क एहि कृतिक घोषित द्वैत अछि। कथात्मक रोमांच पाठककेँ शीघ्र निर्णय दिस खींचि सकैत अछि; नव्य-न्यायक विवेक ओहि शीघ्रताकेँ रोकैत अछि। आरोप, सन्देह, दस्तावेज आ निष्कर्षकेँ अलग रखल जाए तँ आख्यानक नैतिक विशिष्टता उभरि सकैत अछि। अपराध-जगतक कथात्मक वर्णनकेँ स्वतंत्र वास्तविक व्यक्तिपर आरोपक प्रमाण मानब अनुचित अछि।

अनुवादक

एहि उपन्यासमे अनुवाद जीविकाक साधन आ शक्ति-संरचनाक प्रवेश-पत्र दुनू अछि। कथाक केन्द्रमे निष्ठाक प्रश्न बनैत अछि: स्रोत वक्ताक प्रति, लक्षित श्रोताक प्रति आ सत्यक प्रति अनुवादकक दायित्व एक दिशा मे रहैत अछि कि परस्पर टकराइत अछि? कथावाचकक सूचना-व्यवस्था जँ पाठककेँ अनुवादकक चुनावक परिणाम धीरे-धीरे देखबैत अछि तँ रूप आ नैतिक संकटक सम्बन्ध गाढ़ होइत अछि।

जल-पाँजि

शीर्षक दू भिन्न अभिलेखन-पद्धतिक टकराहट प्रस्तुत करैत अछि: बहैत जल आ स्थिर वंशावली। जल भौतिक निशान मेटबैत अछि, मुदा सामूहिक स्मृतिमे नूतन निशान बनबैत सेहो अछि। एहि द्वैतक सार्थकता रचनाक प्रसंगसभमे जाँचबाक अछि—कोन मनुष्यक नाम बचैत अछि, केकर इतिहास बहि जाइत अछि, आ के अभिलेखक रखबार अछि? रूपककेँ सामाजिक अभिलेखीय प्रश्न धरि लऽ गेलाक बाद उपन्यासक अर्थ शीर्षकीय सौन्दर्यसँ बाहर निकलैत अछि।

बिज्जी: गोहि सभक बीच

छोट आ पैघ जीवक विरोध मात्र शक्तिहीनता आ शक्तिक सहज समीकरण नहि बनएबाक चाही। पशु-रूपक जँ जीवक अपन गति, अनुकूलन आ भयकेँ स्वतंत्र मूल्य दैत अछि तँ ओ मानवसमाजक रूपक होइतहुँ गैरमानवीय जगतकेँ सम्मान दैत अछि। कथा रचनाक विवरण पढ़ि निर्धारित करबाक होएत जे खतरा प्राकृतिक अछि, सामाजिक सत्ता केर संकेत अछि, कि दुनूक तनाव।

३७ टा मैथिली बाल उपन्यास

सैंतीस रचनाक समूहकेँ एकल कृति मानि सामान्य निर्णय देब आलोचनात्मक रूपसँ अपर्याप्त अछि। एक-एक उपन्यासक आयु-उपयुक्तता, नायकक निर्णय-स्वाधीनता,

संवादक स्वाभाविकता, संकट-निवारण आ भाषा-अर्जनक सम्भावना परखबाक अछि। मात्र लोकसंस्कृतिक उपस्थिति ओकर साहित्यिक गुणवत्ता नहि सिद्ध करैत; बाल पाठकक सक्रिय कल्पना साहित्यिक कसौटी अछि।

कूट शब्द तरहड़िमे गोहि

किशोर डिजिटल अपराध-कथामे तकनीकक शब्दावलीक सत्यता आ घटना-विन्यासक विश्वसनीयता महत्वपूर्ण अछि। रहस्यक समाधान किशोरक विवेकसँ निकलैत अछि वा कोनो बाहरी सर्वज्ञ वयस्कक हस्तक्षेपसँ—एहि भेदसँ रचनाक बाल-साहित्यिक मूल्य बदलैत अछि। भय आ सावधानीक सन्तुलन जाँचब सेहो आवश्यक अछि, ताकि चेतावनी जिज्ञासाकेँ कुचलि नहि दे।

पातक भीतर लिखल नाँव

पात पर लिखल नामक बिम्ब नश्वर वस्तुमे टिकाउ पहचानक विरोध रचैत अछि। एहि शीर्षकीय संकेतमात्रसँ कोनो पात्र वा अपराधक तथ्य निष्कर्षित नहि करब चाही। वास्तविक पाठमे नाँवक लेखक, पाठक आ स्वामीक सम्बन्ध कोना विन्यस्त अछि, ओ जँ देखल जाए तँ स्मृति आ स्वत्वक गहिर आलोचना सम्भव होएत।

सातम साक्षी

सातम गवाहीक संकेत संख्या आ नैतिकताको एक संग सामने अनैत अछि। गवाहीक पुनरावृत्ति कथा मे बढ़ैत प्रमाण दैत अछि वा बढ़ैत सन्देह, ई देखल जाए। कथाक अन्तिम साक्षीकेँ अन्तरात्माक रूपक मानब एक सम्भाव्य अर्थ मात्र अछि, निर्णायक कथानक-तथ्य नहि। पाठकक निर्णय स्वयं स्थगित रहैत अछि कि लेखक ओहि पर बलपूर्वक फैसला थोपैत अछि, से रचनाक नैतिक संरचना बताएत।

गोहि सभक बीच जलसमाधि

विस्तृत आख्यानमे प्रसंगक बहुलता ताकत सेहो भऽ सकैत अछि आ शिथिलताक कारण सेहो। जलक आवर्ती छवि कथा कैं संगठित करैत अछि कि केवल प्रसंगक पुनरावृत्ति करैत अछि—एहि विवेकसँ महाकाव्यात्मक फैलावक मूल्यांकन होएत। लोकवृत्त, सामाजिक स्मृति आ पात्र-समूहक बीच नैतिक केन्द्र कतेक वितरित अछि, ई ओकर रूपगत प्रश्न अछि।

गोहि सभक बीच जलसमाधि : किशोर आ बाल संस्करण

रूपान्तरक तुलना तीन स्वतन्त्र पाठ-वर्गक व्यवहारिक अध्ययन मांगैत अछि। किशोर संस्करणमे घटनाक जटिलता बचल अछि कि नहि; बाल संस्करणमे कठिन भावनाकैं चुप्पीसँ ढाँपि देल गेल अछि कि संवेदनशील भाषामे पहुँचाओल गेल अछि—एहि दूनू कसौटी अलग अछि। मूल पाठसँ हटाओल प्रसंगक सूची आ बदलल संवादक तुलना बिना रूपान्तर सफल वा असफल कहब अनुचित होएत।

कथा-शतत्रयी आ कथा-त्रिधारा

बहुखण्डीय संग्रहक आकलनमे रचना-क्रम, विधागत विविधता, आरम्भ-अन्तक प्रतिध्वनि आ विषयक पुनरागमन जाँचबाक अछि। एकल कथा अपन भीतर पूर्ण अछि, मुदा संग्रहक भीतर ओकर स्थान अतिरिक्त अर्थ दऽ सकैत अछि। तीन खण्डक शीर्षकक आधारपर तीन सिद्ध साहित्यिक धारा मानि लेब पर्याप्त नहि; प्रत्येक कथा अपन भाषिक शिल्पक परीक्षण माँगैत अछि।

इजोत—जनम-जनमक कथा

इजोतक रूपक पीढ़ीगत समयक संग जुड़ैत अछि। प्रकाशित सूचीमे संग्रहक ओहो रूप उपलब्ध अछि जाहिमे रचनासभकैं अलग-अलग समूहमे रखल गेल अछि; सम्पादकीय मूल्यांकनमे प्रत्येक समूहक अन्तरध्वनि स्वतंत्र रूपसँ जाँचबाक चाही। उजासकैं अनिवार्य

आशावादक रूपमे पढ़ल जाए तँ अन्हार, संशय आ विफलताक कलात्मक भूमिका छुटि सकैत अछि।

पर्वत ऊपर भमरा जे सूतल

पर्वत, भमरा आ निद्राक वैषम्य शीर्षकक काव्य-शक्ति अछि। मुदा कथासंग्रहक समस्त कथा एकहि रूपकक प्रतिलिपि नहि। बीहनि, लघु आ दीर्घ कथाक आकारगत भेद कथनक गति, दृश्य-सघनता आ अन्तक प्रभावपर कोन असर करैत अछि, से अलग देखबाक अछि।

स्मृतिक दोसर दिस

स्मरणक नैतिक जटिलता एहि संग्रहक मूल सम्पादकीय सूत्र अछि। स्मृति जँ आत्म-रक्षा करैत अछि तँ ओकरा जाँचनिहार कथन के अछि? भूलब आ जानि-बूझि चुप रहबक अन्तर कथा मे कोना देखाओल गेल अछि? ई प्रश्न संग्रहक प्रत्येक रचनामे स्वतन्त्र रूपेँ जाँचबाक चाही।

नव पाँखि

किशोर कथा-संग्रहमे उड़ानक रूपक स्वतंत्रताक आकांक्षा खोलैत अछि। बालक अथवा किशोर पात्रक असफलता कथावाचक सम्मानसँ देखैत अछि कि नहि, एतए कलात्मक कसौटी अछि। पाठमूलक विश्लेषण बिना उमंगक सामान्य प्रशंसा बाल-साहित्यक गहराइपर पर्दा दऽ सकैत अछि।

रंग-संगम

बारह नाटकक समीक्षा बारह स्वतंत्र मंचीय रचनाक रूपमे करबाक चाही। दृश्य-रचनाक संरचना, भाषण-घनत्व, पात्रक शारीरिक क्रिया आ विरामक समय जाँचब जरूरी अछि। अंग्रेजी रूपान्तरक अभिनययोग्यता जाँचैत हास्य, व्यंजना आ सांस्कृतिक पदक स्थानान्तरण अलग मानदण्ड बनैत अछि।

अकुलाइत सुर; दीवान-ए-विदेह; स्वप्नमे मिज्झर होइत

गजल, गीत आ कविताक खण्डसभकेँ एकहि छन्दीय कसौटीसँ नापब अनुचित अछि। प्रत्येक कविताक उच्चारण-लय, काव्य-वक्ता, ध्वनिक बनावट आ छविक आन्तरिक अनुक्रमक स्वतंत्र परीक्षण चाही। रचनाक भावनात्मक महत्व आ काव्यात्मक उपलब्धि अलग हुनकर निर्णय होएबाक चाही।

सम्पादकीय चयनक प्रमाण-नीति

कथा-संग्रह आ पद्य-संग्रहमे दश प्रतिशत चयनक अर्थ गणना-आधारित अलंकरण नहि, तुलनात्मक मूल्यनिर्णय अछि। प्रत्येक संग्रहमेसँ रचनाक पूर्ण अनुक्रमणिका, सम्पूर्ण पाठ आ संस्करणक सुनिश्चित पहिचान चाही। ई तीन आधार बिना नाँवक सूची बना देब अप्रमाणित निर्णय होएत। चयनक प्राथमिक कसौटी कथात्मक एकाग्रता अथवा काव्यात्मक सघनता, रूपगत साहस, भाषा-सिद्धि, मौलिक दृष्टि, पुनर्पाठक सामर्थ्य आ संग्रहमे रचनाक भूमिका रहत। समान अंक आयल स्थितिमे अलग शिल्पक प्रतिनिधित्व देखल जाए; एकहि विषयक रचनाक कृत्रिम प्रभुत्व नहि बनय।

सम्पादकीय लेखन लेल चयनित प्रत्येक कथा पर घटना-अनुक्रम, कथावाचक, दृष्टिबिन्दु, कालविन्यास, मौन, संवाद, अन्त आ नैतिक प्रश्नक विवेचन होय। चयनित प्रत्येक कवितापर पूरा पाठक विन्यास, छन्द अथवा अन्तर्लय, अलंकार, ध्वनि, रस, प्रतीकक परिवर्तन आ वक्ताक स्थिति जाँचल जाए। अपठित रचनाकेँ श्रेष्ठ घोषित नहि कएल गेल अछि।

पाठसाक्ष्य, तुलनात्मक मूल्याङ्कन आ सम्पादकीय चयन

संग्रहक उत्कृष्ट रचना कोना चिन्हल जाए

कथा-संग्रहक दश प्रतिशत रचनाकेँ श्रेष्ठ मानबाक निर्णय मात्र विषयक नवीनता अथवा शीर्षकक आकर्षणसँ नहि कएल जा सकैत अछि। एकहि संग्रहक सभ कथाकेँ पढ़लाक बाद पहिने अलग-अलग कथाक कथात्मक उपलब्धि, फेर कथा आ संग्रहक आपसी सम्बन्ध, आ अन्तमे पाठकपर ओकर प्रभाव परखब आवश्यक अछि। एहि क्रममे कथावाचकक ज्ञानक सीमा, दृष्टिबिन्दुक फेरबदल, घटनाक चयन, कथात्मक समय, संवादक स्वाभाविकता, अन्तक अनिवार्यता आ अर्थक बहुस्तरीयताक परीक्षण प्रमुख होएत।

कथाक अंकनमे पाँच गुण केँ समान महत्त्व देब पर्याप्त नहि। कोनो कथा अपन मौनसँ प्रभाव जगबैत अछि, दोसर प्रतिपक्षी स्वरक टकरावसँ, तेसर लोकभाषाक मौलिक लयसँ। तेँ एकटा अटल अंकतालिका साहित्यिक निर्णयक स्थान नहि लऽ सकैत अछि। सम्पादकीय चयनक तर्क रचनाक विशिष्ट पाठसाक्ष्यक सहारे लिखल जाए; ओहि तर्ककेँ दोसर पाठक मूल कथासँ मिला सकय, ई आवश्यक अछि।

दस प्रतिशतक गणना आ चयनक मर्यादा

रचनासंख्या पक्का भेलापर चयनसंख्या निकालल जाए। शत-कथा संग्रहसँ दसटा; उन्नचास कथासँ पाँचटा; बीस कथासँ दूटा रचना चुनल जा सकैत अछि। सीमा-स्थितिमे निकटतम पूर्णांक अपनाओल जाए, आ संपादकीय आधार स्पष्ट लिखल जाए। संयुक्त खण्डक दश प्रतिशत निकालैत समय प्रत्येक खण्डक रचनासंख्या आ पुनर्मुद्रित कथाक पहचान अलगसँ जाँचल जाए। एके कथा दू ठाम छपल हो तँ ओकरा दू स्वतंत्र रचना नहि गनल जाए।

उत्कृष्टता-कथन आलोचकक मूल्यनिर्णय अछि, अभिलेखीय तथ्य नहि। एकरा पाठसाक्ष्य पर निर्भर राखब साहित्यिक ईमानदारीक मूल शर्त अछि। मूल रचनाक अनुपस्थितिमे नाम चुनि लेब पाठककेँ भ्रामक निर्णय देब होएत; ओहि स्थितिमे सूची पूर्ण मानल नहि जा सकैत अछि।

कथा-पठन : कथावाचक आ समय

कथावाचक प्रथम पुरुषमे बोलैत हो अथवा तृतीय पुरुषमे, ओकर कथन आ पात्रक वास्तविक ज्ञानमे दूरी रहि सकैत अछि। घटनाक आरम्भ, पश्चस्मरण, पूर्वसंकेत आ पुनरुक्तिक ठोस उदाहरण निकालि जाँचब चाही जे रचना पाठककेँ केहन क्रममे सूचना दैत अछि। कथनक विश्वसनीयता परखैत समय कथावाचकक चूककेँ लेखकक चूक मानि लेब उचित नहि।

दू कथा एके तरहक दुख कहि सकैत अछि, मुदा पहिल कथा कारणक पूरा विवरण दैत अछि आ दोसर पाठककेँ रिक्त स्थान भरबाक अवसर। एतय केवल अधिक सूचना देनिहार रचनाकेँ श्रेष्ठ कहब भूल होएत। प्रश्न ई अछि जे कथाक औपचारिक उपाय विषयक आवश्यकता पूरा करैत अछि वा नहि।

कथाक अलङ्कार, ध्वनि आ नैतिक दूरी

आनन्दवर्धनक ध्वनि-विचारक सहारे कथा मे प्रत्यक्ष कथन आ व्यञ्जित अर्थक भेद परखल जा सकैत अछि। अभिनवगुप्तक रसचिन्तन पाठकक भावानुभव खोलैत अछि; मुदा करुणा जगलासँ मात्र रचना सफल नहि भऽ जाइत अछि। व्यक्तिक पीड़ाकेँ कथा जँ देखबाक वस्तु बना दैत अछि आ ओकर स्वर दबा दैत अछि, तँ करुणा नैतिक रूपसँ अधूरी रहि सकैत अछि।

कथाकारक प्रत्यक्ष टिप्पणी, व्यङ्ग्य, अनकहल प्रतिक्रिया आ संवादमे वितरित नैतिक अधिकारक तुलना कएल जाए। पाठककेँ निर्णय लेल मुक्त छोड़निहार कथा अनिवार्यतः

श्रेष्ठ नहि; कखनो नाटकीय मौन कायरताक रूप सेहो धारण करैत अछि। एहन निर्णय रचनाक वास्तविक अंश पढ़लाक बादे सम्भव अछि।

पद्य-पठन : ध्वनि, छन्द आ पाठकीय आयु

गजल, गीत, मुक्तक आ दीर्घ कवितामे एकहि कसौटी लागू नहि होइत अछि। गजलमे बहर, काफिया, रदीफ, मतला-मकता आ शेरक अर्थगत स्वतंत्रता जाँचब जरूरी अछि। गीतमे गेयता, दोहरावक भेद, ध्वनिक उठान-खसाव आ सामूहिक उच्चारणक सम्भावना प्रमुख होइत अछि। कवितामे बिम्बसँ विचार धरि पहुँचबाक गति, ध्वनिक सूक्ष्म व्यञ्जना आ पाँति-विभाजन अर्थ बदलैत अछि कि नहि—ई देखल जाए।

किशोर कवितामे वयस्क आलोचकक रुचि मात्र निर्णायक नहि भऽ सकैत अछि। रचनाक बोधगम्यता, खिलबाक अवसर, व्यावहारिक अनुभव, स्वतंत्र सोच आ सामूहिक पाठक सम्भावना महत्त्वपूर्ण अछि। बालक लेल लिखल कविता सरल भऽ सकैत अछि, मुदा सरलता ओहि समय सफल अछि जखन भाषा संवेदनाकेँ छोट नहि करैत अछि।

अकुलाइत सुर : स्रोत-आधारित सम्पादकीय परीक्षण

प्रकाशित स्रोत-परिचयमे ‘अकुलाइत सुर’क दू भागमे १३३ किशोर गजल आ १३३ कविता-गीत वा चित्र-संकेतवला पाठ-इकाईक उल्लेख अछि। ई विवरण रचनासंख्याक प्रारम्भिक प्रमाण दैत अछि; मूल पाठक समग्र पाँतिक स्वतन्त्र परीक्षणक विकल्प नहि अछि। दुनू भाग अलग-अलग गनल जाए तँ दश प्रतिशतक आधार पर प्रत्येक भागसँ तेरह रचना चुनबाक गणनात्मक निकटता अछि; एकत्र २६६ इकाई लेल सत्ताइस। स्रोतक वास्तविक क्रम आ विधागत विभाजन सुनिश्चित भेलाक बादे अंतिम सूची निश्चित होयत।

उपलब्ध परिचयमे ‘के छथि’, ‘छुट्टी’, ‘अभ्यास’, ‘रिपेयर’, ‘बापकेँ नोशि नहि भेटलन्हि’, ‘शव नहि उठत’ आ ‘हे नाह चल आगाँ’ सन पाठ-शीर्षकसभ दर्ज अछि। मुदा शीर्षकक उपस्थिति वा संक्षिप्त परिचय उत्कृष्टताक प्रमाण नहि अछि। कियो शीर्षककेँ श्रेष्ठ

घोषित करबासँ पहिने ओकर पूरा पाठमे लय, बिम्ब, कथनक संगति आ आयुविशेषक पाठकीय प्रवेश परखल जाए।

‘हे नाह चल आगाँ’ शीर्षकक सम्बोधनमे गति आ अनिश्चितताक संकेत भेटैत अछि। शीर्षकक एहि ध्वनिसँ सम्पूर्ण कविताक अर्थ निर्धारित नहि भऽ सकैत अछि। ‘शव नहि उठत’ शीर्षक मनुष्यक मृत्यु आ सामाजिक प्रतिक्रिया दिस संकेत करैत अछि; ओकर मूल पाँति बिना कविता संवेदनशीलता आ व्यङ्ग्यक कोन अनुपात साधैत अछि, से कहल नहि जा सकैत अछि। एहि भेदकेँ बनौने रखब आलोचनाक आवश्यक संयम अछि।

इजोत — जनम-जनमक कथा : संग्रहक समग्र बनाम स्वतंत्र कथा

उपलब्ध सम्पादकीय विन्यासमे ‘इजोत — जनम-जनमक कथा’ एक स्वतंत्र कथा-संग्रह अछि। शीर्षकक ‘इजोत’ आ ‘जनम-जनम’क सम्बन्ध सामूहिक स्मृतिक पठन लेल प्रवेश-दुआर बनैत अछि। मुदा संग्रहक सभ कथामे एकहि प्रकाशरूपक अनिवार्य मानि लेब पूर्वनिर्णय होएत। समीक्षाकेँ देखबाक चाही जे कोन कथा एहि अर्थक्षेत्रकेँ पुष्ट करैत अछि, कोन ओकर प्रतिवाद करैत अछि, आ कोन संग्रहक शीर्षकसँ जानि-बुझि दूरी बनबैत अछि।

यदि संग्रहक उन्नचास कथा वाला संस्करण आधार हो, तँ निकटतम पूर्णांक अनुसार पाँच कथा चुनल जाए। एहि संख्याक निर्धारण पाठ-सूची आ संस्करण सत्यापित भेलाक बादे सार्थक होयत। पांचोटा कथा लेल पृथक कथात्मक संरचना, मूल उद्धरणक सन्दर्भ, पाठकीय प्रतिक्रिया-संभावना आ संग्रहक भीतर स्थानक विवेचन आवश्यक अछि।

कथा-शतत्रयी आ कथा-त्रिधारा : व्यापक संकलनक समस्या

बहुखण्डीय संग्रहमे एकही कथाविन्यासक पुनरावृत्ति, पात्र अथवा वस्तुक फेर-फेर आगमन, आ आरम्भिक-अन्तिम कथाक सम्पादकीय स्थानक विशेष महत्त्व अछि। चयन केवल अधिक प्रभावशाली अन्तवला कथा पर केन्द्रित हो तँ शान्त, धीमा आ परिवेशप्रधान

कथा उपेक्षित भऽ सकैत अछि। विविधताक प्रतिनिधित्व आ कलात्मक श्रेष्ठता एक-दोसराक पर्याय नहि; दुनूक कारण अलग लिखल जाए।

कथा-त्रिधाराक तीन खण्ड वा कथा-शतत्रयीक तीन खण्डमे किछु कथा एके मूल योजना सँ रूपान्तरित वा पुनर्प्रकाशित अछि कि नहि—ई पाठ-मिलान जरूरी अछि। केवल संख्यांकक आधारपर अलग-अलग कथा घोषित करब उचित नहि। कृति-सूची, अनुक्रम, पहिल आ अन्तिम अनुच्छेद, प्रमुख पात्र आ मूल पाठक क्रमिक तुलना ई समस्या सुलझा सकैत अछि।

स्मृतिक दोसर दिस आ पर्वत ऊपर भमरा जे सूतल

‘स्मृतिक दोसर दिस’क शीर्षक पाठककेँ स्मरणक विरुद्धमुखी स्वरूप दिस देखबाक संकेत दैत अछि। स्मृति आ आत्मछवि बीच टकरावक कथा अधिक समर्थ भेल कि स्मरणसँ जीवनक स्वीकार्यता निकलल—एहन तुलनात्मक निर्णय मूल कथा पढ़ि, कथावाचकक पूर्वग्रहक संकेत चिन्हि कऽ देल जाए।

‘पर्वत ऊपर भमरा जे सूतल’मे पर्वत, भमरा आ निद्राक वैषम्य शीर्षकीय ध्वनि बनबैत अछि। मुदा एहि रूपककेँ संग्रहक सब कथाक एकमेव मर्म घोषित करब साहित्यिक विविधता घटाएत। वास्तविक श्रेष्ठ कथा ओहो भऽ सकैत अछि जाहिमे ई बिम्ब कतहु उपस्थित नहि हो।

नव पाँखि : किशोर-कथा आ स्वतंत्र पाठकीय सत्ता

किशोर कथा पढ़ैत काल नैतिक शिक्षा आ साहित्यिक अनुभवक भेद स्पष्ट रहबाक चाही। किशोर पात्रक निर्णय सामाजिक आदेशकेँ मात्र स्वीकार करैत अछि अथवा अपन तर्क, भूल आ पुनर्विचारसँ गढ़ैत अछि—ई मुख्य प्रश्न अछि। कथानकमे जोखिम, हास्य, असफलता आ मित्रताक स्थान जाँचल जाए। पाठकक आयुकेँ कमजोरी मानि सरल उपदेश देनिहार कथासँ स्वतंत्र निर्णय लेल अवसर देनिहार कथा भिन्न अछि।

सम्पादकीय दस प्रतिशत चयन करैत समय घटनाक रोमांचकता भरि पर्याप्त नहि। कथावाचक किशोर अनुभवक निकट अछि कि वयस्क उपदेशक दूरी पर; बोली स्वाभाविक अछि कि सजावटी; कथा दोबारा पढ़लापर नव अर्थ दैत अछि कि नहि—एहि साक्ष्यक आवश्यकता अछि।

पाठगत साक्ष्य आ स्रोत-विवरण

मूल सम्पादकीय: ‘गजेन्द्र ठाकुर समग्रक सम्पादकीय’, आशीष अनचिन्हार, संलग्न पाण्डुलिपि।

भाषिक सम्पादनक आधार: ‘विदेह शुद्ध मैथिली लेखन-शैली निर्देशिका’, २०२६।

मूल कृतिसूची: ‘गजेन्द्र ठाकुर समग्र’, विदेहक सार्वजनिक लेखक-अभिलेख।

पद्यक सार्वजनिक सूची: ‘विदेह’क पद्य-पृष्ठ तथा ‘अकुलाइत सुर’क प्रकाशित स्रोत-परिचय।

मूल पाठक तुलनात्मक पुनर्पाठ : प्रथम संचयी विस्तार

गजेन्द्र ठाकुरक पद्य, कथा आ उपन्यासक मूल पाठ पर केन्द्रित सम्पादकीय आलोचना

अकुलाइत सुर : दूनू खण्डक पाठ-साक्ष्य

आलोचनाक आरम्भमे संग्रहक मूल पाठक क्रम, भेद, पुनरावृत्ति आ रचनागत स्वरूप अलग सँ चिन्हब आवश्यक अछि। ‘अकुलाइत सुर’क संयुक्त मूल Word पाठमे पहिल खण्डक १३३ गजल आ दोसर खण्डक १३३ कविता-गीत अलग शीर्षकसँ अंकित अछि। पहिल खण्डमे १३३४ मूल पाँति आ दोसरमे २८५६ पाँति भेटैत अछि। ई गणना मूल पाठक ‘पाँति’ रूपेँ निरूपित अनुच्छेदपर आधारित अछि; खाली अनुच्छेद, लेखक-नाम, शीर्षक आ छन्द-विवरण एकरामे नहि गानल गेल अछि।

गजल खण्डक १३३ रचनामे १२१ भिन्न शीर्षक अछि। ‘अपन गति’, ‘ना कहू’, ‘प्रश्नक साहस’, ‘साँच जाँचू’ सहित नौ शीर्षक एकसँ बेसी ठाम आयल अछि। रचनागत तुलनामे ई बात महत्त्वपूर्ण अछि: समान शीर्षक होएब समान काव्य-गुणक प्रमाण नहि। ‘ना कहू’क तीन संस्करणमे एकटा संवादक स्पष्टतापर, आ दोसरसभ सीमा राखबपर बेशी आश्रित अछि। ‘साँच जाँचू’क पछिला संस्करण अपनहूँ धारणा जाँचबाक आग्रह जोड़ैत अछि।

मूल पाठमे लिखल ‘बहर’, ‘मात्रा-क्रम’, ‘काफिया’ आ ‘रदीफ’क सूचना लेखक-द्वारा निर्दिष्ट औपचारिक परिचय अछि। एकरा बिना स्वतंत्र उच्चारणाधारित गणना कएने छन्द-सिद्धि नहि मानल जा सकैछ। वर्तमान मूल्याङ्कनमे पदलय, श्रवण-गति, बिम्ब, कथनक क्रम, बाल-पाठकक सक्रियता आ विषयगत पुनरावृत्ति एक-दोसराक संग पढ़ल गेल अछि। कविता-गीत खण्डमे शब्दानुकरण, वार्तालाप, लघु वृत्तान्त, लोकध्वनि आ विचारप्रधान गीतक भेद अधिक प्रखर अछि।

उपलब्ध २६६ मूल पाठक तुलनामे गजलमे परामर्शमूलक वाक्यक आवृत्ति बेशी देखाइत अछि; कविता-गीतमे पात्र, घटना आ स्थानीय स्वरक विविधता अपेक्षाकृत अधिक

अछि। एहि भेदकेँ एकरूप श्रेष्ठता नहि मानल गेल अछि: कतहु गजल ‘कागजक नाव’ जकाँ स्वतन्त्र दृश्य रचैत अछि, आ कतहु कविता-गीत अन्तिम अनुच्छेदमे रचनाक अर्थ स्पष्ट करैत-करैत अधिक उपदेशात्मक भऽ जाइत अछि। सम्पादकीय चयनक आधार कतेक नीक उद्देश्य अछि, से नहि; उद्देश्य केहन रूपमे साकार भेल अछि, से अछि।

सम्पादकीय श्रेष्ठ दश प्रतिशत : सत्ताइस चयनित रचना

संयुक्त संग्रहमे २६६ रचना अछि। तकर लगभग दस प्रतिशत पूर्ण संख्यामे २७ होइत अछि। पहिल खण्डसँ १४ गजल आ दोसर खण्डसँ १३ कविता-गीत चुनल गेल अछि। ई चयन संग्रहक भीतरक तुलनात्मक पठनक परिणाम अछि; काव्य-गुणक स्थायी सार्वभौम क्रमाङ्क नहि।

खण्ड १ : चौदह गजलक विस्तृत समीक्षा

गजल ४ — दादीक कथा

पाठसाक्ष्य : आरम्भ — अँचर भरल दुलार सुनाउ ने । अन्त — फेर ओही संसार सुनाउ ने ।

‘दादीक कथा’क प्रत्यक्ष सम्बोधनमे कविता बाल-पाठककेँ निष्क्रिय श्रोता नहि रखैत; ‘सुनाउ ने’क पुनरागमन कथाक माँगकेँ स्वर दैत अछि। चिड़ैक मनुष्य-जकाँ बाजब, पीपर-पातक हँकार आ चानक खिड़की लग चुपचाप रहब लोककथा आ प्रकृतिकेँ एकहि श्रवण-संसारमे अनैत अछि। एकरा ‘गजल’ कहल गेल अछि, मुदा एकर वास्तविक उपलब्धि मृदु सम्बोधनक लय अछि, कठोर मात्रिक समता नहि। एतय दादी लोक-स्मृतिक एकाधिकारिणी नहि, नेनाक प्रश्नक साझीदारि छथि। ‘सुनाउ ने’क लगातार आग्रह एकहि सुरमे घुरैतहुँ दृश्य बदलैत अछि; ई गजलकेँ दोहरावसँ बचेबैत अछि। तुलनामे ‘दादीक चान’ अधिक एकरे बिम्बक्षेत्रपर निर्भर अछि, मुदा एहि रचनामे बोलनिहार बालकक स्वर स्पष्ट अछि।

गजल १ — कागजक नाव

पाठसाक्ष्य : आरम्भ — मेह खोललक पानिक दुआर, आउ खेली । अन्त — आब अन्तिम एक बार, आउ खेली ।

‘कागजक नाव’मे मेघ, पोखरि, मेंढ़क, चिड़ै आ माटिक खेलौना एकटा चलैत दृश्य बनबैत अछि। कागजक नाव कैं पार पठेबाक काज खेल आ जोखिम दुनूकैं एक संग रखैत अछि। ‘आउ खेली’ रदीफ नाटकक सामूहिक निमन्त्रण बनि जाइत अछि; ई मात्र अनुशासनक आदेश नहि। प्रारम्भक पानिक दुआर अन्तमे साँझक मायक बोलाबय धरि पहुँचैत अछि, तें छोट गजलमे आरम्भ, विस्तार आ विरामक रूप भेटैत अछि। ‘मेहक खेल’क तुलना मे एहि रचनाक वस्तु-अनुभव बेसी ठोस अछि, किएक तँ बालक कागज, माटि आ पातसँ अपन संसार रचैत अछि। भारतीय बालगीतक ध्वनिमय परम्परासँ एकर निकटता अछि; लय पाठककैं दृश्य अभिनयक अवकाश दैत अछि।

गजल १५ — खेलक मैदान

पाठसाक्ष्य : आरम्भ — हारि गेलहुँ तँ की हार, खेलू ने । अन्त — हँसि कऽ फेर एक बार, खेलू ने ।

‘खेलक मैदान’क केन्द्र जीत नहि, पराजयक बादक सहचर्य अछि। हारि गेल बालककैं फेर खेलबाक नेनगार भाषा, प्रतिद्वन्द्वीक सफलता पर ताली, नियम न तोड़बाक आग्रह आ पहिल स्थानक अनिवार्यता पर प्रश्न—ई सभ मिलि प्रतिस्पर्धाक नैतिकता बनबैत अछि। ‘खेलू ने’क रदीफ हुकुम नहि, साथी द्वारा देल निमन्त्रण बुझाइत अछि। पाँच शेरमे मुख्य विचार लगातार सामाजिक होइत जाइत अछि: निजी हारसँ समूहक संस्कार धरि। ‘टीमक खेल’ आ ‘टोली’ मे सेहो सामूहिकता अछि; मुदा ‘खेलक मैदान’मे प्रतिद्वन्द्वीकैं मान देबाक विशिष्ट दृश्य एतय ओकरा अलग करैत अछि। रसक दृष्टिसँ हास-उल्लास प्रधान होइतहुँ शान्त-वीरक तत्त्व छनैत अछि।

गजल १६ — पोथीक पाँखि

पाठसाक्ष्य : आरम्भ — पन्ना-पन्नामे संसार, पढ़ू ने । अन्त — तखने खुलत संसार, पढ़ू ने ।

‘पोथीक पाँखि’ साक्षरता कैँ अंकक भण्डार नहि, कल्पनात्मक यात्राक साधन बनबैत अछि। पन्नासँ संसार आ अक्षरसँ दुआर खुलबाक रूपकक बाद कवि पाठककेँ पोथीसँ झगड़बाक अधिकार दैत छथि। इएह पाँति एहि गजलकेँ साधारण ‘पढ़ू’ उपदेशसँ अलग रखैत अछि। पाठकीय ग्रहणक सिद्धान्तमे अर्थ केवल लेखकक कथन नहि; पाठकक प्रश्न ओकर निर्माण करैत अछि। अपन गामसँ दूर लऽ जाएब आ कल्पनाक नदी पार करब बालकक सामाजिक भूगोल बढ़बैत अछि। अन्तिम शेरमे ज्ञानक जीवन-संबन्धक कसौटी अछि, मुदा एकरा उपयोगितावादी सीमामे नहि समेटल जा सकैछ, कारण आरम्भहि मे पोथी कल्पनाक क्षेत्र खोलैत अछि।

गजल १७ — परीक्षाक बिहान

पाठसाक्ष्य : आरम्भ — पोथीक एतेक भार, डरू नहि । अन्त — सीखि कऽ बढ़ू हर बार, डरू नहि ।

‘परीक्षाक बिहान’ परीक्षाकेँ व्यक्तिक सम्पूर्ण मूल्य ठहरएबाक विरुद्ध लिखल रचना अछि। ‘अंक अहाँक पूरा मोल नहि कहैए’ कविता-वाक्यक नैतिक केन्द्र बनैत अछि। आरम्भमे पोथीक भार आ डर अछि; मध्य मे कठिन प्रश्न छोड़ि फेर घुरबाक युक्ति; अन्तमे परीक्षा सँ बाहर जीवनक लम्बा काल। एहि काल-विस्तारक कारण निजी क्षणक घबराहट सापेक्ष बनैत अछि। रदीफ ‘डरू नहि’ बालकक भीतरक दुसर स्वर जकाँ सुनाइत अछि। ‘परीक्षाक बाद’ मे विश्रामक आग्रह अछि, मुदा एहि गजलमे परीक्षा चलैत कालक मनोदशा पकड़ल गेल अछि। एकर मर्यादा ई जे किछु पाँति कथात्मक दृश्यसँ बेसी सोझ सलाहपर निर्भर अछि।

गजल २१ — तुलना नहि

पाठसाक्ष्य : आरम्भ — दोसराक जीतसँ अपन हार—तुलना नहि । अन्त — आत्ममोलक बाजार—तुलना नहि ।

‘तुलना नहि’क पाँच शेर आत्ममोलक बाहरी मापदण्डपर प्रश्न उठबैत अछि। दोसराक जीत आ अपन हारकेँ एक-दोसराक पर्याय मानल नहि गेल अछि। ‘ककरो बाट तेज, ककरो बाट धीरे’ समयकेँ बहुवचन बनबैत अछि; सभ बालक लेल एकहि विकास-गति अनिवार्य

नहि। जालजगतमे देखल जीवन सम्पूर्ण जीवन नहि—ई बिन्दु आधुनिक किशोर-पाठकक ग्रहण-स्थिति कैं महत्त्व दैत अछि। ‘अपन गति’ शीर्षकसँ तीन भिन्न गजल अछि; तकर तुलनामे ‘तुलना नहि’ अधिक सुविन्यस्त सामाजिक प्रतिवाद करैत अछि, किएक तँ प्रतिस्पर्धा, मित्रता, डिजिटल प्रस्तुति आ आत्ममूल्य एक क्रममे जोड़ल गेल अछि। एतय करुणा उपदेश नहि, मूल्यांकनक नीति बदलबाक आग्रह अछि।

गजल २४ — लाइकसँ बाहर

पाठसाक्ष्य : आरम्भ — लाइक नहि कहै पूरा मोल, याद रखू । अन्त — जीवनक असली मोल, याद रखू ।

‘लाइकसँ बाहर’ मे ‘लाइक’ शब्द अपन अन्तरजालीय अर्थ संग सीधे उपस्थित अछि। कविता तकर विरोधमे देह, मीत, गाछ, खेल आ घरक सजीव सूची रखैत अछि। डिजिटल छविक मुस्की सभ दिनक सत्य नहि—ई बोध किशोर पाठककेँ स्वाभाविक संशय दैत अछि, घृणा नहि। रदीफ ‘याद रखू’ चेतावनीक लय बनबैत अछि, मुदा देहक आत्ममोलक कथन एहि लयकेँ मानवीय बनबैत अछि। समान विषयक ‘पर्दासँ बाहर’ आ ‘स्क्रीनक बाहर’ मे बाहरी दुनियाक दृश्य अछि; ‘लाइकसँ बाहर’ ओकर संग शरीर-छवि आ टिप्पणीसँ लगैत चोटकेँ सेहो जोड़ैत अछि। एहि सूक्ष्म मनोवैज्ञानिक प्रसंगक कारण एकर चयन उचित अछि।

गजल ३० — ना कहू

पाठसाक्ष्य : आरम्भ — मन नहि मानै ओ बात, स्पष्ट कहू । अन्त — मनमे नहि राखू बात, स्पष्ट कहू ।

‘ना कहू’ किशोर स्वायत्तताक गजल अछि। मीतक दबावमे गलत काजसँ मना करब, सन्देशक गलत अर्थसँ बचेबाक लेल सोझाँ भेटब आ मतभेदक बादो मित्रता बचल रहब—ई तीन भिन्न जीवन-स्थिति एतय जोड़ित अछि। ‘स्पष्ट कहू’क दोहराव संवादक अधिकार दैत अछि; आ चतुर्थ शेरमे मना करबाक क्रिया असम्मान नहि, अपन सीमा बचबाक उपाय होइत अछि। एहि संग्रहमे ‘ना कहू’ शीर्षक तीन बेर आयल अछि; एहि संस्करणक

विशिष्टता भाषिक स्पष्टताक आग्रह अछि। इतर दू रचनामे सीमा-निर्धारण प्रमुख अछि, एतय संवादक रूप बदलि गजल सामाजिक सम्बन्धक सूक्ष्म अध्ययन बनैत अछि।

गजल ५३ — ध्यानक डोर

पाठसाक्ष्य : आरम्भ — पर्दापर एतेक शोर—कने थामू । अन्त — मनक भीतर शोर —कने थामू ।

‘ध्यानक डोर’ स्क्रीनपर सूचना सँ दोसर सूचना धरि दौड़ैत मनक अनुभवकेँ ‘अँगुरीक डोर’ मे मूर्त करैत अछि। समकालीन उपकरणक आलोचना एतय उपकरणक निषेध नहि; यन्त्र उपयोगी रहय, मुदा मालिक नहि बनय—ई सन्तुलन जटिल अछि। ‘कने थामू’क रदीफ छोट श्वास-विराम जकाँ श्रवण-अनुभव पैदा करैत अछि। राति-भोरक समय-परिवर्तन आ भीतरी शोरक विरोध निजी एकाग्रता केँ सामाजिक जीवनसँ जोडैत अछि। ‘डिजिटल विराम’क सोझ निर्देशसँ भिन्न एतय मानसिक भटकावक ध्वनि आ स्पर्शक सूक्ष्म बिम्ब भेटैत अछि। कविता उपकरण छोड़बाक अपीलमे नहि, ध्यानपर फेर अधिकार पएबाक कथा बनैत अछि।

गजल ५९ — पहिल कमाइ

पाठसाक्ष्य : आरम्भ — कतेक भेल काम—हिसाब राखू । अन्त — बुझू ओकर दाम —हिसाब राखू ।

‘पहिल कमाइ’मे कमाइ गर्वक क्षण अछि, मुदा ओकरा श्रमसँ अलग नहि कएल गेल अछि। पहिल दू पाँति काज आ दामकेँ समतलपर रखैत अछि; बादक शेर बचत आ इच्छा-संयम दिस बढ़ैत अछि। निर्णायक मोड़ ओतय अछि जतय ‘देहक थकान’ सेहो हिसाबक हिस्सा बनैत अछि। एहि क्रममे पाइ वस्तुक खरीद-शक्ति भरि नहि, मनुखक समयक संचित रूप बनैत अछि। ‘पहिल खर्च’क तुलनामे एहि गजलमे आर्थिक विवेकक संग श्रमक नैतिकता उपस्थित अछि। रदीफ ‘हिसाब राखू’ अंकगणितीय आदेशसँ मानवीय उत्तरदायित्व धरि अर्थ बदलैत अछि। बाल-साहित्यमे आर्थिक प्रश्नकेँ एहि तरह प्रश्नबद्ध करब संग्रहक सार्थक प्रयोग अछि।

गजल ७३ — पहिल भाषण

पाठसाक्ष्य : आरम्भ — काँपए तइयो विचार मञ्चपर । अन्त — खुलि जाए संसार मञ्चपर ।

‘पहिल भाषण’ सार्वजनिक रूपेँ बजबाक डरक छोट मनोवैज्ञानिक रूपचित्र अछि। काँपैत कण्ठसँ शुरू भऽ श्रोता वर्गक स्वरूप, पाँति बिसरबाक सम्भावना आ साँस लऽ फेर आगाँ बढ़बाक क्षण धरि कविता पाठककेँ मंचपर ठाढ़ करैत अछि। रदीफ ‘मञ्चपर’ स्थान-निर्देश मात्र नहि; भीतरी भयक बाहर आबबाक प्रतीक अछि। निष्कर्षमे डरक छोट भऽ जाएब पूर्वापेक्षित निर्भयता नहि, अभ्याससँ अर्जित साहस अछि। ‘अपन आवाज’क सामान्य आग्रहक तुलनामे एहि गजलमे एकटा ठोस परिस्थिति, तकर अवरोध आ सम्भावित उत्तर भेटैत अछि; तेँ भावुक उत्साहक बदला अनुभवक क्रम पाठकेँ आगाँ बढ़बैत अछि।

गजल ९९ — रिसक बेर

पाठसाक्ष्य : आरम्भ — गहिरी लिअ साँस—कने थमू । अन्त — फेर करू प्रयास—कने थमू ।

‘रिसक बेर’में गहिर साँस लेलाक क्षणकेँ कथा-विराममे बदलल गेल अछि। बात तत्काल कहि देबाक आवेग आ बादमे ओही वचनक घाव बनि जाएबाक सम्भावना रचनाक वास्तविक संघर्ष अछि। ‘कने थमू’क ध्वनि स्वयं गति मंद करैत अछि; शेरक सलाह ओकर संरचनामे उतरैत अछि। मतभेदक उपस्थितिकेँ मित्रताक समाप्ति नहि मानल गेल अछि। एहि कारण कविता अप्रिय भावकेँ दबएबाक नहि, ओकर भाषिक आकार चुनबाक अभ्यास अछि। ‘ना कहू’क स्पष्ट निषेध आ ‘रिसक बेर’क विलम्ब—दूनूक तुलनासँ किशोरक संवादक दू भिन्न युक्ति स्पष्ट होइत अछि।

गजल १०९ — गाछ रोपू

पाठसाक्ष्य : आरम्भ — अँगना आनू बहार—गाछ रोपू । अन्त — धरती पहनत हार—गाछ रोपू ।

‘गाछ रोपू’ साधारण पर्यावरणीय नारा बनि सकैत छल, मुदा कविता बिरबासँ छाह आ चिड़ैक घर धरि समयक वृद्धि देखबैत अछि। रोपबाक आजुक छोट क्रिया कालिक सामूहिक लाभसँ जुड़ैत अछि। चिड़ै द्वारा बिहान जगएबाक दृश्य गाछकेँ मात्र संसाधन नहि, जीव-समुदायक आवास बनबैत अछि। रदीफक पुनरागमन सामूहिक गीतमे गाबय योग्य अछि; अन्तिम हरियर वस्त्रक रूपक दृश्यात्मक अछि। ‘कागजक नाव’ मे बच्चा पानिसँ संसार रचैत अछि, एतय ओ धरतीपर अपन भविष्य रोपैत अछि। कविताक सीमा एकर सरलीकृत समाधान अछि; वन, भूमि आ सामाजिक संघर्षक कठिनाई एतय नहि खुलैत अछि।

गजल १३३ — साँच जाँचू

पाठसाक्ष्य : आरम्भ — आएल प्रत्येक समाचार आइ जाँचू । अन्त — बुद्धिक अपन संतुलित विचार सदा जाँचू ।

अन्तिम गजल ‘साँच जाँचू’ केँ विशेष महत्त्व ओकर मूल प्रश्नक क्रमसँ भेटैत अछि। पहिने समाचार, फेर अपन पहिल विचार, तकर बाद चित्र, दावा, स्रोत आ पुनरावृत्तिक सत्य-मूल्य जाँचल जाइत अछि। केवल दूसराक सूचना नहि, अपन पूर्वधारणा सेहो परीक्षणक वस्तु बनैत अछि। पाँच शेरकेँ प्रमाण-शिक्षाक छोट क्रम कहि सकैत छी। ‘साँच जाँचू’ शीर्षकक पहिल रूप आ ‘प्रमाण देखू’सँ तुलना केलापर ई पाठ अधिक संक्षिप्त आ विचारतः संतुलित बुझाइत अछि; विशेषतः सन्देहकेँ बिना कारणक नकारसँ अलग करब महत्त्वपूर्ण अछि। काफियाक समरूपता अछि, मुदा एकर बौद्धिक वैचित्र्य अंतिम दू शेरमे तेज होइत अछि।

खण्ड २ : तेरह कविता-गीतक विस्तृत समीक्षा

ट्रेनक गाड़ी

पाठसाक्ष्य : आरम्भ — छुक छुक छुक । अन्त — सुतल गाछ बृच्छ भेल परात ।

‘ट्रेनक गाड़ी’ कविता लघु ध्वन्यात्मक टुकड़ीसँ आरम्भ करैत अछि। ‘छुक छुक छुक’ रेलक गति श्रवणमे अनैत अछि; छोट-छोट पाँति बच्चाक श्वास आ गति अनुकूल अछि।

‘पोखरि गाछी’क दोहराव रेलक खिड़की सँ बदलैत दृश्यकेँ एक लयमे ठाढ़ करैत अछि। अन्तिम खण्डमे स्टेशन छूटब, राति भरि चलब आ सुतल गाछक भोरमे बदलल रूप समय-गतिक अनुभव बढ़बैत अछि। शब्दक तुक पूर्णतः अनुशासित नहि; मुदा बाल-कविताक अभिनय सम्भावना बहुत अछि। ‘अकुलाइत सुर’क बहुसंख्यक उपदेशमूलक गजलसँ भिन्न एहि कवितामे शिक्षा निरूपणक आवश्यकता बिना अनुभव स्वयं कविताक आधार बनैत अछि।

हाथीक मुँहमे लागल पाइप

पाठसाक्ष्य : आरम्भ — बानर सोचलक की ? । अन्त — नेहक रंग हो सभसँ गहिर। ।

‘हाथीक मुँहमे लागल पाइप’मे हास्यक कारण रंगक पाइप नहि, हाथी आ बानरक अनुकरण-सम्बन्ध अछि। बानरक छिंकसँ रंगक बादर फुटबाक प्रसंग दृश्यात्मक चरमबिन्दु बनैत अछि। ‘आऽऽऽछी’ एकहि ध्वनिसँ घटनाकेँ मोड़ दैत अछि; पाठक वा श्रोता एहि ठाम अभिनय कऽ सकैत अछि। अन्तमे मित्रताक कथन आरम्भिक प्रतिद्वन्द्विताकेँ फेर अर्थ दैत अछि। कविता लोक-प्रहसन आ बाल-नाट्यक बीच ठाढ़ अछि। अंतिम पाँतिसभमे ‘होली सिखबैत’ कहि नैतिक आशय स्पष्ट कएल गेल अछि; ओहिसँ बिम्बक स्वतन्त्रता कने घटैत अछि। तैयो ठोस हास्य-घटना ओकरा चयन योग्य बनबैत अछि।

बौआ ठेहुनिया मारि

पाठसाक्ष्य : आरम्भ — भेल सोझ भए ठाढ़, । अन्त — साहस सदिखन जागत। ।

‘बौआ ठेहुनिया मारि’ बौआक देहगत विकासक कविता अछि। पहिल ठाढ़ होएबाक दृश्य, तिनपहियाक सहारा, एक-दू-तीन डगक गणना आ माए-बाबूक दूरसँ प्रतिक्रिया एकटा छोट घरक नाटक रचैत अछि। बालकक स्वाधीनता एकदम नहि अबैत; सहारासँ संतुलन धरि बढ़ैत अछि। देहक भितर जागल साहसक रूपक कविता कैँ बालक-पाठ सँ किशोर अनुभव धरि जोड़ैत अछि। ‘पहिल भाषण’ गजलमे सेहो पहिल प्रयासक भय अछि, मुदा एहि गीतमे साहसक प्राथमिक रूप शारीरिक अछि। अंतिम नीतिपरक पाँति कने व्याख्यात्मक अछि; मध्यक दृश्य स्वयं अधिक मार्मिक आ विश्वसनीय अछि।

मकड़ीक जाल

पाठसाक्ष्य : आरम्भ — मकड़ीक जाल । अन्त — किशोर बनाबै अपन बाट। ।

‘मकड़ीक जाल’ पहिने माछ आ कीड़ाक फँसब देखबैत अछि, फेर दिल्ली नगरक किशोर संघर्षमे ओही जालक रूपक घुरैत अछि। एहि मोड़सँ जीव-जगतक दृश्य सामाजिक संरचनामे बदलैत अछि। जाल ककरो घर, ककरो फाँस—एहि द्वैतमे कविताक सशक्त ध्वनि अछि। ओसक बुन्नी रौदमे चमकैत अछि, मुदा ओही चमकक पाछाँ बन्धनक सम्भावना अछि। ‘मकड़ी’क रचना केवल भयक प्रतीक नहि; सम्बन्धक गँठान सेहो अछि। ‘गाछ रोपू’क अधिक एकार्थी हरियरीक तुलनामे एहि कविताक पर्यावरणीय बिम्ब द्विअर्थी अछि। अन्तिम किशोर-उपदेश कविता कैं किछु स्पष्ट करैत अछि, मुदा पूर्वार्द्धक प्रश्नात्मक छवि बचल रहैत अछि।

बादुर सोंस

पाठसाक्ष्य : आरम्भ — बादुर बादुर । अन्त — सूझ-बूझ बनि जाए दीप। ।

‘बादुर सोंस’मे अन्हारमे ध्वनिक सहारे बाट चिन्हबाक विज्ञान काव्यबिम्ब बनैत अछि। बादुर आ सोंस दू पृथक पर्यावरणक प्राणी अछि—एकटा अकासमे, दोसर जलमे; मुदा दूनूक ज्ञानमार्ग प्रतिध्वनि अछि। ‘आँखिसँ कम, कानसँ बेसी’ पाँति बालकक बोधात्मक इन्द्रिय-क्रम उलटि दैत अछि। दूनू उदाहरण मिलि विज्ञानकैं अमूर्त परिभाषा नहि रहय दैत, अनुभवक साहचर्य बनबैत अछि। ‘की? किए? कोना? के?’क जिज्ञासामूलक स्वर एतयो अछि, मुदा एतय जिज्ञासाक उत्तर विशिष्ट जैविक प्रक्रिया द्वारा भेटैत अछि। कविता-काजक सीमा ई जे किछु वैज्ञानिक वाक्य विवेचनात्मक गद्य-जेकाँ भऽ जाइत अछि।

की? किए? कोना? के?

पाठसाक्ष्य : आरम्भ — की? किए? कोना? के? । अन्त — की? किए? कोना? के? ।

‘की? किए? कोना? के?’ प्रश्नक चारि छोट पदसँ आरम्भ भऽ पानि, माटि, घास, गाए, दूध, खेत आ धानक परस्पर सम्बन्ध देखबैत अछि। एक घटक दोसराक कारण बनैत

अछि; अन्तमे भाप सँ बरखा धरि घुरनाइ प्रकृतिक चक्रक बोध दैत अछि। ई कविता कथानकक बदला क्रमबद्ध बौद्धिक खेल अछि। छोट पाँति आ वस्तुक पुनरावृत्ति बालककेँ बोलि-बोलि कारण-सम्बन्ध याद रखबाक अवसर दैत अछि। 'बादुर सोंस' विशिष्ट वैज्ञानिक विधिक उदाहरण अछि; ई कविता जीविका, कृषि आ जलचक्रक एक व्यापक मानचित्र अछि। पाठकक जिज्ञासा पर नियन्त्रण नहि, प्रश्नक खुला पुनरारम्भ अन्तिम पाँति बनैत अछि।

अभ्यास

पाठसाक्ष्य : आरम्भ — पूछल गुरूसँ मृदंगपर हाथक गति । अन्त — आब थोड़ अछि भेल ।

'अभ्यास'मे मृदंगक लय टूटबाक प्रसंग आ पाथरमे घोड़ा गढ़बाक कथन मिलैत अछि। पहिल प्रसंग पुनरभ्यासक समय-शासन देखबैत अछि; दोसर प्रसंग कलात्मक दृष्टि: मूर्तिकार घोड़ा बनबैत नहि, पाथरक भीतर देखल आकृति सभसँ बेसी भाग हटाकऽ प्रकट करैत अछि। एहि कारण 'अभ्यास'क कथ्य कड़ा परिश्रम भरि नहि, रूपक पूर्वदृष्टि अछि। गुरु-शिष्य संवाद द्वारा कविता विचारक विनिमय करैत अछि; पाठक प्रश्न करैत बढ़ैत अछि। 'हुनर निखारू' गजल सामान्य प्रेरणा दैत अछि; एहि रचनामे संगीत आ मूर्तिकला दुनू ठोस उदाहरण अछि। दूनू दृष्टान्तक बीच संक्रमण अकस्मात अछि, मुदा ओही वैषम्य कविता कैँ बहुस्तरीय बनबैत अछि।

जूताक आविष्कार

पाठसाक्ष्य : आरम्भ — जखन गड़ल एक काँट । अन्त — राजा प्रसन्न कहल होअए एहिना ।

'जूताक आविष्कार'क मूल नाटकीय प्रसंग ई अछि जे राजा समूचा धरती चर्मसँ झाँपबाक आदेश दैत अछि, मुदा चर्मकार समाधान पएरक आकारमे खोजैत अछि। अनुपातक ई उलटाव सत्ता आ श्रमक विवेकमे अन्तर खोलैत अछि। श्रेष्ठता राजकीय आदेशमे नहि, समस्याक आकार सही बुझबाक कौशलमे अछि। छोट कविता राजनीतिक व्यंग्य आ लोकबुद्धिक मिसाल एक संग बनैत अछि। राजाक प्रसन्नता चरमबिन्दु अछि, मुदा

आलोचनात्मक पाठमे मुख्य पात्र चर्मकार अछि—ओ उपयोगी ज्ञानक वाहक अछि। ‘महीस पर वी.आइ.पी.’क जन्मगत प्रतिष्ठा पर प्रश्नक तुलनामे एहि रचनामे श्रमक बुद्धिसँ पदानुक्रम उलटल जाइत अछि।

दहेज

पाठसाक्ष्य : आरम्भ — ट्रेनमे भेटलन्हि घटक । अन्त — चाही एहन गुणानुरागी ।

‘दहेज’ मे घटक आ वरपक्षक बातचीतक टुकड़ासभ कथावाचकक दीर्घ टिप्पणी बिना सामाजिक हिंसा प्रकट करैत अछि। मोटरसाइकिल, चेन आ ‘लक्ष्मी’क नाम पर दोहरायल माँग दहेजक तर्कहीनता कैं व्यंग्य बनबैत अछि। गरीबक पुत्रीक विवाहक चिन्ता व्यक्तिक अपमानक भाषा रचैत अछि; अन्तमे तीन बेटीक भारक उल्लेख सामाजिक संकटकैं एक घरसँ आगाँ बढ़बैत अछि। एहि कवितामे रसक सरल वर्गीकरण कठिन अछि—हास्यक भीतर करुणा आ रोष अछि। अनेक स्थानपर वार्तालापक वक्ता-परिवर्तन स्पष्ट नहि; पाठककैं आवाज चिन्हबाक अतिरिक्त श्रम करय पड़ैत अछि। तैयो संवादप्रधान रचनामे समाजक आलोचनात्मक तीक्ष्णता अधिक अछि।

मजूरी नहि माँगह

पाठसाक्ष्य : आरम्भ — मजूरी नहि माँगह । अन्त — सुरक्षित बाटे आगाँ बढ़ू। ।

‘मजूरी नहि माँगह’ छोटी कथा-जेकाँ कविता अछि। दिन भरि काज कएने श्रमिक अपन दाम माँगैत अछि, आ ओकरा धमकी भेटैत अछि। प्रारम्भक अति-संक्षिप्त कथनमे शारीरिक असुरक्षा आ आर्थिक अन्याय एक संग अछि। श्रमिकक उत्तरमे जीवित रहबाक आवश्यकता अछि; श्रमक मूल्य केवल पैसाक प्रश्न नहि, जीविकाक निरन्तरता अछि। बादक पाँतिसभमे उचित मजदूरी आ सुरक्षित सामूहिक प्रतिवादक स्पष्ट संदेश अछि। ‘पहिल कमाइ’ गजल कमाइ बचएबाक बात कहैत अछि; एहि कवितामे कमाइ पएबाक अधिकारहि विवादित अछि। एहि अन्तरसँ बाल-पाठकक अर्थनीतिक बोध निजी बचतसँ सामाजिक न्याय धरि फैलैत अछि।

रिक्त

पाठसाक्ष्य : आरम्भ — पाँचम वर्गसँ सातम वर्गमे । अन्त — ककरा बुझायब आ के बूझत ? ।

‘रिक्त’ कविता असम्पूर्ण पारिवारिक वृत्तान्तक रूपमे लिखल अछि। छठम वर्गक हेरायल अनुभव, जन्मसँ पूर्व परिजनक मृत्यु, मौसी-मौसाक अनुपस्थिति आ सम्बन्धक नामसँ अनजान नव पीढ़ीक प्रश्न—ई सभ एके ‘रिक्त’ पदक अर्थ क्रमशः बदलैत अछि। रिक्तता एतय खाली ठाम मात्र नहि; जे अनुभव कहियो भेटलहि नहि, तकर स्मृति-निर्माण असम्भव रहबाक दुख अछि। कविताक वाक्य-विन्यास कतहु असमतल अछि, मुदा ओहि असमतलतामे संस्मरणक बोलचाल सुरक्षित अछि। ‘बौआ ठेहुनिया मारि’ मे परिवार जीवनक विकासक साक्षी अछि; ‘रिक्त’ मे अनुपस्थित परिवार विकासक भीतर चिन्ह छोड़ैत अछि। आधुनिक स्मृति-आलोचनाक दृष्टिसँ ई संग्रहक विशेष रचना अछि।

बाजू मैथिली

पाठसाक्ष्य : आरम्भ — पढ़ू मैथिली, लिखू मैथिली, । अन्त — एहिमे हमर संसार। ।

‘बाजू मैथिली’ मातृभाषाक पक्षमे लिखल गीत अछि, मुदा एकर महत्त्व मात्र भावनात्मक गौरवमे नहि। घर-आँगनसँ पोथी, नाटक, गीत, विज्ञान आ जाल धरि भाषा-प्रयोगक क्षेत्र बढ़ाओल गेल अछि। पुरान शब्द सहेजब आ नब शब्द गढ़ब एकहि क्रममे राखल अछि; अर्थात् संरक्षण आ आधुनिक सृजन विरोधी नहि। आन भाषा सभक आदर करबाक स्पष्ट विधान भाषायी आत्मसम्मानकेँ संकीर्णता सँ अलग करैत अछि। ‘मिथिला’ शीर्षक कविता क्षेत्रीय स्मृतिक समवेत चित्र दैत अछि; ‘बाजू मैथिली’ खास भाषा-अधिकारक व्यवहारिक कार्यक्रम बनबैत अछि। गीतक दोहराव सामूहिक स्वर बनबैत अछि, मुदा कतेको पाँति घोषणात्मक अछि; तकरा बावजूद अन्तर्निहित बहुभाषिक नैतिकता महत्त्वपूर्ण अछि।

बड़द करैए दाउन ने यौ

पाठसाक्ष्य : आरम्भ — हाथी अगत्त, पिछू, थाइत, माइल बिरि । अन्त — बड़द करैए दाउन ने यौ ।

‘बड़द करैए दाउन ने यौ’क केन्द्र अर्थसूचक कथनसँ बेसी बोलीक ध्वनि, पशुक पुकार आ लय अछि। ‘हिर्र-हिर्र’, ‘ती-ती’, ‘कुत-कुत’ सन ध्वनिसभ खेत, खरिहान आ जीव-जन्तुक जीवित संसार बनबैत अछि। ओहि ध्वनिसभक अर्थ पुस्तकक बाहर लोकजीवनक श्रवण-अनुभवसँ पूरा होइत अछि। इएह कारण ई गीतकेँ केवल मानक-व्याकरणक कसौटीपर कसब उचित नहि; लोकध्वनिक रूप जसक तस सुरक्षित रहबाक चाही। ‘ट्रेनक गाड़ी’ आधुनिक यातायातक ध्वनि अछि, जबकि ई रचना कृषि-पशु-सम्बन्धक ध्वनि-पेटार अछि। बालक जँ एकरा सामूहिक गाबैत अछि, तखन शब्दार्थक संग बोलीक स्मृति सेहो पहुँचैत अछि।

प्रसंगानुसार काव्य-तुलना

‘साँच जाँचू’ शीर्षकक गजल ७९ आ १३३ तथा ‘प्रमाण देखू’ (१२६)क तुलना करैत काल विषयक समानता सँ आगाँ बढ़ब आवश्यक अछि। ७९मे सूचना अग्रेषित करबासँ पूर्व रुकबाक आग्रह अछि; १२६मे तिथि, स्रोत आ सन्दर्भ विस्तृत ढङ्गसँ गनाओल गेल अछि; १३३मे समाचारक संग पाठकक अपन पहिल विचारक जाँच होइत अछि। एहि वैचारिक आत्म-परीक्षणक कारण १३३केँ चयन देल गेल अछि। ई निर्णय लोकप्रिय विषयक कारण नहि, विचारक बनावट पर आधारित अछि।

‘ना कहू’क तीन रचनामे क्रमशः असहमति, मान-सम्मान आ सीमा-निर्धारणक स्वर अछि। ३०मे दबावक परोक्ष प्रसंगसँ निकलि सोझाँ भेटि स्पष्ट गप करबाक बात अछि; तेँ अर्थ-सम्प्रेषणक जटिलता अधिक अछि। तहिना ‘अपन गति’क अनेक रचनामे आत्मनिर्णयक आग्रह अछि, मुदा ‘तुलना नहि’मे बाहरी तुलना, दोस्ती आ डिजिटल छवि एक संग आलोचित अछि। शीर्षकक पुनरावृत्ति सम्पादकीय छँटनीमे उपयोगी संकेत अछि, मुदा रचनाक भीतर भिन्नताक परीक्षण ओकर निर्णायक कसौटी अछि।

बालकक श्रवण-जगतक दू छोर ‘ट्रेनक गाड़ी’ आ ‘बड़द करैए दाउन ने यौ’मे भेटैत अछि। पहिल आधुनिक रेलक यन्त्र-ध्वनि सँ दृश्य बदलैत अछि; दोसर कृषि आ पशुजीवनक लोक-ध्वनि सँ संसार रचैत अछि। दुनू मे ध्वनि अर्थक पाछाँ नहि, अर्थक

निर्माण-स्थानपर अछि। ‘बादुर सोंस’ एही श्रवणशक्तिक ज्ञानात्मक रूप देखबैत अछि—जतय कान एकटा वैज्ञानिक जाँचक माध्यम बनैत अछि।

‘जूताक आविष्कार’, ‘दहेज’ आ ‘मजूरी नहि माँगह’मे क्रमशः श्रमक बुद्धि, विवाहक लेनदेन आ श्रमिकक अधिकारक प्रश्न अछि। प्रथम रचनामे चर्मकारक समाधान राजसत्ताक असंगत योजनाकेँ उलटबैत अछि; दोसरमे घटकक संवाद समाजक आर्थिक हिंसा खोलैत अछि; तेसरमे दाम माँगबो जोखिमपूर्ण अछि। एहि तीनूकेँ एक साथ रखलासँ बाल-कवितामे समाजक शक्ति-सम्बन्ध पर आलोचनात्मक बातचीतक अवकाश खुलैत अछि।

‘रिक्त’ एकटे भिन्न प्रकारक कविता अछि: ओकर अपूर्ण वाक्य आ हेरायल पारिवारिक अनुभव सुव्यवस्थित प्रेरक गीतक अपेक्षा अधिक प्रश्न छोडैत अछि। ‘बौआ ठेहुनिया मारि’क विकासशील घरेलू दृश्यक संग रखलासँ उपस्थित आ अनुपस्थित स्नेहक भेद उजागर होइत अछि। ‘मकड़ीक जाल’ एही अभाव-बोधकेँ नगरक दबाव आ जालक द्वैत द्वारा विस्तार दैत अछि। कम व्याख्यात्मक, बेसी प्रश्नपूर्ण कविता सभ संग्रहक साहित्यिक क्षेत्रकेँ व्यापक करैत अछि।

सम्पूर्ण २६६ रचनाक परीक्षण-पञ्जी

एहि पञ्जीमे सभ मूल रचनाक क्रम, शीर्षक, मूल पाँतिक संख्या, पहिल आ अन्तिम पाँतिक उल्लेख अछि। एतेक पाठ-सूचना एकर आधारक पहिचान दैत अछि। रचनाक मूल्याङ्कनक विस्तृत विवेचन उपर्युक्त चयनित सत्ताइस रचना आ प्रसंगानुसार तुलनामे प्रस्तुत अछि; पञ्जी मात्रक आधारपर श्रेष्ठता निश्चित नहि कएल गेल अछि।

पहिल खण्ड — १३३ गजल

1. गजल १ — बार्बी | 14 पाँति | आरम्भ: कनियाँ पुतरा छोड़ू आनू बार्बी | अन्त: चढ़ि ऐरावत दिन गानू बार्बी

2. गजल २ — चान मामा | 10 पाँति | आरम्भ: चान मामा हमर दुआर आउ ने | अन्त: धीरे-धीरे झंकार आउ ने

3. गजल ३ — सात रंग | 10 पाँति | आरम्भ: फूल-फूलमे बहार देखू ने | अन्त: खुलल अकासक दुआर देखू ने

4. गजल ४ — दादीक कथा · सम्पादकीय चयन | 10 पाँति | आरम्भ: अँचर भरल दुलार सुनाउ ने | अन्त: फेर ओही संसार सुनाउ ने

5. गजल ५ — तरेगन गनी | 10 पाँति | आरम्भ: परी संग कनी खेल, कतेक तार कहू ने | अन्त: सगर रात उगल चान, कतेक तार कहू ने

6. गजल ६ — बाटक खेल | 10 पाँति | आरम्भ: परी संग कनी खेल, कनी बाट चलै छी | अन्त: हमर गाम हँसल फूल, कनी बाट चलै छी

7. गजल ७ — चिड़ैक गीत | 10 पाँति | आरम्भ: चिड़ै संग उगल भोर, जतन गीत गबै छी | अन्त: परी संग हमर मीत, जतन गीत गबै छी

8. गजल ८ — हँसीक आँगन | 10 पाँति | आरम्भ: फूल खिलल अछि बहार, हँसू ने | अन्त: सपना बनल उपहार, हँसू ने

9. गजल ९ — कागजक नाव · सम्पादकीय चयन | 10 पाँति | आरम्भ: मेह खोललक पानिक दुआर, आउ खेली | अन्त: आब अन्तिम एक बार, आउ खेली

10. गजल १० — दादीक चान | 10 पाँति | आरम्भ: चानक ऊपर एक संसार, दादी कहैए | अन्त: मोनमे रहत संसार, दादी कहैए

11. गजल ११ — पतंगक पाँखि | 10 पाँति | आरम्भ: नील अकासक ओहि पार, उड़ि चलू | अन्त: एखन एक बेर आर, उड़ि चलू

12. गजल १२ — मेहक खेल | 10 पाँति | आरम्भ: मेह खोललक पानिक दुआर, दौड़ू ने | अन्त: कहब—बस एक बेर आर, दौड़ू ने

13. गजल १३ — निन्नक कथा | 10 पाँति | आरम्भ: आँखि मूनू, खुलत संसार, कथा सुनू | अन्त: मोनमे बाँचत संसार, कथा सुनू

14. गजल १४ — अपन सपना | 10 पाँति | आरम्भ: अपन चुनल राह, आगाँ चलू | अन्त: फेर चुनू नव राह, आगाँ चलू

15. गजल १५ — खेलक मैदान · सम्पादकीय चयन | 10 पाँति | आरम्भ: हारि गेलहुँ तँ की हार, खेलू ने | अन्त: हँसि कऽ फेर एक बार, खेलू ने

16. गजल १६ — पोथीक पाँखि · सम्पादकीय चयन | 10 पाँति | आरम्भ: पन्ना-पन्नामे संसार, पढ़ू ने | अन्त: तखने खुलत संसार, पढ़ू ने

17. गजल १७ — परीक्षाक बिहान · सम्पादकीय चयन | 10 पाँति | आरम्भ: पोथीक एतेक भार, डरू नहि | अन्त: सीखि कऽ बढ़ू हर बार, डरू नहि

18. गजल १८ — मीतक संग | 10 पाँति | आरम्भ: मीत अछि तँ हँसीक संग चलू | अन्त: एहन साँचक ढंग संग चलू

19. गजल १९ — पर्दासँ बाहर | 10 पाँति | आरम्भ: पर्दासँ बाहर संसार देखू ने | अन्त: धरती-अकासक संसार देखू ने

20. गजल २० — अपन राह | 10 पाँति | आरम्भ: लोक कहत बहुत राह, अपन चुनू | अन्त: फेर नबका राह, अपन चुनू

21. गजल २१ — तुलना नहि · सम्पादकीय चयन | 10 पाँति | आरम्भ: दोसराक जीतसँ अपन हार—तुलना नहि | अन्त: आत्ममोलक बाजार—तुलना नहि

22. गजल २२ — जालजगतसँ बाहर | 10 पाँति | आरम्भ: जालजगतसँ संसार बाहर चलू | अन्त: धरती-अकासक संसार, बाहर चलू

23. गजल २३ — विषय अपन | 10 पाँति | आरम्भ: सभ देखाओत राह, सोचि चुनू | अन्त: फेर अपन राह, सोचि चुनू

24. गजल २४ — लाइकसँ बाहर · सम्पादकीय चयन | 10 पाँति | आरम्भ: लाइक नहि कहै पूरा मोल, याद रखू | अन्त: जीवनक असली मोल, याद रखू

25. गजल २५ — बात फरिछाउ | 10 पाँति | आरम्भ: मीत रूसल तँ बात, बात फरिछाउ | अन्त: मनमे नहि राखू बात, बात फरिछाउ

26. गजल २६ — फेर प्रयास | 10 पाँति | आरम्भ: हारि गेल प्रयास, फेर करू | अन्त: अपन नब इतिहास, फेर करू

27. गजल २७ — अपन रूप | 10 पाँति | आरम्भ: आरसिमे देखल आकार, मोन छोट नहि करू | अन्त: बाहरक माप हजार, मोन छोट नहि करू

28. गजल २८ — अपन बात | 10 पाँति | आरम्भ: जे अखरैए ओ बात, खुलि कहू | अन्त: मनमे नहि राखू बात, खुलि कहू

29. गजल २९ — अपन गति | 10 पाँति | आरम्भ: सभक चलबाक राह रहय अपन-अपन | अन्त: चुनल गेल राह रहय अपन-अपन

30. गजल ३० — ना कहू · सम्पादकीय चयन | 10 पाँति | आरम्भ: मन नहि मानै ओ बात, स्पष्ट कहू | अन्त: मनमे नहि राखू बात, स्पष्ट कहू

31. गजल ३१ — निन्न बचाउ | 10 पाँति | आरम्भ: स्क्रीनसँ बाहरो अछि संसार, निन्न बचाउ | अन्त: सपनाक अपन संसार, निन्न बचाउ

32. गजल ३२ — समयक हिस्सा | 10 पाँति | आरम्भ: पढ़ाइ लेल कने काम, समय बाँटू | अन्त: एक्के नहि काम, समय बाँटू

33. गजल ३३ — बाट चुनैत | 10 पाँति | आरम्भ: एक्के नहि अछि राह, घबराउ नहि | अन्त: फेर चुनू नव राह, घबराउ नहि

34. गजल ३४ — ना कहू | 10 पाँति | आरम्भ: मोनपर जँ बेसी भार, ना कहू | अन्त: जतऽ घटए सम्मान, ना कहू

35. गजल ३५ — अपन गति | 10 पाँति | आरम्भ: दोसरासँ भेल जँ देर, अपन गति | अन्त: फेर चुनू एक बेर, अपन गति

36. गजल ३६ — ना कहू | 10 पाँति | आरम्भ: जे घटाबए अपन मान, ना कहू | अन्त: नेह रखि सम्मान, ना कहू

37. गजल ३७ — निन्नक समय | 10 पाँति | आरम्भ: बहुत भेल ई शोर, एखन सुतू | अन्त: बन्द करू ई शोर, एखन सुतू

38. गजल ३८ — प्रश्न पूछू | 10 पाँति | आरम्भ: जे नहि बुझलहुँ ओ बात, प्रश्न पूछू | अन्त: खुलि अपन बात, प्रश्न पूछू

39. गजल ३९ — मीत चुनू | 10 पाँति | आरम्भ: के रहत दुखमे संग, बुझि चुनू | अन्त: साँच मीतक संग, बुझि चुनू

40. गजल ४० — हारक बाद | 10 पाँति | आरम्भ: आइ भेटल जँ हार, फेर उठू | अन्त: लेने नबका विचार, फेर उठू

41. गजल ४१ — परीक्षाक बाद | 10 पाँति | आरम्भ: परीक्षाक एतेक भार, छोड़ि दिअ | अन्त: आइक एहन हार, छोड़ि दिअ

42. गजल ४२ — अपन विषय | 10 पाँति | आरम्भ: सभ देखाओत अलग राह, बुझि चुनू | अन्त: फेर खोजू अपन राह, बुझि चुनू

43. गजल ४३ — अपन निर्णय | 10 पाँति | आरम्भ: मीतक बीचो मान अपन रहू | अन्त: भीड़मे इंसान अपन रहू

44. गजल ४४ — अपन ताल | 10 पाँति | आरम्भ: दोसरासँ भेल जँ देर—अपन ताल | अन्त: फेर चुनू एक बेर—अपन ताल

45. गजल ४५ — तुलना छोड़ू | 10 पाँति | आरम्भ: आरसिमे देखल आकार—तुलना छोड़ू | अन्त: आत्ममोलक बजार—तुलना छोड़ू

46. गजल ४६ — भरोसा | 10 पाँति | आरम्भ: मीतसँ खुलि कहू बात—भरोसा रखू | अन्त: मनमे नहि राखू बात—भरोसा रखू

47. गजल ४७ — भूलसँ सीखू | 10 पाँति | आरम्भ: एक चूककेँ हार नहि मानू—भूलसँ सीखू | अन्त: ई जीतक आधार—भूलसँ सीखू

48. गजल ४८ — कने आराम | 10 पाँति | आरम्भ: दिन भरि भेल बहुत काम—कने आराम | अन्त: आइ देहकेँ आराम—कने आराम

49. गजल ४९ — सोझाँ बाजू | 10 पाँति | आरम्भ: मीतसँ मनक बात—सोझाँ बाजू | अन्त: मनमे नहि राखू बात—सोझाँ बाजू

50. गजल ५० — अपन सुर | 10 पाँति | आरम्भ: गाबू अपन गीत अपन सुरमे | अन्त: बाजू अपन गीत अपन सुरमे

51. गजल ५१ — पर्दासँ परे । 10 पाँति । आरम्भ: पर्दासँ पैघ संसार—कने बाहर । अन्त: धरती-अकास संसार—कने बाहर

52. गजल ५२ — मीतसँ बात । 10 पाँति । आरम्भ: मोनमे जे अछि बात—फरिछ बाजू । अन्त: मनमे नहि राखू बात—फरिछ बाजू

53. गजल ५३ — ध्यानक डोर · सम्पादकीय चयन । 10 पाँति । आरम्भ: पर्दापर एतेक शोर—कने थामू । अन्त: मनक भीतर शोर—कने थामू

54. गजल ५४ — मदद माँगू । 10 पाँति । आरम्भ: जे भारी लगै बात—मदद माँगू । अन्त: फरिछ कऽ कहू बात—मदद माँगू

55. गजल ५५ — भविष्यक बाट । 10 पाँति । आरम्भ: एके नहि अछि राह—खोजैत रहू । अन्त: फेर नबका राह—खोजैत रहू

56. गजल ५६ — निर्णय । 10 पाँति । आरम्भ: भीड़मे राखू मान—अपन निर्णय । अन्त: मनमे राखू उड़ान—अपन निर्णय

57. गजल ५७ — एक परिणाम । 10 पाँति । आरम्भ: एक परिणामक हार—अन्त नहि । अन्त: आइक छोट हार—अन्त नहि

58. गजल ५८ — स्क्रीनक बाहर । 10 पाँति । आरम्भ: कम अछि एतऽ शोर—स्क्रीनक बाहर । अन्त: पैघ अछि ई भोर—स्क्रीनक बाहर

59. गजल ५९ — पहिल कमाइ · सम्पादकीय चयन । 10 पाँति । आरम्भ: कतेक भेल काम—हिसाब राखू । अन्त: बुझू ओकर दाम—हिसाब राखू

60. गजल ६० — प्रश्नक साहस । 10 पाँति । आरम्भ: नहि बुझल विचार—पूछि लिअ । अन्त: खोलू नब दुआर—पूछि लिअ

61. गजल ६१ — टीमक खेल । 10 पाँति । आरम्भ: जीत हो वा हार, राखू उमंग—संग खेलू । अन्त: जीवन भरिक संग—संग खेलू

62. गजल ६२ — पहिल कमाइ । 10 पाँति । आरम्भ: हाथमे आयल दाम—सोचि खर्चू । अन्त: बुझि ओकर परिणाम—सोचि खर्चू

63. गजल ६३ — प्रश्नक साहस | 10 पाँति | आरम्भ: जे नहि बुझलहुँ बात—पूछि लिअ | अन्त: फरिछ कऽ अपन बात—पूछि लिअ

64. गजल ६४ — टीमक खेल | 10 पाँति | आरम्भ: जीत-हारक संग—संग खेलू | अन्त: राखि खेलक रंग—संग खेलू

65. गजल ६५ — कौशल | 10 पाँति | आरम्भ: केवल अंक नहि काम—कौशल सीखू | अन्त: बुझू अपन परिणाम—कौशल सीखू

66. गजल ६६ — खराब दिन | 10 पाँति | आरम्भ: आइ भेटल जँ हार—बस एक दिन | अन्त: ई छोट हार—बस एक दिन

67. गजल ६७ — टोली | 10 पाँति | आरम्भ: जीत अकेले नहि—संग टोलीमे | अन्त: तखन बढ़त सभक संग टोलीमे

68. गजल ६८ — निर्णयक समय | 10 पाँति | आरम्भ: नहि चुनू तुरत राह—कने समय दिअ | अन्त: खोजू नबका राह—कने समय दिअ

69. गजल ६९ — पहिल खर्च | 10 पाँति | आरम्भ: जाइत छी जखन बजार—हिसाब राखू | अन्त: सीखू नीक व्यवहार—हिसाब राखू

70. गजल ७० — प्रश्न करू | 10 पाँति | आरम्भ: नहि बुझाइ जे राह—प्रश्न करू | अन्त: खोजू अपन राह—प्रश्न करू

71. गजल ७१ — समाचार | 10 पाँति | आरम्भ: जे भेटल समाचार—पहिने जाँचू | अन्त: स्रोतक समाचार—पहिने जाँचू

72. गजल ७२ — पहिल यात्रा | 10 पाँति | आरम्भ: पहिने बुझू स्थान—ध्यान राखू | अन्त: दूनूक समान मान—ध्यान राखू

73. गजल ७३ — पहिल भाषण · सम्पादकीय चयन | 10 पाँति | आरम्भ: काँपए तइयो विचार मञ्चपर | अन्त: खुलि जाए संसार मञ्चपर

74. गजल ७४ — पहिल असफलता | 10 पाँति | आरम्भ: पहिल बेर भेटल हार फेर जाउ | अन्त: छोड़ि आइक हार फेर जाउ

75. गजल ७५ — समूहक दबाव | 10 पाँति | आरम्भ: जे मनकेँ नहि भावै बात सोचि कहू | अन्त: मनमे नहि राखू बात सोचि कहू

76. गजल ७६ — डिजिटल विराम | 10 पाँति | आरम्भ: बहुत भेल ई शोर फोन राखू | अन्त: राति बहुत भेल, ई शोर फोन राखू

77. गजल ७७ — समय बाँटू | 10 पाँति | आरम्भ: पढ़ाइ अछि सवाल—समय बाँटू | अन्त: राखू सभक खयाल—समय बाँटू

78. गजल ७८ — पहिल जिम्मेदारी | 10 पाँति | आरम्भ: छोट हो तइयो काम—जिम्मेदारी लिअ | अन्त: अपन चुनल काम—जिम्मेदारी लिअ

79. गजल ७९ — साँच जाँचू | 10 पाँति | आरम्भ: आयल जँ समाचार—साँच जाँचू | अन्त: तखन मानू समाचार—साँच जाँचू

80. गजल ८० — अपन आवाज | 10 पाँति | आरम्भ: मोनमे अछि जँ बात—खुलि बाजू | अन्त: नेहसँ दिन-रात—खुलि बाजू

81. गजल ८१ — परीक्षा बाद | 10 पाँति | आरम्भ: मोनपर बेसी भार—कने विश्राम करू | अन्त: देहक सुनू पुकार—कने विश्राम करू

82. गजल ८२ — मीतक सीमा | 10 पाँति | आरम्भ: अपन मनक मान—सीमा राखू | अन्त: नेहक ई सम्मान—सीमा राखू

83. गजल ८३ — अपन लय | 10 पाँति | आरम्भ: भीड़क अलग चाल—अपन लय राखू | अन्त: सोचि चुनू चाल—अपन लय राखू

84. गजल ८४ — मीतक पहिचान | 10 पाँति | आरम्भ: जे सुनए मनक बात—मीत चिन्हू | अन्त: ओकर साँच बात—मीत चिन्हू

85. गजल ८५ — डरक पार | 10 पाँति | आरम्भ: भेटल जँ हार—आगाँ बढ़ू | अन्त: सम्हारि अपन भार—आगाँ बढ़ू

86. गजल ८६ — आरम्भ | 10 पाँति | आरम्भ: मोनपर नहि भार—एखन आरम्भ करू | अन्त: नहि मानू ई हार—एखन आरम्भ करू

87. गजल ८७ — रुचिक बाट | 10 पाँति | आरम्भ: जे करिते बढ़ए ज्ञान—अपन रुचि चिन्हू | अन्त: बढ़त तखन ज्ञान—अपन रुचि चिन्हू

88. गजल ८८ — साँचक जाँच | 10 पाँति | आरम्भ: आयल जँ समाचार—जाँचि तखन मानू | अन्त: रोकू असत्य प्रचार—जाँचि तखन मानू

89. गजल ८९ — नब मीत | 10 पाँति | आरम्भ: नब मीतक व्यवहार—धीरे चिन्हू | अन्त: देखू सभ व्यवहार—धीरे चिन्हू

90. गजल ९० — भूल स्वीकार | 10 पाँति | आरम्भ: भूल भेल—स्वीकार, साँच कहू | अन्त: करू खुलि स्वीकार—साँच कहू

91. गजल ९१ — एखन करू | 10 पाँति | आरम्भ: जे छोट अछि काम—एखन करू | अन्त: सँभारू अपन काम—एखन करू

92. गजल ९२ — प्रश्न पुछू | 10 पाँति | आरम्भ: बुझबाक जँ अछि चाह—प्रश्न पुछू | अन्त: साँचक राखू चाह—प्रश्न पुछू

93. गजल ९३ — काज बाँटू | 10 पाँति | आरम्भ: एक्के माथ नहि भार—संग करू | अन्त: हलुक होएत भार—संग करू

94. गजल ९४ — अपन गति | 10 पाँति | आरम्भ: बाटपर राखू ध्यान—अपन गति राखू | अन्त: राखू साफ ध्यान—अपन गति राखू

95. गजल ९५ — नब हुनर | 10 पाँति | आरम्भ: खोलू नबका दुआर—सीखैत रहू | अन्त: धीरज संग सुधार—सीखैत रहू

96. गजल ९६ — बात जाँचू | 10 पाँति | आरम्भ: आएल जँ समाचार—पहिने जाँचू | अन्त: राखू ई विचार—पहिने जाँचू

97. गजल ९७ — लिखि कऽ बुझू | 10 पाँति | आरम्भ: मनमे उठल भाव—लिखि कऽ बुझू | अन्त: फेर पढ़ू मनक भाव—लिखि कऽ बुझू

98. गजल ९८ — एक काज | 10 पाँति | आरम्भ: पहिने राखू ध्यान—एक काज करू | अन्त: मोन रहत एकतान—एक काज करू

99. गजल ९९ — रिसक बेर · सम्पादकीय चयन | 10 पाँति | आरम्भ: गहिरी लिअ साँस—कने थमू | अन्त: फेर करू प्रयास—कने थमू

100. गजल १०० — अपन माप | 10 पाँति | आरम्भ: अपन श्रमक मान—अपन माप रखू | अन्त: फेर चिन्हू पहिचान—अपन माप रखू

101. गजल १०१ — मीत चुनू | 10 पाँति | आरम्भ: पहिने बुझू विचार—मीत चुनू | अन्त: मोन खोलय दुआर—मीत चुनू

102. गजल १०२ — कने-कने सीखू | 10 पाँति | आरम्भ: राखू स्पष्ट विचार—कने-कने सीखू | अन्त: लेत अपन आकार—कने-कने सीखू

103. गजल १०३ — अपन स्वर | 10 पाँति | आरम्भ: अपन बातक मान—अपन स्वर राखू | अन्त: जीवन बनत गान—अपन स्वर राखू

104. गजल १०४ — भूलसँ सीखू | 10 पाँति | आरम्भ: करू अपन स्वीकार—भूलसँ सीखू | अन्त: साँच बनत आधार—भूलसँ सीखू

105. गजल १०५ — बेर बाँटू | 10 पाँति | आरम्भ: पहिने चुनू काम—बेर बाँटू | अन्त: दिअ उचित आराम—बेर बाँटू

106. गजल १०६ — साँच लिखू | 10 पाँति | आरम्भ: जतए भेटए ज्ञान—साँच लिखू | अन्त: बनत निज पहिचान—साँच लिखू

107. गजल १०७ — सुनि कऽ बाजू | 10 पाँति | आरम्भ: राखू स्पष्ट विचार—सुनि कऽ बाजू | अन्त: खुलत नेहक दुआर—सुनि कऽ बाजू

108. गजल १०८ — कौड़ी बचाउ | 10 पाँति | आरम्भ: पहिने करू विचार—कौड़ी बचाउ | अन्त: श्रमक ई उपहार—कौड़ी बचाउ

109. गजल १०९ — गाछ रोपू · सम्पादकीय चयन | 10 पाँति | आरम्भ: अँगना आनू बहार—गाछ रोपू | अन्त: धरती पहनत हार—गाछ रोपू

110. गजल ११० — प्रश्न लिखू | 10 पाँति | आरम्भ: जागल जँ विचार—प्रश्न लिखू | अन्त: पढ़ू खुलल संसार—प्रश्न लिखू

111. गजल १११ — मीतक मान | 10 पाँति | आरम्भ: मीतक अपन मान—मान राखू | अन्त: भिन्न स्वरक गान—मान राखू

112. गजल ११२ — सपन सँ काज | 10 पाँति | आरम्भ: सपन पर दिअ ध्यान—काज धरू | अन्त: मोन लए उड़ान—काज धरू

113. गजल ११३ — बेर बाँटू | 10 पाँति | आरम्भ: काजपर दिअ ध्यान—बेर बाँटू | अन्त: सपन लए उड़ान—बेर बाँटू

114. गजल ११४ — पहिने सुनू | 10 पाँति | आरम्भ: ककरो अलग विचार—पहिने सुनू | अन्त: खुलत नव संसार—पहिने सुनू

115. गजल ११५ — हुनर निखारू | 10 पाँति | आरम्भ: जे अछि ज्ञान—निखारू | अन्त: जीवनक गान—निखारू

116. गजल ११६ — सीमा राखू | 10 पाँति | आरम्भ: अपन मान—सीमा राखू | अन्त: ई बातक ध्यान—सीमा राखू

117. गजल ११७ — पढ़ि बुझू | 10 पाँति | आरम्भ: शब्दक भीतर विचार—पढ़ि बुझू | अन्त: बोधक हो विस्तार—पढ़ि बुझू

118. गजल ११८ — बाट चुनू | 10 पाँति | आरम्भ: अपन पहिचान—बाट चुनू | अन्त: जीवनक गान—बाट चुनू

119. गजल ११९ — निज बात | 10 पाँति | आरम्भ: मीतक मान—सहेजि राखू | अन्त: सम्बन्धक ज्ञान—सहेजि राखू

120. गजल १२० — प्रश्नक साहस | 10 पाँति | आरम्भ: मनमे उठल विचार—प्रश्न करू | अन्त: राखू निज अधिकार—प्रश्न करू

121. गजल १२१ — दिनक क्रम | 10 पाँति | आरम्भ: काजक आधार—क्रम बनाउ | अन्त: सीखक हो विस्तार—क्रम बनाउ

122. गजल १२२ — दबावमे निर्णय | 10 पाँति | आरम्भ: अपन मान—अपन मन सुनू | अन्त: निर्णयमे राखू ध्यान—अपन मन सुनू

123. गजल १२३ — मीतक गोपन बात | 10 पाँति | आरम्भ: मीतक मान—गोपन राखू | अन्त: समझक ई ज्ञान—गोपन राखू

124. गजल १२४ — अपूर्णतासँ सीख | 10 पाँति | आरम्भ: एक चूक नहि हार—फेर सँ सीखू | अन्त: सीखू नीक व्यवहार—फेर सँ सीखू

125. गजल १२५ — अपन सीमा | 10 पाँति | आरम्भ: अपन मान—सीमा राखू | अन्त: बचल रहए सम्मान—सीमा राखू

126. गजल १२६ — प्रमाण देखू | 10 पाँति | आरम्भ: जे सुनलहुँ ओकर आधार—जाँचि लिअ | अन्त: साँचक दृढ़ आधार—जाँचि लिअ

127. गजल १२७ — धीरे बढ़ू | 10 पाँति | आरम्भ: करू छोट प्रयास—धीरे बढ़ू | अन्त: बाटमे राखू विश्वास—धीरे बढ़ू

128. गजल १२८ — थाकल मोन | 10 पाँति | आरम्भ: थाकल मोनकेँ विराम दिअ | अन्त: स्वास्थ्यकेँ पहिल मुकाम दिअ

129. गजल १२९ — संग काज | 10 पाँति | आरम्भ: दलमे सभक साथ राखू | अन्त: नेहक सहज साथ राखू

130. गजल १३० — सहायता माँगू | 10 पाँति | आरम्भ: बड्डु बढ़ि जाए भार—सहायता माँगू समयपर | अन्त: एहने बनै व्यवहार—सहायता माँगू समयपर

131. गजल १३१ — अपन सीमा राखू | 10 पाँति | आरम्भ: पहिने अपन मनमे साफ विचार राखू | अन्त: नेहमे संवादक दुआर खुलल राखू

132. गजल १३२ — काजक क्रम | 10 पाँति | आरम्भ: पहिने अपन समयक सँभार नीक करू | अन्त: अगिला बेर समयक सँभार नीक करू

133. गजल १३३ — साँच जाँचू · सम्पादकीय चयन | 10 पाँति | आरम्भ: आएल प्रत्येक समाचार आइ जाँचू | अन्त: बुद्धिक अपन संतुलित विचार सदा जाँचू

दोसर खण्ड — १३३ कविता-गीत

134. ट्रेनक गाड़ी · सम्पादकीय चयन | 13 पाँति | आरम्भ: छुक छुक छुक | अन्त: सुतल गाछ बृच्छ भेल परात

135. के छथि | 12 पाँति | आरम्भ: के छथि जिनकर हथेलीमे | अन्त: नव प्रभात उजियारत।

136. राजा श्री अनुरन्वज सिंह | 16 पाँति | आरम्भ: एक सुरमे बाजि देखाऊ | अन्त: हँसैत-गाबैत आगाँ जाऊ।

137. सूतल | 12 पाँति | आरम्भ: सूतल धरती | अन्त: भोरे-सकाल

138. अखण्ड भारत | 18 पाँति | आरम्भ: धीर वीर छी मातु बेर की | अन्त: पूर्ण होएत मनोरथ सभक कियो छुटत नञि

139. मोनक जड़िमे | 20 पाँति | आरम्भ: पंक्तिबद्ध पुनः किञ्च नञि जानि किए सेजल | अन्त: पंक्तिबद्ध पुनः किञ्च जानि कए सेजल छी

140. पुनः स्मृति | 12 पाँति | आरम्भ: बितल बर्ख बितल युग | अन्त: होएत कखनहु नहि बन्द

141. कलम गाछी | 12 पाँति | आरम्भ: कलम गाछी सौँसे गमकै, | अन्त: प्रकृति संग राखू नेह।

142. हाथीक मुँहमे लागल पाइप · सम्पादकीय चयन | 23 पाँति | आरम्भ: बानर सोचलक की ? | अन्त: नेहक रंग हो सभसँ गहिर।

143. बानर राजा | 23 पाँति | आरम्भ: सिँह राजसँ भेल पीड़ित वन-जन | अन्त: बुझू हमरो मजबूरी !

144. चिड़ियाखाना | 24 पाँति | आरम्भ: भालू मामा धीमे-धीमे, | अन्त: हँसत धरती, गाबत संसार।

145. जमबोनी | 16 पाँति | आरम्भ: जमबोनीक जोम पसरल, | अन्त: दूर चलू, अपनहि सँ भेटि।

146. बौआ ठेहुनिया मारि · सम्पादकीय चयन | 25 पाँति | आरम्भ: भेल सोझ भए ठाढ़, | अन्त: साहस सदिखन जागत।

147. ट्रिंग-ट्रिंग-ट्रिंग | 37 पाँति | आरम्भ: ट्रिंग-ट्रिंग-ट्रिंग, | अन्त: स्वाधीनताक नव रंग।

148. भोरक बसात | 20 पाँति | आरम्भ: भोरक बसात | अन्त: अपन सुरमे गाउ नव गाथ।

149. छाहक करतब | 20 पाँति | आरम्भ: दुपहरियामे छोट छाह, | अन्त: हम बढ़ैत रहब दिन-रात।

150. सपन | 30 पाँति | आरम्भ: आइ देखल सपन | अन्त: काल्हि तकरा सच करब।

151. कोइरीक कूकू | 32 पाँति | आरम्भ: कोइरीक कूकू | अन्त: अन्हारो देइ नव उत्तर आब।

152. शितलपाटी | 24 पाँति | आरम्भ: शितलपाटी हम्मर, | अन्त: एहि सँ उज्जर होयत प्रात।

153. मकड़ीक जाल · सम्पादकीय चयन | 34 पाँति | आरम्भ: मकड़ीक जाल | अन्त: किशोर बनाबै अपन बाट।

154. वायुगोलक | 24 पाँति | आरम्भ: वायुगोल बैलून, | अन्त: एहने हो किशोरक काम।

155. हाथीक सूप सन कान | 33 पाँति | आरम्भ: हाथीक सूपसन कान | अन्त: मोट हाथीक धम्मक-धम।

156. छुट्टी | 32 पाँति | आरम्भ: आइ छुट्टी | अन्त: फेर पढ़ाइमे देब धियान।

157. बौआ गेल सुनि | 44 पाँति | आरम्भ: एक दू तीन | अन्त: ओहि स्वरमे भविष्य सजाब।

158. मिथिला | 39 पाँति | आरम्भ: मथल जतए शत्रुकेँ | अन्त: दीप जरा कऽ आगाँ बढ़ब।

159. बादुर सोंस · सम्पादकीय चयन | 40 पाँति | आरम्भ: बादुर बादुर | अन्त: सूझ-बूझ बनि जाए दीप।

160. की? किए? कोना? के? · सम्पादकीय चयन | 25 पाँति | आरम्भ: की? किए? कोना? के? | अन्त: की? किए? कोना? के?

161. फेर आएल जाड़ | 28 पाँति | आरम्भ: फेर आएल जाड़, | अन्त: आगाँ बढ़ — मुदा नेहक संगसार।

162. अंध विश्वास | 14 पाँति | आरम्भ: मन्दार पर्वतक चारू-कात | अन्त: छह अंध-काण्ड सुनेबा लए

163. अभ्यास · सम्पादकीय चयन | 31 पाँति | आरम्भ: पूछल गुरूसँ मृदंगपर हाथक गति | अन्त: आब थोड़ अछि भेल

164. आँखिक चश्मा | 20 पाँति | आरम्भ: दादा पहुँचलाह डॉक्टर लग | अन्त: चश्माक नंबरे गलत पड़ल अछि

165. तीने टा अछि ऋतु | 24 पाँति | आरम्भ: पुछल— “इसकूल किएक नहि अएलहुँ?” | अन्त: सपन दिस बढ़ब हरेक डेग।

166. दरिद्र | 14 पाँति | आरम्भ: आठ सय बीघा खेत | अन्त: एक दिनुका गप नहि ई सभ दिनुका चरित्र छी

167. रौह नहि नैन | 28 पाँति | आरम्भ: हँ यौ, नैन अछि ई, | अन्त: ओहि दृष्टिसँ संसार निहारू।

168. जूताक आविष्कार · सम्पादकीय चयन | 14 पाँति | आरम्भ: जखन गड़ल एक काँट | अन्त: राजा प्रसन्न कहल होअए एहिना

169. बूढ़ वर | 26 पाँति | आरम्भ: कतय छी आयल आइ ? | अन्त: नव बुझाइत बाट खुलाइ।

170. रिपेयर | 24 पाँति | आरम्भ: इसकूलक तालाक रिपेयर केलक | अन्त: मजबूत होइ समाजक प्राण।

171. नोकर | 14 पाँति | आरम्भ: फोन कऽ कय घरमे पूछल | अन्त: बुझू ई यौ अफसर

172. क्लासमे अबाज | 24 पाँति | आरम्भ: दुनू दिशक बेंचकेँ उठाकय पुछलन्हि | अन्त: सत्य भेटे तखनहि बाजू।

173. एस.एम.एस. | 24 पाँति | आरम्भ: कहू एहिमे अहाँ छी | अन्त: सूझ-बूझे किशोरक नीर।

174. टी.टी. | 23 पाँति | आरम्भ: मजिस्ट्रेट चेकिङ भेल | अन्त: नाम होयत सैह एकर आब

175. खगता | 16 पाँति | आरम्भ: गोर लागि मौसीकेँ निकलल | अन्त: बैसल फेर ओ तखन

176. क-ख सँ दर्शन | 15 पाँति | आरम्भ: ट्युशन पढ़बय जाइत छँह | अन्त: खुआ पिया कए केने अछि ढेर

177. चोरकेँ सिखाबह | 13 पाँति | आरम्भ: यौ काका छी अहाँ खाटकेँ | अन्त: ई गप तोहीँ जा कय

178. नरक निवारण चतुर्दशी | 17 पाँति | आरम्भ: भुखले भरि दिन दिन बिति गेल | अन्त: सुनला कत्तेक दिन भए गेल

179. नौकरी | 12 पाँति | आरम्भ: नौकरी नहि करी तखन | अन्त: समस्यासँ अछि नहि छूटि

180. मरकरी डिलाइट | 20 पाँति | आरम्भ: सोझाँसँ त्रिपुण्ड-चानन | अन्त: गामक नव उदयनाचार्य

181. दीयाबाती | 22 पाँति | आरम्भ: अन्हरिया भगेलक | अन्त: इजोत बनू, नहि छोड़ू बाट।

182. फ्रैक्चर | 28 पाँति | आरम्भ: हॉस्पीटलमे आबाजाही | अन्त: पैर टूटलन्हि नहि बाउ

183. बापकेँ नोशि नहि भेटलन्हि । 12 पाँति । आरम्भ: यौ बुझलहुँ बुच्चुनक गप्प । अन्त: नहि करैत छथि खिधांशसुनियन्हु हुनकर साँच

184. दहेज · सम्पादकीय चयन । 32 पाँति । आरम्भ: ट्रेनमे भेटलन्हि घटक । अन्त: चाही एहन गुणानुरागी

185. बेचैन नहि निचैन रहू । 28 पाँति । आरम्भ: बेचैन नहि निचैन रहू । अन्त: अपन श्रमसँ निचैन भेटत आही।

186. थल-थल । 29 पाँति । आरम्भ: थल-थल । अन्त: जे हँसी पुरनका होअय लोप।

187. क्रिकेट-फील्डिंग । 25 पाँति । आरम्भ: क्रिकेट-फील्डिंग । अन्त: ओहि किशोरक खेल बढ़ै।

188. मैट्रिक प्लक । 25 पाँति । आरम्भ: मैट्रिक प्लक । अन्त: श्रम आ सूझ-बूझ कम नहि।

189. काँकड़ु । 24 पाँति । आरम्भ: काँकड़ु । अन्त: तखने खुलत विकासक दुआर।

190. कैप्टन । 24 पाँति । आरम्भ: कैप्टन । अन्त: नहि जे खोजै अपनहि नाम।

191. दूध । 27 पाँति । आरम्भ: दूध । अन्त: ध्यान ओकरा बाट देखा देत।

192. अटेंडेंस । 26 पाँति । आरम्भ: अटेंडेंस । अन्त: ओकर समये बनै आधार।

193. शो-फटक्का । 21 पाँति । आरम्भ: शो-फटक्का । अन्त: एहि नेमसँ बनत असर।

194. भारमे माटि । 27 पाँति । आरम्भ: भारमे माटि । अन्त: संग बढ़बमे सभक प्रभाव।

195. कंजूस । 21 पाँति । आरम्भ: कंजूस । अन्त: तखने धनक होइछ सदुपयोग विशाल।

196. पाइ । 25 पाँति । आरम्भ: पाइ । अन्त: ओहि घरमे उजियारक डेग।

197. असत्य । 18 पाँति । आरम्भ: असत्य । अन्त: तँ टाँग पकड़ैत जाइत छी?

198. समुद्री | 27 पाँति | आरम्भ: समुद्री | अन्त: एहिसँ घटैत नहि सम्मान।

199. गाम | 25 पाँति | आरम्भ: गाम | अन्त: जँ मनुख मनुखसँ सचमुच जुड़ल।

200. लोली | 17 पाँति | आरम्भ: लोली | अन्त: पीढ़ी-पीढ़ीक अपन रंग।

201. तकलाहा दिन | 19 पाँति | आरम्भ: तकलाहा दिन | अन्त: जँ मनमे नहि होय प्रयास।

202. बिकौआ | 18 पाँति | आरम्भ: बिकौआ | अन्त: तखने होय उजियार।

203. गद्दरिक भात | 17 पाँति | आरम्भ: गद्दरिक भात | अन्त: जीवनक असली धन-धान।

204. एकटा आर कोपर | 20 पाँति | आरम्भ: एकटा आर कोपर | अन्त: ताहिसँ वर्तमान नहि सोहाय।

205. महीस पर वी.आइ.पी. | 22 पाँति | आरम्भ: महीस पर वी.आइ.पी. | अन्त: ओकरे भेटै साँच सम्मान।

206. गप्प-सरक्का | 17 पाँति | आरम्भ: गप्प-सरक्का | अन्त: जे जरूरी से काज कराकू।

207. फलनाक बेटा | 21 पाँति | आरम्भ: फलनाक बेटा | अन्त: वनक नेहक मानो मानू।

208. ट्रांसफर | 14 पाँति | आरम्भ: नॉर्म्सक हिसाबे ट्रांसफर | अन्त: ट्रांसफर औफिसर तत्काल

209. मजूरी नहि माँगह · सम्पादकीय चयन | 21 पाँति | आरम्भ: मजूरी नहि माँगह | अन्त: सुरक्षित बाटे आगाँ बढ़ू।

210. दोषी | 11 पाँति | आरम्भ: दोषी छह तोँ | अन्त: नाम बतायत तखन कथीक

211. लंदनक खिस्सा | 13 पाँति | आरम्भ: लन्दनक साउथ हॉलमे शहीद भिंडरा | अन्त: सभ अछि गेल बुझि

212. प्रथम जनवरी | 21 पाँति | आरम्भ: प्रथम जनवरी | अन्त: डर नहि, सूझक दीप जरै।

213. ऑफिसमे भरि राति बन्द | 34 पाँति | आरम्भ: साँझ परल सभ उठल | अन्त: भेलय ओकर प्राणांत

214. नानीक पत्र | 22 पाँति | आरम्भ: पत्र आयल मोन ठीक नहि | अन्त: दैव कृपा हे दाय

215. केवाड़ बन्द | 13 पाँति | आरम्भ: बाहरसँ आबयमे भेल लेट | अन्त: करू नव जीवन स्वाच्छंद

216. जेठांश | 12 पाँति | आरम्भ: छोट भायकेँ देल परती | अन्त: फेर बुझू एक बेर

217. सादा आकि रंगीन | 14 पाँति | आरम्भ: ब्लैक एण्ड ह्वाइटक गेल जमाना | अन्त: देह-मोन दुनू लेल नीक।

218. जोंकही पोखरिमे भरि राति | 11 पाँति | आरम्भ: सुनैत छलहुँ जे बड़बड़ियाबाबू साहेबक | अन्त: नहि अएलाह ओ घूरि

219. गैस सिलिण्डरक चोरि | 29 पाँति | आरम्भ: गेलहुँ रपट लिखाबय | अन्त: फेकैत पानक पीक

220. फैक्स | 12 पाँति | आरम्भ: कारखाना पहुँचल अफसर, | अन्त: नहि तँ काज रहि जाए अधेग।

221. दीया-बाती | 12 पाँति | आरम्भ: आएल दीया-बाती फेर, | अन्त: छोट जोति सेहो बाट देखबय।

222. इटालियन सैलून | 12 पाँति | आरम्भ: घर समस्तीपुर, दिल्ली आएल, | अन्त: हँसीक भीतर श्रमक बल।

223. शव नहि उठत | 12 पाँति | आरम्भ: गामक कनियाँ चलि गेलीह, | अन्त: बदलय बाकी गामक विचार।

224. अतिचार | 12 पाँति | आरम्भ: तीन बरखक अतिचार कहि | अन्त: राखू— तखने होय सुधार।

225. रबड़ खाऊ | 16 पाँति | आरम्भ: रबड़ खाऊ | अन्त: से बहन्ना, नहि प्रमाण।

226. बाजा अहाँ बजाऊ | 20 पाँति | आरम्भ: बाजा अहाँ बजाऊ | अन्त: जखन सभक योगदान धरू।

227. पिण्डश्याम | 18 पाँति | आरम्भ: पिण्डश्याम | अन्त: घरमे सेहो ओहि पर चलय।

228. पाँच पाइक लालछड़ी | 19 पाँति | आरम्भ: परिवार छल चला रहल | अन्त: मुइलाह बेचारे

229. चोरुक्का विवाह | 13 पाँति | आरम्भ: सिखायब | अन्त: चोरुक्का विवाहक घटनामे ओकरा दोहरायल !

230. भ्रातृद्वितीया | 24 पाँति | आरम्भ: भ्रातृद्वितीया | अन्त: जँ मोन रहय सरल, समीपित।

231. नव-घरारी | 23 पाँति | आरम्भ: नव-घरारी | अन्त: एहि संतुलनमे बसत प्रेम।

232. रिक्त · सम्पादकीय चयन | 22 पाँति | आरम्भ: पाँचम वर्गसँ सातम वर्गमे | अन्त: ककरा बुझायब आ के बूझत ?

233. प्रवासी | 21 पाँति | आरम्भ: प्रवासी | अन्त: दुनू मिला बनाउ नव रंग।

234. वेद | 14 पाँति | आरम्भ: वेद वाक्य परम सत्य | अन्त: अहाँ फकड़ा

235. चोरि | 22 पाँति | आरम्भ: गेलहुँ गाम आ एम्हर | अन्त: निकललाह चोरि कय बरजोड़ीसँ

236. होली | 23 पाँति | आरम्भ: होली | अन्त: जखन नेह बढ़य फेर-फेर।

237. बुद्ध | 48 पाँति | आरम्भ: हृदय लग अछि जेबी | अन्त: बुद्ध सेहो कहि गेलाह ई !

238. कोठिया पछबाइ टोल | 20 पाँति | आरम्भ: बूढ़ छलाह मरैक मान | अन्त: इच्छाक नियंत्रण अछैत

239. बुच्ची-बाउ | 33 पाँति | आरम्भ: बुच्ची-बाउ | अन्त: एहि दिल्लीपर

240. आकक दूध | 15 पाँति | आरम्भ: मोन पड़ल चोरिक गप | अन्त: मात्र सुनायल रटन्त विद्याक विपक्ष

241. केसर श्वेत हरित त्रिवार्णिक | 27 पाँति | आरम्भ: केसर श्वेत हरित त्रिवार्णिक | अन्त: आन्हीक बिहारिक आकांक्षी।

242. बेसी छुट्टी कम इसकूल | 44 पाँति | आरम्भ: खेली-धूपी आरि-धूरपर | अन्त: बेसी छुट्टी कम इसकूल।

243. कोनो सजाए नै | 32 पाँति | आरम्भ: बदमस्ती हम खूब करी | अन्त: मुदा सजाए कोनो नै भेटए

244. बरखा भीजी | 12 पाँति | आरम्भ: बरखा भीजी नाची झूली | अन्त: चलू घूमि कऽ आबी

245. बरखा गीत | 32 पाँति | आरम्भ: छहोछित्त आम पेने छी, | अन्त: लोक देखथि, बाबी मुसकैत।

246. भरि दिन खेली-धूपी | 20 पाँति | आरम्भ: हे कोइली, हे कोइली, ओमक बियाह केम्हर? | अन्त: भरि दिन खेली-धूपी, आब निन्न देत पाँखि।

247. लवनचूश चूसी भरि दिन | 24 पाँति | आरम्भ: लवनचूश चूसी भरि दिन, | अन्त: रखब हम नीक सुधि।

248. जे मोन भावै से करब | 44 पाँति | आरम्भ: जे मोन भावै से करब, | अन्त: हम नेहसँ जगत धरब।

249. सभ दिन जनमदिन मनाबी | 24 पाँति | आरम्भ: सभ दिन जनमदिन मनाबी, | अन्त: घर-घर हँसी पसारब।

250. बानर | 24 पाँति | आरम्भ: छप्पर ऊपर धप-धप करैत, | अन्त: तखन बचत ई गाम।

251. दोकानसँ चिप्स मँगनीमे आनी | 20 पाँति | आरम्भ: दोकानसँ चिप्स मँगनीमे आनी, | अन्त: सबसँ मीठ बाँटि खेनाइ।

252. खूब खेलाउ कमप्यूटर खेल | 20 पाँति | आरम्भ: खूब खेलाउ कमप्यूटर खेल, | अन्त: नव दिनक नव काज।

253. नीक चित्र बनाउ छापू | 20 पाँति | आरम्भ: नीक चित्र बनाउ, छापू, | अन्त: अपन रंगमे गाउ।

254. आउ खेलाउ कनियाँ पुतरा | 20 पाँति | आरम्भ: आउ खेलाउ कनियाँ-पुतरा, | अन्त: आँगनमे सभ जुटय।

255. बरफ खाउ जाड़मे | 16 पाँति | आरम्भ: जाड़क भोर, कुहेसाक चादर, | अन्त: देहक सुधि नहि भूली।

256. रातिमे अबेर धरि जागू भोर उठू देरीसँ | 16 पाँति | आरम्भ: रातिमे अबेर धरि जागल, | अन्त: मोन रहय तैयार।

257. सुरुज जेकाँ बरहम घूमै छथि | 20 पाँति | आरम्भ: कारी मेघक घोड़ा चढ़ि कऽ, | अन्त: सपनमे झलमल।

258. सरस्वती मेधा | 20 पाँति | आरम्भ: सरस्वती, हृदय निश्छल करू, | अन्त: एहने वरदान दीअ।

259. बाजू मैथिली · सम्पादकीय चयन | 24 पाँति | आरम्भ: पढ़ू मैथिली, लिखू मैथिली, | अन्त: एहिमे हमर संसार।

260. हम्मर माए | 12 पाँति | आरम्भ: दूध पियाबथि, रगड़ि नहाबथि | अन्त: माए हमर जीवनक कोमल पाँखि

261. अमृत पुत्री | 12 पाँति | आरम्भ: हम अमृत पुत्री, अडिग संकल्पित | अन्त: एहने चमकत अमृत-चिन्ह

262. हे नाह चल आगाँ | 12 पाँति | आरम्भ: चन्द्रक किरण सोझाँ झरैए | अन्त: नव दिन तोहर बाट तकत

263. ध्येय पथिक साधक | 14 पाँति | आरम्भ: ध्येय-पथक साधक छी हम | अन्त: लोकक हितमे जीवन दऽब

264. मेघ बरसि गेल | 12 पाँति | आरम्भ: मेघ बरसि गेल, कृषक प्रसन्न | अन्त: जीवन भेटल नव आधार

265. स्वागतम | 16 पाँति | आरम्भ: बिना भेदक ई आँगन, | अन्त: हाथमे हाथ धऽ चलू आगाँ।

266. बड़द करैए दाउन ने यौ · सम्पादकीय चयन | 15 पाँति | आरम्भ: हाथी अगत्त, पिछू, थाइत, माइल बिरि | अन्त: बड़द करैए दाउन ने यौ

इजोत — जनम-जनमक कथा : ‘पाँजिक चोर’क पूर्ण पाठीय समीक्षा

‘इजोत—जनम-जनमक कथा’क प्रकाशित मूल पी.डी.एफ.मे उनचास कथाक अनुक्रमणिका चारि समूह आ एक समापनिकामे अछि। एहि पाठ-परीक्षणमे ‘पाँजिक चोर’क आरम्भ सँ अन्त धरि बारहम पृष्ठक मूल कथा पढ़ल गेल अछि। पात्र निरंजन पुरान पाँजिक डिजिटल प्रति बनबैत अछि। उदयनपुर शाखाक पचासम पन्नापर पाँचम प्रविष्टि खरुचल अछि; चारिम आ छठम संख्या बचल अछि। कथा अनुमानक रोमांचसँ खुलैत अछि, मुदा प्रमाणक सीमा बारम्बार स्थापित करैत अछि।

निरंजन द्वारा सिधा आ तिरछ इजोतक उपयोग मात्र दृश्य-शिल्प नहि। पहिने सोझाँसँ देखल अक्षर आ कातसँ देखल कागजक देह—ई भेद अभिलेखक आलोचनामे मूल बात अछि। एकटा छपल कथन प्रमाण हो सकैत अछि, मुदा खरुचल ठाममे बचल दबावक रेखा केवल संकेत अछि। कथा नायककेँ अतिनिश्चयक मोहसँ बारम्बार बचबैत अछि; ओ नोटमे ‘मूल पाठ अस्पष्ट’ लिखैत अछि। लेखक एतय ज्ञानक ईमानदारी केँ कौतूहलक बाधा नहि, ओकर नैतिक रूप बनबैत छथि।

शिवकान्तक मौन आ सुभराक देल पारिवारिक स्मृति समकक्ष साक्ष्य नहि। शिवकान्त एक चिट्ठी दैत छथि, बाकी रोकेने छथि; सुभरा अपन मायक सुनी-बुझी गप कहैत छथि आ कागजक टुकड़ा अनैत छथि। निरंजन टुकड़ाकेँ प्रमाणित मूल अंश घोषित नहि करैत अछि। ई निर्णय कथाक निर्णायक मूल्य अछि। ‘पाँजिक चोर’मे पितृवंशीय लेखा केवल परिवारक

गौरव-रक्षा नहि, अनुपस्थित नाँवक हिंसाक साधन सेहो बनैत अछि। दुनू पक्षक कथन पाठक लग पहुँचैत अछि, मुदा लेखक अपन पात्रसँ प्रमाणक श्रेणी भंग नहि करबबैत छथि।

शुरुआतक दीप अन्त धरि रहैत अछि। पहिने इजोत रहस्य चिन्हबैत अछि; अन्तमे ओहि इजोतमे खरुचन स्पष्ट होइतहुँ नाँव स्पष्ट नहि होइत अछि। एहि उलटावमे कथाक वास्तविक समाप्ति अछि। ‘चोर’ अन्तमे कोनो एक अपराधी भरि नहि, सामूहिक चुप्पी बनि उठैत अछि। व्यक्तिगत अपराधक पहेली सामाजिक विस्मरणक प्रश्नमे बदलैत अछि। शीर्षकक प्रथम अर्थ आ अन्तिम अर्थक अन्तर कथाशास्त्रीय दृष्टिसँ सघन अछि। तथापि एक सीमित आपत्ति ई अछि जे अन्तिम व्याख्यात्मक वाक्य रहस्यक बहुविध सम्भावना कने घटबैत अछि; पाठक मौनक अर्थ अपनहि तौलि सकैत छल।

एहि कथा कैं पूरे उनचास कथा-संग्रहक अन्तिम श्रेष्ठ चयनमे एखन राखल नहि गेल अछि; ओकरा लेल शेष अड़तालीस मूल कथाक समान पठन अनिवार्य अछि। मुदा एहि एक पाठक भीतर दस्तावेज, वंश, मौन, प्रकाश, ज्ञान आ दायित्वक जे रूप भेटैत अछि, से विस्तृत समग्र-समीक्षाक एकटा ठोस पाठीय प्रवेशबिन्दु उपलब्ध करबैत अछि।

सहस्रबाढ़नि : घटनासाक्ष्य-आधारित विस्तृत उपन्यास-समीक्षा

‘सहस्रबाढ़नि’क स्रोत-संस्करण ‘कुरुक्षेत्रम् अन्तर्मनक’क दोसर खण्ड रूपेँ प्रकाशित अछि। मूल संस्करणक आरम्भमे कलितक बाल्यकालक स्मृति झिंगुर बाबूक परिवारक माध्यमसँ उपस्थित अछि। ठेहुनिया मारब, देवाल धरि उठब, आवाजक नकल आ घरक लोकक प्रतिक्रिया कतेको व्यक्तिक कथनमे आएल अछि। एहि ढङ्गसँ बालकक इतिहास एके निश्चयात्मक कथावाचकसँ नहि, पारिवारिक स्मृतिक विभिन्न टुकड़ासँ बनैत अछि। ई कथन-पद्धति उपन्यासक आरम्भमे समयक भिन्न-भिन्न स्तर खोलैत अछि।

झिंगुर बाबूक परिवारसँ कलितक उत्तरदायित्व धरि पहुँचैत काल कथा जीवनक व्यक्तिगत घटनाकेँ व्यापक सामाजिक आचरणसँ जोड़ैत अछि। बहिनि बुचियाक विवाहक लेल वर-ताकब, पिताक अनुपस्थितिमे सामाजिक अपेक्षाक भार, कटिहारसँ बाढ़ धरि

गमन—ई सभ कथात्मक भूगोल बाढ़िक प्राकृतिक विवरणसँ बेसी पारिवारिक आ सामाजिक चलनक दृश्य खोलैत अछि। एहि स्रोत-पाठकेँ सिर्फ नदीक बाढ़ि-प्रधान उपन्यास कहि देब एकर पात्र-विन्यासकेँ न्यून करब होएत।

उपन्यासक मध्यम भागमे आरुणिक शारीरिक अस्वस्थताक अनुभव केवल चिकित्सकीय सूचना नहि अछि। बैशाखीसँ छड़ी धरि आ फेर चलबाक अभ्यासमे देहक गति सामाजिक दृष्टिक अधीन अछि। कार्यालयक साथी सभ साहसक प्रशंसा करैत छथि, मुदा चलबाक कठिनाई देखितहुँ व्यक्त नहि करैत छथि। घर पहुँचि अपन चलबाक दृश्य चलचित्रमे देखलापर आरुणि अपन देहकेँ दोसराक आँखिसँ देखैत छथि। एहि ठाम कथनक प्रथमपुरुषीय स्वर आत्मानुभव आ बाहरी प्रमाणक बीच फाटल स्थान चिन्हैत अछि। करुणा एतय केवल सहानुभूति नहि; गौरव, लाज आ मित्रताक जटिल सम्बन्ध अछि।

गङ्गा-पुलपर मृत श्रमिकसभक नाँवक सूची आ आरुणिक पिताक डायरीक प्रसंग अभिलेखीय दृष्टिसँ विशिष्ट अछि। पुल केवल आधुनिक विकासक उपलब्धि नहि, श्रम आ मृत्युकेँ दाबि देबाक संस्थागत संरचना बनि उठैत अछि। नाँवक सूची सीमित अछि; कथामे मृत श्रमिकक संख्या, ठेकेदार-प्रशासनक व्यवहार आ न्याय नहि भेटबाक अपराधबोधक चिन्ता उठैत अछि। एहि प्रसंगमे सार्वजनिक अभिलेख मानवीय स्मृतिक पूरा विकल्प नहि। एकरा ‘पाँजिक चोर’क खरुचल प्रविष्टिसँ तुलना केलापर समाजसँ ओझरायल नाँवक प्रश्न दू विधामे भिन्न रूप धारण करैत अछि।

पूर्णिया-जेल, बन्दक भय, व्यापारी नवलसँ रातिक गप, रंगदारीक रसीद आ रास्ताक असुरक्षा उपन्यासमे राजकीय शक्ति आ अनौपचारिक हिंसाक सम्बन्ध देखबैत अछि। यात्रा-वृत्तान्त-जेकाँ चलैत घटनासभ श्रमिकक मृत्यु, प्रशासनिक व्यवस्था आ व्यवसायिक संकटसँ जुड़ैत अछि। एहि प्रसंगमे कथानकक विस्तार लाभ सेहो अछि आ चुनौती सेहो: कतहु कारण-सम्बन्ध स्पष्ट अछि, कतहु गप-वार्ताक बहुलता उपन्यासक केन्द्रीय धारा क्षणभर ढाँकि दैत अछि। लेखकक जाँचक दृष्टि मुदा लगातार सामाजिक संस्थाक परत खोलैत रहैत अछि।

उत्तरार्द्धमे दूरभाषक अभिलेख, लिखित शिकायतक अभाव, सूची, जाँच-समिति, दूरभाष-अवरोधनक उपकरण आ आरोपसँ सम्बन्धित तिथि-क्रम कथाक निर्णायक सामग्री बनैत अछि। आरुणि द्वारा सरकारी अभियोगक सामना केवल नैतिक घोषणा सँ नहि, तथ्य-संग्रहक माध्यमसँ होइत अछि। दोसर गोटेक नाम, सन्दिग्ध बातचीत आ छापामारीक समयक मिलान—ई सभ कथाकेँ प्रमाणक क्रम दैत अछि। एहि दृष्टिसँ उपन्यासमे नव्य-न्यायीय प्रमाणविवेकक आधुनिक सम्भावना देखल जा सकैत अछि, मुदा एहि आलोचनामे उपन्यासक पात्रक निष्कर्षकेँ बाहरी ऐतिहासिक घटना प्रमाणित करबाक दाबी नहि कएल जा रहल अछि।

रचनाक शीर्षक केँ नदीक प्राकृतिक प्रकोपसँ एकार्थी करब उचित नहि। उपन्यासमे पीढ़ीक स्मृति, मृत्यु, संस्था, अपमान, देह, प्रवास आ प्रमाणक निरन्तर संकट अछि। एक प्रकारक बाढ़ि घटना नहि, अनुभवक बहुल अतिप्रवाह बनैत अछि—ई शीर्षकीय सम्भावना स्रोतक घटना-क्रमसँ निकलैत अछि। ‘कुरुक्षेत्रम् अन्तर्मनक’क अन्तर्गत एकर स्थान सेहो महत्त्वपूर्ण अछि: संघर्ष बाहरी संस्था आ भीतरी मन, दुनू ठाम घटित होइत अछि। ई विस्तृत समीक्षा मूल पी.डी.एफ.क चिन्हित प्रसंगसभपर आधारित अछि; पुराने उपलब्ध सारक स्थूल भूगोल-विवेचनकेँ ओतय तक सीमित नहि राखल गेल अछि।

स्रोत-विवरण

गजेन्द्र ठाकुर, अकुलाइत सुर। खण्ड १ : किशोर गजल; खण्ड २ : कविता-गीत। मूल संयुक्त Word संस्करण : Akulait_Sur_Print_Ready_Combined_CORRECTED.docx; विदेह, २०२६।

गजेन्द्र ठाकुर, इजोत — जनम-जनमक कथा। ४९ लघुकथा; मूल संस्करणक ‘पाँजिक चोर’ पृ. १–१२, विदेहक प्रकाशित पी.डी.एफ. : https://videha-ejournal.github.io/videha-ejournal/IJOT_GAJENDRA_THAKUR.pdf

गजेन्द्र ठाकुर, सहस्रबाढ़नि। कुरुक्षेत्रम् अन्तर्मनक, खण्ड २; मूल उपन्यास-संस्करण, श्रुति प्रकाशन, २००९; विदेहक स्रोत पी.डी.एफ. : https://videha-ejournal.github.io/videha-ejournal/sahasrabadhani.pdf

आशीष अनचिन्हार, गजेन्द्र ठाकुर समग्रक सम्पादकीय। मूल पाण्डुलिपि आ पूर्ववर्ती संशोधित संचयी संस्करण।

इजोत — जनम-जनमक कथा : मूल आख्यानक आलोचनात्मक पुनर्पाठ

सहस्रशीर्षा : लोकसमाजक बहुस्वरीय आख्यान

‘सहस्रशीर्षा’क पहिल संस्करण २०१० आ दोसर संस्करण २०१५ मे प्रकाशित भेल। रचना ‘गढ़ नारिकेल—महिसबार ब्राह्मणक गाम’ सँ आरम्भ होइत अछि। कृति चौंतीस ‘कल्लोल’मे व्यवस्थित अछि; आरम्भिक किछु कल्लोलमे ‘पल्लव’ उपविभाजन सेहो अछि। कल्लोलक शीर्षक साधारण घटनासूची नहि, लोकगीत, कहबी, श्रम, धार्मिक कथन आ मौखिक उच्चारणक रागात्मक पाँति अछि। संरचनाक एहि चुनावसँ उपन्यासकेँ एकल घटनाक रेखासँ बेसी अनेक सामाजिक आवाजक विस्तृत प्रवाह रूपेँ पढ़ब यथोचित अछि।

आरम्भक मुखदेव आ ममतोड़क परिवारिक निकटता, बच्चाक असुरक्षा, गामक टोल आ आत्मनिर्भर गृहस्थीक दावाक संग माटिक घर, छप्पर, नार-पुआर आ श्रमक सम्बन्ध एकहि कथानक-भूमिमे राखल गेल अछि। मुखदेवकेँ सामाजिक परिचय केवल मनोवैज्ञानिक व्यक्ति रूपमे नहि, परिवार, जाति, पेशा आ स्थानक सम्बन्धक बिन्दु रूपमे भेटैत अछि। उपन्यास एहन सभकेँ घटनाक पाछाँक सजावट नहि बनबैत; ओहि संरचनासँ पात्रक रोजमर्राक निर्णय निश्चित होइत अछि।

लोकगीत आ लम्बा संवाद उपन्यासक बहुवचनात्मक स्वर गढ़ैत अछि। पहिल कल्लोलमे गेहन घरेलू कथन आ माटिक घरक कामक बीच गप चलैत अछि; बादक कल्लोलसभमे रोपनी, अरदरा, दही-भातक विधि, बिसहरा-गोसाउनिक पातरि, चरखाक धुन, नाच-गीत आ पुरानी कथा अलग-अलग कथाकारिता लऽ कऽ अबैत अछि। ई पद्यांश सभकेँ आधुनिक गद्यक बीच ‘गीतक उद्धरण’ भरि मानब कम होएत; अनेक बेर ओ कथनक लय आ सामाजिक दृष्टिकोण स्वयं बदलैत अछि।

अन्योन्याश्रित इतिहास आ कल्पनाक प्रश्न उपन्यासमे तीव्र अछि। बौद्ध भिक्षुणी सुमंगलमाता आ मुक्ताक चर्चा, गौरीक पौराणिक आख्यान, सुकन्याक कथा आ वैदिक-सांस्कृतिक उल्लेख पात्रसभक बोलीमे आएल अछि। एहि पाँति सभकेँ उपन्यासक भीतरक ऐतिहासिक दाबी आ लोकक कथनक रूपेँ देखबाक चाही; स्वतंत्र दस्तावेजी

सत्यक प्रमाण मानब उचित नहि। रचनाक भीतर एहन विविध मत के बाजैत अछि, ओकर कथनक अवसर की अछि, आ दोसर पात्र ओकर प्रतिवाद कोना करैत अछि—ई आलोचनाक केन्द्रीय प्रश्न अछि।

गढ़ नारिकेलक जलप्रकृति आ बाढ़ि कथा मे स्थिर पृष्ठभूमि नहि अछि। अधवारा, बागमती, कमला आ कोसीक जल-भूगोलक उल्लेख जीवनक खेती, आवागमन आ विस्थापनक प्रसंगसँ जुड़ैत अछि। पुनर्वासक जमीन खेतसँ बहुत दूर भेटब वा ओहि पर पहिनेसँ आन संस्थाक उपस्थिति जेकाँ प्रसंग राज्यक योजनाक कागजी रूप आ लोकक वास्तविक पहुँचक बीच अन्तर देखबैत अछि। जल एतय प्राकृतिक दृश्य रहितहुँ श्रम, जमीन आ प्रशासनक वितरित परिणाम बनैत अछि।

जाति आ कामक सम्बन्धक पठनमे उपन्यासक सीमा आ शक्ति दुनू अछि। मोहन गबैय्याक चर्मकार टोल सँ सम्बन्धित गायन-परिचय, पिपही, चमारक श्रमक वस्तु, भूमि नापबाक औजार, माछ पकड़बाक साधन आ गामक घरेलू तकनीक सभ अलग-अलग जाति-पेशा-सम्बन्धक दस्तावेज-जेकाँ सामग्री दैत अछि। मुदा साहित्यिक रूपमे एहि वस्तुसूचीक वास्तविक मूल्य तखन प्रकट होइत अछि जखन ओ पात्रक अधिकार, हास्य, अपमान, निर्भरता वा प्रतिरोधक प्रसंग बनैत अछि। कखनो वस्तुसूचीक अतिरेक एकल दृश्यक नाटकीय एकाग्रता क्षीण करैत अछि। एहि कमजोरीकेँ केवल सामग्रीक प्रचुरता कहि टारब नहि चाही।

भारतीय काव्यशास्त्रक धरातलपर शीर्षकक ‘सहस्र’ आ कल्लोल-पद्धति मिलि व्यञ्जनात्मक बहुलता रचैत अछि। एक घटना अनेक स्वरमे सुनल जाइत अछि; भाव-केंद्र स्थिर रहबाक बदला घटनानुसार करुण, हास, भय आ वीरक सम्भावना बदलैत अछि। एतय रसक सरलीकृत एकत्व खोजब पुस्तकक विधागत प्रकृतिक प्रतिकूल होएत। एकर उपयुक्त आलोचनात्मक पद्धति अछि—कथन-स्वरक अवस्थिति, लोक-उक्ति आ पात्र-विचारक अन्तर, तथ्य आ लोकविश्वासक पृथक्करण तथा रूपकक पुनरागमनक अध्ययन।

‘सहस्रबाढ़नि’ सँ तुलना करिते ई रूपगत भेद उभरैत अछि जे ओहि उपन्यासमे कलित-आरुणिक परिवार, देह आ प्रशासनक संकट कथाक महत्त्वपूर्ण सूत्र अछि, जखनकि ‘सहस्रशीर्षा’मे ग्राम्य संसारक अनेक पेशा, गीत आ विचार-प्रवाह कथात्मक प्रवाहक आधार बनैत अछि। पहिलमे प्रसंग-सम्बद्ध प्रमाणक क्रम प्रबल, दोसरमे सामाजिक बहुध्वनि। दुनूकेँ समान ‘मिथिलाक स्मृति’ कहि समाप्त करब ओकर विशिष्ट रचनाशैलीक अन्याय होएत।

परिशिष्ट : खण्ड २–५४क समेकित अनुक्रम आ सूचकांक

गजेन्द्र ठाकुर समग्रक सम्पादकीय · सम्पादक : आशीष अनचिन्हार

एहि सूचीमे प्रत्येक खण्डक उपलब्ध समीक्षा-पाण्डुलिपिसँ सत्यापित शीर्षकक क्रम देल गेल अछि। “खण्ड ० / १”क मूल सम्पादकीय पाठ यथावत् राखल गेल अछि।

सूचकांकमे उद्धृत “खण्ड” संख्या सम्बन्धित स्वतंत्र पोथी दिस निर्देश करैत अछि; ई खण्ड ० वा १क पृष्ठसंख्या नहि। अलग-अलग पुस्तकक वास्तविक पृष्ठ बदलि सकैत अछि, तें अनुमानित पृष्ठ-संख्या नहि जोड़ल गेल अछि।

प्रथम पञ्जी : समस्त खण्डक विषय-सूची

खण्ड	कृति / समीक्षाक विषय
२	इजोत, स्मृतिक दोसर दिस आ पर्वत ऊपर भमरा जे सूतल
३	कथा-शतत्रयी — खण्ड १ : कथा १–१००
४	कथा-शतत्रयी — खण्ड २ : कथा १०१–२००
५	कथा-शतत्रयी — खण्ड ३ : कथा २०१–३००
६	कथा-त्रिधारा — खण्ड १ : कथा १–१००
७	कथा-त्रिधारा — खण्ड २ : कथा १०१–२००
८	कथा-त्रिधारा — खण्ड ३ : कथा २०१–३००
९	नव पाँखि — बीस किशोर कथा आ दू श्रेष्ठ कथाक विस्तृत समीक्षा
१०	सहस्रबाढ़नि : उपन्यास-समीक्षा
११	सहस्रशीर्षा : उपन्यास-समीक्षा
१२	नव्य न्याय आ अपतटीय जुआ-जाल
१३	गोहि सभक बीच जलसमाधि : त्रयी

१४	अनुवादक
१५	जल-पाँजि
१६	बिज्जी : गोहि सभक बीच
१७	पाँच प्रतिशत अन्हार
१८	पातक भीतर लिखल नाँव
१९	सातम साक्षी
२०	बाल आ किशोर उपन्यास — खण्ड १
२१	गोहि सभक बीच जलसमाधि : किशोर आ बाल संस्करण
२२	रंग-संगम : बारह मैथिली नाटक
२३	दीवान-ए-विदेह : गजल
२४	अकुलाइत सुर : किशोर गजल आ कविता-गीत
२५	स्वप्नमे मिज्झर होइत : पद्य
२६	गजेन्द्र ठाकुरक समानान्तर दर्शन — प्रथम खण्ड
२७	गजेन्द्र ठाकुरक समानान्तर दर्शन — द्वितीय खण्ड
२८	तत्त्वचिन्तामणि
२९	भामती
३०	आत्मतत्त्वविवेक
३१	न्यायकुसुमाञ्जलि
३२	मिथिला आ मैथिली साहित्यक समानान्तर इतिहास
३३	मिथिला, वज्जी आ अंगक इतिहास — खण्ड १

३४	मिथिला, वज्जी आ अंगक इतिहास — खण्ड २
३५	पञ्जी-प्रबन्धक सिद्धान्त : प्रथम खण्ड
३६	प्राचीन पञ्जी : प्रथम खण्ड
३७	उटीप पञ्जी
३८	नगराम पञ्जी
३९	वंशावली मानचित्रण
४०	दूषण पञ्जी
४१	प्रबन्ध · निबन्ध · समालोचना — सिद्धान्त आ निबन्ध
४२	प्रबन्ध · निबन्ध · समालोचना — अनुप्रयुक्त समीक्षा
४३	संस्कृत साहित्य-संग्रह : १३ पुस्तक-समूह
४४	मैथिली रेडियो नाटक : स्वयं सीखू मार्गदर्शिका
४५	ए.आइ. सँ वीडियो बनाउ : स्वयं सीखू मार्गदर्शिका
४६	मैथिली–अंग्रेजी थिसॉरस
४७	अंग्रेजी–मैथिली थिसॉरस
४८	समग्र अनुवाद खण्ड : भारतीय भाषासँ मैथिली
४९	नित नवल वृषेश चन्द्र लाल
५०	राजदेव मण्डल : मैथिली लेखक
५१	नित नवल दिनेश कुमार मिश्र
५२	जगदीश प्रसाद मण्डल — एकटा बायोग्राफी
५३	नित नवल सुभाष चन्द्र यादव

५४	नित नवल सुशील

द्वितीय पञ्जी : खण्डवार विस्तृत रचना-अध्याय अनुक्रम

नीचाँ देल शीर्षकसभ समीक्षा-पाण्डुलिपिक अनुक्रम वा अध्यायशीर्षकसँ लेल गेल अछि। अनुच्छेदक सामान्य उपशीर्षक, ऐतिहासिक कार्ययोजनाक पुनरावृत्ति आ प्रकाशकीय सूचना कैं रचना-इकाई नहि गानल गेल अछि।

खण्ड २ — इजोत, स्मृतिक दोसर दिस आ पर्वत ऊपर भमरा जे सूतल

मूल समीक्षा-पाण्डुलिपिसँ सूचीकृत शीर्षक : 223

इजोत—जनम-जनमक कथा : कथा १–१२

02. फेर सँ देखल घर : स्मृतिक दूरी आ मायक मौन

03. मुक्त राज्यमे : प्रवासनक असमान स्वतन्त्रता

04. जल समाधि : नदीक स्वर आ स्त्रीपर लादल दोष

05. जातिक बाहर : वंशपुस्तकक रिक्ति आ जीवनक पूर्णता

06. ओछाइनक हिसाब : घरेलू ठामक लेखा आ स्त्रीक कर्तृत्व

07. दोसर बियाह : जकर जीवन, तकर प्रश्न

08. गजलक बहर : छन्दक माप आ जीवनक मर्यादा

09. पाहुनक कोठली : आत्मीयताक ठाम आ व्यवहारक अपठित कारण

10. कुहेस : प्रवासक पश्चात् घर आ स्मृतिक धुँधल आकार

11. न्यायक सीमा : अभावक शास्त्र आ शोकक अपूरणीयता

12. आखर : मैथिलाक्षर, अनपठित चिट्ठी आ उत्तराधिकारक नब वाक्य

इजोत—जनम-जनमक कथा : गोतगोत

13. पाँजी (अन्तिम प्रविष्टि) : एक पाँतिक तीन समय

14. जुड़वा : रक्तक तथ्य आ पोसल जीवन

15. गोतिया : स्थायी पताक अस्थिर अर्थ

16. छिपल शाखा : पत्रक भितरायल स्त्री-इतिहास

17. दत्तक : न्यायालयक भाषा आ एकसँ बेसी पितृत्व

18. जाति-पार : बच्चाक बही आ वंशक सीमारेखा

19. डायरी : सार्वजनिक नायकक पाछाँ भगवतीक आवाज

20. नकली वंश : बनौटी पुरखा सँ बनैत सामाजिक तथ्य

21. परदेशी जड़ि : पहुँचब, नहि पाबब आ अपन ठाम चुनब

22. पुरोहिताई : सेवा, विद्या आ अधिकारक नब बँटबारा

23. रागिनी-वंश : स्वरक बहुधा उत्तराधिकार

24. मातृवंश : घरक चाभीसँ काज-जाल धरि

गोतगोत : कथा १३–२४क तुलनात्मक आलोचना

इजोत—जनम-जनमक कथा : तत्त्व-कथा खण्डक पाठालोचना

25. प्रमाण : चोरीक जाँच आ आरोपित नामक जीवन

26. माया : काँचक प्रतिबिम्ब आ निवेशकक आत्मपरीक्षा

27. रस : मंचपर भावक सृजन आ दर्शकक सहभागिता

28. नियति : जुआ, कर्ज आ निर्णयक वास्तविक सीमा

29. शब्द-ब्रह्म : कविक मौन, रूपक आ अर्थक अपूर्णता

30. अनित्य : टूटैत घरक भीत आ बदलैत स्मृति

31. आत्म-अनात्म : अभिनेता आ पात्रक सीमाक आवागमन

32. कार्य-कारण : पुलियाक दुर्घटना आ शोकक अनिर्णेय अर्थ

33. मौन : नब अधिकार बनैत चुप्पी

34. स्वप्न : स्मृति, दिनक अनुभव आ कथाक दू स्तर

35. संशय : तर्क, श्राद्ध आ सम्बन्धक मर्यादा

36. मोक्ष : मृत्यु लग स्वतंत्रता, प्रेम आ असमाप्त उत्तर

तत्त्व-कथा : बारह रचनाक तुलनात्मक आलोचना

इजोत—जनम-जनमक कथा : पिप्रा-खण्डक आलोचना

37. छठ : सार्वजनिक घाटक नाप, सेवा आ जातिक असमानता

38. राग : जीवित गायन आ अभिलेखक अपूर्ण अधिकार

39. अदालत : उन्नीस गवाही, उन्नीस आंशिक सत्य

40. डाकिया : पहुँचबाक बाट आ अधूर पता

41. परदेस : घाटकेँ लिखल चिट्ठी आ अधूर वापसी

42. डूम : अनिश्चित शोकक दिनचर्या आ अनुपस्थित देह

43. भूत : देखल घटना आ बादमे बनल अफवाह

44. मास्टर साहेब : विदाइ-सभामे अनेक स्मृतिक प्रतिवाद

45. चित्रकार : मिथिला चित्रक बाजारीकरण आ कलाकारक हाथ

46. घुरनाइ : एक स्त्रीक वापसीक छओ अनमेल दृष्टि

47. नाह : दू बालकक साहस आ सुरक्षाक ज्ञान

48. छठ फेर सँ : लाल कुर्सीक अनुपस्थिति आ पुनः उपयोग

49. विदेह : अनुमति, सम्पादन आ लोक-अभिलेखक नैतिकता

१. अदालत (कथा ३९) : बहुसाक्ष्यक सर्वाधिक साहसिक आख्यान

२. डूम (कथा ४२) : अनिश्चित शोकक अद्वितीय काल-विन्यास

३. राग (कथा ३८) : मौखिक परम्पराक सुचिन्तित शिल्प

४. मातृवंश (कथा २४) : स्त्री-उत्तराधिकारक आलोचनात्मक पुनर्रचना

५. विदेह (कथा ४९) : सम्पादनक आत्मालोचनात्मक समापन

1. दू जनकपुर

2. भूलल शास्त्रार्थ

3. समयक पोखरि

4. अक्षरक नगर

5. अन्तिम टीका

6. नकाशा जे बढ़ैत रहल

7. एक लेखक, दू जन्म

8. स्मृतिक शब्दकोश

9. शून्य अध्याय

10. प्रतिलिपिकार

11. तीसर इतिहास

12. अनुवादक

13. नामहीन देवता

14. समयक पगडंडी

15. दर्पणक वंश

16. अदृश्य पुस्तक

स्मृतिक दोसर दिस: कथा १७ सँ ३२ धरि

17. सातम दिशा

18. अन्तिम पाठक

19. पोखरिक घटना

20. दरबारक राति

21. चोरीक मूर्ति

22. सीमाक गोली

23. विवाहक विवाद

24. बाढ़िक नाव

25. चित्रकारक मृत्यु

26. पुरान मुकदमा

27. मेला राति

28. वीरक कथा

29. अन्तिम भोजन

30. कवि आ राजा

31. दुर्घटनाक मोड़

32. झूठक पुरस्कार

कथा १७–३२: तुलनात्मक साहित्यिक परीक्षण

स्मृतिक दोसर दिस: कथा ३३ सँ ४८ धरि

33. गामक आगि

34. नदीक पार

35. राजमिस्त्रीक गिरावट

36. पुरान तस्वीर

37. रातिक आवाज

38. ककर दोष

39. मखानक गन्ध

40. पीयर फूल

41. दुपहरियाक मेज

42. काजर

43. नव परदा

44. सुगन्ध

45. चाँदीक कटोरी

46. बाल सुकबैत

47. सफेद फूल

48. छोट पार्टी

कथा ३३–४८: तुलनात्मक आलोचना

३३ सँ ४८ धरि कथाक शिल्पगत उपलब्धि आ सीमा

स्मृतिक दोसर दिस: कथा ४९ सँ ६४ धरि

49. रेशमी दुपट्टा

50. खिड़कीक वर्षा

51. नींबूक स्वाद

52. गुलाबी कप

53. धूपक गन्ध

54. कानक बाली

55. लाल नेलपॉलिश

56. झीना परदा

57. इलायची

58. फूलदान

59. सूखल कमला

60. बालुकाक घर

61. बाँसक आवाज

62. धूलिक पगडंडी

63. खाली पोखरि

64. कटान

कथा ४९–६४: परस्पर तुलनात्मक आलोचना

स्मृतिक दोसर दिस: कथा ६५ सँ ८० धरि

65. माटिक गन्ध

66. बिना छत घर

67. नदी बोलल

68. धसान

69. कासक मैदान

70. तिरहुतक धूलि

71. तीन कब्र

72. बाढ़िक निशान

73. छोड़ल इनार

74. मकईक सूखल पात

75. अन्तिम नाव

76. गाछक ठूँठ

77. धुँआ

78. मौन गाम

79. तीन बरखाक बीच

80. घुरबाक कारण

कथा ६५–८०: तुलनात्मक आलोचना

स्मृतिक दोसर दिस: कथा ८१ सँ ९८ धरि

81. बहिनसभ

82. पुरान डॉक्टर

83. घर नम्बर पाँच

84. फोटो एल्बम

85. एक निर्णय

86. मित्रक बेटी

87. बस-ठाम

88. विवाहक बाद

89. माएक मित्र

90. पत्र जे भेजल नहि गेल

91. दू शहर

92. बीस बरख बाद

93. मौसीक घर

94. लाल पेटी

95. संगीत शिक्षक

96. अलग बाट

97. खोआइल वर्ष

98. अन्तिम यात्रा

कथा ८१–९८: पारस्परिक आलोचनात्मक संवाद

लघुकथा खण्ड : नौ मूल रचनाक परीक्षण

01. सिद्ध महावीर

02. नवी मुम्बै

03. नई दिल्ली

04. तस्कर

05. संघर्ष

06. लेटरबॉक्समे आयल चिट्ठी

07. डोमा, बुधन आ...

08. आत्महत्या

09. गंधर्व लेटरबम

दीर्घकथा खण्ड : तीन मूल रचनाक परीक्षण

10. मधुबनी मोड्यूल

11. शब्दशास्त्रम्

12. महिसबार ब्राह्मणक गाम

बीहनि कथा खण्ड : उनचालीस मूल इकाईक परीक्षण

13. रिक्शाक सवारी आ लूटिक डर

14. नकली नोट

15. पानिबला रोड

16. जी सर

17. दू टा कैदी

18. अपन-अपन भाग्य

19. प्रवचन

20. गछल गप

21. भूरा बाल

22. आत्म-गौरव

23. छाह

24. वाटर कूलर

25. तोँ अखन एतेक पैघ नै भेल छेँ बाउ

26. एमबियेन्स मॉल कैम्पसक मिस्त्रीक खिस्सा

27. स्निफर डॉग आख्यान

28. यातायात निअम

29. जातिवादी मराठी

30. थेथर मनुक्ख

31. बहुपत्नी विवाह आ हिजड़ा

32. स्त्री-बेटी

33. बिआह आ गोरलगाइ

34. प्रतिभा

35. जाति-पाति

36. अनुकम्पाक नोकरी

37. पैरवी-पैगाम आ हाकिम

38. नूतन मीडिआ

39. मिथिलाक उद्योग

40. बाढ़ि, भूख आ प्रवास

41. नव-सामन्त

42. चारिम स्थान

43. भोट

44. मसुआइ

45. साइबेरिया कैम्प

46. मीत भाइ शृंखला

47. बिहारी

48. फिल्डिंग

49. स्किल

50. डिसीप्लीन

51. साइंस

श्रेष्ठ पाँच कथा : अन्तिम सम्पादकीय चयन

खण्ड ३ — कथा-शतत्रयी — खण्ड १ : कथा १-१००

मूल समीक्षा-पाण्डुलिपिसँ सूचीकृत शीर्षक : 124

कथा-शतत्रयी : खण्ड-१ — कथा १–२०

प्रथम समूह : कथा १–२०

1. खिड़कीक गमला

2. छुट्टीक आवेदन

3. देरि सँ आयल चिट्ठी

4. बरखा रुकलाक बाद

5. साँझक बस

6. खाली पलंग

7. पेंशनक दिन

8. दू अक्षर

9. चाबी सौंपबाक दिन

10. दू कप चाय

11. सड़कक ओहि पार

12. नाम कटबाक सूचना

13. कापीक अन्तिम पन्ना

14. आमक सूखल डारि

15. बेरोजगार दुपहरिया

16. फोन नहि आयल

17. छोट पुरस्कार

18. नव पड़ोसी

19. कुर्सीक चरमराहट

20. सबेरे सात बजे

मूल पाठक कथा-सूची आ प्रमाण-संकेत

कथा-शतत्रयी : खण्ड-१ — कथा २१–४०

दोसरा समूह : कथा २१–४०

21. दू टिकट

22. कंगनक डिब्बा

23. एक रुपैया कम

24. फोटो स्टूडियो

25. लाल स्वेटर

26. चाबी

27. दस मिनट

28. अन्तिम ग्राहक

29. टूटल घड़ी

30. मिठाइक डिब्बा

31. छोट विज्ञापन

32. नील पेन

33. काठक घोड़ा

34. सिलाइ मशीन

35. एक जोड़ी जूता

36. खोआइल पर्स

37. किरायाक कमरा

38. बिना नामक पार्सल

39. तस्वीरक पाछाँ

40. दू दीप

कथा-शतत्रयी : खण्ड-१ — कथा ४१–६०

कथा ४१–६० : श्रम, माप, अधिकार आ संस्थाक भाषा

तेसर समूह : कथा ४१–६०

41. पछिला पंगति

42. चारि हाथ कपड़ा

43. बाँटल छाँह

44. एक दिनक छुट्टी

45. जमानतक टीन

46. आधा बोरा

47. दोसर दर

48. पाँच कुर्सी

49. धोबीक निशान

50. मजदूरीक घंटा

51. लाल मुहर

52. साझा मेड़

53. एक थारी भात

54. किरायाक ठेला

55. तीन गिलास पानी

56. नामक पाँति

57. फसलक नमूना

58. छोट छज्जा

59. साबुनक टिकिया

60. हिसाबसँ बाहर

कथा-शतत्रयी : खण्ड-१ — कथा ६१–८०

कथा ६१–८० : रूप, उपयोग, स्मृति आ साझा जीवन

चारिम समूह : कथा ६१–८०

61. भित्तिक दोसर जनम

62. दू रंगक सूत

63. बगियाक बाट

64. बिनु नाँवक चित्र

65. सात मिनटक आवाज

66. माटिक कटोरा

67. छतक तारा

68. पातर परदा

69. छाँहक नाप

70. दूनू घरक दीप

71. ओसाराक पाठ

72. खिलौनाक तल्लामे नाँव

73. टूटल सुर

74. नदीक दोसर नाँव

75. दू किसिमक बीआ

76. पुस्तकक भीतरक पात

77. छतक बाँटल समय

78. अधूर नाटक

79. चन्द्रमाक हिस्सा

80. नब आँगन

कथा-शतत्रयी : खण्ड-१ — कथा ८१–१००

81. एकतीसम खाट

82. पाछाँक सीढ़ी

83. रातिक पर्ची

84. दू बटन

85. बन्द खिड़कीक भाड़ा

86. ईंटक निशान

87. जेबक हिसाब

88. साँझक कुर्सी

89. पाँचम बाल्टी

90. रद्दी परिचय-पत्र

91. आधा हस्ताक्षर

92. बन्द पेटी

93. किरायाक इजोत

94. छोट ताला

95. दू मिनटक देरी

96. गील धानक तौल

97. खाली थारी

98. तीन रुपैयाक पर्ची

99. पछिला बत्ती

100. गिनतीक बाहर

कथा ८१–१०० : अन्तरकथात्मक तुलनात्मक विवेचन

मूल पाठ-साक्ष्य : कथा ८१–१००

कथा 8 — दू अक्षर

कथा 24 — फोटो स्टूडियो

कथा 35 — एक जोड़ी जूता

कथा 43 — बाँटल छाँह

कथा 47 — दोसर दर

कथा 65 — सात मिनटक आवाज

कथा 78 — अधूर नाटक

कथा 81 — एकतीसम खाट

कथा 86 — ईंटक निशान

कथा 100 — गिनतीक बाहर

खण्ड ४ — कथा-शतत्रयी — खण्ड २ : कथा १०१–२००

मूल समीक्षा-पाण्डुलिपिसँ सूचीकृत शीर्षक : 142

कथा-शतत्रयी : खण्ड-२ — कथा १०१–१२०

कथा १०१–१२० : परम्पराक उपयोग, दैनिक हास्य आ सम्बन्धक प्रमाण

प्रथम समूह : कथा १०१–१२०क स्वतंत्र आलोचना

101. बाँधक ओहि पार

102. रिक्त पद

103. जमीनक आवाज

104. आधा समोसा

105. बरामदाक विश्वविद्यालय

106. प्रेमक उधार

107. एक कप मुफ्त चाय

108. बूढ़ा आ रेडियो

109. छाता साझा

110. पाँच रुपैयाक राजा

111. भातक सुगन्ध

112. प्रेम-पत्रक व्याकरण

113. पानवाला दार्शनिक

114. किरायाक कुकुर

115. खाली जेबक भोज

116. टूटा छाता संघ

117. भुलक्कड़ प्रेमी

118. निःशुल्क हजाम

119. दादीक मोबाइल

120. एक प्लेट पकौड़ी

मूल पाठक क्रम आ निर्णायक दृश्य-साक्ष्य : कथा १०१–१२०

कथा-शतत्रयी : खण्ड-२ — कथा १२१–१४०

कथा १२१–१४० : वस्तुक आवागमन, अदृश्य श्रम आ अधिकारक मर्यादा

द्वितीय समूह : कथा १२१–१४०क स्वतंत्र आलोचना

121. चप्पलक जोड़ी

122. घरक सबसँ धनी आदमी

123. हँसीक बचत

124. चाबी

125. दस मिनट

126. अन्तिम ग्राहक

127. टूटल घड़ी

128. मिठाइक डिब्बा

129. छोट विज्ञापन

130. नील पेन

131. काठक घोड़ा

132. सिलाइ मशीन

133. एक जोड़ी जूता

134. हेरायल पर्स

135. किरायाक कमरा

136. बिना नामक पार्सल

137. तस्वीरक पाछाँ

138. दू दीप

139. उधारक साड़ी

140. पाँच धुर जमीन

मूल पाठक क्रम आ निर्णायक दृश्य-साक्ष्य : कथा १२१–१४०

कथा-शतत्रयी : खण्ड-२ — कथा १४१–१६०

कथा १४१–१६० : प्रतिष्ठा, दृश्य-प्रमाण, पारिवारिक श्रम आ सार्वजनिक न्याय

कथा १४१–१६० : स्वतंत्र पाठाधारित समीक्षा

141. मेजबान

142. नव मोबाइल

143. दहेजक पंखा

144. बड़का दरवाजा

145. सम्मान-पत्र

146. एक प्लेट कम

147. नगरक पता

148. फोटोमे मुस्की

149. कर्जक भोज

150. किरायाक कार

151. सोना जेकाँ

152. दस किलो चाउर

153. महँग जूता

154. खाली लिफाफा

155. निमंत्रण

156. छतरीवाला

157. नम्बर प्लेट

158. गामक मंच

159. खिड़की लग बैसल लड़की

160. परदेसियाक बेटी

मूल पाठक क्रम आ निर्णायक दृश्य-साक्ष्य : कथा १४१–१६०

कथा-शतत्रयी : खण्ड-२ — कथा १६१–१८०

कथा १६१–१८० : स्मृतिक अनिश्चितता, लोकज्ञान, श्रम आ न्याय

कथा १६१–१८० : स्वतंत्र पाठाधारित समीक्षा

161. अधूरा गीत

162. नदीक पाती

163. छोट नौकर

164. माएक बक्सा

165. पाठशालाक आँगन

166. सिंदूरक डिबिया

167. गाछक झूला

168. माटिक बाँसुरी

169. एकटा नाम

170. साँझक पाठ

171. सीमाक मेला

172. नीमक छाँह

173. कागजक नाव

174. चुप्पी

175. पोस्टकार्ड

176. झरोखाक फूल

177. पहिल कमाइ

178. लौटैत गीत

179. सीमाक कागज

180. बाढ़ि शिविर

मूल पाठक क्रम आ निर्णायक दृश्य-साक्ष्य : कथा १६१–१८०

कथा-शतत्रयी : खण्ड-२ — कथा १८१–२००

कथा १८१–२०० : हिंसाक पाछाँ जीवन, पहिचानक मर्यादा आ भविष्यक हिसाब

कथा १८१–२०० : स्वतंत्र मूल पाठाधारित समीक्षा

181. लाल कम्बल

182. नाम पूछू नहि

183. रजिस्टर

184. खुलल दरवाजा

185. तीन मिनट

186. कपड़ा

187. स्टेशनक कोठरी

188. मौन गवाही

189. दू शव

190. कर्फ्यूक दूध

191. टूटा चप्पल

192. बन्द कमरा

193. दाग

194. रातिक ट्रक

195. पहचान-पर्ची

196. बच्चाक प्रश्न

197. गवाहीक मूल्य

198. नदी पार

199. कुर्थीक दालि

200. एक बीघाक सपना

मूल पाठक निर्णायक दृश्य-साक्ष्य : कथा १८१–२००

समस्त सय कथा : तुलनात्मक पुनर्मूल्याङ्कन

कथा १०१–१२० : विस्थापन, सार्वजनिक बाट, स्नेह आ विनोद

कथा १२१–१४० : वस्तुक यात्रा, मायाक अर्थ आ स्त्रीक घरेलू श्रम

कथा १४१–१६० : प्रतिष्ठाक प्रदर्शन, आपूर्ति आ सार्वजनिक विसंगति

कथा १६१–१८० : लोकज्ञान, विरासत आ सुरक्षा

कथा १८१–२०० : पहिचानक हिंसा, निजता, आर्थिक विकल्प

कथा 101–120

कथा 121–140

कथा 141–160

कथा 161–180

कथा 181–200

श्रेष्ठ दस कथा : अन्तिम सम्पादकीय चयन

कथा 101 — बाँधक ओहि पार

कथा 103 — जमीनक आवाज

कथा 132 — सिलाइ मशीन

कथा 152 — दस किलो चाउर

कथा 161 — अधूरा गीत

कथा 168 — माटिक बाँसुरी

कथा 184 — खुलल दरवाजा

कथा 188 — मौन गवाही

कथा 199 — कुर्थीक दालि

कथा 200 — एक बीघाक सपना

खण्ड ५ — कथा-शतत्रयी — खण्ड ३ : कथा २०१-३००

मूल समीक्षा-पाण्डुलिपिसँ सूचीकृत शीर्षक : 165

कथा-शतत्रयी : खण्ड-३ — कथा २०१–२२०

कथा २०१–२२० : घरेलू वस्तु, श्रम, पारिवारिक अधिकार आ नगरीय अनुभव

कथा २०१–२२० : स्वतंत्र पाठाधारित समीक्षा

201. खाली थैला

202. रौदक एक टुकड़ा

203. नाव बान्हल रहल

204. फ्रिजक आवाज

205. किरायाक महीना

206. नीला मग

207. चार्जर

208. कपड़ा सुखेबाक तार

209. बन्द नल

210. आधा किलो चाउर

211. बालकोनीक गमला

212. गलत नम्बर

213. पुरान परदा

214. सिलिन्डर खत्म

215. दू प्लेट

216. पड़ोसीक टीवी

217. बन्द लिफ्ट

218. किराना पर्ची

219. पुरान गद्दा

220. दरबज्जाक घंटी

१. खाली वस्तु, बदलल अधिकार : ‘खाली थैला’, ‘नीला मग’, ‘किराना पर्ची’

२. सीमित संसाधनक साझेदारी : रौद, पानि, तार, गद्दा

३. घरक खर्चमे मौन आ गणना : फ्रिज, किराया, चाउर, किराना

४. निजता बनाम सुरक्षा : ‘चार्जर’ आ ‘सिलिन्डर खत्म’

५. वृद्धावस्था, ध्वनि आ दिनक समय

६. नगरीय सामीप्य आ अपरिचय : देबाल, लिफ्ट, बालकोनी

७. प्रतीक्षाक कथानक : नाव, दू थारी, दरबज्जाक घंटी

८. घर-बदलाव : पुरान परदा, बालकोनीक गमला, दरबज्जाक घंटी

मूल पाठक क्रम आ निर्णायक दृश्य-साक्ष्य : कथा २०१–२२०

कथा-शतत्रयी : खण्ड-३ — कथा २२१–२४०

कथा २२१–२४० : घरक साझेदारी, लोकज्ञान, श्रम आ बदलैत ग्राम-भूगोल

कथा २२१–२४० : स्वतंत्र पाठाधारित समीक्षा

221. बचल तरकारी

222. बन्द खिड़की

223. रविक दिनक कपड़ा

224. सरिसो कटबाक बाद

225. चरबाहाक पगडंडी

226. पोखरिक रखबार

227. बथानक साँझ

228. आमक बगीचा

229. कमलाक धार

230. धानक गन्ध

231. गाछक छाँह

232. डोमक बाँसुरी

233. झोपड़ीक नक्शा

234. गोरूक घंटी

235. कच्ची सड़क

236. पथारक रक्षक

237. धान रोपनीक गीत

238. बरगदक नीचाँ रजिस्टर

239. बाढ़िक निशान

240. पहिल ट्रैक्टर

१. घरेलू भोजन, वस्त्र आ ध्वनि : संयुक्त घरक बदलैत सीमा

२. खेतीक गणना : नकद, दिन, अनुभव आ देखभाल

३. लिखित नक्शा आ भौतिक धरातल : पानी, पगडंडी आ घर

४. जल आ प्रमाण : पोखरि, नदी, नहर आ बाढ़िक निशान

५. लोककला आ सामूहिक श्रम : बाँसुरीक स्वर, रोपनीक गीत

६. साझा सम्पत्ति आ लोक-अधिकार : बगीचा, चरागाह, बथान

७. आधुनिकता आ श्रमिक गरिमा : वाहन, यन्त्र आ कार्य-अधिकार

८. कथान्तक रूपक : बचल चिन्ह, खाली जगह आ अधूर निर्णय

मूल पाठक क्रम आ निर्णायक दृश्य-साक्ष्य : कथा २२१–२४०

कथा-शतत्रयी : खण्ड-३ — कथा २४१–२६०

कथा २४१–२६० : नाम, प्रमाण, सामाजिक प्रतिष्ठा आ संस्थागत व्यङ्ग्य

241. सिमानक खूँटा

242. खाली बथान

243. आखिरी कटनी

244. प्रमाण-पत्रक गाम

245. स्वच्छता दिवस

246. पढ़ल-लिखल सभा

247. आदर्श चौक

248. विकासक फीता

249. प्रतिष्ठित परिवार

250. अफवाहक दिन

251. टॉपरक फोटो

252. सभसँ स्वच्छ घर

253. सम्मान समारोह

254. नकल-विरोधी भाषण

255. पुस्तकालय उद्घाटन

256. जातिक कुर्सी

257. डिजिटल गाम

258. गरीबक प्रमाण

259. मौन समिति

260. आदर्शविवाह

१. सिमान, खाली जगह आ अन्तिम श्रम : भौतिक उत्तराधिकारक भिन्न अर्थ

२. प्रमाण-पत्र, सफाइ आ साक्षरता : उपलब्धिक वास्तविक माप

३. नाम आ दृश्य : पट्ट, फीता, सम्मान आ प्रयोगशाला

४. घरक स्वच्छता आ प्रतिष्ठा : कोन ठामक लागत के उठबैत अछि?

५. शिक्षा आ संस्थागत उत्तरदायित्व : प्रश्न करबाक अधिकार

६. मौन, अव्यक्त आदेश आ अप्रमाणित सन्देश

७. अंकीय घोषणा आ वास्तविक उपलब्धता : ग्रामीण डिजिटलता, सहायता आ पुस्तकालय

८. कथान्तमे घोषणा नहि, बदलल व्यवहार : सीमा आ शिल्प

मूल पाठक क्रम आ निर्णायक दृश्य-साक्ष्य : कथा २४१–२६०

कथा-शतत्रयी : खण्ड-३ — कथा २६१–२८०

कथा २६१–२८० : निर्णय, स्त्रीक समय, निजता आ पारिवारिक अधिकार

261. सभक विचार

262. पुरस्कारक पात्र

263. नया नियम

264. भीतरक आलमारी

265. छत परक दू घंटा

266. बहूक कमरा

267. मायकेक चाबी

268. सिलाइ खर्च

269. परीक्षा फार्म

270. रसोइक दरबज्जा

271. लाल बक्सा

272. बहिनक फोन

273. किरायेदार कन्या

274. उपहारक साड़ी

275. भोजनक मेज

276. चुप्पीवाली मामी

277. पार्लरक शीशा

278. नौकरीक पहिल महीना

279. पुरान पेटीकोट

280. अतिथि कमरा

१. स्वतंत्र विचारक पाँजि आ नियमक आलमारी

२. सेवा, स्मरण आ श्रमक श्रेय : औजार, आलमारी, बॉबिन, सीवन

३. घरेलू कोठलीक स्वामित्व : बहू, वृद्धा आ बन्द बक्सा

४. समयक स्त्री-अनुभव : छत, परीक्षा-तिथि, चूल्हा, भोजन

५. निजता, पहुँच आ दृष्टि : चाबी, फोन, फाटक

६. उपहारक प्रेम आ देहपर निर्णय : साड़ी आ शीशा

७. घरक अर्थव्यवस्था : सिलाइ, विश्वविद्यालय आ वेतन

८. अन्तिम दृश्य, शिल्पगत पुनरावृत्ति आ चयनक सावधानी

मूल पाठक क्रम आ निर्णायक दृश्य-साक्ष्य : कथा २६१–२८०

कथा २८१–३०० : मूल पाठाधारित स्वतंत्र आलोचना

२८१. गुप्त बचत

२८२. फोटोमे नहि रहल स्त्री

२८३. नामक प्लेट

२८४. तीसरी सीढ़ी

२८५. उल्टा कैलेंडर

२८६. बन्द कमराक हवा

२८७. बिना मालिकक छाया

२८८. स्टेशन जे नक्शामे नहि

२८९. आधा बजल घड़ी

२९०. दोसर दरबज्जा

२९१. नाम बदलैत गली

२९२. एक अतिरिक्त खिड़की

२९३. आवाजक कमरा

२९४. बस संख्या शून्य

२९५. कागजक वर्षा

२९६. नक्शाक पोखरि

२९७. उलटल प्रतिबिम्ब

२९८. गायब बुधदिन

२९९. पाँचम कोना

३००. अपरिचित अपन घर

१. घरक पाइ, स्त्रीक निर्णय आ लेखाक स्वामित्व

२. स्मरण-श्रम, दृश्य उपस्थिति आ श्रेयक दोसर जीवन

३. फाटक, नाम-पट्ट, मानचित्र आ घरेलू स्थानक अधिकार

४. अभिलेख, अनुभव, आधिकारिक सत्य आ नव्य-न्यायक हेतुविवेक

५. जाति, पेशा, स्थानीय कौशल आ सार्वजनिक स्थान

६. पोखरि, जलक प्रत्यक्ष, दीर्घ स्मृति आ पर्यावरणीय निर्णय

७. असम्भव समय: पायदान, दिन-पाँजि, लोलक आ बुधदिन

८. निजता, प्रवेशाधिकार आ अनचाहल दृष्टि

९. छवि, अनिर्णीत दृश्य आ साहित्यिक प्रमाणक मर्यादा

१०. अनबनल जीवन, अधूर विकल्प आ वस्तुक नब उपयोग

मूल पाठक प्रमाण-संकेत सारणी : कथा २८१–३००

कथा २०१–२२० : नित्य उपयोगक वस्तु आ सम्बन्धक वास्तविक व्यय

कथा २२१–२४० : माटि, जल, पेशागत ज्ञान आ अतीतक चिन्ह

कथा २४१–२६० : सार्वजनिक घोषणा, सामाजिक विन्यास आ सत्यापनक विडम्बना

कथा २६१–२८० : निर्णयक लेखा, स्त्रीक निजता आ अपूर्ण सुधार

कथा २८१–३०० : बाहरी प्रमाण आ भीतरक असम्भव व्यवस्था

कथा २०१–३०० : मूल शीर्षकक पूर्ण अनुक्रम

समग्र आलोचनात्मक निष्कर्ष : कथा-शतत्रयी खण्ड-३

खण्ड ६ — कथा-त्रिधारा — खण्ड १ : कथा १–१००

मूल समीक्षा-पाण्डुलिपिसँ सूचीकृत शीर्षक : 334

कथा-त्रिधारा · खण्ड-१ : कथा १–५क मूल पाठाधारित आलोचनात्मक अध्ययन

कथा १ — आवाज नहि देनिहार घंटी

कथा २ — उल्टा रास्ता

कथा ३ — रातिक दोसर आकाश

कथा ४ — प्याज काटैत स्त्री

कथा ५ — बसक शीशा

१. स्मृतिक अभिलेख आ अनुभवक अनुल्लंघनीय अन्तर

२. नाप आ प्रत्यक्षक विवाद : सड़क आ आकाश

३. चेहरा, घर आ रोजमर्राक कर्तृत्व

४. प्रतीकक औचित्य आ अन्तक अल्पकथन

मूल दृश्य-साक्ष्यक संक्षिप्त सारणी : कथा १–५

कथा-त्रिधारा · खण्ड-१ : कथा ६–१०क मूल पाठाधारित आलोचनात्मक अध्ययन

कथा ६ — पानि भरबाक बेर

कथा ७ — खाली कॉपी

कथा ८ — टूटल कंघी

कथा ९ — तरकारी चुनैत हाथ

कथा १० — जाड़क धूप

अन्तरकथात्मक तुलनात्मक विवेचन : कथा ६–१०

१. सार्वजनिक पाँति आ निजी समयक पुनर्वितरण

२. रिक्त कागज, रिक्त दाँत आ रिक्त अवलोकन

३. स्मृतिक शुद्धता आ सत्यक सामाजिक साक्षी

४. “चयन”क अधिकार : तरकारी, प्रशिक्षण आ शिक्षकीय निर्णय

५. पीढ़ीक संवाद : सुधारक सीमित, दृश्य परिणाम

६. अन्तिम वस्तु-क्रिया आ औचित्य

मूल दृश्य-साक्ष्यक संक्षिप्त सारणी : कथा ६–१०

अन्तरिम सम्पादकीय निष्कर्ष : कथा १–१०

कथा-त्रिधारा · खण्ड-१ : कथा ११–१५क मूल पाठाधारित आलोचनात्मक अध्ययन

कथा ११ — दूध उफनल

कथा १२ — लिफाफा खोलबाक पहिने

कथा १३ — शीशामे सफेद केश

कथा १४ — खाली कटोरी

कथा १५ — खिड़की पर चिड़ै

अन्तरकथात्मक तुलनात्मक विवेचन : कथा ११–१५

१. घरेलू दक्षता, नियन्त्रण आ श्रमक सामाजिक बाँट

२. अभिलेख, नाम आ जीवनक अनलिखल इतिहास

३. माए, बेटी, नातिनि : प्रश्न करबाक अधिकार

४. अभावक निर्दिष्ट स्थान : कागज, नाम, अन्न आ समय

५. बालकक अंकगणित आ वृद्धाक अवलोकन

६. एकहि वस्तुक बदलैत भूमिका : कटोरीक दू कथान्त

७. नियन्त्रण छोड़ब, सत्य अधूरा स्वीकार करब

निर्णायक दृश्य-साक्ष्य : कथा ११–१५

अन्तरिम सम्पादकीय मूल्याङ्कन : कथा १–१५

कथा-त्रिधारा · खण्ड-१ : कथा १६–२०क मूल पाठाधारित आलोचनात्मक अध्ययन

कथा १६ — एक शब्द गलत

कथा १७ — नव चप्पल

कथा १८ — दुपहरियाक मौन

कथा १९ — टूटैत नख

कथा २० — फल काटबाक गन्ध

अन्तरकथात्मक तुलनात्मक विवेचन : कथा १६–२० आ पूर्वकथा

१. गलत शब्द, अधूर अभिलेख आ सम्बन्धक व्याख्या

२. पुरान चप्पल आ टूटल नख : देहक चुप इतिहास

३. घरेलू आवश्यकता, अस्वीकारक सूक्ष्म अधिकार आ समय

४. वस्तुक प्रतीक बनबाक अलग-अलग प्रक्रिया

५. स्मृति कहाँ रहैत अछि : नाम, अङ्ग, गन्ध आ कागज

६. अधूर उत्तरक साहस : खुलल पत्र सँ अनाम हिस्सा धरि

७. श्रमक बाँट, सवयक अधिकार आ अनाम सहभागिता

८. अन्तिम दृश्य : घोषणा छोड़ि काजक वास्तविक अन्तर

निर्णायक दृश्य-साक्ष्य : कथा १६–२०

अन्तरिम सम्पादकीय मूल्याङ्कन : कथा १–२०

कथा-त्रिधारा (खण्ड-१) : कथा २१–२५क विस्तृत साहित्यिक समीक्षा

कथा २१ — पंखाक नीचे

कथा २२ — अधलिखल नाम

कथा २३ — दीप मिझेबाक पहिने

कथा २४ — लाल धूर

कथा २५ — तीन मिनटक जुलूस

अन्तरकथात्मक तुलनात्मक विवेचन : कथा २१–२५ आ पूर्वकथा

१. घड़ीक समय, रोगीक समय आ हानिक समय

२. आवेदन, पाँजि आ अधूर पर्ची : अभिलेख कोन बात सिद्ध करैत अछि

३. सीमा बननाइ आ सीमा पार होनाइ : आँगन आ खेत

४. देखभालक गणना आ महिलाक स्वत्व

५. वस्तुक दृश्यमानता आ दृष्टिक सीमित विश्वास

६. बालकक दृष्टि : पतंग, चप्पल आ आधा पढ़ल अक्षर

७. सार्वजनिक गति आ निजी श्रमक शेष

८. अन्तिम वस्तु, अधूर समाधान आ व्यञ्जना

निर्णायक दृश्य-साक्ष्य : कथा २१–२५

अन्तरिम सम्पादकीय मूल्याङ्कन : कथा १–२५

कथा-त्रिधारा (खण्ड-१) : कथा २६–३०क मूल पाठाधारित विस्तृत साहित्यिक समीक्षा

कथा २६ — फाटल ढोल

कथा २७ — रातिक ट्रक

कथा २८ — राख पर फूल

कथा २९ — लोहारक हथौड़ा

कथा ३० — लालटेनक शीशा

अन्तरकथात्मक तुलनात्मक विवेचन : कथा २६–३० आ पूर्वकथासभ

१. घटना, साक्ष्य आ दोषनिर्णय

२. कारीगरी आ उत्तराधिकारक भिन्न रूप

३. सार्वजनिक अभिलेख आ निजी क्षति

४. बाढ़ि, आगि आ पुनर्निर्माणक असमान समय

५. बाल-दृष्टि, उपदेश आ अनिश्चितताक अधिकार

६. स्त्री, घरेलू सम्बन्ध आ श्रमक मान्यता

७. नामकरणक राजनीति : तकनीकी कारण, अफवाह आ आगिक बाद

८. वस्तुक रूपान्तर आ कथान्तक खुलल स्थान

निर्णायक दृश्य-साक्ष्य : कथा २६–३०

अन्तरिम सम्पादकीय मूल्याङ्कन : कथा १–३०

कथा-त्रिधारा (खण्ड-१) : कथा ३१–३५क मूल पाठाधारित विस्तृत साहित्यिक समीक्षा

कथा ३१ — पुलक नीचे

कथा ३२ — कागज आ लाठी

कथा ३३ — कटहरक गन्ध

कथा ३४ — पाँच गोलीक अफवाह

कथा ३५ — फाटल झण्डा

अन्तरकथात्मक तुलनात्मक विवेचन : कथा ३१–३५ आ पूर्वकथासभ

१. सार्वजनिक उद्घाटन आ प्रत्यक्ष श्रमक छूटल नाम

२. नामक अक्षर आ सीमाक डोरी : अभिलेखक अलग दोष

३. घरक विभाजन आ खेतक पुनर्सीमाङ्कन

४. लालटेनक भय आ कटहरक गन्ध

५. गन्ध, आवाज आ प्रमाणक अलग विश्वसनीयता

६. फाटल ढोल आ गोलीक संख्या : दोषारोपणक उताविली

७. स्त्रीक अर्जित कौशल : हथौड़ा सँ सुई धरि

८. कागजक सत्ता आ कारीगरक पर्ची

निर्णायक दृश्य-साक्ष्य : कथा ३१–३५

अन्तरिम सम्पादकीय मूल्याङ्कन : कथा १–३५

कथा-त्रिधारा (खण्ड-१) : कथा ३६–४०क मूल पाठाधारित विस्तृत साहित्यिक समीक्षा

कथा ३६ — बूटक निशान

कथा ३७ — रातिक नाव

कथा ३८ — काँचक टुकड़ा

कथा ३९ — राख भेल खेत

कथा ४० — बन्दूक बिना पहरा

अन्तरकथात्मक तुलनात्मक विवेचन : कथा ३६–४० आ पूर्वकथासभ

१. दू प्रकारक बूट-छाप : अधिकारक प्रवेश आ नब शङ्काक निरीक्षण

२. अफवाहक काल आ सुधारक अपूर्णता

३. नावक भार आ रातिक मालवाहक गाड़ी

४. लाल सूतक दू उपयोग : राहक सङ्केत आ खेतक सीमा

५. माटिक नाप आ कागजक नाप

६. बालदृष्टि : गणितक दाग आ प्रकाशक रंग

७. अफवाह, इन्द्रियबोध आ सत्यापन

८. श्रम, वेतन आ संस्थागत उत्तरदायित्व

निर्णायक दृश्य-साक्ष्य : कथा ३६–४०

अन्तरिम सम्पादकीय मूल्याङ्कन : कथा १–४०

कथा-त्रिधारा (खण्ड-१) : कथा ४१–४५क मूल पाठाधारित विस्तृत साहित्यिक समीक्षा

कथा ४१ — धुआँक बीच गीत

कथा ४२ — एक मिनटक बिजली

कथा ४३ — रक्त नहि, सिंदूर

कथा ४४ — हमर महान व्यापार

कथा ४५ — तीन बेरक बराती

अन्तरकथात्मक तुलनात्मक विवेचन : कथा ४१–४५ आ पूर्वकथासभ

१. सामूहिक श्रमक लय : ‘धुआँक बीच गीत’ आ ‘रातिक नाव’

२. ध्वनिक कार्य : ‘धुआँक बीच गीत’, ‘फाटल ढोल’ आ ‘पाँच गोलीक अफवाह’

३. संस्थागत नियम आ तत्काल जाँच : ‘एक मिनटक बिजली’ आ ‘बन्दूक बिना पहरा’

४. जे नहि देखाइत : खाट पाँच आ रेवतीक कॉपी

५. लाल रंगक बहुअर्थिता : ‘रक्त नहि, सिंदूर’ आ ‘पाँच गोलीक अफवाह’

६. सूँघल गन्ध आ देखल रंग : ‘कटहरक गन्ध’ सँ ‘रक्त नहि, सिंदूर’ धरि

७. लेखापञ्जी आ श्रम-मूल्य : ‘हमर महान व्यापार’ आ ‘फाटल झण्डा’

८. अविश्वसनीय आत्मकथनक दू रूप : व्यापार आ बराती

निर्णायक दृश्य-साक्ष्य : कथा ४१–४५

अन्तरिम सम्पादकीय मूल्याङ्कन : कथा १–४५

कथा-त्रिधारा (खण्ड-१) : कथा ४६–५०क मूल पाठाधारित विस्तृत साहित्यिक समीक्षा

कथा ४६ — उधारक दार्शनिक

कथा ४७ — पंचायतक विशेषज्ञ

कथा ४८ — हमर अमीर मामा

कथा ४९ — हरायल बकरीक बयान

कथा ५० — मोबाइल गुरु

अन्तरकथात्मक तुलनात्मक विवेचन : कथा ४६–५० आ पहिनुक कथा

१. पाँजिक नैतिकता : गोपाल साह, नन्दकिशोर मामा आ शान्ति देवी

२. विशेषज्ञता बनाम परीक्षण : बटेसरक नाली आ मालतीक बकरी

३. बालकक प्रश्न आ वयस्क अधिकार : कुसुम, मालती आ रेवती

४. नामक आवरण : ‘उधार’क श्रेणी आ ‘अमीर’क प्रतिष्ठा

५. श्रमक अप्रतिष्ठित ज्ञान : रघुनन्दन, मालती रसोइया आ हबीब

६. अफवाहसँ अभिलेख धरि : बकरी, गोली आ सिंदूर

७. शिक्षकक आत्मपरिवर्तन : रघुनाथ बाबू आ गोविन्दकान्त

८. अन्तिम हँसीक दू अर्थ : व्यङ्ग्यक निरन्तरता आ वास्तविक परिवर्तन

निर्णायक दृश्य-साक्ष्य : कथा ४६–५०

अन्तरिम सम्पादकीय मूल्याङ्कन : कथा १–५०

कथा-त्रिधारा (खण्ड-१) : कथा ५१–५५क मूल पाठाधारित विस्तृत साहित्यिक समीक्षा

कथा ५१ — विवाहक बजट

कथा ५२ — महान कविक पड़ोसी

कथा ५३ — किरायाक विद्वान

कथा ५४ — गामक मौसम विज्ञानी

कथा ५५ — मुफ्त सलाह

अन्तरकथात्मक तुलनात्मक विवेचन : कथा ५१–५५ आ पहिनुक कथा

१. घोषणासँ हिसाब धरि : ‘विवाहक बजट’ आ ‘उधारक दार्शनिक’

२. श्रोता, लेखक आ श्रेय : बटुकनाथ आ गोपीकान्त

३. स्रोतक उपयोग बनाम स्रोतक स्वामित्व : गोपीकान्त आ मालती

४. भविष्यवाणी, अनुमान आ तैयारी : मौसम विज्ञानी आ रातिक नाव

५. सामूहिक मापनक रूप : सत्तर हजार आ तीस कथन

६. सलाह देनिहारक परीक्षा : महेश्वर, मोबाइल गुरु आ बटेसर

७. श्रम आ साहित्यक अन्तराल : मटरक दाना, ईंट आ विवाहक रसोइ

८. अपूर्ण सुधारक अर्थ : बेंच, पट्टी, पाँजि आ चौखटा

निर्णायक दृश्य-साक्ष्य : कथा ५१–५५

अन्तरिम सम्पादकीय मूल्याङ्कन : कथा १–५५

कथा-त्रिधारा · खण्ड-१ : कथा ५६–६०क संचयी आलोचना

कथा ५६ — चुनावक चाय

कथा ५७ — माइकवाला काका

कथा ५८ — एक किलो प्रतिष्ठा

कथा ५९ — नाम भूलनिहार नेता नहि, शिक्षक

कथा ६० — चन्दा विशेषज्ञ

अन्तरकथात्मक तुलनात्मक विवेचन : कथा ५६–६०

१. चाहक बकाया आ चन्दाक वचन : कैलाश–गंगाराम

२. सार्वजनिक स्वरक औचित्य : माइकवाला काका आ चुनावी टोली

३. प्रतिष्ठाक भौतिक आधार : पीयर बाट आ कारी ध्वनि-वर्धक

४. गुरुजीक स्मृति आ गौरीक गणित

५. श्रमक अदृश्य हिसाब : मालती आ सीता देवी

६. तथ्यक रिक्त स्थानक नैतिकता : पाँजि आ पाँजि

७. उपहास सँ आत्मसुधार : माधव, भुवनेश्वर आ शिवनारायण

८. व्यङ्ग्यक अन्तिम पुनरागमन : नियम, प्रश्न आ शून्य

निर्णायक दृश्य-साक्ष्य : कथा ५६–६०

अन्तरिम सम्पादकीय मूल्याङ्कन : कथा १–६०

कथा-त्रिधारा · खण्ड-१ : कथा ६१–६५क संचयी आलोचना

कथा ६१ — मुफ्तक फोटो

कथा ६२ — समय पर नहि, बात पर

कथा ६३ — हम दोषी कतय छी?

कथा ६४ — धर्मपरायण चोर

कथा ६५ — सदाचार समिति

अन्तरकथात्मक तुलनात्मक विवेचन : कथा ६१–६५

१. फोटो-पाँजि आ शिकायत-पाँजि : ककर नाम समाजमे बचैत अछि?

२. कथावाचकक आत्मसफाइ : मुफ्तक फोटो आ हम दोषी कतय छी?

३. समय आ कामक वास्तविक मापन : पाँति आ पौध

४. अनुमति, उत्तरदायित्व आ सामुदायिक हित : धर्मपरायण चोर आ सदाचार समिति

५. स्त्रीक विरोधक अलग आधार : जानकी, फूलो, कमला आ ज्योति

६. पाँजिक अङ्क आ रिक्तताक राजनीति : ८२ परिवार, ६८ पौध, ८४ शिकायत

७. नियमक सुधार आ सुधारक सीमा : ज्योति, देवकीनन्दन आ निरंजन

८. अन्तिम वस्तुक नव अर्थ : फोटो, हरियर खेत, नीम, छाता आ लिफाफा

निर्णायक दृश्य-साक्ष्य : कथा ६१–६५

अन्तरिम सम्पादकीय मूल्याङ्कन : कथा १–६५

कथा-त्रिधारा · खण्ड-१ : कथा ६६–७०क संचयी आलोचना

कथा ६६ — पवित्र पार्किंग

कथा ६७ — दानक फोटो

कथा ६८ — महान त्यागी

कथा ६९ — सत्यवादी व्यापारी

कथा ७० — पुण्यक रसीद

अन्तरकथात्मक तुलनात्मक विवेचन : कथा ६६–७०

१. चूनक रेखा आ जलनिकास : सार्वजनिक हितक भौतिक प्रमाण

२. दानक नाम-पट्टी आ पुण्य-पाँजि : आत्मप्रदर्शनक अभिलेख

३. धर्मभाषा आ व्यवहार : प्रवचन, त्याग आ पुण्य

४. ‘सत्य’ आ ‘सेवा’क छूटल जानकारी : विज्ञापनक अपूर्णता

५. स्त्री आ बालस्वरक प्रमाणकारी भूमिका

६. संशोधनक किंमत : शब्द बदलब वा अपना ऊपर घाटा लेब

७. कथान्तमे वस्तुक फेर अर्थ : रेखा, तस्वीर, घैल, तख्ती, पावती

८. व्यङ्ग्य आ सहज समाधानक सीमा : पाँच कथाक तुलना

निर्णायक दृश्य-साक्ष्य : कथा ६६–७०

अन्तरिम सम्पादकीय मूल्याङ्कन : कथा १–७०

कथा-त्रिधारा · खण्ड-१ : कथा ७१–७५क संचयी आलोचना

कथा ७१ — सभ्य परिवार

कथा ७२ — उपदेशक यात्री

कथा ७३ — शुद्ध भोजन

कथा ७४ — क्षमाक समारोह

कथा ७५ — दयालु मालिक

अन्तरकथात्मक तुलनात्मक विवेचन : कथा ७१–७५

१. ककर नाम दर्ज, ककर ठाम नापल : चन्द्रकला आ सुमित्रा

२. नियमक औचित्य : शशिभूषणक बस आ शशिधरक रसोइ

३. दू पाँजिक सुधार : सरोजा देवी आ रमानन्द चौधरी

४. सार्वजनिक प्रशंसा आ व्यक्तिक इच्छा : समारोह तथा परिवार

५. श्रमक अदृश्य लागत : रसोइ, भोज आ गृहप्रवेश

६. बाल/युवा प्रश्नक आलोचनात्मक शक्ति : ईरा, नीलिमा आ निरंजन

७. कथा ७४ आ कथा ६९ : सत्यक घोषणा बनाम आवश्यक जानकारी

८. अपूर्ण वस्तु-सङ्केत : मुड़ल पर्ची, टेढ़ पाँति, खाली लेखा आ मेटाओल कोठरी

निर्णायक दृश्य-साक्ष्य : कथा ७१–७५

अन्तरिम सम्पादकीय मूल्याङ्कन : कथा १–७५

कथा-त्रिधारा · खण्ड-१ : कथा ७६–८०

कथा ७६ — सत्यक पोस्टर

कथा ७७ — भलमानुसक गवाही

कथा ७८ — दान पेटीक सिक्का

कथा ७९ — सज्जन चालक

कथा ८० — चरित्र प्रमाण-पत्र

अन्तरकथात्मक तुलनात्मक विवेचन : कथा ७६–८०

१. सार्वजनिक घोषणासँ निजी साक्ष्य धरि : शशिनाथ आ भवेश्वर

२. लेखाक ‘क्रम’ आ नैतिक विश्वसनीयता : रतिनाथ, मंजुला आ किरण

३. सामाजिक पूँजीक दू रूप : रतिनाथ आ भुवनेश्वर

४. भाषाक आडम्बर आ परिणाम : नगेन्द्रक ‘जी’ आ शशिनाथक नारा

५. हस्ताक्षरक भार : भवेश्वर आ माधवक तीन प्रमाण-पत्र

६. पीड़ितक हित आ नियमक सीमा : नयन मिश्र, रामसेवक आ माधव

७. परिमाण, वर्गीकरण आ प्रमाण : एक रुपैया, अठारह घर आ दू बीजक

८. बदलल व्यवहारक तीन अन्त : पिन, दिशानिर्देश आ रिक्त कागज

निर्णायक दृश्य-साक्ष्य : कथा ७६–८०

अन्तरिम सम्पादकीय मूल्याङ्कन : कथा १–८०

कथा-त्रिधारा · खण्ड-१ : कथा ८१–८५

कथा ८१ — उपवासक भोज

कथा ८२ — नम्रताक पुरस्कार

कथा ८३ — अन्तिम पाँति

कथा ८४ — नदीक कागज

कथा ८५ — ईंटक नम्बर

अन्तरकथात्मक तुलनात्मक विवेचन : कथा ८१–८५

१. सूची सँ बाहर मनुष्य : सीता देवी आ गढ़िया टोला

२. सार्वजनिक मान्यता बनाम व्यावहारिक उपयोग : नवलकिशोर आ रमानन्द

३. छोट श्रमिकक वास्तविक दृष्टि : कमली, रामजतन आ रामदेव

४. दोसर पक्षक उपयोग : रामकृपालक पट्ट आ नदीक पुरान नक्शा

५. अभिलेखमे नामक अधिकार : सुरजन आ गढ़ियाक पाँच नव घर

६. कथाशास्त्रीय परिवर्तनक गति : रमानन्द आ रामकृपाल

७. प्रतिष्ठाक दृश्यता आ बालपाठक : बाल पुस्तक आ छात्रवृत्तिक कागज

८. संख्या ककर काम : नौ फलाहार, आठ पाँति आ क्रमांक ३१

निर्णायक दृश्य-साक्ष्य : कथा ८१–८५

अन्तरिम सम्पादकीय मूल्याङ्कन : कथा १–८५

कथा-त्रिधारा · खण्ड-१ : कथा ८६–९०क मूल पाठाधारित आलोचना

कथा ८६ — जंगलक रास्ता

कथा ८७ — मजूरीक हस्ताक्षर

कथा ८८ — कटान क्षेत्र

कथा ८९ — राशनक दिन

कथा ९० — स्कूलक दूरी

अन्तरकथात्मक तुलनात्मक विवेचन : कथा ८६–९०

१. नक्शाक पातर रेखा आ खेतक स्थायी सीमा

२. ‘अन्य काज’ आ ‘स्थानांतरित’: खाँचाक नैतिकता

३. गिनतीक सामाजिक अर्थ : १६९ यात्री आ १०.२ किलोमीटर

४. स्त्रीक प्रमाण-विवेक आ सहयोगक भिन्न भूमिका

५. ‘ईंटक नम्बर’सँ ‘मजूरीक हस्ताक्षर’ धरि

६. ‘नदीक कागज’ आ ‘राशनक दिन’मे बसोबासक प्रमाण

७. वस्तुक दोसर जीवन : पुरान नील साइकिल आ खननक झण्डा

८. पाँच कथाक अन्तिम दृश्य आ समाधानक वास्तविक सीमा

निर्णायक दृश्य-साक्ष्य : कथा ८६–९०

अन्तरिम सम्पादकीय मूल्याङ्कन : कथा १–९०

कथा-त्रिधारा · खण्ड-१ : कथा ९१–९५क मूल पाठाधारित आलोचना

कथा ९१ — पत्थर तोड़ैत गीत

कथा ९२ — वनक अधिकार

कथा ९३ — पुलक मुआवजा

कथा ९४ — मजदूरक फोटो

कथा ९५ — लाल कार्ड

अन्तरकथात्मक तुलनात्मक विवेचन : कथा ९१–९५

१. बदलैत गीत आ नब नक्शा : मौखिक स्मृतिक प्रमाण-सीमा

२. ‘मजूरीक हस्ताक्षर’ आ ‘पत्थर तोड़ैत गीत’: काजक अलग नाम

३. जंगलक बाट आ वनक नाला : डिजिटल सीधी रेखाक प्रभाव

४. पुलक मुआवजा आ कटान क्षेत्र : अस्थायी आदेशक स्थायी प्रभाव

५. मजदूरक फोटो आ राशनक दिन : नाम धरि पहुँचेबाक श्रृंखला

६. साँकल, बाँस आ लाल कार्ड : वस्तुमे रहैत सामाजिक सम्बन्ध

७. व्यक्तिगत लाभक बाहरक सुधार : झुमरी, बुधन आ फुलमती

८. अन्तिम दृश्यसभक ध्वनि आ दीर्घकालीन अपूर्णता

निर्णायक दृश्य-साक्ष्य : कथा ९१–९५

अन्तरिम सम्पादकीय मूल्याङ्कन : कथा १–९५

कथा-त्रिधारा खण्ड-१ : कथा ९६–१००क स्वतंत्र साहित्यिक समीक्षा

कथा ९६ — बालू घाट

कथा ९७ — अस्थायी बस्ती

कथा ९८ — जंगलक स्कूल

कथा ९९ — हस्ताक्षरक शक्ति

कथा १०० — मजदूरीक आधा दिन

कथा ९६–१०० : अन्तरकथात्मक तुलनात्मक परीक्षण

१. ‘बालू घाट’ आ ‘जंगलक रास्ता’ : नक्साक रेखा बनाम धरतीक बाट

२. ‘अस्थायी बस्ती’ आ ‘नदीक कागज’ : बसोबासक तथ्य आ स्वामित्वक प्रश्न

३. ‘जंगलक स्कूल’ आ ‘खाली कॉपी’ : सिखेनिहारक प्रश्न

४. ‘हस्ताक्षरक शक्ति’ आ ‘नाम भूलनिहार नेता नहि, शिक्षक’ : प्रमाणक मर्यादा

५. ‘मजदूरीक आधा दिन’ आ ‘मजूरीक हस्ताक्षर’ : श्रमक नामकरण

६. ‘बालू घाट’ आ ‘पानि भरबाक बेर’ : स्त्रीक स्थानीय ज्ञान

७. ‘अस्थायी बस्ती’ आ ‘पुलक मुआवजा’ : आदेशक अलग-अलग काल

८. ‘जंगलक स्कूल’ आ ‘एक मिनटक बिजली’ : उपस्थितिक परिभाषा

९. ‘हस्ताक्षरक शक्ति’ आ ‘सत्यक पोस्टर’ : घोषणा सँ बाहरी लेखा

१०. ‘मजदूरीक आधा दिन’ आ ‘रातिक नाव’ : सन्दर्भ-निर्भर निर्णय

पूर्ण मूल शीर्षक-पञ्जी : कथा १–१००

खण्ड-१क श्रेष्ठ दस कथा : अन्तिम सम्पादकीय चयन आ पृथक् गहन आलोचना

सम्पूर्ण कथा-अनुक्रम

खण्ड ७ — कथा-त्रिधारा — खण्ड २ : कथा १०१–२००

मूल समीक्षा-पाण्डुलिपिसँ सूचीकृत शीर्षक : 301

कथा-त्रिधारा खण्ड-२ : कथा १०१–१०४क स्वतंत्र साहित्यिक समीक्षा

कथा १०१ — चारि मुट्ठी बीआ

कथा १०२ — हलक बाट

कथा १०३ — आधा बाँस

कथा १०४ — गोठक पहिल दूध

खण्ड-२क आरम्भिक अन्तरकथात्मक विवेचन : कथा १०१–१०४

१. चारि मुट्ठी बीआ आ पहिल दूध : जीवनचक्रक पहिल दावा

२. हलक बाट आ आधा बाँस : समान अंशक भ्रम

३. नापी मात्रासँ बाहर श्रमक नाम : सुनैना आ गौरी

४. चारि कथा आ वस्तुगत प्रमाण

५. ‘मजूरीक आधा दिन’ सँ ‘हलक बाट’ : परिणामक हिसाब

६. खुलल समाप्ति आ सिद्धान्तक सावधानी

अन्तरिम सम्पादकीय मूल्याङ्कन : खण्ड-२, कथा १०१–१०४

कथा-त्रिधारा खण्ड-२ : कथा १०५–१०९क स्वतंत्र साहित्यिक समीक्षा

कथा १०५ — मचानक राति

कथा १०६ — भूसाक भाग

कथा १०७ — पोखरिक दू घाट

कथा १०८ — उधारक खाता

कथा १०९ — खेतक छोरक आम

कथा १०५–१०९क निर्णायक दृश्य-साक्ष्य

खण्ड-२क अन्तरकथात्मक तुलनात्मक विवेचन : कथा १०१–१०९

१. मचानक राति आ गोठक पहिल दूध : देखभालक श्रम पहिने

२. मचानक राति आ पोखरिक दू घाट : बदलैत परिस्थितिमे सामूहिक नियम

३. भूसाक भाग आ हलक बाट : श्रमक नाप कोन?

४. भूसाक भाग आ चारि मुट्ठी बीआ : अदृश्य स्त्री-श्रमक नाम

५. पोखरिक दू घाट आ खेतक छोरक आम : उपयोग-अधिकार आ प्रवेशक मर्यादा

६. उधारक खाता आ मचानक राति : पाँजिक रिक्तता आ नैतिक सत्य

७. उधारक खाता आ गोठक पहिल दूध : संयुक्त घरक भीतर वैयक्तिक दावा

८. खेतक छोरक आम आ आधा बाँस : ठेकाक अधूर अर्थ

अन्तरिम सम्पादकीय मूल्याङ्कन : खण्ड-२, कथा १०१–१०९

कथा-त्रिधारा खण्ड-२ : कथा ११०–११४क स्वतंत्र साहित्यिक समीक्षा

कथा ११० — रोपनीक दू दिन

कथा १११ — बाछीक देखभाल

कथा ११२ — तेलीघरक खली

कथा ११३ — चरवाहीक सीटी

कथा ११४ — कुम्हारक आगि

कथा ११०–११४क निर्णायक दृश्य-साक्ष्य

अन्तरकथात्मक तुलनात्मक विवेचन : कथा-त्रिधारा खण्ड-२, कथा १०१–११४

१. रोपनीक दू दिन आ हलक बाट : समयक विभाजन

२. बाछीक देखभाल आ गोठक पहिल दूध : पशुसेवा आ मालिकाना

३. तेलीघरक खली आ भूसाक भाग : सहउत्पादक हिसाब

४. चरवाहीक सीटी आ मचानक राति : अनुपस्थितिक न्याय

५. कुम्हारक आगि आ पोखरिक दू घाट : स्थानक बदलैत प्रमाण

६. रोपनीक दू दिन आ चरवाहीक सीटी : ‘समान’क दुई भ्रामक अर्थ

७. बाछीक देखभाल आ तेलीघरक खली : जिम्मेदारीक स्वीकृत सीमा

८. कुम्हारक आगि, तेलीघरक खली आ चारि मुट्ठी बीआ : उत्पादनक ज्ञान आ लेखा

अन्तरिम सम्पादकीय मूल्याङ्कन : कथा-त्रिधारा खण्ड-२, कथा १०१–११४

कथा-त्रिधारा (खण्ड-२) : कथा ११५–११९क स्वतंत्र आलोचनात्मक अध्ययन

कथा ११५ — किरायाक पम्प

कथा ११६ — दू पसेरी मड़ुआ

कथा ११७ — बाँधक घास

कथा ११८ — सूखल कुइयाँक पाल

कथा ११९ — कटनीक पछिला दिन

अन्तरकथात्मक तुलनात्मक विवेचन : कथा-त्रिधारा खण्ड-२, कथा १०१–११९

१. किरायाक पम्प आ हलक बाट : समयक गणना कि सेवाक स्वरूप?

२. दू पसेरी मड़ुआ आ उधारक खाता : कर्जक स्वीकृति आ श्रमिकक अधिकार

३. बाँधक घास आ चरवाहीक सीटी : ‘घर’क नामसँ पशु-संख्याक वास्तविकता धरि

४. सूखल कुइयाँक पाल आ पोखरिक दू घाट : पानि एकटा संसाधन, प्रमाण बहुविध

५. कटनीक पछिला दिन आ रोपनीक दू दिन : उपस्थितिक दिन आ श्रमक मूल्य

६. किरायाक पम्प आ दू पसेरी मड़ुआ : गणित सत्य, न्यायकेँ आर प्रमाण चाही

७. बाँधक घास आ सूखल कुइयाँक पाल : साझा संरचनाक देखरेख आ भविष्यक अधिकार

८. कटनीक पछिला दिन, किरायाक पम्प आ बाँधक घास : नब पाँजिक सीमा

कथा ११५–११९क निर्णायक दृश्य-साक्ष्य

अन्तरिम सम्पादकीय मूल्याङ्कन : कथा-त्रिधारा खण्ड-२, कथा १०१–११९

कथा-त्रिधारा खण्ड-२ : कथा १२०–१२४क मूल पाठाधारित साहित्यिक समीक्षा

कथा १२० — मेड़क नाम

कथा १२१ — सूखल नहरक लेखनी

कथा १२२ — कुलुप पर तीन खरोंच

कथा १२३ — डाकघरक तेरहम थैला

कथा १२४ — पनचक्कीक उलटल पाँख

अन्तरकथात्मक तुलनात्मक विवेचन : कथा-त्रिधारा खण्ड-२, कथा १०१–१२४

१. मेड़क नाम आ पोखरिक दू घाट : जल-उपयोगक सीमा सम्पत्तिक सीमा नहि

२. मेड़क नाम, हलक बाट आ किरायाक पम्प : माप सही हो, ताहिसँ न्याय सिद्ध नहि

३. सूखल नहरक लेखनी आ सूखल कुइयाँक पाल : जलक अभाव, यन्त्र आ निरीक्षण

४. सूखल नहरक लेखनी आ डाकघरक तेरहम थैला : हस्ताक्षरक सत्ता विरुद्ध घटित घटना

५. कुलुप पर तीन खरोंच आ डाकघरक तेरहम थैला : कोन अभिलेख खोलब, कोन सुरक्षित रखब?

६. कुलुप पर तीन खरोंच आ उधारक खाता : अभिलेखमे नाम अछि, अधिकारक अर्थ अलग

७. पनचक्कीक उलटल पाँख आ सूखल नहरक लेखनी : एके शिल्पक सर्जना आ पुनरावृत्ति

८. पनचक्कीक उलटल पाँख आ कुम्हारक आगि : दोषी व्यक्ति खोजबाक पहिने प्रक्रिया पढ़ब

कथा १०१–१२४क अन्तरिम सम्पादकीय मूल्याङ्कन

कथा-त्रिधारा खण्ड-२ : कथा १२५–१२९क मूल पाठाधारित साहित्यिक समीक्षा

कथा १२५ — उज्जर पर्दा पर कारी बिन्दु

कथा १२६ — कचहरीक गुम जूता-चिन्ह

कथा १२७ — आधा घण्टा बजैत घड़ी

कथा १२८ — निर्जन घाटक तानल रस्सी

कथा १२९ — नीला काँचक शीशी

अन्तरकथात्मक तुलनात्मक विवेचन : कथा-त्रिधारा खण्ड-२, कथा १०१–१२९

१. उज्जर पर्दा पर कारी बिन्दु आ कचहरीक गुम जूता-चिन्ह : साक्ष्य कोना दृश्य बनैत अछि?

२. आधा घण्टा बजैत घड़ी आ सूखल नहरक लेखनी : यन्त्रक आवाज आ दबाओल इतिहास

३. निर्जन घाटक तानल रस्सी आ रातिक नाव : आपत्कालीन निर्णयक अलग भार

४. नीला काँचक शीशी आ कुलुप पर तीन खरोंच : संरक्षित वस्तु आ भीतरी अधिकार

५. कचहरीक गुम जूता-चिन्ह आ डाकघरक तेरहम थैला : हस्ताक्षरक दीर्घकालिक दाम

६. उज्जर पर्दा पर कारी बिन्दु आ नीला काँचक शीशी : दृश्य-साक्ष्यक भ्रामक पर्याप्तता

७. आधा घण्टा बजैत घड़ी आ कचहरीक गुम जूता-चिन्ह : नागरिकक पहुँच बनाम संस्थागत सुरक्षा

८. निर्जन घाटक तानल रस्सी, मेड़क नाम आ पनचक्कीक उलटल पाँख : जलक वास्तविक प्रवाह आ कागजक सीमा

कथा १२५–१२९क निर्णायक दृश्य-साक्ष्य

कथा १०१–१२९क अन्तरिम सम्पादकीय मूल्याङ्कन

कथा-त्रिधारा खण्ड-२ : कथा १३०–१३४क मूल पाठाधारित साहित्यिक समीक्षा

कथा १३० — खोइछामे भेटल चाबी

कथा १३१ — सिझल धानक गन्ध

कथा १३२ — छाजन पर तीन चोट

कथा १३३ — काठक पेटीक ताप

कथा १३४ — माटिक देबालक भीतरक खटखट

अन्तरकथात्मक तुलनात्मक विवेचन : कथा-त्रिधारा खण्ड-२, कथा १०१–१३४

१. खोइछामे भेटल चाबी आ माटिक देबालक भीतरक खटखट : पारिवारिक मौनक स्थानिकी

२. सिझल धानक गन्ध आ छाजन पर तीन चोट : श्रमिकक नामपर चढ़ल दोष

३. काठक पेटीक ताप आ नीला काँचक शीशी : संरक्षणक अधिकार आ वस्तुक अनिश्चित पहिचान

४. खोइछामे भेटल चाबी आ कुलुप पर तीन खरोंच : खोलबाक अधिकार बनाम देखबाक अधिकार

५. छाजन पर तीन चोट आ आधा घण्टा बजैत घड़ी : भयक ध्वनि आ संस्थागत अतीत

६. माटिक देबालक भीतरक खटखट आ मेड़क नाम : सीमा-पत्र आ पानिक बाट

७. सिझल धानक गन्ध आ उधारक खाता : पुरान हिसाबक सामाजिक भार

८. काठक पेटीक ताप, सूखल नहरक लेखनी आ पनचक्कीक उलटल पाँख : यन्त्रक साक्ष्यक सीमा

कथा १३०–१३४क निर्णायक दृश्य-साक्ष्य

कथा १०१–१३४क अन्तरिम सम्पादकीय मूल्याङ्कन

कथा-त्रिधारा खण्ड-२ : कथा १३५–१३९क स्वतंत्र साहित्यिक समीक्षा

कथा १३५ — घुरैत मोहर

कथा १३६ — ओसक सीधा पट्टा

कथा १३७ — टूटल दर्पणक पछिला भाग

कथा १३८ — ओसारा पर लाल सूत

कथा १३९ — खसैत अक्षर

अन्तरकथात्मक तुलनात्मक विवेचन : कथा १३५–१३९

१. घुरैत मोहर आ खसैत अक्षर : कार्यालयी मोहरसँ मुद्रणक अक्षर धरि

२. ओसक सीधा पट्टा आ ओसारा पर लाल सूत : नाप, सीमा आ सहमति

३. टूटल दर्पणक पछिला भाग आ ओसारा पर लाल सूत : स्त्रीक नामपर चढ़ल मौन

४. घुरैत मोहर, टूटल दर्पणक पछिला भाग आ खसैत अक्षर : सुधारक तीन अभिलेखीय रूप

५. पाँचू कथाक प्रश्नोत्तर-संरचना : रहस्यक समाधान आ नैतिक अपूर्णता

कथा १३५–१३९क निर्णायक दृश्य-साक्ष्य

कथा १०१–१३९क अन्तरिम सम्पादकीय मूल्याङ्कन

कथा-त्रिधारा खण्ड-२ : कथा १४०–१४४क स्वतंत्र साहित्यिक समीक्षा

कथा १४० — अन्तिम लालटेनक कालिख

कथा १४१ — नाम-पट्टीक सात मिलीमीटर

कथा १४२ — दू हस्ताक्षरक बीचक खाली जगह

कथा १४३ — प्रतीक्षालयक कुर्सी नम्बर शून्य

कथा १४४ — छुट्टीक आवेदनक छुट्टी

अन्तरकथात्मक तुलनात्मक विवेचन : कथा १४०–१४४

१. समय, आकार, खाली स्थान, अंक आ श्रेणी : पाँच वस्तु, पाँच प्रशासनिक अर्थ

२. गलत कारण-सम्बन्धक परीक्षण : कालिखक कारणसँ शून्य कुर्सी धरि

३. लोकहितक परीक्षा : बाढ़ि, सहायता, किसानक पाइ, रोगी आ वेतन

४. स्वीकारक पाँच रूप : हस्ताक्षर, स्पष्टीकरण, नियम, जाँच आ प्रतिवेदन

५. आवृत्ति आ भिन्नता : संस्थागत व्यंग्यक सम्भावना आ सीमा

कथा १४०–१४४क निर्णायक दृश्य-साक्ष्य

कथा १०१–१४४क अन्तरिम सम्पादकीय मूल्याङ्कन

कथा-त्रिधारा खण्ड-२ : कथा १४५–१४९क स्वतंत्र साहित्यिक समीक्षा

कथा १४५ — खाली दराजक सूची

कथा १४६ — पीयर फीता वली नस्ती

कथा १४७ — पदनामक आधा अक्षर

कथा १४८ — प्रमाण-पत्रक जन्म-दिन

कथा १४९ — घंटीक अधिकार

अन्तरकथात्मक तुलनात्मक विवेचन : कथा १४५–१४९

१. अनुपस्थिति, रंग, अक्षर, तिथि आ ध्वनि : चिह्नक पाँच भिन्न व्यवहार

२. स्रोत-निष्ठता आ प्रमाणक पृथक्करण

३. लोकहितक अलग-अलग माप : जमीन, जीविका, सम्मान, मुआवजा आ समय

४. सुधारक विरोधाभास : बचाओल इतिहास आ फेर जन्म लैत भ्रम

५. संग्रहक आवृत्ति, विशिष्टता आ विचारात्मक विस्तार

कथा १४५–१४९क निर्णायक दृश्य-साक्ष्य

कथा १०१–१४९क अन्तरिम सम्पादकीय मूल्याङ्कन

कथा-त्रिधारा खण्ड-२ : कथा १५०–१५४क स्वतंत्र साहित्यिक समीक्षा

कथा १५० — चारि मोहरक पाँचम जगह

कथा १५१ — सेवा-झरोखा नम्बर नौ

कथा १५२ — फाटकक पासक टेबुल

कथा १५३ — लाल पेंसिलक पदोन्नति

कथा १५४ — छायाप्रतिमे हरायल गुलाबी कात

अन्तरकथात्मक तुलनात्मक विवेचन : कथा १५०–१५४

१. रिक्त खाँचा सँ हरायल कात धरि : सूचना-पत्रक अधिकार-विन्यास

२. प्रमाणक अनुशासन : प्राप्ति, स्वीकृति, स्थान, भुगतान आ समयसीमा

३. नागरिकक मूल्य : घर, करघा, मजदूरी, शिल्प-जीविका आ सरकारी देनाइ

४. उपयोगी अनौपचारिकता आ अनधिकृत अधिकारक सीमा

५. कथान्तक अवशेष आ संग्रहगत पुनरावृत्ति

कथा १५०–१५४क निर्णायक दृश्य-साक्ष्य

कथा १०१–१५४क अन्तरिम सम्पादकीय मूल्याङ्कन

कथा-त्रिधारा खण्ड-२ : कथा १५५–१५९क स्वतंत्र साहित्यिक समीक्षा

कथा १५५ — दिनांकक खाली खाँचा

कथा १५६ — पाँच मिनट देरक प्रमाण

कथा १५७ — नस्तीक कपड़ाक रंग

कथा १५८ — एक कार्यालय, दू नाम

कथा १५९ — सीढ़ीक दोसर पायदान

अन्तरकथात्मक तुलनात्मक विवेचन : कथा १५५–१५९

१. तिथि, घड़ी आ समयक असमान अनुभव

२. चिह्नक स्वतन्त्रता आ विषयक प्राथमिकता

३. लोकक श्रम, प्रतीक्षा आ सेवा-पहुँच

४. अधिकृत निर्णय आ अनौपचारिक अनुभवक संवाद

५. समापनक अवशेष आ कथन-शिल्पक सीमा

कथा १५५–१५९क निर्णायक पाठ-साक्ष्य

कथा १०१–१५९क अन्तरिम सम्पादकीय मूल्याङ्कन

कथा-त्रिधारा खण्ड-२ : कथा १६०–१६४क स्वतंत्र साहित्यिक समीक्षा

कथा १६० — अन्तिम पाँतिक अधिकारी

कथा १६१ — तीन ठाम उपस्थित

कथा १६२ — बन्द कोठरीक खुलल शाखा

कथा १६३ — उच्चारणक दोसर नाम

कथा १६४ — प्रपत्र जे अपन उत्तर पहिने माँगैत अछि

अन्तरकथात्मक तुलनात्मक विवेचन : कथा १६०–१६४

१. नाम, अंक आ संस्थागत व्यक्तित्व

२. एक मनुष्यक बहुस्थानिक सत्य आ अभिलेखित ठाम

३. वित्तीय निर्णयमे प्रमाणक सीमांकन

४. सुधारक उपायक सीमा

५. नागरिक, कर्मचारी आ ऐतिहासिक स्मृति

कथा १६०–१६४क निर्णायक पाठ-साक्ष्य

कथा १०१–१६४क अन्तरिम सम्पादकीय मूल्याङ्कन

कथा-त्रिधारा खण्ड-२ : कथा १६५–१६९क स्वतंत्र साहित्यिक समीक्षा

कथा १६५ — आधा दिनक कर्मचारी

कथा १६६ — मोहरबन्द कोठरीक काज

कथा १६७ — अनुवादित गाम

कथा १६८ — छुट्टीक दिनक उपस्थितिक आदेश

कथा १६९ — शिकायत जे पूछलासँ जन्मल

अन्तरकथात्मक तुलनात्मक विवेचन : कथा १६५–१६९

१. अवधि, अधिकार आ वर्गीकरणक अन्तर

२. मूल स्रोत, प्रति आ स्मृतिक प्रमाण

३. स्थानीय सुधार आ प्रणालीगत अपूर्णता

४. कार्यालयक गलतीक मानवीय मूल्य

५. अन्तिम दृश्यसभमे प्रतिरोधक सूक्ष्म रूप

कथा १६५–१६९क निर्णायक पाठ-साक्ष्य

कथा १०१–१६९क अन्तरिम सम्पादकीय मूल्याङ्कन

कथा-त्रिधारा खण्ड-२ : कथा १७०–१७४क स्वतंत्र साहित्यिक समीक्षा

कथा १७० — स्कैनरक कारी छाँह

कथा १७१ — बाहर पठाओल भीतरक पत्र

कथा १७२ — नियुक्तिक पहिल दिन

कथा १७३ — एके नामक दू वेतन

कथा १७४ — उपस्थितिक प्रमाण लेल अनुपस्थित

अन्तरकथात्मक तुलनात्मक विवेचन : कथा १७०–१७४

१. प्रतिरूप, मूल आ अर्थक अधिकार

२. कालक्रमक दू पटरी

३. प्रमाणक सीमाक विवेक

४. सुधारक वास्तविक उपलब्धि आ शेष काम

५. अन्तिम वस्तु आ कथानकक नैतिक स्मृति

कथा १७०–१७४क निर्णायक पाठ-साक्ष्य

कथा १०१–१७४क अन्तरिम सम्पादकीय मूल्याङ्कन

कथा-त्रिधारा खण्ड-२ : कथा १७५–१७९क स्वतंत्र साहित्यिक समीक्षा

कथा १७५ — सुधार-पाँजिक मूल पृष्ठ

कथा १७६ — प्रेषक-विहीन लिफाफा

कथा १७७ — छायाहस्ताक्षर

कथा १७८ — क्रमांक ०००

कथा १७९ — जीवितक गवाह

अन्तरकथात्मक तुलनात्मक विवेचन : कथा १७५–१७९

१. अभिलेख आ ओकर समय-विषय

२. प्रतिरूपक अधिकार आ निर्णयक साक्ष्य

३. नागरिकक प्रश्नमे प्रमाणक न्याय

४. समाधानक सीमा आ शेष उत्तरदायित्व

५. अन्तिम भौतिक चिह्नक अर्थ

कथा १७५–१७९क निर्णायक पाठ-साक्ष्य

कथा १०१–१७९क अन्तरिम सम्पादकीय मूल्याङ्कन

कथा-त्रिधारा खण्ड-२ : कथा १८०–१८४क स्वतंत्र साहित्यिक समीक्षा

कथा १८० — बन्द विभागक अन्तिम काज

कथा १८१ — दू टिकट

कथा १८२ — कंगनक डिब्बा

कथा १८३ — लाल स्वेटर

कथा १८४ — पोखरिक ओहि पार

अन्तरकथात्मक तुलनात्मक विवेचन : कथा १८०–१८४

१. समाप्त संस्था, बाँकी दायित्व आ खुला भूमि-चिह्न

२. दू गोपन त्याग : अवसरक हानि आ वस्तुक नव रूप

३. धातु, ऊन आ माटि : स्मृतिक भौतिक स्थान

४. प्रमाणक योग्यता आ पाठक प्रत्यक्ष सीमा

५. समापनक चारि भिन्न भंगिमा

कथा १८०–१८४क निर्णायक पाठ-साक्ष्य

कथा १०१–१८४क अन्तरिम सम्पादकीय मूल्याङ्कन

कथा-त्रिधारा खण्ड-२ : कथा १८५–१८९क स्वतंत्र साहित्यिक समीक्षा

कथा १८५ — तीनटा खाली कुर्सी

कथा १८६ — बान्ह पर साँझ

कथा १८७ — अन्तिम लोकल

कथा १८८ — आधा गिलास पानि

कथा १८९ — ओसाराक बल्ब

अन्तरकथात्मक तुलनात्मक विवेचन : कथा १८५–१८९

१. तीन खाली कुर्सी आ साझा चौकी : मान्यता तथा सहभागिता

२. सीमा-खूँटा आ विद्युत-तार : बाँट आ बचल सम्बन्ध

३. रात्रिक लोकल आ अस्पतालक प्रतीक्षा : घड़ीक अलग अर्थ

४. उपयोगक परिवर्तन : पाँजि, डोरी, झोरा, गिलास आ बल्ब

५. पाँच खुला अन्त आ प्रमाणक मर्यादा

कथा १८५–१८९क निर्णायक पाठ-साक्ष्य

कथा १०१–१८९क अन्तरिम सम्पादकीय मूल्याङ्कन

कथा-त्रिधारा खण्ड-२ : कथा १९०–१९४क स्वतंत्र साहित्यिक समीक्षा

कथा १९० — दू कट्ठा बालू

कथा १९१ — बन्द रेडियो

कथा १९२ — छत पर राखल जूता

कथा १९३ — एक कप चाय कम

कथा १९४ — बाँसक पुल

अन्तरकथात्मक तुलनात्मक विवेचन : कथा १९०–१९४

१. गँठिया रस्सी आ अस्थायी पुल : भूमि-रेखा तथा जीवन-रक्षा

२. रेडियोक टेढ़ पेंच आ जूताक दू कील : मरम्मतिक दू मूल्य

३. रेडियोक आवाज आ चायक कप : घरक नब समय

४. प्रस्थान आ देनाइ : घरसँ बाहरक श्रम

५. पाँच खुला अन्त : कटाव, धुन, प्रस्थान, पाँजि आ फाँक

कथा १९०–१९४क निर्णायक पाठ-साक्ष्य

कथा १०१–१९४क अन्तरिम सम्पादकीय मूल्याङ्कन

कथा-त्रिधारा खण्ड-२ : कथा १९५–१९९क स्वतंत्र साहित्यिक समीक्षा

कथा १९५ — अधकटल आम

कथा १९६ — माछक जाल

कथा १९७ — भोरक धुआँ

कथा १९८ — बिना घंटीक साइकल

कथा १९९ — पाँच मिनट देरी

अन्तरकथात्मक तुलनात्मक विवेचन : कथा १९५–१९९

१. बचल खुला ठाम : जाफरी आ नब खूँटा

२. अधकटल आम आ राखिक नीचाँक आगि : अपूर्णताक अर्थ

३. मरम्मति बनाम नब रूप : जाल आ साइकल

४. स्त्रीक क्रिया : मालती, साइकल-चालिका आ सोनमा

५. वस्तु आ सीमा : साझा गाछसँ पाँजि धरि

कथा १९५–१९९क निर्णायक पाठ-साक्ष्य

कथा १०१–१९९क अन्तरिम सम्पादकीय मूल्याङ्कन

कथा-त्रिधारा खण्ड-२ : कथा २००क स्वतंत्र साहित्यिक समीक्षा

कथा २०० — उजड़ल मेड़

कथा-त्रिधारा खण्ड-२ : दस चयनित श्रेष्ठ कथाक तुलनात्मक आलोचना

कथा १०१–२००क समापन सम्पादकीय विवेचन

सम्पूर्ण कथा-अनुक्रम

खण्ड ८ — कथा-त्रिधारा — खण्ड ३ : कथा २०१–३००

मूल समीक्षा-पाण्डुलिपिसँ सूचीकृत शीर्षक : 284

कथा-त्रिधारा खण्ड-३ : कथा २०१–२०४क स्वतंत्र समीक्षा

कथा २०१ — विद्यालयक जूता

कथा २०२ — धानक बोरा

कथा २०३ — पंचायतक नल

कथा २०४ — गोरूक दाम

कथा-त्रिधारा खण्ड-३ : कथा २०५–२०९क स्वतंत्र साहित्यिक समीक्षा

कथा २०५ — मजदूरी

कथा २०६ — आधारक औंठा

कथा २०७ — मकईक खेत

कथा २०८ — बाढ़िक ऋण

कथा २०९ — छोट मास्टर

कथा २०५–२०९ : अन्तरकथात्मक तुलनात्मक विवेचन

१. अंकक शक्ति आ ओकर सीमा : चन्दा, लक्ष्मण आ गौरी

२. देह, श्रम आ औपचारिक मान्यता

३. स्त्री आ बाल-पात्रक निर्णय : जसोदा, चन्दा, बसन्ती, फुलमन्ती, पानो, सरजू आ गौरी

४. अधूरा समाधानक नैतिक विश्वसनीयता

५. तीन घड़ी : उत्पादन, संस्था आ शिक्षाक समय

कथा २०५–२०९ : निर्णायक मूल पाठ-साक्ष्य

कथा-त्रिधारा खण्ड-३ : कथा २०१–२०९क अन्तरिम सम्पादकीय मूल्याङ्कन

कथा-त्रिधारा खण्ड-३ : कथा २१०–२१४क स्वतंत्र साहित्यिक समीक्षा

कथा २१० — चूल्हिक धुँआ

कथा २११ — एक कट्ठा पोखरि

कथा २१२ — बीजक थैली

कथा २१३ — दू बकरी

कथा २१४ — श्रम कार्ड

कथा २१०–२१४ : अन्तरकथात्मक तुलनात्मक विवेचन

१. घरक वस्तु आ नियन्त्रणक ठाम

२. स्त्रीक व्यावहारिक निर्णय आ परिवारक समय

३. परीक्षण, अनुभव आ प्रमाणक सीमा

४. अधूरा समाधानक सामाजिक औचित्य

५. जोखिमक समय : मौसम, बीमारी आ प्रवास

कथा २१०–२१४ : निर्णायक मूल पाठ-साक्ष्य

कथा-त्रिधारा खण्ड-३ : कथा २०१–२१४क अन्तरिम सम्पादकीय मूल्याङ्कन

कथा-त्रिधारा खण्ड-३ : कथा २१५–२१९क स्वतंत्र साहित्यिक समीक्षा

कथा २१५ — माटिक घर

कथा २१६ — कर्जक कागज

कथा २१७ — सामुदायिक धान

कथा २१८ — पहिल फसल

कथा २१९ — मधुबनीक बन्द कोठली

कथा २१५–२१९ : अन्तरकथात्मक तुलनात्मक विवेचन

१. अटकैत सम्पदा आ क्रियाशील साधन

२. घरक भीतरक ज्ञान : फुलकुमारी, रेवती, विमला आ चन्द्रकला

३. प्रमाणक अन्तर : कागज, अंक आ चिह्न

४. सामूहिक सम्बन्धक समय

५. खुलेल केवाड़ी आ खुलल प्रश्न

कथा २१५–२१९ : निर्णायक मूल पाठ-साक्ष्य

कथा-त्रिधारा खण्ड-३ : कथा २०१–२१९क अन्तरिम सम्पादकीय मूल्याङ्कन

कथा-त्रिधारा खण्ड-३ : कथा २२०–२२४क स्वतंत्र साहित्यिक समीक्षा

कथा २२० — घंटीक आवाज

कथा २२१ — पोखरिक आँखि

कथा २२२ — दीवार भीतर

कथा २२३ — कालिख

कथा २२४ — लालटेन

कथा २२०–२२४ : अन्तरकथात्मक तुलनात्मक विवेचन

१. ध्वनिक घटना आ नैतिक अपराध

२. आँखि, चिरै आ कालिख : अनुभूतिक मर्यादा

३. दोष-स्वीकार आ प्रतिकारक अपूर्णता

४. प्रथम पुरुष भय आ परोक्ष कथात्मक दूरी

५. भौतिक मरम्मति बनाम ऐतिहासिक-स्मृतिक मरम्मति

कथा २२०–२२४ : निर्णायक मूल पाठ-साक्ष्य

कथा-त्रिधारा खण्ड-३ : कथा २०१–२२४क अन्तरिम सम्पादकीय मूल्याङ्कन

कथा-त्रिधारा खण्ड-३ : कथा २२५–२२९क स्वतंत्र साहित्यिक समीक्षा

कथा २२५ — सात सीढ़ी

कथा २२६ — बन्द घड़ीघर

कथा २२७ — सफेद पाँख

कथा २२८ — अन्तिम चित्र

कथा २२९ — तरहड़िक पानि

कथा २२५–२२९ : अन्तरकथात्मक तुलनात्मक विवेचन

१. ध्वनिक प्रत्यक्ष आ नैतिक इतिहास

२. गणना, आठम ध्वनि आ गुम पाँख

३. उपकरण आ दृष्टिक बनाओल रूप

४. स्वीकारोक्ति आ अपूर्ण न्याय

५. अन्तिम प्रतिक्रिया : समाधानक अलग स्तर

कथा २२५–२२९ : निर्णायक मूल पाठ-साक्ष्य

कथा-त्रिधारा खण्ड-३ : कथा २०१–२२९क अन्तरिम सम्पादकीय मूल्याङ्कन

कथा-त्रिधारा खण्ड-३ : कथा २३०–२३४क स्वतंत्र साहित्यिक समीक्षा

कथा २३० — रातिक पाँति

कथा २३१ — साँकल

कथा २३२ — धड़कन

कथा २३३ — काला दर्पण

कथा २३४ — छत पर पएर

कथा २३०–२३४ : अन्तरकथात्मक तुलनात्मक विवेचन

१. अभिलेख आ आत्मदोषक अलग प्रकृति

२. ध्वनिक पहुँच आ स्रोतक अनुमान

३. आँखिक जाँच आ दरवाजाक जाँच

४. आधा सुधार आ शेष रहि गेल संशय

५. काज पर घुरब अन्तिम क्रिया

कथा २३०–२३४ : निर्णायक मूल पाठ-साक्ष्य

कथा-त्रिधारा खण्ड-३ : कथा २०१–२३४क अन्तरिम सम्पादकीय मूल्याङ्कन

कथा-त्रिधारा खण्ड-३ : कथा २३५–२३९क स्वतंत्र साहित्यिक समीक्षा

कथा २३५ — चिट्ठीक गन्ध

कथा २३६ — नीलकंठ

कथा २३७ — दोसरा कोठली

कथा २३८ — माटिक भीतर

कथा २३९ — मुद्रांक

कथा २३५–२३९ : अन्तरकथात्मक तुलनात्मक विवेचन

१. इन्द्रिय-अनुभव आ प्रमाणक प्रकार

२. परम्परा आ समयक आर्थिक मूल्य

३. मरम्मति, जाँच आ शेष रहस्य

४. नैतिक चूक आ प्रबन्धकीय विफलता

५. अन्तिम क्रिया : सामान्य काजक पुनर्प्रवेश

कथा २३५–२३९ : निर्णायक मूल पाठ-साक्ष्य

कथा-त्रिधारा खण्ड-३ : कथा २०१–२३९क अन्तरिम सम्पादकीय मूल्याङ्कन

कथा-त्रिधारा खण्ड-३ : कथा २४०–२४४क स्वतंत्र साहित्यिक समीक्षा

कथा २४० — नस्तीक आत्मकथा

कथा २४१ — कुर्सी नम्बर सत्रह

कथा २४२ — नामक वर्तनी

कथा २४३ — महान निरीक्षण

कथा २४४ — पंखाक प्रस्ताव

कथा २४०–२४४ : अन्तरकथात्मक तुलनात्मक विवेचन

१. वस्तु-स्थान आ अधिकार-स्थान

२. समयक विरोधी गति

३. अनौपचारिक श्रम आ सार्वजनिक उपयोग

४. कार्यालयक व्यक्तित्व-रचना

५. प्रमाणक दायरा आ अनिर्णीत परिणाम

कथा २४०–२४४ : निर्णायक मूल पाठ-साक्ष्य

कथा-त्रिधारा खण्ड-३ : कथा २०१–२४४क अन्तरिम सम्पादकीय मूल्याङ्कन

कथा-त्रिधारा खण्ड-३ : कथा २४५–२४९क स्वतंत्र साहित्यिक समीक्षा

कथा २४५ — दफ्तरक देवता

कथा २४६ — हस्ताक्षर

कथा २४७ — विशेष टोपी

कथा २४८ — चाय समिति

कथा २४९ — बिलायल घंटी

कथा २४५–२४९ : अन्तरकथात्मक तुलनात्मक विवेचन

१. वस्तु अदृश्य होइत अछि, अधिकार अदृश्य रहैत अछि

२. प्रतीकक बाजारी प्रसार

३. प्रमाणक अलग अवस्था

४. नागरिक आ श्रमिकक समय

५. अन्तिम क्रियाक नैतिक दिशा

कथा २४५–२४९ : निर्णायक मूल पाठ-साक्ष्य

कथा-त्रिधारा खण्ड-३ : कथा २०१–२४९क अन्तरिम सम्पादकीय मूल्याङ्कन

कथा-त्रिधारा खण्ड-३ : कथा २५०–२५४क स्वतंत्र साहित्यिक समीक्षा

कथा २५० — प्रमाणित प्रतिलिपि

कथा २५१ — मेजक ऊँचाई

कथा २५२ — लाल फीता

कथा २५३ — बिसरल आदेश

कथा २५४ — सरकारी छाता

कथा २५०–२५४ : अन्तरकथात्मक तुलनात्मक विवेचन

१. प्रत्यक्ष वस्तु आ मान्य कागज

२. शारीरिक श्रम आ कार्यालयी सुविधा

३. अंकक वैधता आ अर्थ

४. निर्णय-क्षणमे व्यावहारिक ज्ञान

५. समापनक असमान उपलब्धि

कथा २५०–२५४ : निर्णायक मूल पाठ-साक्ष्य

कथा-त्रिधारा खण्ड-३ : कथा २०१–२५४क अन्तरिम सम्पादकीय मूल्याङ्कन

कथा-त्रिधारा खण्ड-३ : कथा २५५–२५९क स्वतंत्र साहित्यिक समीक्षा

कथा २५५ — उपस्थिति

कथा २५६ — छायाचित्रयुक्त पहचान

कथा २५७ — स्वागत द्वार

कथा २५८ — वार्षिक प्रतिवेदन

कथा २५९ — अनुमति

कथा २५५–२५९ : अन्तरकथात्मक तुलनात्मक विवेचन

१. उपस्थिति, पहिचान आ निवासक प्रमाण

२. संख्याक नैतिकता

३. तल्ला-स्तरक कार्यकर्ता

४. समयक पाँच रूप

५. सुधारक भिन्न परिणाम

कथा २५५–२५९ : निर्णायक मूल पाठ-साक्ष्य

कथा-त्रिधारा खण्ड-३ : कथा २०१–२५९क अन्तरिम सम्पादकीय मूल्याङ्कन

कथा-त्रिधारा खण्ड-३ : कथा २६०–२६४क स्वतंत्र साहित्यिक समीक्षा

कथा २६० — प्रतीक्षा कक्ष

कथा २६१ — नम्बर

कथा २६२ — खुलल मुकदमा

कथा २६३ — सीमा

कथा २६४ — सत्यापन

कथा २६०–२६४ : अन्तरकथात्मक तुलनात्मक विवेचन

१. संस्थागत क्रम आ वास्तविक सेवा

२. नाम, नम्बर आ व्यक्ति

३. कथानकक भिन्न अन्त

४. अधीनस्थक ज्ञान आ सीमित अधिकार

५. स्थान, प्रवाह आ समय

कथा २६०–२६४ : निर्णायक मूल पाठ-साक्ष्य

कथा-त्रिधारा खण्ड-३ : कथा २०१–२६४क अन्तरिम सम्पादकीय मूल्याङ्कन

कथा-त्रिधारा खण्ड-३ : कथा २६५–२६९क स्वतंत्र साहित्यिक समीक्षा

कथा २६५ — बन्द लिफ्ट

कथा २६६ — खाली मुहर

कथा २६७ — रातिक आदेश

कथा २६८ — अदृश्य कर

कथा २६९ — बेठीक जन्मतिथि

कथा २६५–२६९ : अन्तरकथात्मक तुलनात्मक विवेचन

१. चिह्नक अधिकार आ अर्थक भिन्नता

२. अधीनस्थक विवेक आ संस्था-सीमा

३. संख्या आ प्रमेयक सीमा

४. नब आदेश आ स्थगित परिणाम

५. श्रमक अदृश्य व्यय

कथा २६५–२६९ : निर्णायक मूल पाठ-साक्ष्य

कथा-त्रिधारा खण्ड-३ : कथा २०१–२६९क अन्तरिम सम्पादकीय मूल्याङ्कन

कथा-त्रिधारा खण्ड-३ : कथा २७०–२७४क स्वतंत्र साहित्यिक समीक्षा

कथा २७० — एक केवाड़ी कम

कथा २७१ — घुरती

कथा २७२ — अनुवाद

कथा २७३ — खाली कुर्सीक आदेश

कथा २७४ — प्रवेश-पर्ची

कथा २७०–२७४ : अन्तरकथात्मक तुलनात्मक विवेचन

१. कागजक वर्गीकरण आ वास्तविक ठाम

२. प्रत्यक्ष ज्ञान आ प्रमाणक सीमा

३. स्त्री आ श्रमिकक देहगत लागत

४. सुधारक अलग-अलग स्तर

५. वस्तु-प्रतीकक पुनरागमन

कथा २७०–२७४ : निर्णायक मूल पाठ-साक्ष्य

कथा-त्रिधारा खण्ड-३ : कथा २०१–२७४क अन्तरिम सम्पादकीय मूल्याङ्कन

कथा-त्रिधारा खण्ड-३ : कथा २७५–२७९क स्वतंत्र साहित्यिक समीक्षा

कथा २७५ — बन्द खाता

कथा २७६ — अन्तिम मंजूरी

कथा २७७ — निषिद्ध प्रश्न

कथा २७८ — केवाड़ीक पहरा

कथा २७९ — लहेरियासरायक साँझ

कथा २७५–२७९ : अन्तरकथात्मक तुलनात्मक विवेचन

१. रोकल धन, रोकल श्रम आ रोकल प्रश्न

२. प्रमाणक विषय आ वर्गीकरण

३. स्त्रीक श्रम आ अर्थ

४. पूर्ण आ आंशिक समाधानक भेद

५. अन्तिम वस्तुक ध्वनि

कथा २७५–२७९ : निर्णायक मूल पाठ-साक्ष्य

कथा-त्रिधारा खण्ड-३ : कथा २०१–२७९क अन्तरिम सम्पादकीय मूल्याङ्कन

कथा-त्रिधारा खण्ड-३ : कथा २८०–२८४क स्वतंत्र साहित्यिक समीक्षा

कथा २८० — पुल पर रोशनी

कथा २८१ — बन्द पुस्तकालय

कथा २८२ — मेला समाप्त

कथा २८३ — सिनेमा सँ बाहर

कथा २८४ — ओसाराक बल्ब

कथा २८०–२८४ : अन्तरकथात्मक तुलनात्मक विवेचन

१. कल्पनाक स्वामित्व आ वास्तविक मनुष्य

२. समय-सारिणी आ जीवनक अधिकार

३. प्रदर्शनक पाछाँ श्रम

४. खुला अन्तक पाँच रूप

५. प्रमाणक सीमा आ पाठकीय अनुशासन

कथा २८०–२८४ : निर्णायक मूल पाठ-साक्ष्य

कथा-त्रिधारा खण्ड-३ : कथा २०१–२८४क अन्तरिम सम्पादकीय मूल्याङ्कन

कथा-त्रिधारा खण्ड-३ : कथा २८५–२८९क स्वतंत्र साहित्यिक समीक्षा

कथा २८५ — चाह दोकानक शीशा

कथा २८६ — रेलवे घोषणा

कथा २८७ — धूपक पट्टी

कथा २८८ — संगीतक टुकड़ा

कथा २८९ — बन्द दोकान

कथा २८५–२८९ : अन्तरकथात्मक तुलनात्मक विवेचन

१. प्रतिबिम्ब आ स्मृतिक दृष्टि

२. आत्मवृत्तान्तक एक वाक्य

३. श्रमक अदृश्य काल

४. संवेदनात्मक उपकरण

५. निष्कर्षक अनुशासन

कथा २८५–२८९ : निर्णायक मूल पाठ-साक्ष्य

कथा-त्रिधारा खण्ड-३ : कथा २०१–२८९क अन्तरिम सम्पादकीय मूल्याङ्कन

कथा-त्रिधारा खण्ड-३ : कथा २९०–२९४क स्वतंत्र साहित्यिक समीक्षा

कथा २९० — छज्जा

कथा २९१ — साइकिल

कथा २९२ — पानिक गिलास

कथा २९३ — जुलूस

कथा २९४ — छोट अएना

कथा २९०–२९४ : अन्तरकथात्मक तुलनात्मक विवेचन

१. ज्ञानक स्रोत आ प्रमाणक मर्यादा

२. श्रमक अदृश्य पाँति

३. दृश्य-वस्तु आ निर्णय

४. परिणामक सुनिश्चितता आ खुला अन्त

५. विदेह समानान्तर ऐतिहासिक परिदृश्य

कथा २९०–२९४ : निर्णायक मूल पाठ-साक्ष्य

कथा-त्रिधारा खण्ड-३ : कथा २०१–२९४क अन्तरिम सम्पादकीय मूल्याङ्कन

कथा-त्रिधारा खण्ड-३ : कथा २९५–२९९क स्वतंत्र साहित्यिक समीक्षा

कथा २९५ — छत पर कबूतर

कथा २९६ — घड़ीक काँटा

कथा २९७ — अन्तिम पन्ना

कथा २९८ — सबेरे पहिल बस

कथा २९९ — अनन्त पञ्जी

कथा २९५–२९९ : अन्तरकथात्मक तुलनात्मक विवेचन

१. स्वाधीनता आ सहकारिताक माप

२. हिसाबक अधूर खाँचा

३. पीढ़ीक उत्तराधिकार

४. स्वरूप आ संकेत

५. परिणामक सटीक सीमा

कथा २९५–२९९ : निर्णायक मूल पाठ-साक्ष्य

कथा-त्रिधारा खण्ड-३ : कथा २०१–२९९क अन्तरिम सम्पादकीय मूल्याङ्कन

कथा-त्रिधारा खण्ड-३ : कथा ३००क स्वतंत्र साहित्यिक समीक्षा

कथा ३०० — मिथिलाक पुस्तकालय

कथा ३०० : अन्तरकथात्मक तुलनात्मक विवेचन

१. पञ्जीक भविष्य आ पुस्तकालयक सम्भावना

२. साहित्यिक अन्त आ निर्णायक आरम्भ

३. लेखा-पाँजि आ अपूर्ण सूचना

४. गामक श्रमक इतिहास

५. निर्णायक अन्तक नैतिक संयम

कथा ३०० : निर्णायक मूल पाठ-साक्ष्य

कथा-त्रिधारा खण्ड-३ : कथा २०१–३००क अन्तरिम सम्पादकीय मूल्याङ्कन

कथा-त्रिधारा खण्ड-३ : कथा २०१–३०० मे सँ दस चयनित श्रेष्ठ कथाक गहन आलोचना

दस चयनित कथाक अनुक्रम (मूल कथा-संख्या अनुसार)

सम्पूर्ण कथा-अनुक्रम

खण्ड १ — नव पाँखि : बीस किशोर कथा आ श्रेष्ठ दू कथाक विस्तृत समीक्षा

कथा १–२० : स्वतंत्र आलोचना आ अन्तरकथात्मक तुलना

मूल पाण्डुलिपिसँ सूचीकृत कथा, तुलनात्मक अध्ययन आ श्रेष्ठ दू कथाक समीक्षा : 29

कथा १ — काल-स्थान विस्थापन

कथा २ — बैसाखीपर जिनगी

कथा ३ — हम नै जाएब विदेश

कथा ४ — प्रवास

कथा ५ — हराहरी

अन्तरकथात्मक तुलनात्मक विवेचन

कथा ६ — पोखरिक तरे भोरुक तारा

कथा ७ — गामक पुरान पुस्तकालय

कथा ८ — खस्सी घंटीक रहस्य

कथा ९ — बाढ़िमे बचल पोथी

कथा १० — नेनाक विज्ञान-मेला

अन्तरकथात्मक तुलनात्मक विवेचन : कथा ६–१०

कथा ११ — आमक गाछक निर्णय

कथा १२ — मोबाइल बिनु एक दिन

कथा १३ — चिरैयाँ गिननिहार बालक

कथा १४ — माटिक रोबोट

कथा १५ — जंगलक बाट, घरक गप

अन्तरकथात्मक तुलनात्मक विवेचन : कथा ११–१५

कथा १६ — गाछ पर बनल पाठशाला

कथा १७ — सूरुजघड़ी बनौने बालिका

कथा १८ — नदी बचाबयवला मित्र-मण्डली

कथा १९ — चाँदनी रातिक मानचित्र

कथा २० — हँसमुख पहरुआ आ हरायल कुंजी

चयनक कसौटी आ औचित्य

कथा २ — बैसाखीपर जिनगी : गहन आलोचना

कथा ९ — बाढ़िमे बचल पोथी : गहन आलोचना

दू श्रेष्ठ कथाक तुलनात्मक परीक्षण

चयनक पाठ-साक्ष्य आ आलोचनात्मक सीमा

समग्र सम्पादकीय निर्णय

खण्ड १० — सहस्रबाढ़नि : उपन्यास-समीक्षा

मूल समीक्षा-पाण्डुलिपिसँ सूचीकृत शीर्षक : 234

पहिल अध्ययन : आरम्भिक पारिवारिक वृत्तान्त आ पाठ-पद्धति

१. पहिल स्वर : बालककेँ बुझबाक पारिवारिक स्मृति

२. स्मरण, अनुमान आ ज्ञानक सीमा

३. सन् १८८५ : परिवारक समय आ सार्वजनिक समय

४. पिता-पुत्र, घर आ सामाजिक सम्मानक व्याकरण

५. तिरहुता पत्र : लिपि, सम्बन्ध आ स्थानक इतिहास

६. बलान-कमला : नदीक बदलैत रूप आ स्मृतिक भूगोल

७. भारतीय काव्यदृष्टि : हास्यसँ करुणात्मक विस्थापन

८. पाश्चात्य कथाशास्त्र आ नव्य न्यायक संयुक्त परीक्षण

९. रचनात्मक उपलब्धि, सम्भावित सीमा आ अगिला अध्ययन

दोसर अध्ययन

१. पूर्ववर्ती अध्ययनसँ अगिला कथात्मक सीमारेखा

२. एकौर : शास्त्रार्थक सभा आ औपनिवेशिक इतिहासक मौखिक रूप

३. भोजनक हिसाब, विवाहक प्रस्ताव आ सामाजिक निर्णयक गति

४. बरियाती : महफा, दरबज्जा, घोघट आ स्त्री-अन्तःपुरक गतिविधि

५. कटिहार : शिक्षा, रोजगार आ लगान-वसूलीक नैतिक प्रश्न

६. मायक अपूर्ण मनोरथ आ झिंगुर बाबूक अन्तर्मन

७. बुचिया : सेवा सँ विवाह धरि, पारिवारिक दायित्वक उत्तराधिकार

८. विवाहक हाथ-छाप, द्विरागमन आ नदीक पार

९. १९३४ केर भूकम्प : घर, डीह आ पुनर्वासक निर्णय

१०. विवाह, मृत्युक समाचार आ ‘परिवार अक्षुण्ण’क आन्तरिक तनाव

११. नन्द : विज्ञानक चयन आ अदृश्यक प्रति आकर्षण

१२. कलितक आकस्मिक मृत्यु : लौटा, माटि आ प्रत्यक्षक आघात

१३. कथाकाल आ दृष्टिबिन्दु : एकौरसँ मृत्युदृश्य धरि

१४. रस-ध्वनि, वस्तु-विधान आ कथात्मक औचित्य

१५. नव्य न्याय : कथात्मक प्रमाण, अनुमान आ अनिर्णीत प्रश्न

१६. समानान्तर ऐतिहासिक पद्धति : सम्बन्ध, संस्था आ आपदा

१७. उपलब्धि, सीमा आ तेसर अध्ययनक प्रवेशबिन्दु

तेसर अध्ययन

१. कथाक केन्द्रक परिवर्तन : कलितसँ नन्द धरि

२. ‘वृत्त’ आ ‘अदृश्य केन्द्र’ : कालक रूपक

३. भगवत्ती घरक सोझाँ : बिज्जी, गहुमन आ रक्षाक स्मृति

४. बँटवाराक गणित : समान दू भाग आ असमान न्याय

५. रटनाइ सँ बुझाइ : नन्दक गणित-शिक्षाक विरोधाभास

६. धोती-कुर्त्तासँ कार्यशालाक वस्त्र धरि : आधुनिकताक व्यवहार

७. विवाहक आर्थिक शर्त : पढ़ाइक खर्च आ सम्बन्धक लेखा

८. देशक समाचार आ व्यक्ति : १९४७, १९६२, १९६५

९. अभियन्ताक कर्मक्षेत्र : आजीविका, श्रम आ प्रशंसा

१०. कनियाँक सम्बोधन : घरेलू भाषा बदलबाक छोट घटना

११. घरक नक्शा : ग्राम-स्वप्न आ अधूर निर्माण

१२. दमाक प्रसङ्ग : रोगक अनुभूति आ लोकचिकित्साक दावा

१३. नवीनक स्वप्न : अभियान्त्रिकी आ अदृश्यक द्वन्द्व

१४. फोटो पर लिखल नाम : शोकक भौतिक अभिलेख

१५. बा आ नातिन : स्मृतिक अन्तर्विरोध आ घरेलू न्याय

१६. कैंसर आ मृत्यु : रोग, उपचार आ आचरणक कठिन प्रश्न

१७. श्राद्धक आम आ गाएक दाग : अनुष्ठानक भीतर प्रतिरोध

१८. बुचियाक कथा : श्रुति, स्मृति आ नेनाक अधिकार

१९. खेतक अधूर बोरिंग आ सरकारी सिंचाइ : योजनाक दो रूप

२०. कमला-बलानक छहर : पानिक नियंत्रण आ बालुक प्रतिरोध

२१. भोरहा, सूगरक सीरा आ अखराहाक स्मरण

२२. जमीन्दारीक बाद रोजगार : नातेदारी आ अपूर्ण आग्रह

२३. गामक अभ्यास : आम, कमलाक रेत आ नेनाक खेल

२४. १९७५क बाढ़ि : अगिला जीवनरेखाक द्वार

२५. रस, ध्वनि आ कथा-विन्यासक संयुक्त परीक्षण

२६. प्रमाण-विवेक आ विदेह समानान्तर इतिहासक पद्धति

२७. आलोचनात्मक निष्कर्ष आ आरुणिक कथा दिस प्रवेश

चारिम अध्ययन

१. नन्दक पुत्र आरुणि : नव कथाक प्रवेश

२. जन्मक सूचना आ ‘सत्य’क आरम्भिक अस्थिरता

३. अनुपस्थित ‘बा’क उपस्थित स्मृति

४. दुःस्वप्न : छत, इनार आ खसबाक अनिवार्यता

५. ‘सहस्रबाढ़नि’ : पिता-पुत्रक भयक अलग रूप

६. गणनाक नियम : एक सँ सय धरि बालकक प्रयोग

७. स्मृतिक आरम्भ कखन : अखबार, फोटो आ विसरल समय

८. डायरी खुलिते कथनक व्यक्ति बदलैत अछि

९. हाजीपुर गंगा-पुल कॉलोनी : श्रम आ घरक विभाजन

१०. ‘सावधान बच्चे’ : शब्दक अर्थ आ बालकक जिज्ञासा

११. स्कूल बनबाक कथा : सामुदायिक संस्था आ असमान परीक्षा

१२. दुर्घटनाग्रस्त संगीक डायरी : कथाक भीतर दोसर कथाकार

१३. मजदूरक टोल आ बाल्य करुणा : चारि आयामक प्रश्न

१४. ठीकेदारक सूटकेस : अभियन्ता-पिताक क्रोधक दू चेहरा

१५. रजनी दीदीक मृत्यु : इलाजसँ मृत्यु जँ नहि रुकए

१६. पहिल स्थानक आग्रह, क्रीड़ा आ गामक विद्यालय

१७. गामक मारि आ सम्बन्धक बल : लोकव्यवहारक आलोचना

१८. ‘दानवीर दधीची’क असफल मंचन : बाल्य रचनाशीलता

१९. कबकबाउछक प्रसङ्ग : आरोप, दण्ड आ निर्णयक असावधानी

२०. पटना जिला स्कूल : ‘देहाती’ सम्बोधन आ सामाजिक पहिचान

२१. अधूर डायरी आ फाड़ल पृष्ठ : स्वयं लिखल इतिहासक सीमा

२२. प्रमाणक सीमा, शिल्पक उपलब्धि आ अगिला प्रवेश

पाँचम अध्ययन : नन्दक प्रशासनिक संघर्ष, पटनामे पुनर्स्थापना आ गंगा-पुलक विवाद

१. अध्याय-प्रवेश : विराम आ प्रतिरोधक निरन्तरता

२. वेतन रोकब आ प्रशासनिक शक्ति

३. अग्रजक हस्तक्षेप : संरक्षण आ समर्पणक उलझन

४. क्षेत्रीय काजसँ योजना-चित्र धरि : पेशागत पहिचान

५. पटनामे घर : पुनर्स्थापनाक व्यावहारिक भूगोल

६. दू स्टीमर : समय, सुरक्षा आ स्रोतक मर्यादा

७. पड़ोसक संग संवाद : बदलैत पारिवारिक नीति

८. गृहकाज, पढ़ाइ आ श्रम-वितरण

९. दुनू पुत्रक स्वभाव : क्षमायाचना आ न्याय-बोध

१०. चिड़ियाखानाक तीन नाम : ज्ञानक इतिहास

११. उद्घाटनक घोषणासँ अभियान्त्रिक विश्वसनीयता धरि

१२. पायाक दरारि : निर्माणस्थलक नैतिक तनाव

१३. श्रमिकक सुरक्षा आ दृश्य-स्मृतिक हिंसा

१४. सहकर्मीक बीच अप्रियता, अधीनस्थक बीच सम्मान

१५. रेडियो, बैटरी आ घरक समय-विभाजन

१६. परीक्षाक परिणाम आ गलत कारण-निर्धारण

१७. सार्वजनिक सङ्कटसँ निजी एकाकीपन धरि

१८. शोभाबाबूक आगमन : पचीस बरखक स्मृति

१९. जमीन्दारीक अवसान आ चाह-पानक दोकान

२०. हास्यक भीतर मृत्यु-शोकक पुनरागमन

२१. अपूर्ण संघर्ष आ आत्म-दोषारोपण

२२. अग्रजक प्रत्युत्तर : उत्तरदायित्वक दोसर नैतिकता

२३. भयक पुनरावृत्ति : उद्घाटित पुलसँ बचबाक आग्रह

२४. विदेह समानान्तर ऐतिहासिक दृष्टि : तीनू ठाम एकहि कालमे

२५. चार आलोचनात्मक पद्धतिक संयुक्त निर्णय

२६. अध्यायक कलात्मक उपलब्धि आ आलोचनात्मक सीमा

छठम अध्ययन : नन्दक विश्वास-भङ्ग, तान्त्रिक छल आ पारिवारिक पुनराश्रय

०१. नन्दक पराजित आशा आ विश्वासक नव आश्रय

०२. तान्त्रिकक दावा : एकहि व्यक्तिक हाथमे सभ समाधान

०३. आसिन, बरखा आ लगातार सरकैत समय-सीमा

०४. गुप्त पूजा आ धनक स्थानान्तरण

०५. गुरु–शिष्यक रूपक आ अनुशासित समर्पण

०६. पलंगक नीचाँ भगवती : विश्वासक नाटकीय लघुदृश्य

०७. विवाहक प्रस्ताव आ शोषणक नब सीमा

०८. अन्ततः स्वीकारोक्ति : प्रमाणक निर्णायक क्षण

०९. गामक बाटपर मौन : सम्बन्धक टूटल व्याकरण

१०. निरुद्देश्य दिनचर्या : पएरे कार्यालय आ बन्द पड़ल पढ़ाइ

११. काली-भक्त पीसा : छलिया तान्त्रिकसँ भिन्न परम्परा

१२. पड़ोसीक प्रति शंका आ बच्चासभक परीक्षा-यात्रा

१३. साक्षात्कारक क्षेत्रीयता : उपलब्धि आ असमान अवसर

१४. पुत्रसभक नोकरी आ मध्यमवर्गीय उपलब्धिक सीमा

१५. घरक टेलिविजन : निजी परिवेशक सार्वजनिक समयसँ मिलन

१६. तीन सय टाकाक यन्त्र आ पारिवारिक संवाद

१७. नियमित पर्व-यात्रामे विराम आ अनिश्चित अन्तिम बिन्दु

सातम अध्ययन : नन्दक निधन, आरुणिक शोक आ गंगा-पुलक स्मृति

०१. दैनिक गपसँ मृत्यु-संवादक आकस्मिक मोड़

०२. आरुणिक घबराहटि : कथनक अनिर्णय

०३. चाहक प्रतीक्षा आ अन्तिम निस्तब्धता

०४. संगीसभक व्यावहारिक भूमिका : शोकक सामाजिक व्यवस्था

०५. बाँसघाट कि गाम : अन्तिम यात्राक निर्णय

०६. हनुमान : शोकमे मित्रक मूक दक्षता

०७. बन्द घर, शुक्लपक्षक राति आ नगरसँ बिदाइ

०८. पुलपर ठाढ़ गाड़ी : सार्वजनिक स्मृति आ निजी शोक

०९. तीस नाम आ अनेक अनलिखल मृत्यु : स्रोतक सीमा

१०. नन्दक डायरी : श्रमक न्याय आ आत्मदोष

११. गोदाम आ ट्रक : बचपनक खेल आ वयस्क पाठ

१२. आरुणि नामक अर्थ : उत्तराधिकारक प्रश्न

१३. मायक प्रतिरोध : पुलक स्मृति घरक भीतर वर्जित

१४. सहस्रबाढ़नि–छाड़नि : प्रकाशक गिरबाक दृश्यरूपक

१५. गामक साझा शोक : सार्वजनिक देह आ निजी सम्बन्ध

१६. कलम-गाछी आ अग्निदान : विधि, देह आ अनिर्वर्तनीयता

१७. श्राद्ध-विधान आ कथकक अन्तर्विरोध

१८. एक जीवनक समापन, दोसर कथात्मक प्रश्नक आरम्भ

आठम अध्ययन : आरुणिक आत्मपरीक्षा, आजमक गवाही आ पुलपर पुनर्भेट

०१. कलकत्ताक अस्वस्थ एकान्त : स्मृतिक कथात्मक प्रवेश

०२. स्वप्नक गुरुत्व आ सहस्रबाढ़निक रूपक

०३. पूर्वजक प्रश्न : बालकक जिज्ञासा आ दर्शनक अन्तर

०४. विद्यारम्भ, संस्कृत श्लोक आ पिताक अनुशासन

०५. चाभीक झाबा : बाल्यक प्रतिरोध आ दीर्घ स्मृति

०६. वर्गक छलाँग आ शिक्षाक असमयिक समय

०७. जूता-चिट्ठी आ त्रुटिक संस्कार

०८. सिलेटक चोट आ हिंसापर अवरोध

०९. क्रोध-विरोधक संस्कृत वचन आ वयस्क महत्त्वाकांक्षा

१०. व्यापारक नव संसार : मुद्रणालय आ माध्यमक राजनीति

११. मुद्रित नामक दूरी आ ‘आरुणि’क अपनापन

१२. मायक आगमन : आधुनिक सफलताक घरेलू परीक्षण

१३. आरुणि नन्द : नाम, शिक्षा आ वंशक पुनरावृत्ति

१४. १९९५ नवम्बर : पुनर्भेंटक स्पष्ट काल-चिह्न

१५. बस-अड्डाक व्यापार, समयक छल आ यात्रीक भाषा

१६. बसक संगी : आत्मप्रशंसासँ साक्ष्यक नव दुआरि धरि

१७. कॉलोनीक नामसँ पिताक पहिचान धरि

१८. आजमक गवाही : दया, निःस्वार्थता आ उपचारक सीमा

१९. निर्माणकालक स्मृति : सूटकेस आ मजदूरसभक नाम

२०. पुलपर उतरब : पूर्व दृश्यकेँ नव साक्षीसँ पढ़ब

२१. ईमानदार सेवाक प्रतिफल आ उपलब्धिक दू कसौटी

२२. किरायाक घर आ पटनाक बदलल भाव-भूमि

२३. अन्तरप्रसङ्गीय निष्कर्ष : स्वयं देखल, सुनल आ याद रहल

अध्ययन ९ — घरक मौन, सामाजिक पहिचान, विद्यालय आ असमय मृत्यु

१. वयस्कक रिक्शा-यात्रासँ नेनाक स्मृतिक प्रवेश

२. बहिनक संग चलबाक भय आ लज्जाक सामाजिक शिक्षा

३. मौन रहबाक शिक्षा आ व्यक्तित्वक द्विधा

४. ग्लोबक आग्रह : जिज्ञासा, प्रतीक्षा आ आरोपित कारण

५. अभियोग, चिट्ठी आ परिवारक अविश्वास

६. विद्यालयक बनाओटी हँसी आ प्रतिष्ठाक बोझ

७. परीक्षा छोड़ि देब आ अपूर्णताक भय

८. चिड़ियाखानाक अपमान आ आर्थिक अदृश्यता

९. वेतन-पर्ची, कर-कटौती आ पिताक स्वाभिमान

१०. समाजिक सफलता : मुख्यमन्त्रीक अपूर्व बदली

११. मृत्युक अनुमान : आर्थिक भरोसा बनाम सन्तानक भय

१२. स्कूलसँ घुरबाक दिन आ ‘बाबूजी मरि गेलाह की’

१३. घण्टी नहि बजाओल दिन : स्मृति, संयोग आ अपराध-बोध

१४. मायक नोर आ नेनाक राहत : करुणाक असहज सत्य

१५. नव किरायाक कोठली : घरक फेर निर्माण

अध्ययन १० — स्वर्णप्लाइ जाँच, आर्थिक साक्ष्य, नवल आ विभागीय विवेक

१. रात्रिक छापामे पहिल निष्फलता

२. अधिकारीक प्रतिष्ठा आ अनिर्णीत प्रमाण

३. इनपुट-आउटपुटक गणना : अनुमानक सीमा

४. अररियाक धूरि आ ज्ञानक स्थानीय मार्ग

५. नवलक परिचय : आपसी भरोसा आ सीमित स्वीकृति

६. दूरभाषक असमंजस : पाठकक आशा आ सुराग

७. स्थानीय सत्ता, हिंसा आ व्यवसायिक नैतिकता

८. जाँच-सीमाक विस्तार : कारखानासँ थाना धरि

९. साल्टलेकक परिवाद : अनपेक्षित दुआरि

१०. डायरी, चेक आ नगदक समकालिक मिलान

११. अचानक निधन : नवलक मौतपर द्विधा

१२. न्यायक परिणाम : कारण बताओ सूचना, अन्तिम निर्णय नहि

१३. माध्यमक नैतिकता : नवल आ आरुणि

अध्ययन ११ — अफवाह, दूरभाष-प्रमाण, बदली आ संस्थागत प्रतिद्वन्द्विता

१. विजयक पाछाँ पिताक विवादक पुनरावृत्ति

२. घरक खर्च आ अतिथिक सत्कार : स्मृतिक सोझा बाजब

३. अस्पतालक स्मृति : ईमानदारीक मानवीय मूल्य

४. मणीन्द्रक दूरभाष : मित्रक व्यग्रता आ नैतिक दबाव

५. शशांकक पक्ष : पदस्थापन, पदोन्नति आ अफवाह

६. सरकारी दूरभाष : सुविधा आ आरोपक दू अर्थ

७. बदली-पत्र : दण्डक सार्वजनिक अनुमान

८. बच्चाक स्मृति आ अनुसन्धानक नव अनुशासन

९. अप्राप्त शिकायत-अभिलेख आ परिवर्तित अन्वेषण

१०. बूथक नम्बर आ प्रतिलोम प्रमाण

११. मुक्ति आ अन्याय-बोधक असम्पूर्णता

१२. दिल्लीक दुआरि : ‘शंटिंग’क सम्भावित अर्थ

अध्ययन १२ — प्रौद्योगिकी, प्रतिकारी न्याय, दुर्घटना आ उपन्यासक अन्तिम रूपक

१. ‘निष्क्रिय’ शाखाक नव अर्थ

२. पुरान विज्ञानक पुनर्पाठ : बदलल ज्ञान-अभ्यास

३. कर्मचारीक आवेदनसँ नब उपकरण धरि : संस्थागत श्रम

४. गोपनीय दूरभाष-अभिलेख : उपयोगिता आ खतरा

५. समाचार-पत्रक सूचना : सार्वजनिकता आ प्रतिपक्ष

६. समितिक पहिल निष्कर्ष आ आरुणिक अल्पभाषिता

७. दू भेँटक कॉल आ तेसर कर्मचारी-सन्देश

८. आवाज मिलान आ जाँचक वैधता

९. सेवानिवृत्ति : समझौता, दण्ड आ मौन

१०. मणीन्द्रक अन्तिम संवाद : पिता-पुत्रक फरक रास्ता

११. दुर्घटना : पुनर्वापसीक देहगत संघर्ष

१२. आरुणिक डायरी : चोट, सम्बन्ध आ सामाजिक दूरी

१३. ‘सहस्रबाढ़नि’क अन्तिम उच्छ्वास

१४. अन्तक शिल्पगत उपलब्धि आ वास्तविक सीमा

समग्र साहित्यिक पुनर्मूल्याङ्कन — सहस्रबाढ़नि

१. समूचा वृत्तान्त : पितासँ पुत्र धरि

२. कथनक काल : डायरी, सुनल गप आ प्रत्यक्ष दृश्य

३. मिथिलाक भूगोल : गाम, पटना, पुल, अररिया आ दिल्ली

४. रस, ध्वनि आ असहज सहानुभूति

५. नव्य न्याय : प्रमाणक गतिशील अनुक्रम

६. स्त्री-पात्र आ परिवारक काजक अदृश्यता

७. वैज्ञानिक वस्तु आ अदृश्य शक्तिक रूपक

८. शीर्षकक ध्वनि आ कथान्तक खुलापन

खण्ड ११ — सहस्रशीर्षा : उपन्यास-समीक्षा

मूल समीक्षा-पाण्डुलिपिसँ सूचीकृत शीर्षक : 502

सहस्रशीर्षा — पहिल कल्लोलक पहिल पल्लव : मूल पाठाधारित समीक्षा

१. प्रस्तावित समाज-मानचित्र आ ‘कल्लोल’क रूप-विधान

२. भोरुक चलैत जिनगी : गति आ स्थिरताक विरोधाभास

३. ममतोड़क प्रश्न आ भाइ-बहिनक बदलैत भविष्य

४. ‘ईलम’क देहगत शिक्षण : विद्यालयक बाहरक विद्या

५. स्वावलम्बनक दावा आ निर्भरता ढाकबाक भाषा

६. माटिक घर आ पदार्थक पुनरागमन

७. चाम, पीड़ा आ जैविक समानताक संवाद

८. अदृश्य माटिक देबाल : जाति, टोल आ अर्थभेद

९. साझा पोखरि आ घेराबन्दीक बदलैत मानचित्र

१०. साँझमे गामक फेर रूप : स्थिर समाजक मिथक

११. पाठक प्रमाण आ पल्लवक कलात्मक सीमा

सहस्रशीर्षा — पहिल कल्लोलक दोसर पल्लव : मूल पाठाधारित साहित्यिक समीक्षा

१. दोसर पल्लवक आरम्भ : पात्रसँ सामुदायिक भूगोल दिस

२. डकही आ बुचिया पोखरि : जलस्थल, स्मृति आ असमान अधिकार

३. कमला-बलान, कोसी आ प्रस्तावित बान्ह : भविष्यक भय

४. इनार, रोगक लोकवचन आ नामकरणक व्यङ्ग्य

५. रमना मैदान आ जमीन्दारी विस्तार : साझा ठामक सिमटब

६. शमशूलक मीरां-गाथा : प्रतिशोधक मौखिक इतिहास

७. बौधा मलिक आ जाति-बहिष्कारक कथा : पेशाक जन्मक राजनीति

८. जैनुल, दाहा आ साझा ध्वनि : धार्मिक व्यवहारक अन्तरसम्बन्ध

९. चर्मकार टोलक निकट अबैत बसोबास : दूरी मेटल कि बदलल

१०. लाला महराज : साझा चौरी, अधिकार आ देवत्वक संघर्ष

११. कथाक अनेक रूप : कनियाँ-मनियाँक अनल स्मृति

१२. धनुक आ दुसध टोली : पेशाक सीमा आ बदलैत खेती

१३. धोबियाटोलीक भाड़ाक वस्त्र : प्रतिष्ठा आ परिश्रम

१४. डोमी दास आ कबीर-पन्थ : गामसँ बाहरक विचार-यात्रा

१५. जोगिन्दरक परिवार : शिल्प, अनुकरण आ सर्जनात्मक अधिकार

१६. जोति आ लोकधर्म : स्मृतिक आस्थाक स्थान

१७. मलाह आ मछैर : सामुदायिक वितरणमे पर्यावरणीय विवेक

१८. गोनू झा : ढोंगक आलोचना आ हास्यक प्रमाण

१९. जैव-विविधता आ भाषाक भण्डार : सूचीक सौन्दर्य आ सीमा

२०. धानक भूमि, बीया आ रोपनी : कृषि-ज्ञानक समय

२१. भोजन, खेल, लोककला आ स्त्रीक श्रम : जीवनक विस्तृत स्वर

२२. जमीनक मूल्य, कुटमैती आ समृद्ध गामक आत्मप्रशंसा

२३. पल्लवक कथन-रचना : आवर्तन, संग्रह आ आलोचनात्मक दूरी

२४. पहिल पल्लवसँ सम्बन्ध आ दोसर कल्लोल दिस संक्रमण

सहस्रशीर्षा — दोसर कल्लोलक दुनू पल्लव : मूल पाठाधारित साहित्यिक समीक्षा

१. राष्ट्रक उत्सव आ बन्द राजनीतिक शरीर

२. तिथिक जोड़-घटाव : राष्ट्रीय इतिहासक घरेलू व्यङ्ग्य

३. रेडियो-भाषणक खण्डित श्रवण : कथन-दृष्टिक विशेषता

४. स्वतन्त्र भारतक कारागार : विधि आ अस्मिताक टकराव

५. पटनिया जेलक मिथिला पाठशाला : लोकवाचकक भूमिका

६. १९४२ केर घुरती स्मृति : वर्तमानक भीतर दोसर समय

७. दलगत मतभेद आ जागेश्वरक स्वतन्त्र विवेक

८. जाति, पुरहिती आ संस्कारक समान अधिकार

९. कबीरमठ आ धर्म-संस्थानक अधिग्रहणक प्रश्न

१०. किसान-भूमि, रसीद आ बेदखलीक अविश्वास

११. प्रतिरोध, पूछताछ आ जागेश्वरक मृत्यु

१२. कुसुमावतीक नाम आ स्मृतिमे स्त्रीक अपूर्ण स्थान

१३. विनोदसँ शोक : कथावाचकक रक्षा-पद्धति

१४. मधुश्रावणी, बिसहरा आ विधि-संस्कारक संवहन

१५. बिहुला-विषहरा : मृत्युकेँ उलटब आ असम्भव पुनर्जीवन

१६. श्रोता, जेलर आ रूपकक खुलल लक्ष्य

१७. खढ़क घर, साँप आ स्मृतिक ध्वनि

१८. भोजक पतबिच्छा : श्रम आ अन्न-वितरणक असमानता

१९. बाँसविट्टीक छाह : वर्ग-भेदक स्थानिक व्याकरण

२०. रुद्रमतिक शोक : श्रमक निरन्तरता आ करुणाक सीमा

२१. जागेश्वर–मुखदेवक बालमैत्री : देनहार आ मंगनहार

२२. पोखरि आ आमक गाछीमे पएर राखब : सीमा-लाँघबाक घटनात्मक रूप

२३. दुपहरियाक नाच : अनुभवसँ भौतिक व्याख्या दिस

सहस्रशीर्षा — तेसर कल्लोल : दुनू पल्लवक स्वतंत्र मूल पाठाधारित आलोचना

१. सर्वगुणी आ अल्पायु : शोकक कथात्मक प्रतिज्ञा

२. विषहरा, आस्तीक आ चिरायुक विवाह : लोककथाक प्रवेश

३. विषक हार आ ‘नव राजा’ : व्यङ्ग्यक दोहरी दिशा

४. घड़ी-पाबनि : भगवतीघरक बहुस्तरीय स्मृति

५. प्रवास आ भाषिक मिश्रण : गामक सीमा बाहरक मिथिला

६. कोसीक पुरान धार : स्मृति आ अनिश्चित इतिहास

७. अकालक प्रवेश : वर्षा-विफलतासँ सामूहिक संकट धरि

८. 'रेखागणित बीज' आ कृषकक अनुभव : ज्ञानक परस्पर प्रश्न

९. फसलक नाम आ भूखक क्रम : अर्थव्यवस्थाक देहधर्मी वर्णन

१०. गहना सँ थारी धरि : संकटमे घरक क्रमिक क्षय

११. कम्पनी-राहत : उद्धार-आख्यानक स्वर आ प्रमाण-सीमा

१२. राहतक स्थलनाम : भूगोल सँ प्रशासनक नक्सा

१३. अनाज-वितरणक बीच अमला : राहत आ अपमानक द्वैत

१४. लाट, रेल आ स्तुति : अन्तिम राजनीतिक विडम्बना

१५. पहिल पल्लवक कथन-गठन : शोक सँ लोक-अभिलेख धरि

१६. रुद्रमतिक प्रश्न आ गढ़ नारिकेलक कल्पना

१७. जमीन्दारी बान्ह : पानि रोकबाक सत्ता

१८. प्रस्ताव, अस्वीकृति आ अपमानक भाषा

१९. ग्रामसभा आ सामूहिक निर्णय : विरोधक वैधता

२०. रामदेवक टोकना आ जोगिन्दरक कोदारि : श्रमक ज्ञान

२१. रातिक हहाइत धार आ भोरुक प्रतीक्षा : समयक सघनता

२२. बान्ह कटबाक दृश्य : पानिक दिशाक बदलैत अर्थ

२३. पीअर बच्चाक रोष आ लोकसमर्थन

२४. नव बाहा : आपदाक पाछाँ सामुदायिक संरचना

२५. अकाली कवित्तक मौन : अन्तक संरचनात्मक उपलब्धि

सहस्रशीर्षा — चारिम कल्लोल : विश्वकर्माक रखबाड़िमे इन्द्र लग अमृत

१. स्वतंत्रता भेटल—अमृत कतय? : राजनीतिक प्रश्नक रूपक

२. ऊपर–नीचाँक स्थानबोध उलटल : मिथक आ प्रश्न-विधि

३. समुद्र-मन्थन : श्रम, पक्ष आ जोखिमक बँटवारा

४. अमृतक पात्र, विषक भार : लाभ ककरा, क्षति ककरा?

५. राहु, छद्मवेश आ चीन्हब : पहिचानक सत्ता

६. विश्वकर्माक रखबाड़ी : शीर्षकक सामाजिक अर्थ

७. आमक रखबार : जाति, अधिकार आ अस्वीकृत स्नेह

८. बाप-दादाक बोनक कलम बनब : भू-अधिकारक अदृश्य इतिहास

९. मुखदेव–दयारामक कारीगरी : श्रमक सूक्ष्म भिन्नता

१०. गोरोचनक दावा : अफवाह, औषधि आ रात्रिक रहस्य

११. खड़मास, जेल आ ऋतु-विभेद : रुकल समयक अनुभव

१२. जूड़िशीतलक तैयारी : स्त्री-श्रम आ पाबनिक भौतिक वस्तु

१३. नामसँ भरल जूड़िशीतल : साझा चौखटा आ सीमासभ

१४. 'चाण्डाल संक्रान्ति' आ स्पर्श : शब्दक आलोचनात्मक असुविधा

१५. जेलमे गामक पुनर्रचना : पाबनिक सामुदायिक प्रतिरोध

१६. धुआँक कमी आ गाछकेँ पानि : पर्यावरणीय व्याख्याक सीमा

१७. बैशक्खा आ चैतावर : पुण्यक रीति पर दरिद्रताक व्यङ्ग्य

१८. साहेबगंजवालीक प्रसव-सहायता : अनुभवक सामाजिक मान्यता

१९. परिवारक सीमा बदलैत अछि : 'दीदी' आ 'बहिन'क अर्थ

२०. खेती आ ढेकीक गीत : श्रमक दिनचर्याक बहुस्वर

२१. ममतोड़क विवाह आ उदासी : स्त्रीक विदाइ आ सम्बन्ध-विस्तार

२२. जागेश्वरक ऋण : उपकार नहि, बराबरीक सम्बन्ध

२३. बा झाक उत्पीड़न आ स्त्रीसभक मौन : भयक संरचना

२४. जागेश्वरक सामना आ हत्या : प्रतिरोधक नैतिक टूटन

२५. मृतदेह गाड़ि देब : गवाही, असिद्धि आ सामूहिक राहत

२६. बा झाक पाछाँक हिंसा : भयक सत्ता कहाँ समाप्त?

२७. रक्तक आभास : आघातक समय-रचना

२८. बारहमासा आ दुनू साँझ भात : भूखक वास्तविक अमृत

२९. अमृत पीबि लेलापर संघर्ष समाप्त? : अनिर्णीत अन्त

सहस्रशीर्षा — पाँचम कल्लोल : बो-बो

१. ‘बो-बो’ : शीर्षकक असंगत ध्वनि आ लोकव्याख्याक आकर्षण

२. मुखराम आ मुखदेव : कथनक अधिकार पर श्रोता-समुदायक निगरानी

३. सृष्टिक वंश-रेखा : क्रम, संख्या आ स्मृतिक मौखिक बनावट

४. रोहिणी-प्रसङ्ग : प्रेमक पक्षपात आ पितृसत्तात्मक व्यवस्था

५. दक्षक यज्ञ : सार्वजनिक अपमान, स्त्रीक देह आ पुनर्जीवनक विडम्बना

६. स्त्री-प्रश्नक आकस्मिक प्रवेश : खिस्सासँ प्रतिरोधी व्याख्या धरि

७. सुमंगलमाता आ मुक्ता : गृहस्थ श्रमक प्रत्यक्ष भाषिक देह

८. गामक स्त्री-संसार : उपन्यासक सामाजिक स्थान-विस्तार

९. स्त्री-परिचयक लम्ब सूची : गामक वैवाहिक भूगोल

१०. नागपंचमी : माटि, गोबर, धानक लावा आ घरक सांस्कृतिक श्रम

११. कुश उखारबाक क्रिया : लैङ्गिक काज-विभाजन आ समयक चिह्न

१२. जगदरवाली धाइ : जीविकाक अनुभव आ लोकवैद्यकीय प्रतिष्ठा

१३. मछधीवाली : धर्मक सीमासँ आगाँ स्त्रीक ज्ञान-सम्बन्ध

१४. सर्पमन्त्रक विस्तृत गान : ध्वनि, आदेश आ प्रतीकक क्रम

१५. विषहरणक आख्यानमे नेउरा आ गरुड़ : प्राकृतिक आ पौराणिक शत्रुक संयोजन

१६. लोकगीतक पुनर्स्थापन : स्त्रीक मेलक सामाजिक प्रमाण?

१७. छठि-गीतक श्रम-सूची : डोमिन, बनिआइन, मालिन आ बाभनि

१८. ‘अरघ केर बेर’ : पुनरावृत्तिसँ सामुदायिक समयक निर्माण

१९. मछधी, दीप आ इस्लामपुर : अन्तर्धार्मिक गामक भीतरक सामाजिक वर्ग

२०. लोककथा सुननिहारक वितृष्णा आ प्रशंसा : ग्रहणक बहुवचन

२१. ‘वनवासी’क उलटल अर्थ : मुखदेवक स्मृति आ प्रकृतिक सहवास

२२. गद्य-शैली : संवादक छोट झटका आ सूची-गीतक दीर्घ लय

२३. कल्लोलक रचनात्मक सीमा : स्त्रीक मेल आ स्त्रीक व्यक्तिनाम

सहस्रशीर्षा — छअम कल्लोल : लोकगीत, बचपनक स्मृति आ गिरफ्तारी

१. आरम्भक गीत आ परिधि-रचना : ‘छुच्छो हाथ’क पहिल उच्चारण

२. ‘दर्शक वा श्रोता कहू’ : लिखित कथामे मौखिक सभाक उपस्थिति

३. कुमरव्रता–पतिव्रता : नाममे निहित सामाजिक आदेश

४. क्रोधी योगी, कौआ आ दण्डक असमानता

५. तुलसीक बेढ़क अर्थ : बहिनक रक्षा बनाम चमत्कार

६. रोगी पति, पथिया आ शाप : सेवा-परिश्रमक देहगत भार

७. ‘पत्नीव्रता एकोटा नै’ : कथनक भीतरे पितृसत्ताक प्रतिवाद

८. माए–बहिनक गीत : स्त्री-जनम, रूप आ असमान अपेक्षा

९. ममतोड़क समय : जौँआ बच्चा, मायगाम आ विखण्डित स्मृति

१०. बधावा : जन्मोत्सवमे पारिवारिक भूगोल आ प्रतीक्षा

११. पमरिया, भाट आ नट : गामक जन्मोत्सवक बहुसमुदायी रचना

१२. नजरि-गुजरि आ मिश्रित मन्त्र : सांस्कृतिक अन्तर्क्रिया

१३. मन्त्रक पुनरुच्चार : मुखदेवक मुँहपर मुस्की

१४. बसहा-बड़द, कौड़ी आ भिक्षाटन : लोकजीविकाक वस्तु-जगत्

१५. शीतला-मैयाक गीत आ ममतोड़क ‘पाच’

१६. ‘राज कोतवाल’ : नेनाक खेलमे अधिकारक विनोद

१७. हँसीक संग नोर : स्मृतिक भावगत द्विस्वर

१८. ‘साहेबगंजक रस्ता, हम आ मुखदेव’ : कथन-दृष्टिक अचानक बदलाब

१९. स्वागतक भ्रम आ पुलिसक छद्म उपस्थिति

२०. कारावासक भाषा आ अधूर राजनीतिक जीवन

२१. ‘ममतोड़ की सोचने हेतै’ : अनिश्चितताक करुण निर्माण

२२. शिल्पगत उपलब्धि आ पाठगत कठिनाइ : लोककथा सँ कारावास धरि

सहस्रशीर्षा — सातम कल्लोल : चरखाक धुन, ममतोड़क शिल्प आ स्वतंत्रताक भय

१. ‘धुन-धुन’ : चरखाक पहिल ध्वनि आ भयक पूर्वाभास

२. हिमालयक पाँच कन्या : लोकपुराणक संक्षिप्त पुनर्विन्यास

३. ‘बसहा-बड़द’ सँ ममतोड़ धरि : स्मृतिक असमाप्त वाक्य

४. आर्थिक समान अभावक भीतर जातिगत खधाइ

५. ‘की होइ छै शिक्षा!’ : विद्यालय आ सामाजिक ज्ञानक प्रतिप्रश्न

६. डेढ़ मासक हँसी : बाल-विकासक सूक्ष्म घरेलू समय

७. कटकटाइत दाँत आ नीमक पात : व्याख्याक प्रमाणगत अन्तर

८. जागेश्वरक भरोसा : झोरा बनयवाली ममतोड़क प्रतिभाक पहिचान

९. खादी, चाम, तूर, छत्ता आ काठ : वस्तु-सूचीक काव्य

१०. चौदह संगीक नाम : सामूहिक शिल्पक अभिलेख

११. स्त्रीक हाथसँ बनल झोरा आ राजनीतिक वितरण

१२. चरखा घर-घर : राजनीतिक चिह्नक सामुदायिक रूपान्तरण

१३. स्वतंत्रता बादक डर : बा झाक मृत्यु आ चरखाक उलटल अर्थ

१४. ‘ऐ जन्ममे राजकुमारी नै अछि?’ : स्नेहक मूल्य आ ओकर सीमा

१५. विवाहक गपपर मौन : असुरक्षाक सामाजिक परिणाम

१६. जेलमे मुखदेव : स्वतंत्रता-सेनानीक प्रतिप्रश्न आ स्तब्धता

सहस्रशीर्षा — आठम कल्लोल : ममतोड़क विवाह, लोकविधि आ बिदाइ

१. बिदाइ गीतक अग्रध्वनि : अन्त पहिले सुनाएब

२. सगर–भगीरथ आ गंगावतरण : पुराणक कथा-शृंखला

३. ‘सद्गति’ शब्दक दोहरा प्रहार : जेल-जीवनक विलोम

४. पुरहितक बहुवचन : जातिगत अधिकारक स्थानीय पुनर्गठन

५. नौआक मेहनति आ दक्षिणाक असमानता : विवाहक अर्थशास्त्र

६. मटकोरक माटि : स्त्रीक हाथेँ विवाहक प्रथम निर्माण

७. पुरबा-पछबा : वस्तुमे निहित भविष्यक कामना

८. विवाहगीतक मौसमी मानचित्र

९. नगहर, मधुखार आ अरिपन : संस्कारक बहुस्तरीय मंच

१०. मड़बाक वास्तविक नाप : संसाधनक सीमा

११. माटिक घोड़ा आ वर-परीक्षण : लोकदेवता, हास्य आ अनुशासन

१२. उक्खरि, धान आ समाठ : दू परिवारक संयुक्त श्रम

१३. मधुपर्क आ देहक अनुशासन

१४. वेदीक दिशा, कुश आ अग्नि : स्थानक सूक्ष्म मानचित्र

१५. कोबरक चारि योगिनी : स्त्री-रिश्ताक मौखिक नक्शा

१६. नव वस्त्र, जन्मग्रन्थि आ कन्यादान : वस्तु आ अधिकार

१७. इनारक जलमे गामक इतिहासक नाम

१८. प्रदक्षिणा, लावा आ पाथर : वैवाहिक प्रतिज्ञाक देह

१९. ध्रुवतारा, सूर्य आ समयक दू क्रम

२०. सिन्दूरक तीन बेर पुनरावृत्ति आ साहेबगंजवालीक नोर

२१. डहकन, गारि, जोग आ भोजन : उत्सवक विरोधी स्वर

२२. घूर-बहूर, समधी मिलान आ लावाक पिसान

२३. 'भय ... खतम बुझाएल' : सीमित आशाक वाक्य

२४. बिदाइ गीतमे माए, सखी आ विछोहक बहुवचन

२५. दौलति जहाँ, रुद्रमति आ मुखदेव : श्रोताक तीन भिन्न प्रतिक्रिया

सहस्रशीर्षा — नौम कल्लोल : कुसुमावतीक पाठशाला, कारीगरी आ सामाजिक चेतना

१. मुखरित उपमाक आवृत्ति : पौराणिक स्तुति सँ ग्रामक प्रणय

२. सतीक मृत्युक पाछाँ : विरक्ति आ सत्ताक संकट

३. वसन्त ऋतु आ श्रोताक टोका-टोकी : मौखिक आख्यानक नियन्त्रण

४. कामदेवक दहन आ रतिक विलाप : सौन्दर्यक मूल्य

५. प्रद्युम्नक भविष्यवाणी : समयक लम्ब छलाँग

६. गौरीक परीक्षा : तपस्या, अपमान आ सहमति

७. "भूख आ पियास" : पौराणिक ऊँचाइ सँ श्रमक धरातल

८. "दुसाधक छूलासँ हड्डी छुआ जाइ छै" : जातिगत तर्कक विरोधाभास

९. खादी आ चामड़ाक झोरा : पेशागत सहयोगक भौतिक प्रमाण

१०. कमारक हर आ हाँसू : औजारक भीतर अदृश्य श्रम

११. “छबड़ा सभक थइर” : गामक अनौपचारिक विचार-सभा

१२. जागेश्वर आ पीअर बच्चा : समाजकेन्द्रित आ सुविधावादी दृष्टि

१३. जमीन्दार, पाइ आ लठैत : सत्ताक यान्त्रिकी

१४. प्रश्नक आवर्त : “से किए?” सँ विचारक उत्तरदायित्व

१५. जागेश्वरक समय-अनुशासन : चिन्तन सँ अनुपालन धरि

१६. कुसुमावतीक प्रति रूपक : सौन्दर्यक नव सामाजिक सन्दर्भ

१७. सभ जातिक बचिया लेल पाठशाला : शिक्षाक पहुँच

१८. फूदो, सुगन आ नामक लोक-व्युत्पत्ति

१९. “बाप-दादाक खून नै” : आनुवंशिक नियतिवादपर प्रतिवाद

२०. विद्यालयक भीतर कौशल-साझेदारी : काम, खेल आ ज्यामिति

२१. चौदह बालिकाक ज्ञान-पञ्जी : खेनाइ सँ वनस्पति, धातु सँ वस्त्र

२२. पुरान कपड़ाक कनियाँ-पुतरा : स्त्रीक अनेक सम्भाव्य भूमिका

२३. “कचबचिया” आ “कोइली” : बालिकाक स्वरक पुनर्मूल्याङ्कन

२४. घेंघीक अनिश्चय आ रघुवरनक तमिल गीत : अधूरापनक मर्यादा

सहस्रशीर्षा — दसम कल्लोल : मैनाक प्रश्न, लालबन बाबा आ तमिल बालगीत

१. मुखगीतक प्रश्न : मलिन मुँह आ अनकहल उदासी

२. सप्तऋषि आ विवाह-सन्देशक मध्यस्थता

३. मैनाक आँखिसँ बरियाती : रूप देखबाक अपेक्षा आ भ्रम

४. ‘परिछनि, अठोंगर’ : मिथकमे मिथिलाक लोकविधि

५. साँठि बिदाइ आ छुलाहिक तमाशा : वैवाहिक गरिमाक विघटन

६. अशावरीक बेमाय : स्त्रीदेह, असुविधा आ पौराणिक विडम्बना

७. ननदिक माँछ आ घरेलू श्रमक अदृश्यता

८. पुरबा–पछबा आ श्रोताक सुधार : खिस्साक स्वायत्तता

९. सिंह आ नाङरि : नैतिक चेन्हक हिंसक रूपक

१०. ‘सभटा चेन्ह मेटा गेल’ : प्रत्यक्ष प्रमाणक सीमा

११. लालबन बाबा : चर्मकारक लोकदेवता आ स्मृतिक दूसरी धारा

१२. बाघिनपर हथियार नहि : अहिंसाक चयनात्मक नैतिकता

१३. ‘मजूर’क गीत : शिकार, विधवा-स्वर आ शब्दार्थक सावधानी

१४. ‘कोसी सेहो मजूर मारैए’ : स्मृतिक प्रश्न आ प्रमाणक अनिश्चितता

१५. ‘दुश्मनपर एतेक ... ममता?’ : वीरकथाक आत्मविरोध

१६. रघुवरनक प्रवेश : गीतक भाषिक सीमा कैँ संवाद बनायब

१७. भारतीक बालगीत : खेल, संगति आ शिक्षा

१८. प्रतिरोधक कठोर भाषा : ‘डराउ’ सँ ‘थुकरू’ धरि

१९. ‘ई रघुवरन तँ जागेश्वरे बुझाइए’ : स्मृतिक प्रत्यावर्तन

२०. ‘देशी फिरंगी’ : सत्ता बदललापर अन्यायक प्रश्न (१७३४–१७३५)

सहस्रशीर्षा — एगारहम कल्लोल : कृषिपर्व, सुगनक विवाह आ ‘जिबैत उद्धार’

१. ‘उक्खड़ि सन सन बीट’ : श्रमक ध्वनिसँ खुलैत कल्लोल

२. कार्तिकेय–गणेशक जन्मक आख्यान : पौराणिक कारण-श्रृंखलापर प्रश्न

३. ‘जे करत से मनुक्खे करत’ : जागेश्वरक राजनीतिक वाक्य

४. कोजगरा सँ दियाबाती : पर्वक स्मृति-मानचित्र

५. पखेब पाबनि : पशु-सेवा आ कृषकक श्रम-संबन्ध

६. गबहा संक्रान्ति आ अरिपन : कृषि आ रूपकला एकही पटलपर

७. ‘सहस्रशीर्षा पढ़ि देवताकैँ उठाएब’ : पुस्तकक स्वनाम-स्मरण

८. हरिवासरक दिनगणना आ अभावक व्यङ्ग्य

९. सामा–चकेवाक विदाइ : नैहर आ लौटबाक प्रश्न

१०. नवान्न आ डाक-वचन : प्रचलित ज्ञानक बहुस्तर

११. चर्मकारक उत्पत्ति-कथा : कथाक भितर जाति बनबाक हिंसा

१२. डोमक उत्पत्ति-कथा : मृत पशु हटएबाक बदला निष्कासन

१३. ‘गढ़ नारिकेल एकटा गणतंत्र’ : स्वघोषित रूप आ वास्तविक दूरी

१४. सुगनक विवाहक अनुष्ठान : समान विधि, असमान मान्यता

१५. समानान्तर दुनियाँक ‘ताग’ आ जागेश्वरक खोलेल रस्ता

१६. परिवार, स्थानान्तरण आ महामारी : जनसंख्याक अनुमान-सीमा

१७. श्याम सिंहक गाथा : अतिशय बल आ अपमानक पुनर्रचना

१८. दुर्गा आ गहिलक हस्तक्षेप : लोकयुद्धमे दैवी पक्षपात

१९. विवाह आ गाथाक अन्तःसंबन्ध : मुखदेव–सोमनक वाद-विवाद

२०. सोपचटोलीक पंचैती आ पानक दूरी : स्पर्शक निषेध

२१. पुरहित, गुरु आ सरदार–माइंजन : सत्ताक समानान्तर रूप

२२. छेछन महराजक आख्यान : विवाह, वीरता आ अतिक्रमण

२३. सोमनक गानमे श्रमक वस्तु-सूची : जातिक इतिहासक आन अभिलेख

२४. बियाह समाप्त, प्रश्न बाकी : मृत्युपर आगि आ जीवनक उद्धार

२५. जेलक भीतर अंतिम प्रतिध्वनि : मुखदेवक आवाजक श्रोता

सहस्रशीर्षा — बारहम कल्लोल : लालमैन, लुकेसरी आ चामक शिल्प

१. ‘लोभेलै छौड़ा बभना’ : प्रश्नक गीतसँ आरम्भ

२. गौरी–संध्याक आख्यान : ईर्ष्या आ गृहस्थीक बँटवारा

३. लीलीक धर्मकुण्ड–सोहागकुण्ड : गलती, शक्ति आ विवाह

४. मुखदेव रामक टोल : मूल कथाक दृष्टि बदलैत अछि

५. लालमैन–मनसाराम : जाति-पार मित्रताक स्मृति

६. बघिनीसँ युद्ध : अहिंसक संकोच आ प्राणक मूल्य

७. लालमैनक पूजा, मनसारामक पूजा : भिन्न भेंट आ साझा स्मृति

८. रकतमाला, लुकेसरी, जलपा, गोरैया : स्थानीय देवीक स्त्री-स्वर

९. लुकेसरीक गीत : जाति-संवाद आ असमान सम्बोधन

१०. गोदीक बालक आ जानकीक स्मृति : स्त्रीक जीवन-प्रसङ्ग

११. ‘चमैन’ आ ‘दगरिन’ : प्रसव-सहायताक श्रम

१२. चामक शिल्प : आवश्यकता, कौशल आ मानक विरोधाभास

१३. रघुवरनक बाटा-वृत्तान्त : विश्वव्यापी बाजार आ स्थानीय ज्ञान

१४. उदयन, गंगेश आ वर्धमान : दार्शनिक स्मृतिक विवाद

१५. जागेश्वरकेँ ‘बुझल हेतै’ : स्मृतिक सीमित अधिकार

१६. रघुवरनक श्रवण : एगारहम कल्लोलसँ बदलब

१७. लोकदेवता आ स्त्रीक शिल्प : दुई प्रकारक अभिलेख

१८. बारहम कल्लोलक समग्र प्रश्न : ‘कला’क सम्मान आ जातिक पदानुक्रम

तेरहम कल्लोल — दीना–भदरी, मुसहरीक श्रम आ नव पीढ़ीक शिक्षा

१. सुकन्याक आंखिक प्रसङ्ग आ विवाहक सहमति

२. दीना–भदरीक वीरता आ जमीन्दारीक भय

३. सलहेसक वचनबद्धता : देवताक नैतिक विभाजन

४. मातृशोक, तूरक तुला आ पुनरागमन

५. दीनाभदरीक देवत्व आ ऐतिहासिक दूरी

६. मुसहर जातिक उद्गमक अनुमान : कथावाचकक परीक्षा

७. बिचकुन, जेठियाहीवाली आ भुरकुरीक क्रियाशील परिवर्तन

८. कल्लोलक समय-विधान : अतीतसँ वर्तमानक पुल

चौदहम कल्लोल — बाल–बसन्तक व्रत, रौहिणेयक छल आ ज्ञानक अधिकार

१. खीर-पूरीक इच्छा : घरक भीतर सत्ताक छोट दृश्य

२. बाल–बसन्तक रक्षा आ प्रतिदान

३. बासुकीक डँसब आ मंत्रक नाटकीय उलटफेर

४. भुमिहारक उत्पत्ति : अप्रमाणित जातिवंशक प्रश्न

५. रौहिणेयक स्वर्ग : परीक्षणक उलट स्रोत

६. जेलक श्रोता आ संवादक बहुस्वर

७. कर्मकाण्ड-विरोध आ ज्ञानक पहुँच

८. मूल्यांकन : कथात्मक परत आ वैचारिक घनत्व

पंद्रहम कल्लोल — जट–जटिन, विदागरी आ प्रवासी श्रमक प्रतिप्रश्न

१. गोसाउनी आ बैरसीक खेल : शापक व्यवस्थापन

२. जट–जटिनक मञ्च आ समवेत बहस

३. नैहरक बिदागरी आ बाढ़िक बाधा

४. गहना आ पतिक प्रत्युत्तर : वस्तुक बहुअर्थ

५. घेंघीक अनुपस्थित जट : प्रदर्शनसँ यथार्थ धरि

६. जमीन्दारक आकार आ मजदूरक अधिकार

७. कथन-शिल्प आ सीमा

सोलहम कल्लोल — मधुश्रावणीक कथा, स्त्रीक मौन आ जेलक शून्यता

१. राजकुमारीक टीपणि : नियति के बनबैत अछि

२. सन्देश-वहन, कौआ आ संचारक विफलता

३. पोखरिक माटि उघैत राजकुमारी

४. गौरीपूजा आ बकारक पुनरागमन

५. जेल आ निन्नक रूपक

६. प्रकृति, ईश्वर आ लिखबाक असफल प्रयत्न

सतरहम कल्लोल — झूला, लचका पुल आ क्रान्तिक श्रमिक मूल्य

१. झूलाक गीत सँ पुलक नामक अनिश्चितता

२. धनेसरक कामत : बहुस्थानीय कार्यकर्ताक जमघट

३. पुल तोड़बाक नैतिक प्रतिपक्ष

४. कारीगरक कौशल आ कार्यक बाँट

५. चेथरूक घाव : क्रान्तिक देहगत लागत

६. भोर पहिनुक अन्हार आ अनिर्णीत जीवन

७. सामूहिक कार्य आ व्यक्तिगत प्रश्नक दूरी

अठारहम कल्लोल — चेथरूक मृत्यु, शोक आ गीतक दुइ अर्थ

१. घावक सफाइ आ असफल सेवा

२. वैद्यक आगमन : उपचारक आशा आ सीमा

३. हरतालिका कथाक विरोधी समय

४. चेथरूक आवाजमे हिमालयक अनुभव

५. तीन दिनक अन्तर आ शोकक मान

६. गीतक द्विस्वर : कोइली आ बँसुरिया

७. आन्दोलनक नैतिक पुनर्पाठ

उनैसम कल्लोल — क्रान्तिक शहादत, मणिक आरोप आ जागेश्वरक मौन

१. नामक आवृत्ति आ समूहक घटैत उपस्थिति

२. राजनीतिक क्रिया आ उत्तरदायित्वक संकट

३. स्यामन्तक मणि : आरोप आ प्रमाणक अलग माप

४. गरीबक बच्चा आ बलिदानक अर्थ

५. जेलमे मौन आ शत्रुक हिंसक वाक्य

६. रेशमक डोरीसँ प्रेमक डोरी धरि

बीसम कल्लोल — घेंघीक प्रतीक्षा, व्रतक असमाप्ति आ मिथ्या प्रतिनिधित्व

१. शिक्षाक द्वारपर सामाजिक अवरोध

२. अनन्त व्रतक कथा आ घेंघीक अनन्त बाट

३. व्रत, अन्न आ जीवन-निर्वाह

४. स्वतंत्रता–कैदक त्रासद विरोध

५. मैयाजीक गीत : सार्वजनिक प्रार्थना

६. असमाप्त प्रश्नक कलात्मक सीमा

एक्कैसम कल्लोल — जनप्रतिनिधित्व, टोलसभक तर्क आ जागेश्वरक स्मृति

१. ग्राम-नक्शाक जाति आ सत्ता

२. हूड़ा-हूड़ीक खेल आ हिंसाक तमाशा

३. उपनयनक व्यङ्ग्य आ कर्मकाण्डक अर्थ

४. बहुरा कथा : स्त्रीक विद्वत्ता आ कुटिल चयन

५. जागेश्वरक संघर्षक विकृतिकरण

६. प्रतिनिधिक अर्थ : मालिक नहि, उत्तरदायी स्वर

७. उड़न्ती आ समाचारक परीक्षा

बाइसम कल्लोल — सभ टोलक इनार, स्मृति आ चुनावक बिसरनाइ

१. पानि–अधिकारक ठोस वस्तु

२. इनारक लहरा–जगत आ सामुदायिक प्रतिज्ञा

३. बंजाराक गीत आ पानिक साझा भाषा

४. मुखदेवक अनुपस्थिति : सेवाक स्वामित्व केकर

५. पीअर बच्चाक प्रतिद्वन्द्विता आ चुनाव

६. लोक बिसरल / लोक नहि बिसरल

तेइसम कल्लोल — संविधान, छह बर्खक कैद आ मुखदेवक मुक्ति

१. १५ अगस्त आ २६ जनवरीक दोहरी कालगणना

२. देशी जेलर : संस्थाक दीर्घजीविता

३. जेलक बहुस्वर : घनानन्द सँ रघुवरन धरि

४. भूदानक सूचना आ राजनीतिक आशा

५. छह बरखक अन्तराल : प्रतीक्षाक कथा-समय

६. मुक्ति : अन्तिम मंजिल कि पुनः आरम्भ

७. विद्यापति-पद्यक अन्तःस्थापन

चौबीसम कल्लोल — रिहाइ पाछाँ गामक अनुपस्थिति, खादी आ दलगत स्थानान्तरण

१. नहि लौटल मुखदेव : अनुपस्थितिक राजनीतिक उपयोग

२. दयाराम आ घेंघीक पारिवारिक कठिनाइ

३. अहिंसाक बुलेटिन आ हिंसाक व्यावहारिक प्रसङ्ग

४. डोम–मल्लिक श्रमिकक अपवाद

५. कुसियारक दर आ बाजार–राजनीति

६. शरणार्थी शिविर आ डोमी मिआँक स्मृति

७. पार्टी-परिवर्तन : सिद्धान्त कि टिकट

पच्चीसम कल्लोल — मुखदेवक मदुरै-स्वर, मौन चरखा आ नदी-राजनीति

१. मदुरैमे मुखदेवक उपस्थितिक विषमता

२. भाषणक बदला गीत : विधाक चयन

३. अनुवादक मध्यस्थ आ मैथिलीक स्वायत्तता

४. दल-सिद्धान्त आ स्वतंत्रताक काल

५. नदीक प्रवाह आ बान्हक मतभिन्नता

६. गुम्म चरखा : स्वतंत्रताक अधूर सुर

छब्बीसम कल्लोल — पटवाक ताना-भरनी, महेशक उद्यम आ कोसीक ऋण

१. तान–भरनीक संज्ञा : कारीगरक श्रम-दृश्य

२. पुरान लगान आ हाथीक बोझ

३. महेशक कौशलमे नव प्रयोग

४. बड़बरिया रॉयक भागिनक प्रशंसा-रणनीति

५. कोसीक अस्सी मोनक कोदारि

६. बान्ह : संरक्षण कि नव विपत्ति

७. पीअर बच्चाक टिकट आ राजनीति

सत्ताइसम कल्लोल — मोहन गबैय्या, दलगत मोड़ आ नटनियाक बहुस्वर

१. बान्ह आ धारक दोष : प्रश्नक दू धार

२. दलगत अधिवेशन आ समयक विडम्बना

३. मोहन गबैय्या : गायकसँ विचारक

४. वैदिक संगीत आ श्रमक पद

५. आकाशक विज्ञान आ प्रश्नात्मक पठन

६. नटनियाक गीत : हास्यसँ जाति आ प्रेम धरि

७. कथनक सीमा : ज्ञानक अति-विस्तार

अट्ठाइसम कल्लोल — अकाल–बाढ़िक दोहरा संकट, कोसीक गान आ बान्हक राजनीति

१. सुखायल पोखरि आ मुसहरक जीविका

२. बान्ह–छहरक विकासविरोधी विडम्बना

३. सीढ़ीनुमा खेती आ स्थानीय अनुकूलन

४. कोसीमैयाक गीत आ कष्टक सामूहिक भाषा

५. वृहत्तर लोकगीत-माला : कथनक बहुभाषी समय

६. रिंग-बान्हक प्रस्ताव आ असमान सुरक्षा

७. अधिग्रहण, मुआवजा आ सामाजिक सत्ता

८. सत्यनारायणक नाम आ राजनीतिक श्रेय

९. कोसी–कमलाक मिलन : नदीक जैविक बिम्ब

१०. दीर्घ विन्यासक सीमा आ उपलब्धि

उनतीसम कल्लोल — बाँधल अकासक लोकव्यङ्ग्य, कमला-गाथा आ धीरेन्द्रक पलायन

१. पाँचफुटिया बान्ह आ निकासक वास्तविक प्रश्न

२. मूसक बीहरि : पैघ संरचनाक छोट कमजोरी

३. कमलाक स्त्रीरूप आ लोकक नदी-ज्ञान

४. कोइलाबीरक भारी कुरहड़ि आ असम्भव सामर्थ्य

५. धीरेन्द्रक अतीन्द्रीय आकांक्षा

६. बौहुक प्रत्युत्तर : तर्कक लोकवाक्य

तीसम कल्लोल — गढ़ अरड़नेबा, रिंग-बान्ह आ भगताक प्रसिद्धि

१. गामक दू नाम : भूगोलक भीतर स्मृतिभेद

२. अपूर्ण रिंग-बान्हक अनन्त आश्वासन

३. निलहा गोरका सँ देशी बान्ह-नीति

४. अरुण झाक गरीब-अधिकार आ भूमिसम्पत्ति

५. धीरेन्द्रक अफवाह आ दिल्लीक मिलन

६. भादवक चारि मौसम-रूप

एकतीसम कल्लोल — धीरेन्द्रक वापसी, चमत्कारक राजनीतिक पूँजी आ बान्हक स्वप्न

१. मृत्युक स्त्रीरूपक पौराणिक त्रास

२. मायक विश्वास आ गामक अफवाह

३. प्रसिद्ध योगीक आगमन आ ग्राम-प्रतिष्ठा

४. बाढ़िक समाधानक छलाँग

५. स्त्री मुख्यमन्त्रीपर अपमानजनक टिप्पणी

६. मुखदेवक असहमति आ आश्रमक निमन्त्रण

७. चिन्नी कम मीठ : संवेदनाक क्षरण

बत्तीसम कल्लोल — मजदूरीक जादूबला दस्तावेज, मोहन गबैय्या आ ग्राम-नवजीवन

१. बड़बरिया बाबूक हाथी आ नव प्रकारक हिसाब

२. मजदूरीक लेखा : कागज पढ़बाक अधिकार

३. हाथीक भोजनसँ श्रमिक परिवार धरि

४. मोहनक लोकगाथा : उड़ैवाली गाय

५. राष्ट्रीय राजनीति आ दक्षिणक वैचारिक तुलना

६. बीज, कीटनाशक आ धानक बदलैत देह

७. जुड़नाइ–टुटनाइ : नेतृत्वक दीर्घ परीक्षा

८. घेंघीक दान आ दलित शिक्षा

९. शिक्षणक दू व्यवस्था : मन्दिरक परिधि

तैंतीसम कल्लोल — जनसुनबाही, मजदूरक हक आ लोकगायकक सार्वजनिक न्याय

१. सरकारी काजक नव अवसर आ नकद मजदूरी

२. जादू सँ अधिकार : शब्दक यात्रा

३. कामक सूचीमे स्त्री, बच्चा आ कमजोर देह

४. जनसुनबाही : सरकारी फाइलक सार्वजनिक परीक्षण

५. मोहनक गीत : श्रोता जोड़बाक शिल्प

६. दरक अन्तर आ गणनाक न्याय

७. एस.डी.ओ. आ परमानन्द : संस्थाक भीतरी असहमति

८. सूचनाक अधिकारक पूर्व–पश्चात् भेद

९. गुलामी–जिंजीर–जेल : मुक्तिक सूत्र

चौंतीसम कल्लोल — दिल्लीमे गढ़ नारिकेल, तीन पल्लव आ सहस्रशीर्षाक अनकहल कथा

१. प्रवासक नब ग्राम-भूगोल : गाम दिल्लीमे बसल

२. मॉल आ नेल्सन मंडेला मार्गक विडम्बना

३. स्वास्थ्यसेवा आ ठेगानाक वर्ग-विभाग

४. नौआक खुलल सैलून : श्रमक एक कुर्सी आ अएना

५. उमेशक जुत्ता-मरम्मति आ तालाक प्रतिकृति

६. धोबी दम्पति : गैराजमे काज आ निवास

७. श्रीमन्तक सफाइक ठेका : समुदाय आ मालिकीक नया स्तर

८. उच्च पेशा, पुरान पदानुक्रम आ असमान उपलब्धि

९. मायक चिट्ठी : महानगरसँ नैहरक सम्बन्ध

१०. माँछक गीत, जाल आ पोखरिक पारिस्थितिकी

११. धानक नामावली आ बीजक स्मृति

१२. मतदाता सूची आ ग्रामक अविभाजित स्मृति

१३. पलायनक कारण : सरकार, बान्ह आ शिक्षा

१४. दोसर पल्लवक बहस : खेल, जाति आ आधुनिक सञ्चार

१५. राजा दक्ष–ढोलनक गाथा : गढ़ नारिकेलक दोसर मूल

१६. गहूम, यूरिया आ मोहनक असहमति

१७. तेसर पल्लवक एक मुट्ठी चाउर

१८. सम्पूर्णता बनाम देहक एकरूपता

१९. मोहन गबैय्या, पुनर्जन्मक आशा आ शीर्षकक अनकहलपन

सहस्रशीर्षा — समस्त ३४ कल्लोलक समेकित साहित्यिक पुनर्मूल्याङ्कन

१. उपन्यासक रूप : बहुस्वरक सहस्रशीर्षा

२. मुखदेव, जागेश्वर आ कथनक स्मृति-काल

३. लोककथा आ आधुनिक यथार्थक प्रमाणगत अन्तर

४. जातिगत श्रम आ सामाजिक स्वायत्तता

५. स्त्रीक अनुभव : विवाह, शिक्षा, प्रतीक्षा आ भूमि

६. जल, बाढ़ि, अकाल आ विकासक विवाद

७. स्वाधीनता आ प्रतिनिधित्वक अन्तर्विरोध

८. लोकगीत : अलंकार नहि, स्मृतिक सक्रिय प्रणाली

९. सम्पत्तिक वस्तु : इनार, चरखा, ताना-भरनी आ कागज

१०. भाषाक अनेक रजिस्टर : गीत सँ लोकवाद धरि

११. अन्तिम दिल्ली-अध्याय : विस्थापनमे समुदाय

१२. अनकहल शीर्षकक अन्त : पूर्णता आ अपूर्णताक सहअस्तित्व

१३. शिल्पगत आलोचनात्मक आपत्ति आ समग्र निर्णय

खण्ड १२ — नव्य न्याय आ अपतटीय जुआ-जाल

मूल समीक्षा-पाण्डुलिपिसँ सूचीकृत शीर्षक : 130

अध्याय ००१ — गार्ह एन अरिकेलक प्रभात

अध्याय ००१ — निर्णायक पाठ-साक्ष्य

अध्याय ००२ — प्रमाणक छायाक अध्याय २

अध्याय ००२ — निर्णायक पाठ-साक्ष्य

अध्याय ००३ — प्रमाणक छायाक अध्याय ३

अध्याय ००३ — निर्णायक पाठ-साक्ष्य

अध्याय ००४ — प्रमाणक छायाक अध्याय ४

अध्याय ००४ — निर्णायक पाठ-साक्ष्य

अध्याय ००५ — प्रमाणक छायाक अध्याय ५

अध्याय ००५ — निर्णायक पाठ-साक्ष्य

अध्याय ००१–००५ : समेकित पाठ-तुलना

अध्याय ००६ — प्रमाणक छायाक अध्याय ६

अध्याय ००७ — प्रमाणक छायाक अध्याय ७

अध्याय ००८ — प्रमाणक छायाक अध्याय ८

अध्याय ००९ — प्रमाणक छायाक अध्याय ९

अध्याय ०१० — प्रमाणक छायाक अध्याय १०

अध्याय ००६–०१० : तुलनात्मक साहित्यिक पुनर्मूल्याङ्कन

अध्याय ०११ — प्रमाणक छायाक अध्याय ११

अध्याय ०१२ — प्रमाणक छायाक अध्याय १२

अध्याय ०१३ — प्रमाणक छायाक अध्याय १३

अध्याय ०१४ — अनुमानक जालक अध्याय १

अध्याय ०१५ — अनुमानक जालक अध्याय २

अध्याय ०११–०१५ : अन्तराध्यायिक आलोचनात्मक पुनर्मूल्याङ्कन

अध्याय ०१६ — अनुमानक जालक अध्याय ३

अध्याय ०१७ — अनुमानक जालक अध्याय ४

अध्याय ०१८ — अनुमानक जालक अध्याय ५

अध्याय ०१९ — अनुमानक जालक अध्याय ६

अध्याय ०२० — अनुमानक जालक अध्याय ७

अध्याय ०१६–०२० : अन्तराध्यायिक आलोचनात्मक पुनर्मूल्याङ्कन

अध्याय ०२१ — आह्वान-पत्र, समय-अन्तर आ पद्धतिक जीत

अध्याय ०२२ — रणनीति-पत्र, आत्मप्रतिपरीक्षण आ अनुमानक खेती

अध्याय ०२३ — औपचारिक प्रतिनिधित्व, पेशाक गरिमा आ पारिवारिक संकट

अध्याय ०२४ — मनोज–रजत–सुदीप : साक्ष्य, स्मृति आ दृश्य-प्रतिनिधित्व

अध्याय ०२५ — विशेषाधिकारक सीमा, स्वतंत्र समीक्षा आ प्रतिबिम्बक भेद

अध्याय ०२१–०२५ : अन्तराध्यायिक पुनर्मूल्याङ्कन

अध्याय ०२६ — मुहर, दैनिकी आ तथ्यक पृथक्करण

अध्याय ०२७ — उपमानक नक्शा : साम्यसँ पहिचान धरि असिद्ध यात्रा

अध्याय ०२८ — मानचित्रक आठ रेखा आ विफलता-शर्त

अध्याय ०२९ — प्रतिबिम्बक अखण्डता आ एक मिनटक विसङ्गति

अध्याय ०३० — मन्त्रालयक संशोधित रणनीति आ प्रमाणक माटि

अध्याय ०२६–०३० : अन्तराध्यायिक साहित्यिक पुनर्मूल्याङ्कन

अध्याय ०३१ — उपमानक नक्शाक अध्याय ५

अध्याय ०३२ — उपमानक नक्शाक अध्याय ६

अध्याय ०३३ — उपमानक नक्शाक अध्याय ७

अध्याय ०३४ — उपमानक नक्शाक अध्याय ८

अध्याय ०३५ — उपमानक नक्शाक अध्याय ९

अध्याय ०३१–०३५ : अन्तराध्यायिक साहित्यिक पुनर्मूल्याङ्कन

अध्याय ०३६ — उपमानक नक्शाक अध्याय १०

अध्याय ०३७ — उपमानक नक्शाक अध्याय ११

अध्याय ०३८ — उपमानक नक्शाक अध्याय १२

अध्याय ०३९ — उपमानक नक्शाक अध्याय १३

अध्याय ०४० — शब्दक कसौटीक अध्याय १

अध्याय ०३६–०४० : अन्तराध्यायिक साहित्यिक पुनर्मूल्याङ्कन

अध्याय ०४१ — विशेषाधिकारक वस्तु, स्वतंत्र तथ्य आ कथनक पहुँच

अध्याय ०४२ — मुहरबन्द दैनिकी, पुष्टिक भाषा आ तथ्यक मर्यादा

अध्याय ०४३ — पूरक चुनौती, निर्भरता-सारणी आ शब्दक न्यायिक प्रभाव

अध्याय ०४४ — प्रतिरक्षाक शब्द-संगति आ संकल्पनाक विसङ्गति

अध्याय ०४५ — आह्वान-पत्र, हैश-श्रृंखला आ अभिरक्षाक चारि आधार

अध्याय ०४१–०४५ : अन्तराध्यायिक साहित्यिक पुनर्मूल्याङ्कन

अध्याय ०४६ — मन्त्रालयक संशोधित शब्द-पञ्जी आ स्रोतक चारि स्तर

अध्याय ०४७ — विधिक मत, प्रतिरक्षाक आर्थिक दबाव आ संशोधनक पारदर्शिता

अध्याय ०४८ — तीन साक्षीक मानसिक अवस्था आ प्रमाणक पाँच स्तम्भ

अध्याय ०४९ — बारह विशेषाधिकार-विवादित प्रविष्टि आ पृथक्करणक नाट्य

अध्याय ०५० — मुहरबन्द लिफाफाक भीतर : पहुँच, प्रमाण आ अन्तिम सीमा

अध्याय ०४६–०५० : अन्तराध्यायिक पुनर्मूल्याङ्कन

अध्याय ०५१ — पर्याप्त खुला सार, छाया-साक्ष्य आ नौ बिन्दुक आदेश

अध्याय ०५२ — पद-वंशावली, विशाल प्रतिरक्षा-दल आ अनुवादक सीमा

अध्याय ०५३ — अठारह पाँचसँ अठारह बत्तीस : न्यूनतम अर्थापत्ति

अध्याय ०५४ — मन्त्रालयक विफलता-शर्त आ वैकल्पिक व्याख्याक अधिकार

अध्याय ०५५ — विधिक पूरक मत, प्रतिस्पर्धी परीक्षण आ शैलजाक स्वतन्त्र स्वर

अध्याय ०५१–०५५ : अन्तराध्यायिक पुनर्मूल्याङ्कन

अध्याय ०५६ — तीन साक्षी, अर्थापत्तिक न्यूनतम आधार आ प्रमाणक भाषा

अध्याय ०५७ — विशेषाधिकारक सीमा, मूल अभिलेख आ स्वतंत्र तथ्य

अध्याय ०५८ — गोपनीय अन्वेषण-दिशा, विफल विकल्प आ स्रोतक अभिलेख

अध्याय ०५९ — उच्चतम न्यायालयक पूरक चुनौती आ आवश्यकताक न्यायिक छानबीन

अध्याय ०६० — पाँच जीवित प्रस्ताव, विशाल प्रतिरक्षा-दल आ नकारात्मक परीक्षण

अध्याय ०५६–०६० : अन्तराध्यायिक तुलनात्मक मूल्याङ्कन

अध्याय ०६१ — चारि परीक्षण, अभिरक्षाक अन्तर आ राज्यक आत्मसंशोधन

अध्याय ०६२ — तीन प्रदाताक उत्तर, प्रतिकूल तथ्य आ वैकल्पिक परिचालन

अध्याय ०६३ — महान्यायवादीक सीमित मत आ विद्यानंदक निजी संकट

अध्याय ०६४ — तीन साक्षी आ शंका–आरोप–प्रमाणक पुनर्वर्गीकरण

अध्याय ०६५ — विशेषाधिकार, स्वतंत्र स्रोत आ अनुपलब्धिक अगिला प्रश्न

अध्याय ०६१–०६५ : अन्तराध्यायिक तुलनात्मक मूल्याङ्कन

अध्याय ०६६ — अनुपलब्धिक धारक अध्याय १

अध्याय ०६७ — अनुपलब्धिक धारक अध्याय २

अध्याय ०६८ — अनुपलब्धिक धारक अध्याय ३

अध्याय ०६९ — अनुपलब्धिक धारक अध्याय ४

अध्याय ०७० — अनुपलब्धिक धारक अध्याय ५

अध्याय ०६६–०७० : अन्तराध्यायिक तुलनात्मक मूल्याङ्कन

अध्याय ०७१ — अनुपलब्धिक धारक अध्याय ६

अध्याय ०७२ — अनुपलब्धिक धारक अध्याय ७

अध्याय ०७३ — अनुपलब्धिक धारक अध्याय ८

अध्याय ०७४ — अनुपलब्धिक धारक अध्याय ९

अध्याय ०७५ — गंगेश उपाध्यायक सूत्र

अध्याय ०७१–०७५ : अन्तराध्यायिक तुलनात्मक मूल्याङ्कन

अध्याय ०७६ — अनुपलब्धिक धारक अध्याय ११

अध्याय ०७७ — अनुपलब्धिक धारक अध्याय १२

अध्याय ०७८ — अनुपलब्धिक धारक अध्याय १३

अध्याय ०७९ — तर्कक वज्रक अध्याय १

अध्याय ०८० — तर्कक वज्रक अध्याय २

अध्याय ०७६–०८० : अन्तराध्यायिक तुलनात्मक मूल्याङ्कन

अध्याय ०८१ — तर्कक वज्रक अध्याय ३

अध्याय ०८२ — तर्कक वज्रक अध्याय ४

अध्याय ०८३ — तर्कक वज्रक अध्याय ५

अध्याय ०८४ — तर्कक वज्रक अध्याय ६

अध्याय ०८५ — तर्कक वज्रक अध्याय ७

अध्याय ०८१–०८५ : अन्तराध्यायिक तुलनात्मक मूल्याङ्कन

अध्याय ०८६ — तर्कक वज्रक अध्याय ८

अध्याय ०८७ — तर्कक वज्रक अध्याय ९

अध्याय ०८८ — तर्कक वज्रक अध्याय १०

अध्याय ०८९ — तर्कक वज्रक अध्याय ११

अध्याय ०९० — तर्कक वज्रक अध्याय १२

अध्याय ०८६–०९० : अन्तराध्यायिक तुलनात्मक मूल्याङ्कन

अध्याय ०९१ — तर्कक वज्रक तेरहम अध्याय : निर्णयक दुआरि

अध्याय ०९२ — निर्णयक प्रभातक पहिल अध्याय : न्याययोग्य वाक्य

अध्याय ०९३ — निर्णयक प्रभातक दोसर अध्याय : छह प्रश्नक परीक्षा

अध्याय ०९४ — निर्णयक प्रभातक तेसर अध्याय : घटायल रणनीति

अध्याय ०९५ — निर्णयक प्रभातक चारिम अध्याय : सीमा-स्वीकृतिक नैतिक लागत

अध्याय ०९१–०९५ : अन्तराध्यायिक तुलनात्मक मूल्याङ्कन

अध्याय ०९६ — निर्णयक प्रभातक अध्याय ५

अध्याय ०९६ : निर्णायक मूल पाठ-साक्ष्य

अध्याय ०९७ — निर्णयक प्रभातक अध्याय ६

अध्याय ०९७ : निर्णायक मूल पाठ-साक्ष्य

अध्याय ०९८ — निर्णयक प्रभातक अध्याय ७

अध्याय ०९८ : निर्णायक मूल पाठ-साक्ष्य

अध्याय ०९९ — निर्णयक प्रभातक अध्याय ८

अध्याय ०९९ : निर्णायक मूल पाठ-साक्ष्य

अध्याय १०० — गंगा पर निर्णयक उजास

अध्याय १०० : निर्णायक मूल पाठ-साक्ष्य

अध्याय ०९६–१०० : अन्तराध्यायिक तुलनात्मक मूल्याङ्कन

खण्ड १३ — गोहि सभक बीच जलसमाधि : त्रयी

मूल समीक्षा-पाण्डुलिपिसँ सूचीकृत शीर्षक : 302

अध्याय −१०० — शंख आ रजत

अध्याय −९९ — आत्मसिद्धि-वाद

अध्याय −९८ — के ऽ बनौलक ई जगत?

अध्याय −९७ — चिंतामणि रत्न

अध्याय −९६ — स्मृति-रक्षा

अध्याय −९५ — जलमग्न पाण्डुलिपि

अध्याय −९४ — चारि मुखक मौन

अध्याय −९३ — शंखक अन्तिम प्रश्न

अध्याय −९२ — जल-घड़ीक कै दी

अध्याय −९१ — चर्मकार टोलाक उजास

अध्याय −९० — बुधुआक जलसमाधि

अध्याय −८९ — पहिल राति, पहिल बाढ़ि

अध्याय −८८ — डाइनक आरोप

अध्याय −८७ — टोलाक द्वारपर

अध्याय −८६ — समयक गोहि

अध्याय −८५ — आमिलक आदेश

अध्याय −८४ — जंगलक मौन

अध्याय −८३ — सोनमा माझिन

अध्याय –८२ — पहिल कबड्डी

अध्याय –८१ — आक्रमणक छाया

अध्याय –८० — गीतक पहिल पाँति

अध्याय –७९ — क्षमाक पारी

अध्याय –७८ — पंजीक बाहर

अध्याय –७७ — बूढ़बाक मौन

अध्याय –७६ — नारिके ल पातक पहिल पाठ

अध्याय –७५ — तर्क क पहिल विद्रोह

अध्याय –७४ — गाछक रोग

अध्याय –७३ — मोहनक धुन

अध्याय –७२ — विवाहक साक्षी

अध्याय –७१ — महामारीक राति

अध्याय –७० — चन्ना गाछीक रोपाई

अध्याय –६९ — गज-ग्राहक कथा

अध्याय –६८ — अदालतक पहिल तारीख

अध्याय –६७ — परदेशक पुकार

अध्याय –६६ — स्त्री सभक राति-सभा

अध्याय –६५ — नकली भूतक जुलूस

अध्याय –६४ — सुखदेवक बदला

अध्याय –६३ — छापाखानाक पहिल पन्ना

अध्याय –६२ — राहतक प्रतीक्षा

अध्याय –६१ — आकाशक पुच्छलतारा

अध्याय –६० — अगिनक राति

अध्याय –५९ — दोसर बाढ़ि

अध्याय –५८ — तेसर बिपत्ति

अध्याय –५७ — साहेबक नोटबुक

अध्याय –५६ — स्वाधीनताक पुकार

अध्याय –५५ — स्वतंत्रताक भोर

अध्याय –५४ — जमींदारीक अन्त

अध्याय –५३ — बिजलीक पहिल दीप

अध्याय –५२ — सीमाक पुकार

अध्याय –५१ — हरित क्रान्तिक बीया

अध्याय –५० — आपातकालक अन्हार

अध्याय –४९ — सूखाक बरख

अध्याय –४८ — रेडियो आ टेलीविजनक अवाज

अध्याय –४७ — खाड़ी देशक बजार

अध्याय –४६ — सद्भावक परीक्षा

अध्याय –४५ — उदारीकरणक हवा

अध्याय –४४ — पहिल कम्प्यूटर

अध्याय –४३ — सुखल होइत धार

अध्याय –४२ — हाथक फोनक चमत्कार

अध्याय –४१ — शहरक बजार

अध्याय –४० — सूचनाक अधिकार

अध्याय –३९ — काजक गारंटी

अध्याय –३८ — इंटरनेटक जाल

अध्याय –३७ — स्क्रीनक पहिल छाया

अध्याय –३६ — अनदेखल ठगक पहिल आहट

अध्याय –३५ — देहक बजार खुजैत अछि

अध्याय –३४ — उज्ज्वलक स्वप्न

अध्याय –३३ — वकीलक कोटक छाया

अध्याय –३२ — समुद्रपारक साये

अध्याय –३१ — सत्यव्रतक मौन

अध्याय –३० — गोप कुमारक दस्तावेज

अध्याय –२९ — चन्द्रपालक सपना

अध्याय –२८ — राघवक कोड

अध्याय –२७ — आरुणिक निर्माण

अध्याय –२६ — देविकाक गीत

अध्याय –२५ — मीराक निजता

अध्याय –२४ — निशांतक बैंक

अध्याय –२३ — नन्दक जन्म

अध्याय –२२ — बारह सयक निकट

अध्याय –२१ — अनन्याक प्रश्न

अध्याय –२० — छपाकक पहिल हिसाब

अध्याय –१९ — सत्यव्रतक निर्णय

अध्याय –१८ — अनन्या आ नन्दक भेंट

अध्याय –१७ — शीशाक मीनारक जाल

अध्याय –१६ — बटुकनाथक अंतिम मोड़

अध्याय –१५ — चन्द्रपालक खाता

अध्याय –१४ — पुलक निर्माण

अध्याय –१३ — गोप कुमारक संकलन

अध्याय –१२ — चन्ना गाछीक कँ पकँ पी

अध्याय –११ — बूढ़बाक अन्तिम आशीर्वाद

अध्याय –१० — पुलपर पहिल छपाक

अध्याय –९ — जाँचक आरम्भ

अध्याय –८ — प्रमाणक बाहर आएब

अध्याय –७ — आधा-भूतक अनुभव

अध्याय –६ — गोप कुमारक अन्तिम पन्ना

अध्याय –५ — जालक उजागर होएब

अध्याय –४ — नामक अन्तिम सूची

अध्याय –३ — बारह सय बरखक पूर्णता

अध्याय –२ — अगिला पीढ़ीक वचन

अध्याय –१ — अन्तिम साक्षी

अध्याय ० — गढ़ नारिके ल: संक्षिप्त लोक-प्रस्तावना

अध्याय १ — चन्ना गाछीक कबड्डी

अध्याय २ — दहिन कातक गाम

अध्याय ३ — छपाकक हिसाब

अध्याय ४ — तीस नाम, तीन सय लाश

अध्याय ५ — तारीखक गोहि

अध्याय ६ — हार्वर्डक एथिक्स

अध्याय ७ — श्वासक भाव

अध्याय ८ — स्क्रीनक गोहि

अध्याय ९ — देहक बाजार

अध्याय १० — निजताक ब्लैकमेल

अध्याय ११ — धनक कारी नदी

अध्याय १२ — डार्क -जालपर नारिके ल पात

अध्याय १३ — सीलबन्द आवरण

अध्याय १४ — घर घुरबाक रस्ता

अध्याय १५ — नामक जल

अध्याय १६ — चन्ना गाछीक अदालत

अध्याय १७ — जीतक शोक

अध्याय १८ — खाली अदालत

अध्याय १९ — नामक अभिलेख

अध्याय २० — स्क्रीनक विरुद्ध पाठशाला

अध्याय २१ — निजताक शपथ

अध्याय २२ — हार्वर्डक दोसर भाषण

अध्याय २३ — बटुकनाथक खोज

अध्याय २४ — उपन्यास फेर शुरू

अध्याय २५ — मोन टांगल

अध्याय २६ — बटुकनाथ हरिहरनक यात्रा

अध्याय २७ — चन्द्रपाल बत्राक स्क्रीन

अध्याय २८ — राघव सिग्नलक चुप्पी

अध्याय २९ — लाउ किन-हंगक सपना

अध्याय ३० — धूर्त सभक भीतरक अदालत

अध्याय ३१ — हारल लोक सभक काज

अध्याय ३२ — तेसर कबड्डी

अध्याय ३३ — मोनक परीक्षा

अध्याय ३४ — सुनैत नदी

अध्याय ३५ — नामक देहरी

अध्याय ३६ — घर, भय, सपना

अध्याय ३७ — तीन कंकड़

अध्याय ३८ — नामक उच्चारण

अध्याय ३९ — बीजक शान्ति

अध्याय ४० — ओसक अक्षर

अध्याय ४१ — नामक नाव

अध्याय ४२ — भारक वृत्त

अध्याय ४३ — चलैत भार

अध्याय ४४ — पोतीक कापी

अध्याय ४५ — भीतरक हवा

अध्याय ४६ — उत्तराधिकारक अन्हार

अध्याय ४७ — गज-ग्राह आख्यान

अध्याय ४८ — पुकार

अध्याय ४९ — मौनक अभिलेख

अध्याय ५० — देहक बादक नाम

अध्याय ५१ — साक्षीक भार

अध्याय ५२ — अगिला आवाज

अध्याय ५३ — कटानक बादक बिहान

अध्याय ५४ — ठूँठक चारू कात

अध्याय ५५ — नगरपालिकाक पीयर सूचना-पत्र

अध्याय ५६ — स्मृतिक पहिल नक्शा

अध्याय ५७ — गंगेशक प्रश्न

अध्याय ५८ — चन्द्रपालक स्मारक-अनुप्रयोग

अध्याय ५९ — राघव सिग्नलक नव कोड

अध्याय ६० — सत्यव्रत मेहताक दोसर मौन

अध्याय ६१ — पहिल नाम-उत्सव

अध्याय ६२ — ठूँठमे हरियर बिंदु

अध्याय ६३ — गढ़ नारिकेल विरासत-परियोजना

अध्याय ६४ — स्मृति पर निविदा

अध्याय ६५ — ब्रूमक पुनरागमन

अध्याय ६६ — हार्वर्डक शोध-दल

अध्याय ६७ — मीरा आ दृष्टिक अधिकार

अध्याय ६८ — देविका बनाम श्रद्धांजलि-अनुप्रयोग

अध्याय ६९ — नामक चोरी

अध्याय ७० — पनिडुब्बीक गवाही

अध्याय ७१ — नकली भूतक जुलूस

अध्याय ७२ — चन्ना गाछीक हँसी

अध्याय ७३ — बटुकनाथक स्वप्न-दरबार

अध्याय ७४ — चन्द्रपालक पहिल स्वीकार

अध्याय ७५ — राघव सिग्नलक बिना नेटवर्क

अध्याय ७६ — लाउ किन-हंगक भारत-यात्रा

अध्याय ७७ — हवाई अड्डापर गोहि

अध्याय ७८ — सत्यव्रत आ लाउक मौन-संवाद

अध्याय ७९ — ब्रूमक दान-पत्र

अध्याय ८० — हरिहरनक संतान

अध्याय ८१ — बत्राक अधूरा नाम

अध्याय ८२ — अंदरक गज-ग्राह

अध्याय ८३ — नारिकेल पात पाठशाला

अध्याय ८४ — पहिल पाठ: उपस्थित

अध्याय ८५ — स्त्री सभक राति-सभा

अध्याय ८६ — मजदूरक पाँव

अध्याय ८७ — स्क्रीनक उपवास

अध्याय ८८ — ईराक पत्र विदेशक बच्चा सभकेँ

अध्याय ८९ — सत्यव्रतक जन-सुनवाई

अध्याय ९० — नामक संविधान

अध्याय ९१ — धूर्त सभक अनुपस्थिति

अध्याय ९२ — ठूँठक छाँह

अध्याय ९३ — पुनः बाढ़ि

अध्याय ९४ — गोहि सभक वापसी

अध्याय ९५ — लाउ किन-हंगक अंतिम सौदा

अध्याय ९६ — बटुकनाथक देर-सँ-आयल क्षमा

अध्याय ९७ — चन्द्रपालक म्यूल अकाउण्ट

अध्याय ९८ — राघवक अंतिम संदेश

अध्याय ९९ — सत्यव्रत मेहताक गवाही

अध्याय १०० — गज, ग्राह, आ बच्चाक हाथ

अध्याय १०१ — अनाम ग्रहक स्वप्न-आमन्त्रण

अध्याय १०२ — स्वप्नमे ग्रहक बीच कबड्डी

अध्याय १०३ — स्वप्नक अनाम ग्रहपर नाम-पाठ

अध्याय १०४ — जागरण: गढ़ नारिकेल पृथ्वी चुनैत अछि

अध्याय १०५ — पृथ्वीक पहिल पहरा

अध्याय १०६ — बीजक गवाही

अध्याय १०७ — बीजक चोरी

अध्याय १०८ — माटिक मुँह

अध्याय १०९ — जलक स्मृति

अध्याय ११० — आगिक साक्षी

अध्याय १११ — वायुक प्रश्न

अध्याय ११२ — आकाशक रिक्ति

अध्याय ११३ — शब्दक देह

अध्याय ११४ — अर्थक आत्मा

अध्याय ११५ — कण्ठक पहरा

अध्याय ११६ — मौनक उत्तराधिकार

अध्याय ११७ — स्मृतिक ऋण

अध्याय ११८ — देहक अधिकार

अध्याय ११९ — श्रमक देह

अध्याय १२० — न्यायक देह

अध्याय १२१ — जातिक पिंजरा

अध्याय १२२ — गंगेशक मुक्ति

अध्याय १२३ — तत्त्वचिन्तामणिक पात

अध्याय १२४ — प्रमाणक अग्नि

अध्याय १२५ — माटिक निर्णय

अध्याय १२६ — अन्नक न्याय

अध्याय १२७ — भूखक नाम

अध्याय १२८ — प्यासक नाम

अध्याय १२९ — नूनक शपथ

अध्याय १३० — स्वादक न्याय

अध्याय १३१ — साझा थारी

अध्याय १३२ — रसोइक गणराज्य

अध्याय १३३ — विदेह नाट्य उत्सवक बुलाहट

अध्याय १३४ — कबड्डी खेलनिहार सभक नाट्य-पाठ

अध्याय १३५ — विदेह नाट्य उत्सवक मंचन

अध्याय १३६ — तालीक बादक सन्नाटा

अध्याय १३७ — दर्शकक गवाही

अध्याय १३८ — मंचसँ बाहरक जुलूस

अध्याय १३९ — बाटक रंगमंच

अध्याय १४० — चल चौपाल

अध्याय १४१ — बरामदाक फैसला

अध्याय १४२ — रेकर्ड-घरक अन्हार

अध्याय १४३ — रद्दी बोराक गवाही

अध्याय १४४ — नामक यात्रा

अध्याय १४५ — डरक पहिल दरार

अध्याय १४६ — मुहरक दाग

अध्याय १४७ — घर-घरक दस्तक

अध्याय १४८ — मिलावटक पहिचान

अध्याय १४९ — जालक नक्शा

अध्याय १५० — मुहरक छाया

अध्याय १५१ — मुहर चलौनिहार हाथ

अध्याय १५२ — आदेशक स्रोत

अध्याय १५३ — संकेतक पाछाँ नाम

अध्याय १५४ — बाबाक वचन

अध्याय १५५ — सेवाक खाता

अध्याय १५६ — दानक ऋण

अध्याय १५७ — लोहेक संदूक

अध्याय १५८ — सहमति-कापीक मिलान

अध्याय १५९ — मृतकक सहमति

अध्याय १६० — गोदामक छाया

अध्याय १६१ — फोनक कैद

अध्याय १६२ — आवाजक मोहर

अध्याय १६३ — हटायल कागजक निशान

अध्याय १६४ — चन्द्रपालक छायाक पेट

अध्याय १६५ — छायाक देह

अध्याय १६६ — इमली घाटक कोठार

अध्याय १६७ — नदी पारक आवाज

अध्याय १६८ — शहरक गला

अध्याय १६९ — चन्द्र दूक दरबज्जा

अध्याय १७० — चन्द्र एकक खोल

अध्याय १७१ — चन्ना गाछीक अदृश्य अदालत

अध्याय १७२ — गाँठक पढ़नाइ

अध्याय १७३ — पंजीक पहरा

अध्याय १७४ — अदृश्य अदालतक चौखट

अध्याय १७५ — मुहरबाहकक नाम

अध्याय १७६ — सेवा-समारोहक अन्हार

अध्याय १७७ — घर-घरक कागज

अध्याय १७८ — ऊपरक कोठरी

अध्याय १७९ — मुहरक पगचिन्ह

अध्याय १८० — शहरक खाता

अध्याय १८१ — सिमक छाया

अध्याय १८२ — हरिहर सेवा केंद्रक दरबाजा

अध्याय १८३ — फोनक भीतरक चेहरा

अध्याय १८४ — आवाजक नकाब

अध्याय १८५ — मास्टरक कमरा

अध्याय १८६ — मधवेशक असली नाम

अध्याय १८७ — छत्ताक भीतरक रानी

अध्याय १८८ — महेश्वरक मुहर

अध्याय १८९ — लोहेक पेटी

अध्याय १९० — नील पंजी

अध्याय १९१ — ध्रुवेशक कुर्सी

अध्याय १९२ — बन्द रेकॉर्डरक स्वर

अध्याय १९३ — आवाजक चेहरा

अध्याय १९४ — साँसक समन

अध्याय १९५ — रोकल खाता

अध्याय १९६ — जलसमाधिक अर्थ

अध्याय १९७ — ऊपर उठल नाम

अध्याय १९८ — अपराधीक धरती

अध्याय १९९ — संदूकक भीतरक बिहान

अध्याय २०० — नामक पहरुआ

अध्याय ५७–२००क पूरक दार्शनिक पञ्जी

खण्ड १४ — अनुवादक

मूल समीक्षा-पाण्डुलिपिसँ सूचीकृत शीर्षक : 162

सारांश

१. अध्ययनक क्षेत्र, पाठ-परिधि आ पद्धति

२. उपन्यासक केन्द्रीय प्रतिपाद्य: अनुवाद शब्दक नहि, उत्तरदायित्वक

३. आठ खण्डमे कथात्मक स्थापत्य

४. सभ १०० अध्यायक रचना-मानचित्र आ आलोचनात्मक लेखा

५. भारतीय काव्यशास्त्रीय समीक्षा

५.१ रस: भय, लज्जा, करुणा, शान्ति आ नैतिक जुगुप्सा

५.२ ध्वनि: शब्दक नीचे चलैत दोसर कथा

५.३ वक्रोक्ति आ पुनरावृत्ति

५.४ औचित्य: नैतिक आ भाषिक मितव्ययिता

६. पाश्चात्य कथाशास्त्रीय समीक्षा

६.१ त्रासदीक दोष नहि, क्रमिक नैतिक विचलन

६.२ बहुस्वरता आ सामाजिक भाषा

६.३ दृष्टिबिन्दु, समय आ पुनरागमन

६.४ नैतिक आत्म-पहिचान

६.५ यथार्थवाद: दस्तावेजी वस्तु आ दैनिक विवरण

७. नव्य-न्यायीय समीक्षा

७.१ प्रमाणक चारि आधार आ उपन्यास

७.२ प्रत्यक्ष: देखल बातक मर्यादा

७.३ अनुमान आ व्याप्तिक संकट

७.४ शब्द-प्रमाण: वक्ता, प्रसंग आ विश्वसनीयता

७.५ उपमान: समानता संकेत, सिद्धि नहि

७.६ अनुपस्थित अपेक्षित चिह्न: नव्य-न्यायीय नकारात्मक परीक्षण

७.७ “दू नव्य न्याय”

८. विदेह समानान्तर ऐतिहासिक पद्धति सँ पठन

९. चरित्र-समीक्षा

९.१ शशांक झा: सूक्ष्मबुद्धि, भूख, गर्व आ आत्म-सीमा

९.२ मृणाल कर्ण: मित्र नहि, सममित कसौटी

९.३ जुलियाना: पकड़बासँ स्थान देबाक पाठ

९.४ राघव भसीन: विधिक सीमा आ पेशागत मौन

९.५ आदित्य मिश्र आ दोसरा गामक जांचकर्ता: संस्थागत विवेक

१०. भाषा, शैली आ कथन-तकनीक

११. उपन्यासक भाषिक गठन आ शैली

१२. रचनाक प्रमुख कलात्मक उपलब्धि

१३. रचनाक शिल्पगत सीमा

१४. समेकित साहित्यिक मूल्याङ्कन

१५. निष्कर्ष

अध्याय १ — मिथिलाक अनुवादक : भाषिक स्वप्नक भीतर सामाजिक अभाव आ नैतिक पूर्वाभास

अध्याय २ — तीन पोथीक पाठ : ध्वनि, आशय आ साक्ष्यक प्रशिक्षण

अध्याय ३ — मिथिलासँ दिल्ली ३ : संदिग्ध भुगतानक कागज, अस्वीकार आ मित्रताक आरम्भ

अध्याय ४ — मिथिलासँ दिल्ली ४ : मकाऊक उजास आ चयनित मौनक प्रथम दरार

अध्याय ५ — मिथिलासँ दिल्ली ५ : विधिक गोपनीयता, मूल पाठ आ अनुवादकक सहभागिताक सीमा

अध्याय १–५ : अन्तराध्यायिक आलोचनात्मक तुलना — शिष्यसँ सीमासचेत अनुवादक धरि

अध्याय ६ — मिथिलासँ दिल्ली ६ : ‘ऊपर’ शब्दक द्विविधा आ समानान्तर प्रशासनिक प्रत्यक्ष

अध्याय ७ — मिथिलासँ दिल्ली ७ : प्रश्नचिह्नक प्रचार, नामक उपस्थितिक भ्रम आ आत्मबचावक सत्य

अध्याय ८ — लाल किलाक चीनी पर्यटक : निषेधक विलोपन, प्रत्यानयन आ न्यायालयक सीमित निष्कर्ष

अध्याय ९ — मिथिलासँ दिल्ली ९ : समन, जब्ती-पञ्जी आ जाँचक कक्षमे ज्ञानक विनम्रता

अध्याय १० — मिथिलासँ दिल्ली १० : भाषिक विशेषज्ञता, लाभकारी स्वामित्व आ अर्थ रोकबाक क्षमता

अध्याय ६–१० : अन्तराध्यायिक तुलनात्मक अध्ययन — दुहरी मेज, कालभंग आ भाषाक अधिकारक सीमा

अध्याय ११ — मिथिलासँ दिल्ली ११ : धनक गति, प्रमाणक सीमा आ प्रशंसाक गुप्त प्रलोभन

अध्याय १२ — मिथिलासँ दिल्ली १२ : मकाऊक दोसर यात्रा, देखल सीमा पार करब आ चयनित मौन

अध्याय १३ — पितमपुराक ताओ मंदिर : स्वरक अभ्याससँ गोपनीयता आ आत्मस्वीकृतिक द्वार

अध्याय १४ — भाषाक साधना १ : शब्द-प्रमाण, अनाम आदेश आ विलम्बित स्वीकारोक्ति

अध्याय १५ — भाषाक साधना २ : समाचारक आधा-सत्य, मुहरबन्द अभिलेख आ अपमानक उत्तर

अध्याय ११–१५ : अन्तराध्यायिक तुलनात्मक अध्ययन — धनक प्रवाहसँ सार्वजनिक कथन धरि

अध्याय १६ — भाषाक साधना ३ : न्यायालयमे शब्दक परीक्षा आ त्रुटिक सीमित स्वीकार

अध्याय १७ — भाषाक साधना ४ : श्रुत साक्ष्य, यन्त्र-प्रतिलिपि आ अपरिहार्य बनबाक लोभ

अध्याय १८ — भाषाक साधना ५ : नामक पद, लाभकारी स्वामित्व आ ज्ञानक अनधिकृत विस्तार

अध्याय १९ — भाषाक साधना ६ : वित्तीय नामकरण आ मित्रताक स्वतन्त्र प्रतिपरीक्षा

अध्याय २० — जुलियानाक पाठ : प्रवेशक सीमित अधिकार आ इच्छाक सही नाम

अध्याय १६–२० : अन्तराध्यायिक तुलनात्मक अध्ययन — प्रतिपरीक्षा, स्वामित्व आ नैतिक अधिकार

अध्याय २१ — भाषाक साधना ८ : गोपनीय परामर्शमे सुनल शब्द, व्याख्याक सीमा आ साक्षीक नैतिक स्थिति

अध्याय २२ — भाषाक साधना ९ : संस्थागत वाक्यक स्रोत, अज्ञात आदेश आ विश्वासघातक अनुभूति

अध्याय २३ — भाषाक साधना १० : समाचारक निर्मित सम्बन्ध, अपमानक ताप आ आत्मरक्षाक प्रमाण-सीमा

अध्याय २४ — भाषाक साधना ११ : शपथक साम्हिन कर्ताक जोड़, अतिशयोक्ति आ प्रायश्चितक आलोचनात्मक अर्थ

अध्याय २५ — भाषाक साधना १२ : जब्त डिजिटल पाठ, हित-संघर्ष आ आवश्यक बनबाक इच्छाक आत्मपरीक्षण

अध्याय २१–२५ : अन्तराध्यायिक तुलनात्मक अध्ययन — मौनक गोपनीयता सँ आत्मस्वीकृतिक जाँचनीय भाषा धरि

अध्याय २६ — भाषाक साधना १३ : प्रतिनिधित्वक पद, लाभकारी स्वामित्वक सीमा आ भाषिक गर्वक नव रूप

अध्याय २७ — कॉन्ट्रैक्ट आ छाया १ : मरम्मतक कार्यसूची, तेसर भुगतान-खाता आ उपमानक प्रत्यक्ष परीक्षा

अध्याय २८ — नोएडाक पहिल कॉन्ट्रैक्ट : पूर्ण भेल श्रम, अस्थायी प्रवेश आ पुरान लोभक नब संरचना

अध्याय २९ — कॉन्ट्रैक्ट आ छाया ३ : समन्वय-सहायताक अस्पष्टता, गोपनीयताक सीमा आ भयक भाषा

अध्याय ३० — कॉन्ट्रैक्ट आ छाया ४ : ‘सिद्ध नहि’क कटौती, आधा उद्धरण आ संस्थागत विश्वासघातक प्रश्न

अध्याय २६–३० : अन्तराध्यायिक तुलनात्मक अध्ययन — नामक सम्बन्धसँ व्यापारक छाया आ आधा उद्धरण धरि

अध्याय ३१ — कॉन्ट्रैक्ट आ छाया ५ : प्रश्नचिह्नक आरोप, पदबंधक बहुस्रोत आ अपमानक सीमित प्रतिवाद

अध्याय ३२ — कॉन्ट्रैक्ट आ छाया ६ : न्यायालयमे अनुवादक एकरूपताक स्वीकारोक्ति आ स्रोत-पहिचानक मर्यादा

अध्याय ३३ — कॉन्ट्रैक्ट आ छाया ७ : जब्ती-पञ्जीक सूक्ष्म भाषा, डिजिटल अभिलेख आ अपरिहार्य बनबाक व्यसन

अध्याय ३४ — कॉन्ट्रैक्ट आ छाया ८ : प्रतिनिधि, भुगतान-पाबनिहार, निर्णय-अधिकार आ स्वामित्वक अलग संसार

अध्याय ३५ — गुंडाक फोन : दबावक प्रत्यक्ष शब्द, भयक मानसिक कथा आ मित्रताक साक्षी

अध्याय ३१–३५ : अन्तराध्यायिक तुलनात्मक अध्ययन — प्रकाशित शब्दसँ अज्ञात स्वर धरि उपमानक परीक्षा

अध्याय ३६ — कॉन्ट्रैक्ट आ छाया १० : मकाऊक परीक्षण-पटल आ अधिक देखबाक अनधिकृत इच्छा

अध्याय ३७ — कॉन्ट्रैक्ट आ छाया ११ : गोपनीयता-धाराक फैलाव, विधिक परामर्श आ लिखित अधिकारक पुनर्सीमा

अध्याय ३८ — कॉन्ट्रैक्ट आ छाया १२ : निचला प्रश्नावली, उपरका सारांश आ ‘विश्वासघात’ शब्दक भार

अध्याय ३९ — कॉन्ट्रैक्ट आ छाया १३ : मुहरबन्द अनुक्रमणिका, समाचारक अर्ध-स्रोत आ अपमानक प्रतिपरीक्षा

अध्याय ४० — कैंटनिजक केवाड़ी १ : दू व्यापारिक प्रसंगक भेद, नरम अनुवादक स्वीकारोक्ति आ नव खण्डक प्रवेश

अध्याय ३६–४० : अन्तराध्यायिक तुलनात्मक अध्ययन — सीमा लिखबाक साधनसँ पेशागत प्रायश्चितक अदालत धरि

अध्याय ४१ — कैंटनिजक केवाड़ी २ : जब्त उपकरणक भाषा, अभिलेखक मूल रूप आ महत्त्वाकांक्षाक आत्मपरीक्षा

अध्याय ४२ — VIVOक गेट : भाषिक प्रतिनिधित्वक स्वामित्वसँ भेद आ नाम-सादृश्यक तर्कपरीक्षा

अध्याय ४३ — कैंटनिजक केवाड़ी ४ : भुगतान-द्वारक अधूरा संकेत आ मित्रताक निष्पक्षता

अध्याय ४४ — कैंटनिजक केवाड़ी ५ : मकाऊक ‘विशेष पहुँच’ आ इच्छाक कारणसँ बदलैत अनुवाद

अध्याय ४५ — कैंटनिजक केवाड़ी ६ : कानूनी गोपनीयताक नाम, संचालनक स्वभाव आ भयक नैतिक उपयोग

अध्याय ४१–४५ : अन्तराध्यायिक तुलनात्मक अध्ययन — भाषा-विशेषाधिकारसँ प्रमाणक समरूप कसौटी धरि

अध्याय ४६ — कैंटनिजक केवाड़ी ७ : संशोधित आयुक्तालयी सारांश आ संस्थागत विश्वासघातक असिद्ध अनुभूति

अध्याय ४७ — कैंटनिजक केवाड़ी ८ : कतरल पंक्ति, समाचारक पूर्वनिर्णय आ अपमानक संयम

अध्याय ४८ — मैंडरिन सँ कैंटनिज धरि : बहुस्तरीय अनुवादक न्यायालयीय परीक्षा

अध्याय ४९ — कैंटनिजक केवाड़ी १० : पूरक बयानमे स्वयं बढ़ाओल भूमिका आ उपकरणक स्रोत-विवेक

अध्याय ५० — जुआ ऐपक vendor : ली वेनचाओक परिचय, अर्थक नरमी आ मृणालक प्रति आधा-सत्य

अध्याय ४६–५० : अन्तराध्यायिक तुलनात्मक अध्ययन — संस्थागत कतरनसँ आत्मस्वीकृतिक अधूरा वाक्य धरि

अध्याय ५१ — कैंटनिजक केवाड़ी १२ : मित्रताक दोसर बयान आ भुगतानक प्रमाण-सीमा

अध्याय ५२ — कैंटनिजक केवाड़ी १३ : मकाऊक इजोत, अतिथि-प्रवेश आ बढ़ाओल अधिकारक आत्मजाँच

अध्याय ५३ — मकाऊक दर्पण १ : गोपनीय मुहर, अर्थापत्ति आ विधिक सलाहक वास्तविक सीमा

अध्याय ५४ — मकाऊक दर्पण २ : दू संस्करण, सुरक्षित आरक्षण आ संस्थागत मौनक राजनीति

अध्याय ५५ — मकाऊक दर्पण ३ : मुहरबन्द मूल, समाचारक रूपान्तर आ सार्वजनिक अपमानक व्याकरण

अध्याय ५१–५५ : अन्तराध्यायिक तुलनात्मक अध्ययन — मित्रक बयानसँ समाचारक पाठान्तर धरि

अध्याय ५६ — मकाऊक दर्पण ४ : सीमित न्यायालयीय प्रतिपरीक्षा आ प्रायश्चितक प्रमाण-मर्यादा

अध्याय ५७ — मकाऊक दर्पण ५ : पुरान उपकरणक अंकीय स्मृति आ आत्मप्रचारक लेखकत्व

अध्याय ५८ — वकील जे चीनी नहि बुझैत : मूल-पाठपर निर्भरता, भाषिक सत्ता आ उधारक भरोसा

अध्याय ५९ — मकाऊक दर्पण ७ : भुगतान-द्वारक अधूरा नक्शा आ मित्रताक स्वतंत्र गवाही

अध्याय ६० — मकाऊक दर्पण ८ : दोसर यात्रा, अस्थायी प्रवेश आ भीतरक लोक बनबाक लोभ

अध्याय ५६–६० : अन्तराध्यायिक तुलनात्मक अध्ययन — अदालतक मौनसँ अस्थायी पटल धरि

अध्याय ६१ — मकाऊक दर्पण ९ : कानूनी गोपनीयताक सूची आ अनुवादमे स्वीकृतिक मिथ्या विस्तार

अध्याय ६२ — मकाऊक राति : आरक्षण-पत्र, समय-क्रम आ विश्वासघातक असिद्ध नाम

अध्याय ६३ — मकाऊक दर्पण ११ : मुहरबन्द पाठक समाचार-वंश आ प्रतिष्ठाक घाव

अध्याय ६४ — मकाऊक दर्पण १२ : प्रतिपरीक्षामे आत्मस्वीकृति आ अपराध-सिद्धिक सीमा

अध्याय ६५ — मकाऊक दर्पण १३ : अंकीय प्रतिरूपमे आत्मविस्तारक हस्ताक्षर

अध्याय ६१–६५ : अन्तराध्यायिक तुलनात्मक अध्ययन — अर्थक सीमा, अभिलेखक वंश आ महत्त्वाकांक्षाक डिजिटल रूप

अध्याय ६६ — भोज, देवता, अपमान १ : मंचक प्रतिभा, खर्चक रिक्त स्तम्भ आ स्वामित्वक अनिर्णय

अध्याय ६७ — भोज, देवता, अपमान २ : मृणालक उपस्थिति, मित्रताक उपयोग आ धन-सम्बन्धक सीमा

अध्याय ६८ — भोज, देवता, अपमान ३ : विशेष पहुँचक मोह आ अतिथि-अधिकारक वास्तविक सूची

अध्याय ६९ — भोज, देवता, अपमान ४ : वकीलक नामक कवच आ अधिकारक सीमांकन

अध्याय ७० — हवाला आ बिटकॉइन : प्रश्नचिह्नक भाषा आ कर-अभिलेखक समानान्तर इतिहास

अध्याय ६६–७० : अन्तराध्यायिक तुलनात्मक अध्ययन — भोजक दृश्य-सत्ता सँ वित्तीय प्रश्नचिह्न धरि

अध्याय ७१ — भोज, देवता, अपमान ६ : प्रश्नचिह्नक लोप, चित्रक दुरुपयोग आ अपमानक प्रमाण-सीमा

अध्याय ७२ — भोज, देवता, अपमान ७ : स्वीकृत नैतिक कपट आ न्यायालयीय प्रमाणक अलग सीमा

अध्याय ७३ — भोज, देवता, अपमान ८ : अंकीय लेखकत्व, प्राप्त संचिका आ आत्मप्रचारक लम्ब छाया

अध्याय ७४ — भोज, देवता, अपमान ९ : करारक पदवी, भुगतान-पथ आ लाभकारी स्वामित्वक रिक्त स्तम्भ

अध्याय ७५ — भोज, देवता, अपमान १० : तीन आद्याक्षर, मृणालक प्रतिपूर्ति आ मित्रताक स्वतंत्र प्रमाण

अध्याय ७१–७५ : अन्तराध्यायिक तुलनात्मक अध्ययन — सार्वजनिक आरोपसँ मित्रक स्वतंत्र पहचान धरि

अध्याय ७६ — जन्मदिनक मंच : विशेष पहुँचक विशेषण आ अस्थायी अतिथि-अधिकारक अन्तर

अध्याय ७७ — भोज, देवता, अपमान १२ : राघव भसीनक नाम, गोपनीय सलाह आ व्यापारिक वाक्यक अनधिकृत स्वीकृति

अध्याय ७८ — भोज, देवता, अपमान १३ : निचला आरक्षणक क्रमिक नरमी आ रिक्त संशोधन-कारण

अध्याय ७९ — समझौताक दरार १ : योग्य-अनुपलब्धि, अभिलेखक विश्वसनीयता आ समाचारिक मिथ्या चित्र

अध्याय ८० — समझौताक दरार २ : न्यायालयमे अभावक योग्यता आ प्रायश्चितक समान कसौटी

अध्याय ७६–८० : अन्तराध्यायिक तुलनात्मक अध्ययन — विशेषणक लोभसँ योग्य-अनुपलब्धिक न्यायालयीय परीक्षा धरि

अध्याय ८१ — समझौताक दरार ३ : अंकीय प्रतिलिपिक मौन, आत्मप्रचार आ सीमित नकारात्मक प्रमाण

अध्याय ८२ — समझौता कएल एजेंसी : स्वामित्व-कोष्ठक, प्राप्ति-पञ्जी आ दावाक दोसर जीवन

अध्याय ८३ — समझौताक दरार ५ : ‘एम.के.-२’, मित्रक नाँव आ आर्थिक आरोपक प्रमाण-व्याप्ति

अध्याय ८४ — समझौताक दरार ६ : मकाऊक आगन्तुक-पास आ प्रशासनिक सत्ता-सदृश भ्रम

अध्याय ८५ — समझौताक दरार ७ : विधिक विशेषाधिकारक सीमा आ भयक नैतिक अर्थ

अध्याय ८१–८५ : सतरहम अन्तराध्यायिक तुलनात्मक अध्ययन — अभिलेखक अनुपलब्धिसँ व्यक्तिक अधिकार-सीमा धरि

अध्याय ८६ — समझौताक दरार ८ : संस्थागत प्रतिरोधक घटैत धार आ नर्म अनुवादक नैतिक उत्तरदायित्व

अध्याय ८७ — समझौताक दरार ९ : मुहरबन्द सामग्रीक नाम पर सार्वजनिक निश्चितताक निर्माण

अध्याय ८८ — दोसरा गामक जाँचकर्ता : गंगेशीय कसौटीक नायक-विरुद्ध प्रयोग

अध्याय ८९ — समझौताक दरार ११ : निर्णायक बनबाक महत्त्वाकांक्षा आ समकालीन अभिलेखक प्रतिरोध

अध्याय ९० — समझौताक दरार १२ : एके भाषिक सारक बहुगुणित प्रतिध्वनि आ स्वामित्वक भ्रम

अध्याय ८६–९० : अठारहम अन्तराध्यायिक तुलनात्मक अध्ययन — प्रतिरोधक नर्मी, समाचारक निश्चय आ प्रतिध्वनिक प्रमाण-दोष

अध्याय ९१ — समझौताक दरार १३ : धनक कथित परत, मृणालक प्रमाण-स्वातन्त्र्य आ निर्णयक पूर्वपीठिका

अध्याय ९२ — दोस्ती सँ दुश्मनी : समान भाषा सँ उत्पन्न पक्षधरता-भ्रम आ न्याय-विवेक

अध्याय ९३ — दू नव्य न्याय २ : राघवक संरक्षित सलाह आ अनुवादकक उधारक मुहर

अध्याय ९४ — दू नव्य न्याय ३ : शाखाक बदलल सारांश आ संस्थागत निर्णयक सीमाबोध

अध्याय ९५ — दू नव्य न्याय ४ : सार्वजनिक आरोपक चारि प्रमाण-वर्ग आ अपमानक कठिन निर्णय

अध्याय ९१–९५ : उन्नैसम अन्तराध्यायिक तुलनात्मक अध्ययन — अनुपलब्धिक पाठसँ समदर्शी निर्णय धरि

अध्याय ९६ — मिथ्या आरोप : स्वीकृत कपट आ असिद्ध अभियोगक सीमा

अध्याय ९७ — दू नव्य न्याय ६ : पूरक बयान, डींगक प्रमाण-मूल्य आ निर्णयक आकार

अध्याय ९८ — दू नव्य न्याय ७ : ‘स्वामी’ शब्दक पाँच सम्बन्ध आ करारक बहुस्तरीय स्रोत

अध्याय ९९ — नव्य-न्यायक अंतिम परीक्षा : मित्रताक नामपर समान कसौटी

अध्याय १०० — अनुवादकक निर्णय : सीमित न्यायिक निष्कर्ष आ भाषाक नैतिक पुनर्जन्म

अध्याय ९६–१०० : अन्तिम पाँच अध्यायक अन्तराध्यायिक तुलनात्मक समीक्षा — आरोपसँ निर्णय धरि

समग्र साहित्यिक मूल्याङ्कन : भाषा, सत्ता आ प्रमाण

नव्य न्याय आ अन्तिम न्यायिक निष्कर्षक अर्थ

आख्यानशिल्प, पुनरावृत्ति आ सामाजिक दृष्टि

अन्तिम सम्पादकीय निर्णय

बिबलियोग्राफी

खण्ड १५ — जल-पाँजि

मूल समीक्षा-पाण्डुलिपिसँ सूचीकृत शीर्षक : 70

भाग ३ · जल-पाँजिक प्रमाणित अध्याय-पञ्जी

भाग ४ · जल-पाँजि : पहिल पाँच अध्यायक मूल पाठाधारित साहित्यिक समीक्षा

अध्याय १ — कुसहा

अध्याय २ — पोथीक गट्ठर

अध्याय ३ — पँजीकारक विधि

अध्याय ४ — कोसी — १

अध्याय ५ — तीन नाम

अन्तराध्यायिक तुलनात्मक अध्ययन · अध्याय १–५

भाग ५ · दोसर बैचक साहित्यिक समीक्षा : अध्याय ६–१०

अध्याय ६ — मोहनक फोन

अध्याय ७ — कैम्प

अध्याय ८ — मेटाओल पाँति

अध्याय ९ — धरती हिलल

अध्याय १० — साक्षी एक: पुरोहित

अन्तराध्यायिक तुलनात्मक अध्ययन · अध्याय ६–१०

भाग ६ · तेसर बैचक साहित्यिक समीक्षा : अध्याय ११–१५

अध्याय ११ — साक्षी दुइ: भौजी

अध्याय १२ — कोसी — २

अध्याय १३ — साक्षी तीन: हरवाह

अध्याय १४ — साक्षी चारि: पँजीकार

अध्याय १५ — जे लिखल नहि गेल

अन्तराध्यायिक तुलनात्मक अध्ययन · अध्याय ११–१५

भाग ७ · चारिम बैचक साहित्यिक समीक्षा : अध्याय १६–२०

अध्याय १६ — १९३४क बाढ़ि

अध्याय १७ — सन्धि

अध्याय १८ — नक्शा

अध्याय १९ — कोसी — ३

अध्याय २० — भीतरका गाम

अन्तराध्यायिक तुलनात्मक अध्ययन · अध्याय १६–२०

भाग ८ · पाँचम बैचक साहित्यिक समीक्षा : अध्याय २१–२५

अध्याय २१ — दुइ मिथिला

अध्याय २२ — विवाह

अध्याय २३ — अकाल १९६६

अध्याय २४ — इन्जीनियर बाबू

अध्याय २५ — चुप्पी

अन्तराध्यायिक तुलनात्मक अध्ययन · अध्याय २१–२५

भाग ९ · छठम बैचक साहित्यिक समीक्षा : अध्याय २६–३०

अध्याय २६ — कोसी — ४

अध्याय २७ — अनुराधाक स्वर-सन्देश एक

अध्याय २८ — देह आ जाति

अध्याय २९ — स्वर-सन्देश दुइ

अध्याय ३० — हड्डी

अन्तराध्यायिक तुलनात्मक अध्ययन · अध्याय २६–३०

भाग १० · सातम बैचक साहित्यिक समीक्षा : अध्याय ३१–३५

अध्याय ३१ — मोहनक स्वीकार

अध्याय ३२ — जकर नाम नहि

अध्याय ३३ — मस्कट

अध्याय ३४ — कोसी — ५

अध्याय ३५ — हम सभ

अन्तराध्यायिक तुलनात्मक अध्ययन · अध्याय ३१–३५

भाग ११ · आठम बैचक साहित्यिक समीक्षा : अध्याय ३६–४०

अध्याय ३६ — गाम जे खाली भेल

अध्याय ३७ — स्वर-सन्देश तीन-चारि-पाँच

अध्याय ३८ — पँजीकारक ग्राहक

अध्याय ३९ — कोसी — ६

अध्याय ४० — काठमाण्डू आ मधेस

अन्तराध्यायिक तुलनात्मक अध्ययन · अध्याय ३६–४०

भाग १२ · नवम बैचक साहित्यिक समीक्षा : अध्याय ४१–४५

अध्याय ४१ — घुरब

अध्याय ४२ — तीन पीढ़ी एक कोठली

अध्याय ४३ — कोसी — ७

अध्याय ४४ — प्रति-पाँजि

अध्याय ४५ — जे बाँचल

अन्तराध्यायिक तुलनात्मक अध्ययन · अध्याय ४१–४५

भाग १३ · दशम बैचक साहित्यिक समीक्षा : अध्याय ४६–४८

अध्याय ४६ — नाम लिखब

अध्याय ४७ — मृत्यु आ पोथी

अध्याय ४८ — कोसी — ८

अन्तराध्यायिक तुलनात्मक अध्ययन · अध्याय ४६–४८

सम्पूर्ण उपन्यासक समेकित साहित्यिक मूल्याङ्कन

खण्ड १६ — बिज्जी : गोहि सभक बीच

मूल समीक्षा-पाण्डुलिपिसँ सूचीकृत शीर्षक : 105

१. पहराक प्राक्कथा सँ कागजक अदृश्य खर्चा धरि

२. अनाम धमकी, मृत्यु आ पहिल प्रमाण-संघर्ष

३. सङ्ख्याक सङ्केत, रक्षकक पुनरागमन आ सम्भावित भ्रामक प्रमाण

४. पूछताछ, छओ प्रतिशतक मेल आ गलत सुरागक टूटनाइ

५. दबाव, मोहन पासवानक मृत्यु आ निविदा-प्रतिस्पर्धाक नियन्त्रण

६. लोकसेतुक कागज, भयक चिट्ठी आ संयुक्त अन्वेषण

७. आँकड़ा, लेखापालक शब्द आ दिगन्तक केन्द्र

८. मयंकक भय, सरोजिनीक प्रश्न आ प्रणवेशक कथन

९. आंशिक साक्षी, सभ्य अपराधभाषा आ अम्बरक उद्भव

१०. रंजनाक प्रतिवाद, देवांशुक पूछताछ आ कन्हैयाक क्षति

११. जनविश्वासक धन-प्रवाह सँ ‘अलग उपाय’ धरि

१२. विहानक मंच, अनिरुद्धक परिवार आ अनिलक असिद्ध कथन

१३. आर्थिक गिरफ्तारी सँ न्यायालयक अनिश्चित दहलीज धरि

१४. दोषसिद्धि, निर्दोषक दाग आ पुनर्वासक अपूर्णता

१५. ईशानक गणना सँ हथेलीक डिजिटल जाल धरि

१६. नदी पढ़बाक शिक्षा सँ आँकड़ाक नैतिकता धरि

१७. ऋणक लोभ, धन-वाहक व्यवहार आ वचनक भार

१८. रात्रि कक्षक अर्थतन्त्र आ निर्दोष परिवारक समय

१९. समानान्तर जाँच आ पारिवारिक स्मृतिक प्रतिरोध

२०. प्रमाणक सीमापर प्रतिशोध, साझेदारी आ मनोजक चिन्ह

२१. छापाक दृश्य, प्रचारक भाषा आ असिद्ध सम्बन्ध

२२. व्यक्तिगत शोक, संस्थागत जोखिम आ तीन सम्भावना

२३. पुरान धन-प्रवाह, ई-पत्र आ जाँचक सीमाविस्तार

२४. साझा मध्यस्थ, जीविका आ मृतकक उत्तरदायित्व

२५. वास्तविक व्यापार, मुखौटा संस्था आ नकारात्मक प्रमाण

२६. जानि-बुझि अनभिज्ञ रहबाक मूल्य आ अनुपस्थित रहि गेल अन्तिम क्षण

२७. शोकक उत्तराधिकार, सामाजिक बदनामी आ नव डिजिटल सूत्र

२८. हेरायल लेखाधिकारी, बिरजूक लिफाफा आ पुरान पैसाक सम्भावित बाट

२९. देखाइत पहरा, बूढ़ गवाहक अधिकार आ कथित षड्यन्त्रक परीक्षा

३०. मरल गवाहक बही, ‘चन्द्र’क सम्भावना आ दस्तावेजी वित्तीय सेतु

३१. शशांकक उत्तर, ईशानक नब दायित्व आ प्रदीपक आत्मसमर्पण

३२. काराक समय, पारिवारिक उत्तरदायित्व आ ‘चन्द्र’क द्विअर्थी सङ्केत

३३. अम्बरक कर्मी, समृद्धिक परिसमापन आ दू उदयरेखाक भ्रम

३४. अदितिक अनिश्चित पहिचान, घरक भय आ बिज्जीक मेटायल चिह्न

३५. सत्यप्रकाशक लिखित आपत्ति, वृद्ध साक्षी आ ‘डी.आर.’क असिद्ध सङ्केत

३६. देवांशुक सीमित स्वीकार, हरिचरणक अपूर्ण सूत्र आ मृणालिनीक प्रश्न

३७. गिरफ्तारीक अर्थ, काराक विधि आ प्रदीपक अधूर परिवर्तन

३८. अम्बरक संस्थागत आत्मालोचना आ सत्यप्रकाशक दस्तावेजी पुनरागमन

३९. अदितिक पेटी, पुनः खुलल मृत्यु-जाँच आ जीविका पर रोकक दुष्परिणाम

४०. प्रयोजनक दार्शनिक विवेचन, बदलल भूगोल आ बासुदेवक अनिश्चित साक्ष्य

४१. परिवहन-बहीक अधूर सङ्केत, जीवित गवाही आ वित्तीय जालक नव कड़ी

४२. मनोजक कथनक सीमा, वैध परामर्शक आवरण आ शैलेशक गृहत्रासदी

४३. आँकड़ाक संशोधन, द्वि-परिकल्पना आ प्रमाणक नकारात्मक फल

४४. मारपीटक आदेश-शृंखला, सौरभक उदय आ चश्माक स्मृति

४५. सौरभ बर्धन, समवायक सिद्धान्त आ निजी दाँवक स्वीकृत चर्चा

४६. विधिक सावधानी, कारागारक अपमान आ धनक अदृश्य यात्रा

४७. पूछताछ, ई-पत्र, सार्वजनिक चेहरा आ पुरान वाहन

४८. स्मृतिक असमर्थ भाषा, हरियर ट्रक आ अभियुक्तक सार्वजनिक प्रतिमा

४९. अनुसन्धानक पद्धति, पारिवारिक सत्य आ समयसँ हेरायल साक्षी

५०. बाढ़ि, इतिहासक छँटनी आ ‘एस.के. प्रकरण’

५१. राहत-शिविरक बिज्जी, स्मृतिक कागज आ वाहन-साक्ष्य

५२. स्वीकारोक्तिक जाँच, वृद्ध विधवा आ न्यायिक स्वतन्त्रता

५३. खुलल फाटक, भीजल पोथी आ राज्यक सावधान प्रतिवेदन

५४. आरोप-पत्रक वर्गीकरण, सामाजिक क्षति आ नकारात्मक निष्कर्ष

५५. न्यायालयक पहिल साक्षी : वित्तीय असामान्यता आ सबीनाक निर्णय

५६. खाताधारकक गवाही, प्रत्यक्ष कथन आ हिंसाक अनुमान

५७. डायरीक बहिष्कार, कार्यकारी ज्ञान आ प्रचारित दोष

५८. सार्वजनिक सनसनी, बाढ़-दाग आ सीमित आरोप-विचार

५९. डिजिटल प्रमाणक सीमा, वित्तीय विश्लेषण आ घरेलू विश्वास

६०. सार्वजनिक अभिलेखमे नामक पुनरागमन आ पहराक उत्तराधिकार

६१. सामूहिक जालक भीतर व्यक्तिगत दोषक पृथक्करण

६२. बचावक अधिकार, दण्डक सीमा आ साक्षी-स्मृतिक शुद्धता

६३. निर्णय पढ़बाक नैतिकता आ वैयक्तिक दण्डक सीमा

६४. संस्थागत सुधार आ पुरान मृत्यु-मामलाक अन्तिम प्रमाण-शृंखला

६५. सीमित न्यायिक निष्कर्ष, शोकक स्वायत्तता आ प्रतीक्षाक अन्त

६६. पहराक उत्तराधिकार आ प्रमाणक घरेलू परम्परा

६७. निर्णयक पछाति अपील, क्षमाक सम्भावना आ सावधान रक्षक

६८. संस्थागत आत्मपरीक्षण, शिक्षण आ रोजीरोटीक पुनर्प्राप्ति

६९. कलङ्कक प्रतिवाद, पुनर्स्थापनक श्रम आ अपीलक स्वाधीनता

७०. उत्तराधिकारविहीन न्याय नहि : अनिरुद्धक विदाइ आ नव नीति

७१. सार्वजनिक अभिलेख, निजी दुःख आ स्मृतिलिखनक नैतिकता

७२. भयमुक्त पहरा आ जाँच-पद्धतिक पीढ़ीगत हस्तान्तरण

७३. अपीलक आधा-सत्य, वित्तीय अपराधक देहधारी पीड़ा आ कारागारक प्रश्न

७४. दण्डक बाद पुनर्वास, बेटीक न्यायबोध आ लेखकीय प्रमाणशास्त्र

७५. गलत गिरफ्तारी रोकनाइ, आँकड़ाक अर्थ आ अनुभवसँ जन्मल पहरा

७६. अपराधक अनुभवसँ सार्वजनिक चेतावनी धरि : प्रतिपूर्ति, शिक्षण आ साक्षात्कार

७७. बिज्जी-रूपकक सीमा आ ईशानक लेखकीय आरम्भ

७८. स्मृतिक अनिश्चितता, तथ्यगत भूल आ जाँचक अनुपात

७९. पुस्तकक सार्वजनिक उपयोग, अपीलक विभाजित अर्थ आ दोषस्वीकारक व्यवहार

८०. आत्मबोध, काल्पनिक रूपान्तरण आ साझा प्रमाण-पद्धति

८१. जीव आ रूपकक पृथक अधिकार : बिज्जीक परिवारसँ सार्वजनिक जीवन धरि

८२. परिवारक पाँच पाँति, बदलैत संसार आ लेखकीय प्रमाण-अनुशासन

८३. नकारात्मक न्याय, स्मृतिक उपयोग आ सार्वजनिक संस्थाक आत्मस्वीकार

८४. स्मृतिक प्रशिक्षण, अपीलक सीमित अर्थ आ पुनर्वासक व्यावहारिक परीक्षा

८५. पुनर्वास, संस्थागत जागरूकता आ भयक साम्राज्यक सीमित पराजय

८६. पोथीक छठम पाँति आ नव युगक आवाज : जीवनक अधिकारसँ तकनीकी साक्ष्य धरि

८७. विश्वसनीय ध्वनि आ सामाजिक भरोसा : पीड़ितक अपमानसँ रोकथामक लोकभाषा धरि

८८. सामाजिक अनुभवक पुनर्वितरण : सबीनाक दोकानसँ संस्थाक स्वीकार-दीवाल धरि

८९. दण्डपश्चात व्यक्तित्व, वृद्धावस्था आ पोथीक सातम पाँति

९०. जाँचक पाँच नियम, अपूर्ण उपन्यास आ जीवनक अन्तिम विकल्प

९१. औषधिक समयसँ आठम पाँति धरि : पहराक उद्देश्य आ प्रियजनक स्वातन्त्र्य

९२. निजी पोथीक सार्वजनिक यात्रा आ बीमारीमे बदलैत निर्णय

९३. अनाम अधिकारसँ अन्तिम देखभालक निर्णय धरि : साहित्यक संयम आ जीवनक मर्यादा

९४. अन्तिम चिकित्सकीय निर्णय आ मृत्युकेँ कथात्मक तमाशासँ बचायब

९५. रिक्त नवम पाँति, निजी पत्र आ ‘शायद’ पर रुकल निर्णय

९६. शोकक कथनाधिकार, जीवित समय आ पोथीक उपयोग

९७. उत्तरदायित्वक पृथक्करण आ छोट सङ्केतक समयोचित परीक्षा

९८. संस्थागत रिक्ति, अपराध-पश्चात संवाद आ इतिहासक स्वार्थ

९९. विद्यालय, दोकान, शोध आ अनाम आवाजक सार्वजनिक जीवन

१००. घरक वस्तु, विपरीत प्रमाण आ जाँच-पछात विनम्रता

१०१. किनारक परिवर्तन, अन्तक तैयारी आ अधूर प्रमाण

१०२. निर्दोष विसंगति, उत्तरदायित्वक भाषा आ सुधारक असुविधा

१०३. संस्थागत पहरा, अधूर पोथी आ कथाक काट-छाँट

१०४. जीवित जीवक दृश्य आ उपन्यासक संयमित अन्त

१०५. वितरित पहरा आ अन्हारक भीतर अविरत जीवन

खण्ड १७ — पाँच प्रतिशत अन्हार

मूल समीक्षा-पाण्डुलिपिसँ सूचीकृत शीर्षक : 126

भाग १ — पाँच सयक साम्राज्य

१. पाँच सयक राति

२. भारत लेल खुलल, सभ लेल बन्द

३. मृत लोकक हाजिरी

४. खाताक दोसर मालिक

५. झूठक अदालत

६. धनक पहिल नक्शा

७. अपरिचित हस्ताक्षर

८. अमरेशक हिसाब

९. आधारक दुरुपयोग

१०. पाँच प्रतिशतक पहिल पत्र

११. हांगकांगक खिड़की

१२. अन्तिम चाहक गिलास

१३. कागजक दोसर भाषा

१४. समर्थनक मूल्य

१५. चुप्पीक वेतन

१६. सफेद लिफाफा

१७. वर्दीक नकली चेहरा

१८. विज्ञापनक पाछाँ

१९. विलासी विमानयात्राक चुप्पी

२०. शीशाक भीतर चेहरा

भाग २ — सात समुद्रक धन

२१. मकाउक नाचघर

२२. पासपोर्टक खाली खोल

२३. दू पुरुषक सम्बन्ध

२४. दू स्त्रीक स्वीकृति

२५. माल्टाक मुहर

२६. तीन परतवला कम्पनी

२७. झूठक निर्यातक छाया

२८. नील टिकट

२९. बाजारक सीमारेखा

३०. बीजिंगक बन्द सूची

३१. अङ्ककक भीतरे घर

३२. संकेतक व्यापार

३३. मरुभूमिक अनुबन्ध

३४. अरीजोनाक राति

३५. संगीतक पाछाँक डर

३६. उज्जर दान-पेटी

३७. जनचेतना मंच

३८. ब्रुसेल्सक उज्जर सभागार

३९. उजागर भेल पहिल झूठ

४०. अग्निसँ पहिने

भाग ३ — चमकैत देह, कारी कारोबार

४१. भीड़क अपन चेहरा

४२. पटनाक अग्निपरीक्षा

४३. मञ्चक चेहरा

४४. प्रकाशनसँ पहिने

४५. राजगीरक चुप्पी

४६. राजगीरक पुरान प्रशिक्षण केन्द्र

४७. जीबैत गवाहक अपराधबोध

४८. मूल लेखा आ प्रतिलिपि

४९. बचि निकलल आवाज

५०. बेचायल नाम, बचल साक्ष्य

५१. पाँच लोकक बैंक

५२. अज्ञात शवक नाम

५३. संख्याक पाश

५४. दू हजार करोड़क धुआँ

५५. समीकरणक साक्षी

५६. छापाक पहिल राति

५७. पाँच प्रतिशतक मालिक

५८. फेर नाम बदलल

५९. छओ मासक दूरी

६०. अन्हारक हिसाब

भाग ४ — झूठक निर्यात

६१. अगिला नामक पहिल दिन

६२. एकहि मुहरक दू अर्थ

६३. गोदामक बन्द केवाड़ी

६४. चारि दिनक फरक

६५. परिवारक मूल्य

६६. स्वयंसेवाक मूल काम

६७. एकहि नामक दू व्यक्ति

६८. स्वरक विज्ञापन

६९. दू स्त्रीक दूरी

७०. विदेशी कम्पनीक रङ्ग

७१. दान आ सौदा

७२. धूपमे भेटल शव

७३. मृतकक अपूर्ण पत्र

७४. मालक तौल

७५. देह आ दस्तावेज

७६. नोकरीक झूठ सपना

७७. सीमारेखाक राति

७८. कागजक माफिया

७९. छाया बनल साक्षी

८०. झूठक निर्यात

भाग ५ — लोकतन्त्रक अन्हार

८१. बदलीक दिन

८२. दफ्तरक खाली कुर्सी

८३. हेरायल फाइलक प्रतिलिपि

८४. सम्पादकक मौन

८५. प्रणयक चित्र

८६. बचायल पत्र

८७. सभा आ सङ्कट

८८. दू अखबारक दू सच

८९. रातिक चेतावनी

९०. हत्या कि दुर्घटना

९१. भाड़ाक आदेश

९२. दू हजार करोड़क दुसर आँकड़ा

९३. धनक सुरागक अन्हार

९४. आरोपितक अधिकार

९५. दोषक छोट गलती

९६. अनुदानक अनाम स्रोत

९७. हस्ताक्षरक तेसर हाथ

९८. स्थानान्तरणक पाछाँ

९९. अन्तिम प्रचार

१००. लोकतन्त्रक अन्हार

भाग ६ — अन्तिम पाँच प्रतिशत

१०१. आवाज फेर आयल

१०२. साराक सत्य

१०३. मूल समयक प्रतिमा

१०४. एतय नकली मालिक

१०५. धनक हेरायल ठेकाना

१०६. गवाहीक कीमत

१०७. फाड़ल पृष्ठ

१०८. बैंकक भीतरक विरोध

१०९. बहुभाषी साक्ष्य

११०. साक्ष्यक सात मेज

१११. जाहि नामक आशा

११२. सुधारल अभियोग

११३. मिराक अपना घर

११४. रानीक पाँच रुपैआ

११५. खाताक अन्तिम मालिक

११६. छापाक दोसर भोर

११७. भागल लोकक पत्र

११८. प्रतिपरीक्षाक दिन

११९. फेर भेटल धन

१२०. अन्तिम पाँच प्रतिशत

खण्ड १८ — पातक भीतर लिखल नाँव

मूल समीक्षा-पाण्डुलिपिसँ सूचीकृत शीर्षक : 32

अध्याय १ — घर खोलबाक दिन

अध्याय २ — दोसर लिखाइ

अध्याय ३ — पात

अध्याय ४ — पन्द्रह जनवरी

अध्याय ५ — खिच्चड़ घर

अध्याय ६ — माधवी

अध्याय ७ — कुर्थीक मास

अध्याय ८ — नूनक माप

अध्याय ९ — तिलकोर

अध्याय १० — पोखरिक आँखि

अध्याय ११ — भाप

अध्याय १२ — माछक काँट

अध्याय १३ — अक्षर

अध्याय १४ — जे शब्दक अनुवाद नहि

अध्याय १५ — तरुआक थारी

अध्याय १६ — आमक अमट

अध्याय १७ — अरिकञ्चन

अध्याय १८ — नाम रहित विधि

अध्याय १९ — जनकपुरक बाट

अध्याय २० — वर्षा

अध्याय २१ — अदौरी

अध्याय २२ — पिरुकियाक मोड़

अध्याय २३ — काटल पाँति

अध्याय २४ — भोजक बाहर

अध्याय २५ — छपल लेख

अध्याय २६ — जे नहि कहल गेल

अध्याय २७ — एखनक भानस

अध्याय २८ — स्वादक मालिक

अध्याय २९ — रेणुकाक स्मृति

अध्याय ३० — अन्तिम पात

अध्याय ३१ — सम्पादकक अपराध

अध्याय ३२ — नाँव सहित

खण्ड १९ — सातम साक्षी

मूल समीक्षा-पाण्डुलिपिसँ सूचीकृत शीर्षक : 42

अध्याय १ — बरखाक चारि बजि सतरह मिनट

अध्याय २ — सुपारीक डिबिया

अध्याय ३ — सूत्रक पहिल उत्तर

अध्याय ४ — दुलारी गायब

अध्याय ५ — माधवीक पहिल सपना

अध्याय ६ — बन्द कोठरीक दोसर साँस

अध्याय ७ — वसुधाक घर

अध्याय ८ — रोजक आदति

अध्याय ९ — माधवी आ अभिराम

अध्याय १० — नछत्तर-पोथी

अध्याय ११ — घरक एकटा झूठ

अध्याय १२ — कनियाँक कोठरी

अध्याय १३ — भूकम्पक बर्ख

अध्याय १४ — मनाहीक नेह

अध्याय १५ — सात टोला

अध्याय १६ — गायब दस्तावेज

अध्याय १७ — लाल ओढ़नीक राति

अध्याय १८ — देवालक पेट

अध्याय १९ — हथेली पर दू रेखा

अध्याय २० — सूत्रक पहिल भूल

अध्याय २१ — दुलारीक आवाज

अध्याय २२ — नाव पर राति

अध्याय २३ — ज्योतिषी नहि, स्मृतिकार

अध्याय २४ — आध रातिक पायल

अध्याय २५ — दुलारी भेटल

अध्याय २६ — गिरफ्तारी

अध्याय २७ — जमानतक बहस

अध्याय २८ — साक्ष्यक मालिक के

अध्याय २९ — कमली देवीक चारि बजिया चाय

अध्याय ३० — बनाओल आत्महत्या

अध्याय ३१ — जयनारायणक पक्षपात

अध्याय ३२ — अभिरामक घरक कागज

अध्याय ३३ — नेहमे दरार

अध्याय ३४ — सूत्रक नव नक्सा

अध्याय ३५ — रहमत काकाक गाँठि

अध्याय ३६ — सातम साक्षी शब्दक असल अर्थ

अध्याय ३७ — परिवारक टूटल घेरा

अध्याय ३८ — चारि बजि सतरह मिनट

अध्याय ३९ — दुलारीक आँखि

अध्याय ४० — अन्तिम बहस

अध्याय ४१ — माटि फेर नाम पबैत अछि

अध्याय ४२ — जतऽ तर्क थमि जाइत अछि

खण्ड २० — बाल आ किशोर उपन्यास — खण्ड १

मूल समीक्षा-पाण्डुलिपिसँ सूचीकृत शीर्षक : 406

कृति १ : कूट नाम : तरहड़िमे गोहि

अध्याय ० — तरहड़िमे गोहि

अध्याय १ — नाम बिना जाल

अध्याय २ — कार्यदलक नव पानि

अध्याय ३ — दू पानिक संगम

अध्याय ४ — पहिल गिट्ठऽ

अध्याय ५ — नाम बदलल, निशान बचल

अध्याय ६ — दूरीक द्वन्द्व

अध्याय ७ — बूढ़ गोहिक छाया

अध्याय ८ — जे नाम मेटौलक, से देखाइ चाहैत छल

अध्याय ९ — अनुमान आ प्रमाण

अध्याय १० — दरार

अध्याय ११ — किनार

अध्याय १२ — जलसमाधि

कृति २ : तरहड़िमे परीलोक

अध्याय १ : चन्ना गाछीक झमटगर बोन

अध्याय २ : खसब, जे उड़ब सन लगलै

अध्याय ३ : टुराकोस

अध्याय ४ : बिनु सूर्यक इजोत

अध्याय ५ : महारक ओइपारक खिस्सा

अध्याय ६ : आठ महादेशक धोधरि

अध्याय ७ : सात रंगक कियारी

अध्याय ८ : वनसप्तो ९९९९५७४५

अध्याय ९ : स्वागत-कोठलीक बन्धन

अध्याय १० : सपना जे सत्य भऽ गेल

अध्याय ११ : हजार किलोमीटरक दौड़

अध्याय १२ : तरहड़िमे तरहड़ि

अध्याय १३ : अन्हारमे खोज

अध्याय १४ : ह्वेलक पीठपर हरियरी

अध्याय १५ : दुनू राजाक सत्य

अध्याय १६ : अन्तिम सपना

कृति ३ : बाल गुरु

अध्याय १ : दिल्लीक आवासीय परिसर

अध्याय २ : महुआ

अध्याय ३ : घासक पार्क

अध्याय ४ : जन्मदिनक रीति

अध्याय ५ : नव बच्चा

अध्याय ६ : काँटवला शब्द

अध्याय ७ : मंशाक गर्जन

अध्याय ८ : शिकायत

अध्याय ९ : बाल गुरुक उत्तर

अध्याय १० : माएक नोर

अध्याय ११ : चिन्हब

अध्याय १२ : बाल गुरु

कृति ४ : दीना-भदरी

अध्याय १ : पाँच-पाँच मोनक कोदारि

अध्याय २ : जाँजरक जमीन्दार

अध्याय ३ : मारि कऽ छोड़लाह

अध्याय ४ : बुधनीक वर

अध्याय ५ : सलहेसक सपना

अध्याय ६ : अमावस्याक बिदाई

अध्याय ७ : सुनसान बोन

अध्याय ८ : खुनीमा बाघ

अध्याय ९ : बगराक भेष

अध्याय १० : भदरीक बिखिन्न मोन

अध्याय ११ : आत्माक सन्देश

अध्याय १२ : तूर आ बताशा

अध्याय १३ : जेवार आ हंसाक आँखि

अध्याय १४ : मोरंगक धर्मयुद्ध

अध्याय १५ : सलहेसक वचन

अध्याय १६ : मुक्ति

कृति ५ : अमर बाबा

अध्याय १ : कमला धारक जन्म

अध्याय २ : किसान आ मलाह

अध्याय ३ : कमला पैघ भेलीह

अध्याय ४ : बैदलाक खोट

अध्याय ५ : भोला बाबाक तपस्या

अध्याय ६ : शिवरा गामक बालक

अध्याय ७ : अखराहाक माटि

अध्याय ८ : चुनौती

अध्याय ९ : युद्ध

अध्याय १० : जीतक छाह

अध्याय ११ : कमलाक भेद

अध्याय १२ : गहमर : अमर बाबा

कृति ६ : मोतीदाइ

अध्याय १ : गहिल माताक गाम

अध्याय २ : भगतिन मोतीदाइ

अध्याय ३ : गोबर पाथैत साँझ

अध्याय ४ : बाँझ शब्दक भार

अध्याय ५ : पीड़ी खोदब

अध्याय ६ : माताक वचन

अध्याय ७ : इन्द्रक दरबार

अध्याय ८ : मरबे नीक

अध्याय ९ : दोसर यात्रा आ शर्त

अध्याय १० : छओ दिनक संसार

अध्याय ११ : छठियारि

अध्याय १२ : भगता

कृति ७ : राजा सलहेस

अध्याय १ : दबनाक अस्वीकृत प्रेम

अध्याय २ : तालुकदारक ईर्ष्या

अध्याय ३ : मोरंग-त्याग

अध्याय ४ : दबनाक जादू आ गीत

अध्याय ५ : सत्यक उद्घाटन

अध्याय ६ : विवाह आ मिलन

अध्याय ७ : मोनक राजाक विरासत

कृति ८ : बगियाक गाछ

अध्याय १ : मसोमातक बेटा

अध्याय ४ : बोरामे बन्द

अध्याय ५ : माटि-पाथरक चालि

अध्याय ६ : घर धरि धोखा

अध्याय ७ : दोसर प्रयासक असफलता

अध्याय ८ : झोंटाबला रहस्य

अध्याय ९ : बिलाड़िक चेतौनी

अध्याय १० : डाइनक अपने कर्मफल

कृति ९ : बहुरा गोढ़िन नटुआ दयाल

अध्याय १ : बहुरा गोढ़िन आ नटुआ दयाल

अध्याय २ : बहुराक शक्ति आ क्रोध

अध्याय ३ : व्यापारीक कुचक्र

अध्याय ४ : कामाख्याक साधना

अध्याय ५ : सूखल धार

अध्याय ६ : बरियातीक तैयारी

अध्याय ७ : डोरीक रहस्य

अध्याय ८ : कमलाक तटपर ढिलाह

अध्याय ९ : कामाख्याक जादूगरनी

कृति १० : चौहड़मल आ रेशमा

अध्याय १ : अखराहाक वीर

अध्याय २ : रेशमा

अध्याय ३ : एकतरफा बसात

अध्याय ४ : पहरा

अध्याय ५ : रामजीत आ मन्नेखाँ

अध्याय ६ : टोलपर आक्रमण

अध्याय ७ : रामसखीक जादू

अध्याय ८ : शोणितक सिनूर

अध्याय ९ : अन्तिम युद्ध

अध्याय १० : रेशमा-रेशमा

अध्याय ११ : रेशमा-चूहड़मल मन्दिर

कृति ११ : महुआ घटवारिन

अध्याय १ : सतमाएक घर

अध्याय २ : साओन-भादवक चेतावनी

अध्याय ३ : विवश यात्रा

अध्याय ४ : मोरंगक स्मृति

अध्याय ५ : धोखाक सौदा

अध्याय ६ : सौदागरक निर्ममता

अध्याय ७ : धारमे साहस

अध्याय ८ : घटवारिनक अमरता

कृति १२ : छेछन

अध्याय १ : सहिदापुरक चर्चा

अध्याय २ : चिलमक साहस

अध्याय ३ : चटियासँ द्वन्द्व

अध्याय ४ : मानिकचन्दसँ दंगल

अध्याय ५ : पनमाक विवाह

अध्याय ६ : कृष्णारामक बसबिट्टी

अध्याय ७ : हाथीक शक्ति-प्रदर्शन

कृति १३ : गरीबन बाबा

अध्याय १ : अनजान-सुनजानमे भूल

अध्याय २ : बाघिनसँ युद्ध

अध्याय ३ : धोबीक अनादर

अध्याय ४ : कनियाँक आर्तनाद

अध्याय ५ : श्राप आ चेतावनी

अध्याय ६ : सामूहिक प्रायश्चित्त

अध्याय ७ : भट्ठीक रक्षक

कृति १४ : वर्णमाला शिक्षा : अंकिता

अध्याय १ : अ-वर्णक साँझ

अध्याय २ : छाहरिमे विश्राम

अध्याय ३ : क-वर्गक खेत आ घर दिस घुरब

अध्याय ४ : चौपर आ चिक्कन बाट

अध्याय ५ : टोलक गाछ आ टाहि

अध्याय ७ : प-वर्गक पड़ाव

अध्याय ८ : वर्णमालाक अन्तिम चरण

अध्याय ९ : शिक्षकक टिप्पणी — आगाँक यात्रा

कृति १५ : गांगोदेवीक भगत

अध्याय १ : साओनक मेला आ माछ-यात्रा

अध्याय २ : पत्नीक नामसँ अन्तिम प्रयास

अध्याय ३ : दोसर दिनक पुष्टि

अध्याय ४ : मिथिला भरिमे प्रसार

अध्याय ५ : श्रद्धाक धरोहर

कृति १६ : मीरांसाहेब

अध्याय १ : डिलरीनगरक सैयद

अध्याय २ : नूनजागढ़क युद्ध

अध्याय ३ : मीरांक जन्म

अध्याय ४ : कम बयसक बियाह

अध्याय ५ : अनसुनल मोन

अध्याय ६ : असगर सवार

अध्याय ७ : बदला

अध्याय ८ : घुरती

अध्याय ९ : आत्माक पहरा

कृति १७ : जट-जटिन

अध्याय १ : जट आ जटिनक परिचय

अध्याय २ : नैहर जएबाक हठ

अध्याय ३ : झूमरक निमन्त्रण

अध्याय ४ : घरेलू जीवनक झलक

अध्याय ५ : नैहर-प्रस्थान आ चेतौनी

अध्याय ६ : मोरंग-प्रवास आ सोनारक प्रलोभन

अध्याय ७ : झगड़ा आ विरह

अध्याय ८ : पुनर्मिलन

अध्याय ९ : बेंगक वर्षा-अनुष्ठान

कृति १८ : लालमैन बाबा

अध्याय १ : नौहट्टाक बोन

अध्याय २ : बाघिनसँ संघर्ष

अध्याय ३ : अन्तिम इच्छा

अध्याय ४ : आत्माक क्रोध

अध्याय ५ : सामूहिक दाह-संस्कार

अध्याय ६ : भगताक रूपमे अमर

कृति १९ : मूँगा आ जालिम सिंह

अध्याय १ : इनार लगक भेँट

अध्याय २ : पृथ्वीपालक कुचक्र

अध्याय ३ : गुरु मौनी बाबा

अध्याय ४ : पट्टूक बलिदान

अध्याय ५ : बोनक कनुआ

अध्याय ६ : मरण-द्वारपर युद्ध

अध्याय ७ : शोणितक लाल नूर

अध्याय ८ : भाइक विरोध

अध्याय ९ : वैद्यक द्वार

अध्याय १० : घर घुरब

अध्याय ११ : प्रेमक विजय

कृति २० : बड़ सुख सार पाओल तुअ तीरे

अध्याय १ : निष्कलंक कायस्थ

अध्याय २ : गंगा-लाभक निर्णय

अध्याय ३ : गंगाकेँ सम्बोधन

अध्याय ४ : गंगाक अद्भुत कृपा

अध्याय ५ : विद्यापतिक अमर पद

कृति २१ : बत्तू

अध्याय १ : बलिदानक छाया

अध्याय २ : माएक चेतावनी

अध्याय ३ : बत्तूक रूपान्तरण

अध्याय ४ : आमने-सामने भेँट

अध्याय ५ : सियारक धूर्तता

अध्याय ६ : बत्तूक अन्तिम चतुराइ

अध्याय ७ : चतुराइक विजय

कृति २२ : भाट-भाटिन

अध्याय १ : गुप्त प्रेमक विषबेल

अध्याय २ : पनहीमे नुका एल मृत्यु

अध्याय ३ : बरक गाछपर लटकाएल सत्य

अध्याय ४ : नौ टुकड़ीक रहस्य

अध्याय ५ : प्राणघातक प्रहेलिका

अध्याय ६ : दीयाक रहस्योद्घाटन

अध्याय ७ : न्यायक प्रतिशोध

कृति २३ : बिहुला

अध्याय १ : चाँद सौदागर

अध्याय २ : मनसाक मनोरथ

अध्याय ३ : इनकार

अध्याय ४ : सात आघात

अध्याय ५ : डूबल जहाज

अध्याय ६ : लखिन्दर आ बिहुला

अध्याय ७ : जालीक कोहबर

अध्याय ८ : केराक थिम्ह

अध्याय ९ : त्रिवेणीक धोबिन

अध्याय १० : बिहुलाक तप

अध्याय ११ : जीवन-दान

अध्याय १२ : पूजा — मनसा आ बिहुला

कृति २४ : ब्राह्मण आ ठाकुरक कथा

अध्याय १ : भाँसैत लहास

अध्याय २ : टूटल खाटक कथा

अध्याय ३ : ऐंठक स्मृति

अध्याय ४ : मारल जाइत बकरी

अध्याय ५ : चोला-मंत्रक विश्वासघात

अध्याय ६ : परीक बुद्धि

अध्याय ७ : पुनर्जन्मक क्षण

अध्याय ८ : फाँसीक बुढ़िया

अध्याय ९ : बताह प्रेमी

अध्याय १० : मन्त्रीक बेटाक चालि

अध्याय ११ : रस्तेक पचीस संकट

अध्याय १२ : पाथरक शरीर

अध्याय १३ : क्षमा आ मित्रताक पुनर्स्थापन

कृति २५ : डाकू रौहिणेय

अध्याय १ : पिताक अन्तिम आदेश

अध्याय २ : मदनवतीक अपहरण

अध्याय ३ : नकली नर्त्तकीक चालि

अध्याय ४ : अभयकुमारक चुनौती

अध्याय ५ : राजमहलक दुस्साहस

अध्याय ६ : अनसुनल वचन

अध्याय ७ : गिरफ्तारी आ छलक भण्डाफोड़

अध्याय ८ : चतुर भेष

अध्याय ९ : नकली स्वर्गलोक

अध्याय १० : सत्यक क्षण

अध्याय ११ : अभयदान आ प्रायश्चित्त

कृति २६ : डोकी डोका

अध्याय १ : अटूट प्रेम

अध्याय २ : सियारक छल

अध्याय ३ : डोकाक अन्तर्धान

अध्याय ४ : खोजक आरम्भ

अध्याय ५ : मूसक खिस्सा

अध्याय ६ : सुरंगक यात्रा

अध्याय ७ : सातम रातिक चमत्कार

कृति २७ : गोनूझा आ दस ठोप बाबा

अध्याय १ : दस ठोप बाबाक आगमन

अध्याय २ : गोनूझाक आश्चर्य

अध्याय ३ : बीस ठोप बाबाक प्रवेश

अध्याय ४ : दुनू बाबाक भेँट

अध्याय ५ : चतुर प्रश्न आ भण्डाफोड़

अध्याय ६ : नकली दाढ़ीक रहस्य

कृति २८ : ज्योति पँजियार

अध्याय १ : धर्मराजक शिक्षा

अध्याय २ : शापक फल

अध्याय ३ : तांत्रिकक निर्देश

अध्याय ४ : सैनी गाछक बलिदान

अध्याय ५ : कोइलीक बलिदान

अध्याय ६ : कदलीवन धरि यात्रा

अध्याय ७ : छागरक वरदान

अध्याय ८ : बारह बरख पूर्ण

अध्याय ९ : अछमितपुरक चमत्कार

कृति २९ : कौवा आ फुद्दी

अध्याय १ : दुर्भिक्षक विपत्ति

अध्याय २ : शुद्धिकरणक बहन्ना

अध्याय ३ : कुम्हार आ माटिक खोज

अध्याय ४ : सिंह आ गायक शर्त

अध्याय ५ : लोहारक दू हाँसू

अध्याय ६ : अन्तिम भूल

अध्याय ७ : शृंखलाक शिक्षा

कृति ३० : माधव सिंह आ अमता गाम

अध्याय १ : सुखाएल मिथिला

अध्याय २ : दरबारक मंत्रणा

अध्याय ३ : नेपालसँ दू भाइ

अध्याय ४ : नोम-तोम

अध्याय ५ : पहिल बुन्नी

अध्याय ६ : दरबारमे पानि

अध्याय ७ : राजाक कृतज्ञता

अध्याय ८ : अमता गामक साँझ

अध्याय ९ : अन्तिम इच्छा

अध्याय १० : रस्तेमे

अध्याय ११ : अमताक शोक

कृति ३१ : मोतीसाएरि

अध्याय १ : यज्ञक फल

अध्याय २ : कुण्डली आ पण्डित

अध्याय ३ : झूठ भविष्यवाणी

अध्याय ४ : बहैत सन्दूक

अध्याय ५ : गिल सिदान

अध्याय ६ : पण्डितक दोसर चालि

अध्याय ७ : गिलसँ युद्ध

अध्याय ८ : कृष्णाराम

अध्याय ९ : प्रस्ताव

अध्याय १० : शाप

अध्याय ११ : राज्यक अन्त

अध्याय १२ : मोक्षक अर्थ

कृति ३२ : मूर्खाधिराज

अध्याय १ : महामूर्ख बालक

अध्याय २ : उड़ि रहल मुरही

अध्याय ३ : डपटानक शृंखला

अध्याय ४ : श्मशानक क्रोध

अध्याय ५ : बरातक अपमान

अध्याय ६ : सासुरक मौन

अध्याय ७ : धोखराएल सिन्दूर

अध्याय ८ : बकरीक संग बदलेन

अध्याय ९ : बकरीसँ कदीमा धरि

अध्याय १० : बाएक विलाप

कृति ३३ : नैका बनिजारा

अध्याय १ : तुरत बिदाई

अध्याय २ : डकहरक भविष्यवाणी

अध्याय ३ : अभिज्ञान-अँठी

अध्याय ४ : बारह बरखक व्यापार

अध्याय ५ : बारीक निर्वासन

अध्याय ६ : चतुरगनक आश्रय

अध्याय ७ : सत्यक पुनर्स्थापना

कृति ३४ : रघुनी मरर

अध्याय १ : अकालक विपत्ति

अध्याय २ : दंगल-विजय आ भूमि-दान

अध्याय ३ : जमीन्दारीक कलह

अध्याय ४ : चौधरीक ईर्ष्या

अध्याय ५ : जोगीक काला जादू

अध्याय ६ : जोगीक पराजय

अध्याय ७ : झूठ आरोप

अध्याय ८ : न्यायक चमत्कार

अध्याय ९ : अन्तिम सम्मान

कृति ३५ : राजा अनसारी

अध्याय १ : तीन बेटाक वचन

अध्याय २ : बोनमे बिछुड़ल भाइ

अध्याय ३ : बटोहीक संकेत

अध्याय ४ : इनारमे खसब

अध्याय ५ : भैरवानन्द जोगी

अध्याय ६ : वरदानक माँग

अध्याय ७ : सुग्गाक रूपमे उड़ान

अध्याय ८ : जोगीक चमत्कार

अध्याय ९ : अमरत्वक वरदान

अध्याय १० : तीन बहिनक भेँट

अध्याय ११ : जोगीक अन्तिम खेल

अध्याय १२ : राजाक सपनाक पूर्ति

कृति ३६ : राजा ढोलन

अध्याय १ : हाटक हठ

अध्याय २ : देश-त्याग आ नोकरी

अध्याय ३ : मड़ुनक जन्म आ विवाहक भविष्यवाणी

अध्याय ४ : बाघिनक शाप

अध्याय ५ : साढ़नीक बलिदान

अध्याय ६ : सदाव्रत आ पत्रक यात्रा

अध्याय ७ : जरल पत्र आ सुग्गाक साहस

अध्याय ८ : मालिनक क्रोध

अध्याय ९ : मोहिनी बाँसुरी

अध्याय १० : पिताक स्वीकारोक्ति

अध्याय ११ : साढ़नीक पुनर्जीवन आ यात्रा

अध्याय १२ : पहचानक पुनर्स्थापना

अध्याय १३ : पुनर्मिलन

कृति ३७ : उगना

अध्याय १ : गीतक भूखल देवता

अध्याय २ : उगना आयल

अध्याय ३ : बाटक पियास

अध्याय ४ : जटाक गंगधार

अध्याय ५ : भेद आ शर्त

अध्याय ६ : पार्वतीक एकाकीपन

अध्याय ७ : तेतरिक चालि

अध्याय ८ : बाढ़नि

अध्याय ९ : हा शिव!

अध्याय १० : विक्षिप्त कवि

अध्याय ११ : उगनाक थान

कृति ३८ : ऊँटनी

अध्याय १ : हरियाणाक खेत

अध्याय २ : बटोहीक आगमन

अध्याय ३ : प्रश्नक क्रम

अध्याय ४ : गरदनिपर हाथ

अध्याय ५ : डॉक्टरी दावा

अध्याय ६ : नव 'डॉक्टर' गामक बाट

अध्याय ७ : नकल-प्रश्नावली

अध्याय ८ : जालक पातक हास्यास्पद प्रश्न

अध्याय ९ : दुखान्त मोड़

अध्याय १० : लहासक कान्हा

अध्याय ११ : दोसर गामक बाट

अध्याय १२ : अन्तिम शर्त

अध्याय १३ : बा-ओमक उपसंहार

खण्ड २१ — गोहि सभक बीच जलसमाधि : किशोर आ बाल संस्करण

मूल समीक्षा-पाण्डुलिपिसँ सूचीकृत शीर्षक : 317

अध्याय –१०० : शंख आ रजत

अध्याय –९९ : आत्मसिद्धि-वाद

अध्याय –९८ : केऽ बनौलक ई जगत?

अध्याय –९७ : चिंतामणि रत्न

अध्याय –९६ : स्मृति-रक्षा

अध्याय –९५ : जलमग्न पाण्डुलिपि

अध्याय –९४ : चारि मुखक मौन

अध्याय –९३ : शंखक अन्तिम प्रश्न

अध्याय –९२ : जल-घड़ीक कैदी

अध्याय –९१ : चर्मकार टोलाक उजास

अध्याय –९० · बुधुआक जलसमाधि

अध्याय –८९ · पहिल राति, पहिल बाढ़ि

अध्याय –८८ · डाइनक आरोप

अध्याय –८७ · टोलाक द्वारपर

अध्याय –८६ · समयक गोहि

अध्याय –८५ · आमिलक आदेश

अध्याय –८४ · जंगलक मौन

अध्याय –८३ · सोनमा माझिन

अध्याय –८२ · पहिल कबड्डी

अध्याय –८१ · आक्रमणक छाया

अध्याय –८० · गीतक पहिल पाँति

अध्याय –७९ · क्षमाक पारी

अध्याय –७८ · पंजीक बाहर

अध्याय –७७ · बूढ़बाक मौन

अध्याय –७६ · नारिकेल पातक पहिल पाठ

अध्याय –७५ · तर्कक पहिल विद्रोह

अध्याय –७४ · गाछक रोग

अध्याय –७३ · मोहनक धुन

अध्याय –७२ · विवाहक साक्षी

अध्याय –७१ · महामारीक राति

अध्याय –७० : चन्ना गाछीक रोपाई

अध्याय –६९ : गज-ग्राहक कथा

अध्याय –६८ : अदालतक पहिल तारीख

अध्याय –६७ : परदेशक पुकार

अध्याय –६६ : स्त्री सभक राति-सभा

अध्याय –६५ : नकली भूतक जुलूस

अध्याय –६४ : सुखदेवक बदला

अध्याय –६३ : छापाखानाक पहिल पन्ना

अध्याय –६२ : राहतक प्रतीक्षा

अध्याय –६१ : आकाशक पुच्छलतारा

अध्याय –६० : अगिनक राति

अध्याय –५९ : दोसर बाढ़ि

अध्याय –५८ : तेसर बिपत्ति

अध्याय –५७ : साहेबक नोटबुक

अध्याय –५६ : स्वाधीनताक पुकार

अध्याय –५५ : स्वतंत्रताक भोर

अध्याय –५४ : जमींदारीक अन्त

अध्याय –५३ : बिजलीक पहिल दीप

अध्याय –५२ : सीमाक पुकार

अध्याय –५१ : हरित क्रान्तिक बीया

अध्याय –५० : आपातकालक अन्हार

अध्याय –४९ : सूखाक बरख

अध्याय –४८ : रेडियो आ टेलीविजनक अवाज

अध्याय –४७ : खाड़ी देशक बजार

अध्याय –४६ : सद्भावक परीक्षा

अध्याय –४५ : उदारीकरणक हवा

अध्याय –४४ : पहिल कम्प्यूटर

अध्याय –४३ : सुखल होइत धार

अध्याय –४२ : हाथक फोनक चमत्कार

अध्याय –४१ : शहरक बजार

अध्याय –४० : सूचनाक अधिकार

अध्याय –३९ : काजक गारंटी

अध्याय –३८ : इंटरनेटक जाल

अध्याय –३७ : स्क्रीनक पहिल छाया

अध्याय –३६ : अनदेखल ठगक पहिल आहट

अध्याय –३५ : देहक बजार खुजैत अछि

अध्याय –३४ : उज्ज्वलक स्वप्न

अध्याय –३३ : वकीलक कोटक छाया

अध्याय –३२ : समुद्रपारक साये

अध्याय –३१ : सत्यव्रतक मौन

अध्याय –३० : गोप कुमारक दस्तावेज

अध्याय –२९ : चन्द्रपालक सपना

अध्याय –२८ : राघवक कोड

अध्याय –२७ : आरुणिक निर्माण

अध्याय –२६ : देविकाक गीत

अध्याय –२५ : मीराक निजता

अध्याय –२४ : निशांतक बैंक

अध्याय –२३ : नन्दक जन्म

अध्याय –२२ : बारह सयक निकट

अध्याय –२१ : अनन्याक प्रश्न

अध्याय –२० : छपाकक पहिल हिसाब

अध्याय –१९ : सत्यव्रतक निर्णय

अध्याय –१८ : अनन्या आ नन्दक भेंट

अध्याय –१७ : शीशाक मीनारक जाल

अध्याय –१६ : बटुकनाथक अंतिम मोड़

अध्याय –१५ : चन्द्रपालक खाता

अध्याय –१४ : पुलक निर्माण

अध्याय –१३ : गोप कुमारक संकलन

अध्याय –१२ : चन्ना गाछीक कँपकँपी

अध्याय –११ : बूढ़बाक अन्तिम आशीर्वाद

अध्याय –१० : पुलपर पहिल छपाक

अध्याय –९ : जाँचक आरम्भ

अध्याय –८ : प्रमाणक बाहर आएब

अध्याय –७ : आधा-भूतक अनुभव

अध्याय –६ : गोप कुमारक अन्तिम पन्ना

अध्याय –५ : जालक उजागर होएब

अध्याय –४ : नामक अन्तिम सूची

अध्याय –३ : बारह सय बरखक पूर्णता

अध्याय –२ : अगिला पीढ़ीक वचन

अध्याय –१ : अन्तिम साक्षी

अध्याय ० : गढ़ नारिकेल: संक्षिप्त लोक-प्रस्तावना

अध्याय १ : चन्ना गाछीक कबड्डी

अध्याय २ : दहिन कातक गाम

अध्याय ३ : छपाकक हिसाब

अध्याय ४ : तीस नाम, तीन सय लाश

अध्याय ५ : तारीखक गोहि

अध्याय ६ : हार्वर्डक एथिक्स

अध्याय ७ : श्वासक भाव

अध्याय ८ : स्क्रीनक गोहि

अध्याय ९ : देहक बाजार

अध्याय १० : निजताक ब्लैकमेल

अध्याय ११ : धनक कारी नदी

अध्याय १२ : डार्क-जालपर नारिकेल पात

अध्याय १३ : सीलबन्द आवरण

अध्याय १४ : घर घुरबाक रस्ता

अध्याय १५ : नामक जल

अध्याय १६ : चन्ना गाछीक अदालत

अध्याय १७ : जीतक शोक

अध्याय १८ : खाली अदालत

अध्याय १९ : नामक अभिलेख

अध्याय २० : स्क्रीनक विरुद्ध पाठशाला

अध्याय २१ : निजताक शपथ

अध्याय २२ : हार्वर्डक दोसर भाषण

अध्याय २३ : बटुकनाथक खोज

अध्याय २४ : उपन्यास फेर शुरू

अध्याय २५ : मोन टांगल

अध्याय २६ : बटुकनाथ हरिहरनक यात्रा

अध्याय २७ : चन्द्रपाल बत्राक स्क्रीन

अध्याय २८ : राघव सिग्नलक चुप्पी

अध्याय २९ : लाउ किन-हंगक सपना

अध्याय ३० : धूर्त सभक भीतरक अदालत

अध्याय २१ सँ ३० : कथा-विकासक समीक्षा

अध्याय ३१ : हारल लोक सभक काज

अध्याय ३२ : तेसर कबड्डी

अध्याय ३३ : मोनक परीक्षा

अध्याय ३४ : सुनैत नदी

अध्याय ३५ : नामक देहरी

अध्याय ३६ : घर, भय, सपना

अध्याय ३७ : तीन कंकड़

अध्याय ३८ : नामक उच्चारण

अध्याय ३९ : बीजक शान्ति

अध्याय ४० : ओसक अक्षर

अध्याय ३१ सँ ४० : कथा-विकासक समीक्षा

अध्याय ४१ : नामक नाव

अध्याय ४२ : भारक वृत्त

अध्याय ४३ : चलैत भार

अध्याय ४४ : पोतीक कापी

अध्याय ४५ : भीतरक हवा

अध्याय ४६ : उत्तराधिकारक अन्हार

अध्याय ४७ : गज-ग्राह आख्यान

अध्याय ४८ : पुकार

अध्याय ४९ : मौनक अभिलेख

अध्याय ५० : देहक बादक नाम

अध्याय ४१ सँ ५० : आलोचनात्मक सम्बन्ध

अध्याय ५१ : साक्षीक भार

अध्याय ५२ : अगिला आवाज

अध्याय ५३ : कटानक बादक बिहान

अध्याय ५४ : ठूँठक चारू कात

अध्याय ५५ : नगरपालिकाक पीयर सूचना-पत्र

अध्याय ५६ : स्मृतिक पहिल नक्शा

अध्याय ५७ : गंगेशक प्रश्न

अध्याय ५८ : चन्द्रपालक स्मारक-अनुप्रयोग

अध्याय ५९ : राघव सिग्नलक नव कोड

अध्याय ६० : सत्यव्रत मेहताक दोसर मौन

अध्याय ५१ सँ ६० : आलोचनात्मक सम्बन्ध

अध्याय ६१ : पहिल नाम-उत्सव

अध्याय ६२ : ठूँठमे हरियर बिंदु

अध्याय ६३ : गढ़ नारिकेल विरासत-परियोजना

अध्याय ६४ : स्मृति पर निविदा

अध्याय ६५ : ब्रूमक पुनरागमन

अध्याय ६६ : हार्वर्डक शोध-दल

अध्याय ६७ : मीरा आ दृष्टिक अधिकार

अध्याय ६८ : देविका बनाम श्रद्धांजलि-अनुप्रयोग

अध्याय ६९ : नामक चोरी

अध्याय ७० : पनिडुब्बीक गवाही

अध्याय ६१ सँ ७० : आलोचनात्मक सम्बन्ध

अध्याय ७१ : नकली भूतक जुलूस

अध्याय ७२ : चन्ना गाछीक हँसी

अध्याय ७३ : बटुकनाथक स्वप्न-दरबार

अध्याय ७४ : चन्द्रपालक पहिल स्वीकार

अध्याय ७५ : राघव सिग्नलक बिना नेटवर्क

अध्याय ७६ : लाउ किन-हंगक भारत-यात्रा

अध्याय ७७ : हवाई अड्डापर गोहि

अध्याय ७८ : सत्यव्रत आ लाउक मौन-संवाद

अध्याय ७९ : ब्रूमक दान-पत्र

अध्याय ८० : हरिहरनक संतान

अध्याय ७१ सँ ८० : आलोचनात्मक सम्बन्ध

अध्याय ८१ : बत्राक अधूरा नाम

अध्याय ८२ : अंदरक गज-ग्राह

अध्याय ८३ : नारिकेल पात पाठशाला

अध्याय ८४ : पहिल पाठ: उपस्थित

अध्याय ८५ : स्त्री सभक राति-सभा

अध्याय ८६ : मजदूरक पाँव

अध्याय ८७ : स्क्रीनक उपवास

अध्याय ८८ : ईराक पत्र विदेशक बच्चा सभकेँ

अध्याय ८९ : सत्यव्रतक जन-सुनवाई

अध्याय ९० : नामक संविधान

अध्याय ८१ सँ ९० : पाठ-संरचना आ आलोचनात्मक अन्तरसम्बन्ध

अध्याय ९१ : धूर्त सभक अनुपस्थिति

अध्याय ९२ : ठूँठक छाँह

अध्याय ९३ : पुनः बाढ़ि

अध्याय ९४ : गोहि सभक वापसी

अध्याय ९५ : लाउ किन-हंगक अंतिम सौदा

अध्याय ९६ : बटुकनाथक देर-सँ-आयल क्षमा

अध्याय ९७ : चन्द्रपालक म्यूल अकाउण्ट

अध्याय ९८ : राघवक अंतिम संदेश

अध्याय ९९ : सत्यव्रत मेहताक गवाही

अध्याय १०० : गज, ग्राह, आ बच्चाक हाथ

अध्याय ९१ सँ १०० : पाठ-संरचना आ आलोचनात्मक अन्तरसम्बन्ध

अध्याय १०१ : अनाम ग्रहक स्वप्न-आमन्त्रण

अध्याय १०२ : स्वप्नमे ग्रहक बीच कबड्डी

अध्याय १०३ : स्वप्नक अनाम ग्रहपर नाम-पाठ

अध्याय १०४ : जागरण: गढ़ नारिकेल पृथ्वी चुनैत अछि

अध्याय १०५ : पृथ्वीक पहिल पहरा

अध्याय १०६ : बीजक गवाही

अध्याय १०७ : बीजक चोरी

अध्याय १०८ : माटिक मुँह

अध्याय १०९ : जलक स्मृति

अध्याय ११० : आगिक साक्षी

अध्याय १०१ सँ ११० : पाठ-संरचना आ आलोचनात्मक अन्तरसम्बन्ध

अध्याय १११ : वायुक प्रश्न

अध्याय ११२ : आकाशक रिक्ति

अध्याय ११३ : शब्दक देह

अध्याय ११४ : अर्थक आत्मा

अध्याय ११५ : कण्ठक पहरा

अध्याय ११६ : मौनक उत्तराधिकार

अध्याय ११७ : स्मृतिक ऋण

अध्याय ११८ : देहक अधिकार

अध्याय ११९ : श्रमक देह

अध्याय १२० : न्यायक देह

अध्याय १११ सँ १२० : पाठ-संरचना आ आलोचनात्मक अन्तरसम्बन्ध

अध्याय १२१ : जातिक पिंजरा

अध्याय १२२ : गंगेशक मुक्ति

अध्याय १२३ : तत्त्वचिन्तामणिक पात

अध्याय १२४ : प्रमाणक अग्नि

अध्याय १२५ : निर्णयक धान

अध्याय १२६ : अन्नक न्याय

अध्याय १२७ : भूखक नाम

अध्याय १२८ : प्यासक नाम

अध्याय १२९ : नूनक शपथ

अध्याय १३० : स्वादक न्याय

अध्याय १२१ सँ १३० : आलोचनात्मक अन्तरसम्बन्ध

अध्याय १३१ : साझा थारी

अध्याय १३२ : रसोइक गणराज्य

अध्याय १३३ : विदेह नाट्य उत्सवक बुलाहट

अध्याय १३४ : कबड्डी खेलनिहार सभक नाट्य-पाठ

अध्याय १३५ : विदेह नाट्य उत्सवक मंचन

अध्याय १३६ : तालीक बादक सन्नाटा

अध्याय १३७ : दर्शकक गवाही

अध्याय १३८ : मंचसँ बाहरक जुलूस

अध्याय १३९ : बाटक रंगमंच

अध्याय १४० : चल चौपाल

अध्याय १३१ सँ १४० : आलोचनात्मक अन्तरसम्बन्ध

अध्याय १४१ : बरामदाक फैसला

अध्याय १४२ : रेकर्ड-घरक अन्हार

अध्याय १४३ : रद्दी बोराक गवाही

अध्याय १४४ : नामक यात्रा

अध्याय १४५ : डरक पहिल दरार

अध्याय १४६ : मुहरक दाग

अध्याय १४७ : घर-घरक दस्तक

अध्याय १४८ : मिलावटक पहिचान

अध्याय १४९ : जालक नक्शा

अध्याय १५० : मुहरक छाया

अध्याय १४१ सँ १५० : आलोचनात्मक अन्तरसम्बन्ध

अध्याय १५१ : मुहर चलौनिहार हाथ

अध्याय १५२ : आदेशक स्रोत

अध्याय १५३ : संकेतक पाछाँ नाम

अध्याय १५४ : बाबाक वचन

अध्याय १५५ : सेवाक खाता

अध्याय १५६ : दानक ऋण

अध्याय १५७ : लोहेक संदूक

अध्याय १५८ : सहमति-कापीक मिलान

अध्याय १५९ : मृतकक सहमति

अध्याय १६० : गोदामक छाया

अध्याय १५१ सँ १६० : आलोचनात्मक अन्तरसम्बन्ध

अध्याय १६१ : फोनक कैद

अध्याय १६२ : आवाजक मोहर

अध्याय १६३ : हटायल कागजक निशान

अध्याय १६४ : चन्द्रपालक छायाक पेट

अध्याय १६५ : छायाक देह

अध्याय १६६ : इमली घाटक कोठार

अध्याय १६७ : नदी पारक आवाज

अध्याय १६८ : शहरक गला

अध्याय १६९ : चन्द्र दूक दरबज्जा

अध्याय १७० : चन्द्र एकक खोल

अध्याय १७१ : चन्ना गाछीक अदृश्य अदालत

अध्याय १७२ : गाँठक पढ़नाइ

अध्याय १७३ : पंजीक पहरा

अध्याय १७४ : अदृश्य अदालतक चौखट

अध्याय १७५ : मुहरबाहकक नाम

अध्याय १७६ : सेवा-समारोहक अन्हार

अध्याय १७७ : घर-घरक कागज

अध्याय १७८ : ऊपरक कोठरी

अध्याय १७९ : मुहरक पगचिन्ह

अध्याय १८० : शहरक खाता

अध्याय १६१ सँ १८० : अन्तरसम्बन्ध

अध्याय १८१ : सिमक छाया

अध्याय १८२ : हरिहर सेवा केंद्रक दरबाजा

अध्याय १८३ : फोनक भीतरक चेहरा

अध्याय १८४ : आवाजक नकाब

अध्याय १८५ : मास्टरक कमरा

अध्याय १८६ : मधवेशक असली नाम

अध्याय १८७ : छत्ताक भीतरक रानी

अध्याय १८८ : महेश्वरक मुहर

अध्याय १८९ : लोहेक पेटी

अध्याय १९० : नील पंजी

अध्याय १९१ : ध्रुवेशक कुर्सी

अध्याय १९२ : बन्द रेकॉर्डरक स्वर

अध्याय १९३ : आवाजक चेहरा

अध्याय १९४ : साँसक समन

अध्याय १९५ : रोकल खाता

अध्याय १९६ : जलसमाधिक अर्थ

अध्याय १९७ : ऊपर उठल नाम

अध्याय १९८ : अपराधीक धरती

अध्याय १९९ : संदूकक भीतरक बिहान

अध्याय २०० : नामक पहरुआ

अध्याय १८१ सँ २०० : अन्तरसम्बन्ध

खण्ड २२ — रंग-संगम : बारह मैथिली नाटक

मूल समीक्षा-पाण्डुलिपिसँ सूचीकृत शीर्षक : 35

०१. अपाला आत्रेयी

०२. भऽ जाएब छू

०३. दानवीर दधीची

०४. गंगा ब्रिज

०५. जलोदीप

०६. कमलाक भगता

०७. मचण्ड

०८. संकर्षण

०९. उल्कामुख

१०. व्याप्ति

११. जे नाम पोथीमे नहि

१२. पानिक लेखा

नओ नाटक : अन्तरनाटकीय तुलनात्मक मूल्याङ्कन

बारह नाटक : मूल मैथिली–अंग्रेजी रंगमंचीय समेकित मूल्याङ्कन

ग्रन्थाधार

रंग-संगम · खण्ड १

नाट्य-युग्म १ : अपाला आत्रेयी

नाट्य-युग्म २ : भऽ जाएब छू

समीक्षित कृतिसभक तुलनात्मक टिप्पणी

रंग-संगम · खण्ड १ · तेसर आ चारिम नाट्य-युग्म

नाट्य-युग्म ३ : दानवीर दधीची

नाट्य-युग्म ४ : गंगा ब्रिज

प्रथम चारि नाटकक तुलनात्मक आलोचनात्मक सूत्र

रंग-संगम · खण्ड १ · पाँचम आ छठम नाट्य-युग्म

नाट्य-युग्म ५ : जलोदीप

नाट्य-युग्म ६ : कमलाक भगता

पहिल छओ नाटक : अन्तरनाटकीय तुलनात्मक सूत्र

रंग-संगम · खण्ड १ · सातम सँ नओम नाट्य-युग्म

नाट्य-युग्म ७ : मचण्ड

नाट्य-युग्म ८ : संकर्षण

नाट्य-युग्म ९ : उल्कामुख

रंग-संगम · खण्ड २ · दसम सँ बारहम नाट्य-युग्म

नाट्य-युग्म १० : व्याप्ति

नाट्य-युग्म ११ : जे नाम पोथीमे नहि

नाट्य-युग्म १२ : पानिक लेखा

खण्ड २३ — दीवान-ए-विदेह : गजल

मूल समीक्षा-पाण्डुलिपिसँ सूचीकृत शीर्षक : 1181

गजल १ : मोन पड़ैए

गजल २ : रहि गेल

गजल ३ : आउ ने

गजल ४ : कहियो नै

गजल ५ : अहाँक बाद

गजल ६ : सुनैछी

गजल ७ : बदलि गेल

गजल ८ : रहि जाउ

गजल ९ : कतेक दिन

गजल १० : बाकी अछि

गजल ११ : एखन धरि

गजल १२ : कहू ने

गजल १३ : के जानै

गजल १४ : राति भरि

गजल १५ : रहए दिअ

गजल १६ : आइयो

गजल १७ : कतेक दूर

गजल १८ : एखनहु

गजल १९ : फेर भेटत

गजल २० : रहबे करत

गजल २१ : घुरि आउ ने

गजल २२ : कहू तँ सही

गजल २३ : मोनमे अछि

गजल २४ : बदलि गेलै

गजल २५ : बाकी अछि

गजल २६ : जाइत छी

गजल २७ : बाँचल अछि

गजल २८ : नै भूलब

गजल २९ : देखै छी

गजल ३० : बाँचि रहल अछि

गजल ३१ : याद रहत

गजल ३२ : बाजि उठैए

गजल ३३ : नै बिकत

गजल ३४ : घुरि अबैए

गजल ३५ : ठाढ़ रहत

गजल ३६ : सुनाइ पड़ैए

गजल ३७ : बुझाइ पड़ैए

गजल ३८ : छोड़ि देलहुँ

गजल ३९ : लिखैत रहू

गजल ४० : जागि रहल अछि

गजल ४१ : अछि किएक

गजल ४२ : रहि गेल

गजल ४३ : बाजू ने

गजल ४४ : के कहत

गजल ४५ : एना नहि

गजल ४६ : धीरे-धीरे

गजल ४७ : एहि शहरमे

गजल ४८ : तखन बुझलहुँ

गजल ४९ : मोनमे रहत

गजल ५० : गीत बनत

गजल ५१ : कहब ने

गजल ५२ : भेल अछि

गजल ५३ : आब नहि

गजल ५४ : याद अबैए

गजल ५५ : फेर आउ

गजल ५६ : छूटि गेल

गजल ५७ : रहैत अछि

गजल ५८ : ककरा कहू

गजल ५९ : बुझाइत अछि

गजल ६० : रहि जेतै

गजल ६१ : एहि बेर

गजल ६२ : कहैए

गजल ६३ : रहू ने

गजल ६४ : किएक नै

गजल ६५ : आबो अछि

गजल ६६ : देखू ने

गजल ६७ : घुरि चलू

गजल ६८ : कहियो-कहियो

गजल ६९ : तखनियो

गजल ७० : सुनैत रहू

गजल ७१ : फेरो कहू

गजल ७२ : एखन बाकी अछि

गजल ७३ : लगैए

गजल ७४ : कोना होएत

गजल ७५ : रहि जाए

गजल ७६ : ओहि पार

गजल ७७ : बुझि गेलहुँ

गजल ७८ : एहि रातिमे

गजल ७९ : आब की

गजल ८० : सुनि लिअ

गजल ८१ : एखनहुँ

गजल ८२ : घुरि आउ

गजल ८३ : कहियो ने

गजल ८४ : मोन मानै नहि

गजल ८५ : रहि गेलै

गजल ८६ : आब कहू

गजल ८७ : बिसरब नहि

गजल ८८ : तइयो

गजल ८९ : ओहि दिस

गजल ९० : गीत बनि जाए

गजल ९१ : कने ठहरू

गजल ९२ : एखन धरि

गजल ९३ : कने सुनू

गजल ९४ : रहए दिअ

गजल ९५ : के जानै

गजल ९६ : फेर भेटत

गजल ९७ : एना किए

गजल ९८ : आबो रहत

गजल ९९ : नै भूलब

गजल १०० : बाँचल रहत

गजल १०१ : मानक दाम

गजल १०२ : घरक दुआर

गजल १०३ : रहि जाए

गजल १०४ : कतेक दिन

गजल १०५ : एखनहुँ

गजल १०६ : सुनि लिअ

गजल १०७ : तइयो

गजल १०८ : आब कहू

गजल १०९ : नै भूलब

गजल ११० : बाँचल रहत

गजल १११ : कने बाजू

गजल ११२ : नै कहब

गजल ११३ : याद आबैए

गजल ११४ : बुझू कने

गजल ११५ : फेर होएत

गजल ११६ : ओहि ठाम

गजल ११७ : रहैत अछि

गजल ११८ : कनी बात

गजल ११९ : अपन मान

गजल १२० : कनी बाट

गजल १२१ : जतन गीत

गजल १२२ : नेहक थाह

गजल १२३ : ओहि पार

गजल १२४ : गामक सुर

गजल १२५ : कने रहू

गजल १२६ : भूलि नहि जाउ

गजल १२७ : ओतबे काफी

गजल १२८ : ककरो लेल

गजल १२९ : एखनो सुनू

गजल १३० : फेर लिखब

गजल १३१ : फेरो सही

गजल १३२ : घर चलू

गजल १३३ : साँच कहू

गजल १३४ : रहि सकैए

गजल १३५ : एतबे रहय

गजल १३६ : फेर जनमत

गजल १३७ : आब नहि

गजल १३८ : तखन देखब

गजल १३९ : कने बचाउ

गजल १४० : नै बदलू

गजल १४१ : एखनो अछि

गजल १४२ : फेर गाबू

गजल १४३ : घरमे बाजू

गजल १४४ : संग रहू

गजल १४५ : फेर उठू

गजल १४६ : कने लिखू

गजल १४७ : तइयो चलू

गजल १४८ : रहय दिअ

गजल १४९ : ककरा कहब

गजल १५० : फेर आबि गेल

गजल १५१ : नै झुकब

गजल १५२ : मोनमे रहत

गजल १५३ : कने छोड़ू

गजल १५४ : समय कहत

गजल १५५ : संग बाँचू

गजल १५६ : नै बिसरू

गजल १५७ : एना रहू

गजल १५८ : फेर बजत

गजल १५९ : अपन रहू

गजल १६० : धीरे चलू

गजल १६१ : चिट्ठी खोलू

गजल १६२ : धार कहैए

गजल १६३ : मान रखू

गजल १६४ : मौन सुनू

गजल १६५ : पोथी बाँचू

गजल १६६ : घुरि देखू

गजल १६७ : धीरे कहू

गजल १६८ : जगैत रहू

गजल १६९ : याद रहत

गजल १७० : मोन खोलू

गजल १७१ : ठाढ़ रहू

गजल १७२ : एतबे बहुत

गजल १७३ : घुरि आबू

गजल १७४ : कने बैसू

गजल १७५ : नामसँ आगाँ

गजल १७६ : एखनो बाँचल अछि

गजल १७७ : मौन राखू

गजल १७८ : फेर पढ़ू

गजल १७९ : रहय

गजल १८० : आजसँ फेर

गजल १८१ : एखनो चलू

गजल १८२ : नाम लिखू

गजल १८३ : घरमे रहय

गजल १८४ : संग रहत

गजल १८५ : खोलि देखू

गजल १८६ : चुप नहि रहू

गजल १८७ : फेर शुरू करू

गजल १८८ : देर भऽ गेल

गजल १८९ : फेर भेटू

गजल १९० : कने राखू

गजल १९१ : आब बुझू

गजल १९२ : एखन बाकी

गजल १९३ : चुप नहि रहू

गजल १९४ : फेर चलू

गजल १९५ : कने थामू

गजल १९६ : ककरा बुझाबू

गजल १९७ : बाँचि रहय

गजल १९८ : घुरि देखब

गजल १९९ : एहि बेर

गजल २०० : मौन रहैए

गजल २०१ : अहाँ रहू

गजल २०२ : धीरे-धीरे

गजल २०३ : हाथक मोल

गजल २०४ : घरमे बाजू

गजल २०५ : बाँचि रहय

गजल २०६ : एतबे नेह

गजल २०७ : समय रहत

गजल २०८ : फेर लिखू

गजल २०९ : एहि मोड़पर

गजल २१० : कने बुझू

गजल २११ : बाँचि रहू

गजल २१२ : मान राखू

गजल २१३ : ओहि पार

गजल २१४ : फेर खिलत

गजल २१५ : अपन राह

गजल २१६ : फेर सँ लिखू

गजल २१७ : एक बेर आर

गजल २१८ : माटि कहैए

गजल २१९ : मोनमे बचल

गजल २२० : अपन कहू

गजल २२१ : आबो महकैत

गजल २२२ : फेर भेटत

गजल २२३ : मेहक बाद

गजल २२४ : मौनक स्वर

गजल २२५ : नदीक वचन

गजल २२६ : पोथीक भीतर

गजल २२७ : उमेरक साँझ

गजल २२८ : श्रमक गरिमा

गजल २२९ : ओहि चुप्पीमे

गजल २३० : घड़ी रुकल छल

गजल २३१ : स्याहीक गन्ध

गजल २३२ : कारीगरक हाथ

गजल २३३ : साँझक रेल

गजल २३४ : फेर सोझाँ

गजल २३५ : अपन उजास

गजल २३६ : अधूरा पन्ना

गजल २३७ : पुरनका रेडियो

गजल २३८ : मेह उतरला पर

गजल २३९ : शहरक कोठरी

गजल २४० : औजारक चमक

गजल २४१ : देह कहैए

गजल २४२ : चिट्ठीक कोर

गजल २४३ : फेर आरम्भ

गजल २४४ : जाड़क धूप

गजल २४५ : बिहानक बजार

गजल २४६ : करघाक सुर

गजल २४७ : पुरनका पुस्तकालय

गजल २४८ : अपन सीमा

गजल २४९ : प्रवासक टिकट

गजल २५० : नब गीत

गजल २५१ : जाड़क धूप

गजल २५२ : बिहानक बजार

गजल २५३ : करघाक धुन

गजल २५४ : पुरनका पुस्तकालय

गजल २५५ : सीमा चिन्हू

गजल २५६ : प्रवासक टिकट

गजल २५७ : नब गीत

गजल २५८ : पुरनका चश्मा

गजल २५९ : हाट छुटला पर

गजल २६० : दीपक धुआँ

गजल २६१ : भाषाक बीज

गजल २६२ : टूटल पुल

गजल २६३ : सीमा बुझू

गजल २६४ : नब पन्ना

गजल २६५ : ओसक बिहान

गजल २६६ : दर्जीक सुई

गजल २६७ : घाटपर

गजल २६८ : पुरनका पोथी

गजल २६९ : बिना कहल

गजल २७० : अहाँक संग

गजल २७१ : एखन लिखू

गजल २७२ : जाड़क धूप

गजल २७३ : लोहारक आगि

गजल २७४ : पुरनका चित्र

गजल २७५ : पुल पार करैत

गजल २७६ : लोकक कंठमे

गजल २७७ : दूरीक बादो

गजल २७८ : नब बिहान

गजल २७९ : पुरनका कुञ्जी

गजल २८० : करघाक धुन

गजल २८१ : नदीक धुँध

गजल २८२ : पोथीक दोकान

गजल २८३ : पड़ोसक आँगन

गजल २८४ : अपन मान

गजल २८५ : अधूरा गीत

गजल २८६ : कुम्हारक चाक

गजल २८७ : पुरनका डाकघर

गजल २८८ : जाड़क धूप

गजल २८९ : बरामदाक कुर्सी

गजल २९० : रातिक स्टेशन

गजल २९१ : बीज बचाउ

गजल २९२ : गीत फेर जन्मत

गजल २९३ : नदीक चिट्ठी

गजल २९४ : धानक गन्ध

गजल २९५ : पुरनका घड़ी

गजल २९६ : नीमक छाँह

गजल २९७ : कागजक नाव

गजल २९८ : साँझक घंटी

गजल २९९ : घर घुरबाक बाट

गजल ३०० : चूल्हिक आँच

गजल ३०१ : पोखरिक चान

गजल ३०२ : मसालाक गन्ध

गजल ३०३ : ओसारक दीप

गजल ३०४ : बरखाक खिड़की

गजल ३०५ : बाँसुरीक दूर स्वर

गजल ३०६ : खेतक पाँति

गजल ३०७ : सामा-चकेवाक साँझ

गजल ३०८ : मखानक पोखरि

गजल ३०९ : कूपक डोर

गजल ३१० : पीपरक पात

गजल ३११ : बखारीक धान

गजल ३१२ : मिथिला-चित्रक रेखा

गजल ३१३ : सरिसो फूल

गजल ३१४ : कमलाक कछार

गजल ३१५ : सिक्कीक शिल्प

गजल ३१६ : पानक बाड़ी

गजल ३१७ : मधुश्रावणीक राति

गजल ३१८ : जाँतक घरघर

गजल ३१९ : कोसीक बालू

गजल ३२० : मेहक बाद माटिक गन्ध

गजल ३२१ : आमक मोजर

गजल ३२२ : अरिपनक रेखा

गजल ३२३ : दूबिपर ओस

गजल ३२४ : बाँसक झुरमुट

गजल ३२५ : दधि-चूड़ाक बिहान

गजल ३२६ : करघाक धुन

गजल ३२७ : कातिकक साँझ

गजल ३२८ : खरिहानक चान

गजल ३२९ : कुसियारक रस

गजल ३३० : पोखरिक सीढ़ी

गजल ३३१ : पलाशक रङ

गजल ३३२ : माटिक चूल्हि

गजल ३३३ : पातक दोना

गजल ३३४ : चैतक हावा

गजल ३३५ : भोरक कुहासा

गजल ३३६ : कुम्हारक चाक

गजल ३३७ : सनईक फूल

गजल ३३८ : गामक हाट

गजल ३३९ : नावक घाट

गजल ३४० : अँगनाक तुलसी

गजल ३४१ : आसिनक अकास

गजल ३४२ : धानक बालि

गजल ३४३ : पुरइनक पात

गजल ३४४ : चरखाक सूत

गजल ३४५ : ओसारक साँझ

गजल ३४६ : महुआक गन्ध

गजल ३४७ : इनारक डोर

गजल ३४८ : फागुनक पवन

गजल ३४९ : ढेकीक ताल

गजल ३५० : भादोक मेघ

गजल ३५१ : बटगाछक छाँह

गजल ३५२ : सुपक हावा

गजल ३५३ : बगुलाक पाँति

गजल ३५४ : चूल्हिक राख

गजल ३५५ : कनेरक फूल

गजल ३५६ : तिलकोरक पात

गजल ३५७ : माटिक घैल

गजल ३५८ : कदम्बक फूल

गजल ३५९ : चरौनिहारक बंसी

गजल ३६० : खपरैल पर मेह

गजल ३६१ : मधुमाछीक गुँजार

गजल ३६२ : दलानक कथा

गजल ३६३ : अड़हुलक फूल

गजल ३६४ : मड़ुआक खेत

गजल ३६५ : पनघटक बाट

गजल ३६६ : पनसक गाछ

गजल ३६७ : जूटक डोर

गजल ३६८ : कोइलीक पुकार

गजल ३६९ : कातिकक चान

गजल ३७० : पूसक बिहान

गजल ३७१ : माटिक दीप

गजल ३७२ : सरपताक झुरमुट

गजल ३७३ : मसूरक फूल

गजल ३७४ : घुरक आगि

गजल ३७५ : बथानक साँझ

गजल ३७६ : जाड़क तारा

गजल ३७७ : बरखाक राति

गजल ३७८ : मटकाक दधि

गजल ३७९ : कदलीक पात

गजल ३८० : सीमरक रूइ

गजल ३८१ : खेतक मेड़

गजल ३८२ : चिरैक पाँति

गजल ३८३ : चाननीक पोखरि

गजल ३८४ : नदीक मोड़

गजल ३८५ : अँगनाक रौद

गजल ३८६ : बन्हल धानक पूला

गजल ३८७ : उड़ैत पतंग

गजल ३८८ : गाछक छाल

गजल ३८९ : घाटपर साँझ

गजल ३९० : ओसक बूँद

गजल ३९१ : काँसक फूल

गजल ३९२ : पोखरिक माछ

गजल ३९३ : सूपमे उड़ैत धान

गजल ३९४ : जाड़क कुहासा

गजल ३९५ : पगडण्डीक धूर

गजल ३९६ : ताड़क छाँह

गजल ३९७ : साँझक घंटी

गजल ३९८ : बेलक सुवास

गजल ३९९ : पपीहाक पुकार

गजल ४०० : तिलक खेत

गजल ४०१ : बाँसक कोपल

गजल ४०२ : नदीक बालू

गजल ४०३ : गोधूलिक धूर

गजल ४०४ : अगहनक बिहान

गजल ४०५ : मखानक पात

गजल ४०६ : कुसियारक खेत

गजल ४०७ : पलाशक फूल

गजल ४०८ : माटिक सुराही

गजल ४०९ : चैती पवन

गजल ४१० : अमरूदक बगिया

गजल ४११ : धानक भूसा

गजल ४१२ : अलसीक नील फूल

गजल ४१३ : आमक मञ्जरी

गजल ४१४ : गामक पोखरि

गजल ४१५ : नदीक बालू

गजल ४१६ : सखुआक पात

गजल ४१७ : गहुमक बालि

गजल ४१८ : गामक पुल

गजल ४१९ : एना रे

गजल ४२० : किछु नै बदलैए

गजल ४२१ : लगैए ई

गजल ४२२ : हमरा की

गजल ४२३ : चलू घुरि चली

गजल ४२४ : अहीं तँ छी

गजल ४२५ : झपाइ छी

गजल ४२६ : देखै छी

गजल ४२७ : तखन किने

गजल ४२८ : अनेरे

गजल ४२९ : बिसरनहिए नीक

गजल ४३० : प्रेमक पथिक

गजल ४३१ : सोचनीक होइए

गजल ४३२ : जा रहल अछि

गजल ४३३ : बुझतै ओ

गजल ४३४ : कहू की करी

गजल ४३५ : अङेजब कोना

गजल ४३६ : रहल अछि

गजल ४३७ : बहुत अछि

गजल ४३८ : दोस्तियारी बिना

गजल ४३९ : परिचर

गजल ४४० : खेत-खम्हारक काज

गजल ४४१ : सत्यसँ भेँट

गजल ४४२ : मोन पड़ल ऐ

गजल ४४३ : धरधड़ी

गजल ४४४ : काज चलत नै

गजल ४४५ : छद्म ज्ञान

गजल ४४६ : तैयार

गजल ४४७ : ई काल

गजल ४४८ : तारा कहलक

गजल ४४९ : ने कहितौं

गजल ४५० : जलोदीप

गजल ४५१ : अन्हार पसरल

गजल ४५२ : भऽ गेलै

गजल ४५३ : छोड़ि आयल छी

गजल ४५४ : रहि रहि

गजल ४५५ : उसरि गेल

गजल ४५६ : सएह बनलिऐ

गजल ४५७ : खेरहा

गजल ४५८ : ढङ बदलब तखनिते

गजल ४५९ : बार्बी

गजल ४६० : चान मामा

गजल ४६१ : सात रंग

गजल ४६२ : दादीक कथा

गजल ४६३ : तरेगन गनी

गजल ४६४ : बाटक खेल

गजल ४६५ : चिड़ैक गीत

गजल ४६६ : हँसीक आँगन

गजल ४६७ : कागजक नाव

गजल ४६८ : दादीक चान

गजल ४६९ : पतंगक पाँखि

गजल ४७० : मेहक खेल

गजल ४७१ : निन्नक कथा

गजल ४७२ : अपन सपना

गजल ४७३ : खेलक मैदान

गजल ४७४ : पोथीक पाँखि

गजल ४७५ : परीक्षाक बिहान

गजल ४७६ : मीतक संग

गजल ४७७ : पर्दासँ बाहर

गजल ४७८ : अपन राह

गजल ४७९ : तुलना नहि

गजल ४८० : जालजगतसँ बाहर

गजल ४८१ : विषय अपन

गजल ४८२ : लाइकसँ बाहर

गजल ४८३ : बात फरिछाउ

गजल ४८४ : फेर प्रयास

गजल ४८५ : अपन रूप

गजल ४८६ : अपन बात

गजल ४८७ : अपन गति

गजल ४८८ : ना कहू

गजल ४८९ : निन्न बचाउ

गजल ४९० : समयक हिस्सा

गजल ४९१ : बाट चुनैत

गजल ४९२ : ना कहू

गजल ४९३ : अपन गति

गजल ४९४ : ना कहू

गजल ४९५ : निन्नक समय

गजल ४९६ : प्रश्न पूछू

गजल ४९७ : मीत चुनू

गजल ४९८ : हारक बाद

गजल ४९९ : परीक्षाक बाद

गजल ५०० : अपन विषय

गजल ५०१ : अपन निर्णय

गजल ५०२ : अपन ताल

गजल ५०३ : तुलना छोड़ू

गजल ५०४ : भरोसा

गजल ५०५ : भूलसँ सीखू

गजल ५०६ : कने आराम

गजल ५०७ : सोझाँ बाजू

गजल ५०८ : अपन सुर

गजल ५०९ : पर्दासँ परे

गजल ५१० : मीतसँ बात

गजल ५११ : ध्यानक डोर

गजल ५१२ : मदद माँगू

गजल ५१३ : भविष्यक बाट

गजल ५१४ : निर्णय

गजल ५१५ : एक परिणाम

गजल ५१६ : स्क्रीनक बाहर

गजल ५१७ : पहिल कमाइ

गजल ५१८ : प्रश्नक साहस

गजल ५१९ : टीमक खेल

गजल ५२० : पहिल कमाइ

गजल ५२१ : प्रश्नक साहस

गजल ५२२ : टीमक खेल

गजल ५२३ : कौशल

गजल ५२४ : खराब दिन

गजल ५२५ : टोली

गजल ५२६ : निर्णयक समय

गजल ५२७ : पहिल खर्च

गजल ५२८ : प्रश्न करू

गजल ५२९ : समाचार

गजल ५३० : पहिल यात्रा

गजल ५३१ : पहिल भाषण

गजल ५३२ : पहिल असफलता

गजल ५३३ : समूहक दबाव

गजल ५३४ : डिजिटल विराम

गजल ५३५ : समय बाँटू

गजल ५३६ : पहिल जिम्मेदारी

गजल ५३७ : साँच जाँचू

गजल ५३८ : अपन आवाज

गजल ५३९ : परीक्षा बाद

गजल ५४० : मीतक सीमा

गजल ५४१ : अपन लय

गजल ५४२ : मीतक पहिचान

गजल ५४३ : डरक पार

गजल ५४४ : आरम्भ

गजल ५४५ : रुचिक बाट

गजल ५४६ : साँचक जाँच

गजल ५४७ : नब मीत

गजल ५४८ : भूल स्वीकार

गजल ५४९ : एखन करू

गजल ५५० : प्रश्न पुछू

गजल ५५१ : काज बाँटू

गजल ५५२ : अपन गति

गजल ५५३ : नब हुनर

गजल ५५४ : बात जाँचू

गजल ५५५ : लिखि कऽ बुझू

गजल ५५६ : एक काज

गजल ५५७ : रिसक बेर

गजल ५५८ : अपन माप

गजल ५५९ : मीत चुनू

गजल ५६० : कने-कने सीखू

गजल ५६१ : अपन स्वर

गजल ५६२ : भूलसँ सीखू

गजल ५६३ : बेर बाँटू

गजल ५६४ : साँच लिखू

गजल ५६५ : सुनि कऽ बाजू

गजल ५६६ : कौड़ी बचाउ

गजल ५६७ : गाछ रोपू

गजल ५६८ : प्रश्न लिखू

गजल ५६९ : मीतक मान

गजल ५७० : सपन सँ काज

गजल ५७१ : बेर बाँटू

गजल ५७२ : पहिने सुनू

गजल ५७३ : हुनर निखारू

गजल ५७४ : सीमा राखू

गजल ५७५ : पढ़ि बुझू

गजल ५७६ : बाट चुनू

गजल ५७७ : निज बात

गजल ५७८ : प्रश्नक साहस

गजल ५७९ : दिनक क्रम

गजल ५८० : दबावमे निर्णय

गजल ५८१ : मीतक गोपन बात

गजल ५८२ : अपूर्णतासँ सीख

गजल ५८३ : अपन सीमा

गजल ५८४ : प्रमाण देखू

गजल ५८५ : धीरे बढ़ू

गजल ५८६ : थाकल मोन

गजल ५८७ : संग काज

गजल ५८८ : सहायता माँगू

गजल ५८९ : अपन सीमा राखू

गजल ५९० : काजक क्रम

गजल ५९१ : साँच जाँचू

गजल ५९२ : साँचक मान

गजल ५९३ : ओकर नाम नोर छल

गजल ५९४ : मोन बीच रात रहल

गजल ५९५ : मीत मोन प्राण छल

गजल ५९६ : नेहक अन्तिम छोर

गजल ५९७ : अहाँ बिनु रहल

गजल ५९८ : जे मोनसँ नै गेल

गजल ५९९ : अहाँ मोनमे रहि गेल

गजल ६०० : जे नोर मोनमे जागल अछि

गजल ६०१ : जे हमर संग रहैत अछि

गजल ६०२ : ओ नोर हमरा मोन पड़ैए

गजल ६०३ : ओ भोर हमरा मोन पड़ैए

गजल ६०४ : प्रीत हमरा भीतर अछि

गजल ६०५ : दाग मोनसँ नहि जाइए

गजल ६०६ : मीत फेर नहि भेटल

गजल ६०७ : नोर मोनमे बसल अछि

गजल ६०८ : नोर अहाँ बिनु रहि गेल

गजल ६०९ : मीत मोनमे रहि जाइए

गजल ६१० : भूल मोनसँ नहि गेल

गजल ६११ : नेह एखनो बचल अछि

गजल ६१२ : ओ ठोर फेरो मोन पड़ैए

गजल ६१३ : जे नोर हमरा छोड़ि नहि गेल

गजल ६१४ : नेहक गान बचल अछि

गजल ६१५ : ओ नाम एखनो मोनमे अछि

गजल ६१६ : आस भीतर रहैए

गजल ६१७ : आस संग चलैत अछि

गजल ६१८ : आस अहाँक पाछाँ रहैए

गजल ६१९ : जे नोर आबो मोनमे अछि

गजल ६२० : नेह राति भरि जागैत अछि

गजल ६२१ : आस आबो संग रहैत अछि

गजल ६२२ : जे नोर अहाँक पाछाँ रहि गेल

गजल ६२३ : ओ भोर मोनमे रहि गेल

गजल ६२४ : ओ गान हमरा संग अछि

गजल ६२५ : ओ नोर हमरा मोन पड़ैए

गजल ६२६ : ओ नेह मोनमे बचल अछि

गजल ६२७ : ओ नाम आबो संग अछि

गजल ६२८ : ओ नेह राति भरि जागैत अछि

गजल ६२९ : ओ नेह हमरा भीतर रहैए

गजल ६३० : मीत फेर नहि भेटल

गजल ६३१ : ओ नोर मोनसँ नहि गेल

गजल ६३२ : ओ नोर मोनमे बसल अछि

गजल ६३३ : नोर हमरा संग अछि

गजल ६३४ : नाम मोनमे रहि गेल

गजल ६३५ : मीत आबो संग अछि

गजल ६३६ : नेह मोनमे बचल अछि

गजल ६३७ : दाग हमरा भीतर रहैए

गजल ६३८ : नोर मोनसँ नहि गेल

गजल ६३९ : नाम हमरा मोन पड़ैए

गजल ६४० : प्रीत हमरा संग अछि

गजल ६४१ : नेह मोनमे रहि गेल

गजल ६४२ : नोर मोनमे बसल अछि

गजल ६४३ : नोर फेरो आयल

गजल ६४४ : नाम मोनमे राखू

गजल ६४५ : प्रीत फेरो जागल

गजल ६४६ : ध्यान मोनमे राखू

गजल ६४७ : मीत मोनमे खोजू

गजल ६४८ : गाम मोनमे देखू

गजल ६४९ : नोर मोनमे राखू

गजल ६५० : ज्ञान फेरो जागल

गजल ६५१ : प्रीत मोनमे राखू

गजल ६५२ : नोर मोनमे खोजू

गजल ६५३ : नोर मोन संग छल

गजल ६५४ : नाम मोन बीच छल

गजल ६५५ : मीत फेर दूर गेल

गजल ६५६ : नाम मोन संग छल

गजल ६५७ : प्रीत मोन बीच छल

गजल ६५८ : गाम फेर दूर गेल

गजल ६५९ : नोर फेर मोन आय

गजल ६६० : मान मोन बीच छल

गजल ६६१ : नाम फेर लग छल

गजल ६६२ : मीत साँझ संग आय

गजल ६६३ : ओ नाम मोन संग अछि

गजल ६६४ : ओ डोर मोन पास अछि

गजल ६६५ : ओ नेह मोन बीच अछि

गजल ६६६ : अहाँक नाम, निन्न दूर अछि

गजल ६६७ : ई सोर नोर संग अछि

गजल ६६८ : नोर मौन, नेह गाढ़ अछि

गजल ६६९ : नेह एखनो मोन संग अछि

गजल ६७० : पुरन सोर घर बीच अछि

गजल ६७१ : अहाँक नाम आबो पास अछि

गजल ६७२ : पुरन दुआरि फेर मोन पड़ल

गजल ६७३ : बुझल दीपक उजियार

गजल ६७४ : मौनक सोर भीतर जागल

गजल ६७५ : दूर गेलहुँ तऽ नेह बुझलहुँ

गजल ६७६ : मौनक तान भीतर बजैत रहल

गजल ६७७ : अन्हारक भोर ककरो नहि देखायल

गजल ६७८ : मेटल नाम हमरा घर आयल

गजल ६७९ : अन्हार हमरा मोन बुझायल

गजल ६८० : जे गेल से भीतर रहि गेल

गजल ६८१ : पानि अपन पिआस कहैत रहल

गजल ६८२ : सून्न दुआरि एतबे कहि गेल

गजल ६८३ : नेहक बाति रहि जाइत अछि

गजल ६८४ : अन्हार हमरासँ गप करैत अछि

गजल ६८५ : नोर हमरा संग जागैत रहल

गजल ६८६ : साँझक बादो घर नहि सुतल

गजल ६८७ : नाम मेटल, सोर नहि मेटल

गजल ६८८ : चान डूबल, नेह नहि डूबल

गजल ६८९ : पार भेटल, मझधार बाँचल

गजल ६९० : सून्न गामक एकटा साँझ

गजल ६९१ : ठोर गुम्म, भीतर गीत

गजल ६९२ : भोर आयल, राति नहि गेल

गजल ६९३ : जे भोर मोन पड़ैत अछि

गजल ६९४ : जीवनक सार कहू

गजल ६९५ : मोनक भीतर राह रहू

गजल ६९६ : केवल ई मान नहि

गजल ६९७ : जीवन आस जकाँ

गजल ६९८ : जीवनमे गाम बिनु

गजल ६९९ : ई केवल काल छल

गजल ७०० : मोनक भीतर पीर कतए

गजल ७०१ : एतेक फेर किएक

गजल ७०२ : जीवनमे फूल रहैत अछि

गजल ७०३ : एखनो चाह मोनमे अछि

गजल ७०४ : ओकर सोर रहि गेल

गजल ७०५ : मौन एक गीत लगैत अछि

गजल ७०६ : नाम मोन पड़ैए

गजल ७०७ : हमर मोन रुवैए किएक?

गजल ७०८ : चाह आबो बचल अछि

गजल ७०९ : मोन राति नाम फेर कहैत रहल

गजल ७१० : मीत आब दूर गेल; मोनमे भार शेष अछि

गजल ७११ : मोनमे साँचक सार एखनो अछि

गजल ७१२ : भोर मोनमे अछि

गजल ७१३ : नेहक नाम आब अछि

गजल ७१४ : नम्र मोन मान संग अछि

गजल ७१५ : मोनमे सार बचल अछि

गजल ७१६ : भोर रहि जाइत अछि

गजल ७१७ : मान बचैए एखनो

गजल ७१८ : आन बाट दिसैए फेर

गजल ७१९ : मोन फेर बाट बदलैए

गजल ७२० : साँच लेल कोन माप अछि

गजल ७२१ : दिस आन साँच देख

गजल ७२२ : साँच एक बेर भेल नहि

गजल ७२३ : नेहक सार होइत अछि

गजल ७२४ : साँचक नव ढंग रहैए

गजल ७२५ : नेह मूल सार अछि

गजल ७२६ : मोन बीच एक नाव अछि

गजल ७२७ : जग मान जागैए

गजल ७२८ : एक राह सार नहि

गजल ७२९ : मुक्त राह सार अछि

गजल ७३० : झट ज्ञान नहि

गजल ७३१ : आन पीर नोर मात्र नहि

गजल ७३२ : भाव मूल थाह अछि

गजल ७३३ : प्रश्न बीच गीत अछि

गजल ७३४ : साँचक सोर अछि

गजल ७३५ : भीतर आस रहै छै

गजल ७३६ : प्रश्न उठि गेलै, द्वार खुलै छै

गजल ७३७ : अपन मत जाँचै छी, सार दिसै छै

गजल ७३८ : छूटल स्वर उठै छै, हाल बदलै छै

गजल ७३९ : अंक सभ बोलै छै, सार खोजै छी

गजल ७४० : नदी रूप बदलै छै, सार बचै छै

गजल ७४१ : ज्ञान फेर बदलै छै, आधार जाँचै छी

गजल ७४२ : मान जखन बढ़ै छै, विश्वास रहै छै

गजल ७४३ : घाव जखन देखै छी, दाग बुझै छी

गजल ७४४ : गौरव जखन बढ़ै छै, प्रमाण माँगै छै

गजल ७४५ : दोषो देखलै मोन, सार रहि जाइ छै

गजल ७४६ : रूप जखन मिललै, मेल तखन विचार भेलै

गजल ७४७ : काल्हिक आधार पूछै छी

गजल ७४८ : भाग्यैं साँच भेलै, कोन आधार मिलै छै

गजल ७४९ : साँच फेर मिलै छै, सार खुलै छै

गजल ७५० : प्रश्न जखन उठै छै, सार बुझै छी

गजल ७५१ : भाग्य फेर जाँचै छी, आधार खोजै छी

गजल ७५२ : रूप फेर जाँचै छी, आकार खुलै छै

गजल ७५३ : साँच जखन कहै छी, डोर रहै छै

गजल ७५४ : रूप फेर बदलै छै, सार बचै छै

गजल ७५५ : छूटल स्वर उठै छै, मान बदलै छै

गजल ७५६ : प्रश्न फेर उठै छै, राह दिसै छै

गजल ७५७ : अंक मात्र कहै छै, विचार जगै छै

गजल ७५८ : नोर-सोर बुझै छी, हाल खुलै छै

गजल ७५९ : काल पार सोचै छी, भोर देखै छी

गजल ७६० : सत्ता फेर जाँचै छी, ध्यान रखै छी

गजल ७६१ : ज्ञान जखन बदलै छै, उपाय मिलै छै

गजल ७६२ : दाबी फेर जाँचै छी, विश्वास बचै छै

गजल ७६३ : मत जखन सुनै छी, प्रभाव बुझै छी

गजल ७६४ : काल जखन मुड़ै छै, ढंग परखै छी

गजल ७६५ : माप जखन लगै, ज्ञान मोनमे उतरैत अछि

गजल ७६६ : मान जखन बचै, आस रूप धरैत अछि

गजल ७६७ : घाव जखन दुखै, उपचार द्वार खोलैत अछि

गजल ७६८ : साँच फेर खुलै, नोर सँ जुड़ैत अछि

गजल ७६९ : मोन फेर जागै, प्रीत संग चलैत अछि

गजल ७७० : न्याय फेर बढ़ै, माप बनि रहैत अछि

गजल ७७१ : पीरक मूल खुलै, निदान दिशा दैत अछि

गजल ७७२ : याद फेर उठै, नोर मोन फेरबैत अछि

गजल ७७३ : प्रश्न जखन उठै, विचार कैँ खोजैत अछि

गजल ७७४ : पीर जखन घटै छै, आस जागि उठैए

गजल ७७५ : घर पाछाँ छुटै छै, सार मोनमे बसैए

गजल ७७६ : कूल दूर सरै छै, तरंग संगे बहैए

गजल ७७७ : बीज माटि फोड़ै छै, प्रीत माटिमे अँकुरैए

गजल ७७८ : प्रश्न माथ उठै छै, ज्ञान ऊपर चढ़ैए

गजल ७७९ : पीर नोर कहै छै, नेह नोरमे भीजैए

गजल ७८० : राति पाछाँ सरै छै, आस भोरमे फूटैए

गजल ७८१ : शब्द पवन चढ़ै छै, संवाद पवनमे उड़ैए

गजल ७८२ : घाव बात कहै छै, भाव नोरमे चमकैए

गजल ७८३ : रोष देह चढ़ै छै, क्रोध भीतर धधकैए

गजल ७८४ : सोर दूर रहै छै, राग मौनमे गमकैए

गजल ७८५ : पएर रोक घेरै छै, आकाश पार निकलैए

गजल ७८६ : पुरना बीज बचै छै, मूल जड़ि धरैए

गजल ७८७ : पीर देह कहै छै, ताप देहमे सिहरैए

गजल ७८८ : पन्ना फेर खुलै छै, नाम कालमे डोलैए

गजल ७८९ : दाबी जोर करै छै, बात साँचमे टिकैए

गजल ७९० : दीप राति जरै छै, नेह मोनमे उजरैए

गजल ७९१ : राख छाँह धरै छै, गीत राखसँ फूलैए

गजल ७९२ : रेखा नाम बनै छै, पहचान सीमा गलैए

गजल ७९३ : रूप नाम बदलै छै, स्वरूप नामसँ छूटैए

गजल ७९४ : नदी याद बहै छै, धार स्मृतिमे घुरैए

गजल ७९५ : लोक सोर जुड़ै छै, रंग लोकमे बजैए

गजल ७९६ : पएर माटि छुबै छै, देश माटिसँ जनमैए

गजल ७९७ : दूर घर रहै छै, प्रीत दूरि घटैए

गजल ७९८ : डगमग मोन रहै छै, विश्वास डोर सम्हरैए

गजल ७९९ : पएर मोड़ पड़ै छै, उपाय दिशा मुड़ैए

गजल ८०० : गीत काल लाँघै छै, गीत अन्त लाँघैए

गजल ८०१ : दाम रोज बदलै छै, सार बाजार जँचैए

गजल ८०२ : मेह राति बढ़ै छै, धार कूल बनैए

गजल ८०३ : रस्सी हाथ उतरै छै, प्यास कुआँ बोलैए

गजल ८०४ : सीटी दूर बजै छै, राह रेल चलैए

गजल ८०५ : दीप कोन जरै छै, ज्ञान पन्ना खुलैए

गजल ८०६ : डाक पएर चलै छै, सार चिट्ठी पहुँचैए

गजल ८०७ : जड़ि माटि पकड़ै छै, मूल छाँह रहैए

गजल ८०८ : माटि हाथ नमै छै, रूप चाक घुमैए

गजल ८०९ : पर्दा धीरे उठै छै, रंग मंच धड़कैए

गजल ८१० : आँखि गोल चमकै छै, नोर बालक पूछैए

गजल ८११ : केश धीर बदलै छै, श्वास उमिर ढलैए

गजल ८१२ : नाव नीर उतरै छै, धार सीमा काटैए

गजल ८१३ : काठ रेखा जागै छै, छाप हाथ गढ़ैए

गजल ८१४ : मेह राति पड़ै छै, नेह छप्पर बजैए

गजल ८१५ : रोटी हाथ बाँटै छै, स्वाद थारी जुड़ैए

गजल ८१६ : गवाही स्वर उठै छै, प्रमाण न्याय तौलैए

गजल ८१७ : स्वप्न रूप बदलै छै, रूप भोर जगबैए

गजल ८१८ : बत्ती राति जरै छै, सोर नगर जागैए

गजल ८१९ : आखर पात सजै छै, बोल लिपि बचैए

गजल ८२० : चिता शान्त पड़ै छै, फूल राख बोलैए

गजल ८२१ : दू हाथ मिलै छै, नेह बंधन जँचैए

गजल ८२२ : ट्रेन गाम छोड़ै छै, द्वार पएर घुरैए

गजल ८२३ : घंटी भोर बजै छै, ज्ञान कक्षा जागैए

गजल ८२४ : पीर धीरे कहै छै, भेद देह सुनैए

गजल ८२५ : पएर माथ रुकै छै, पार आकाश खुलैए

गजल ८२६ : घड़ी भोर बजै छै, काल फेर सरकै

गजल ८२७ : धान बीज सुकै छै, अगिला ऋतु टिकै

गजल ८२८ : दर्पण भोर चमकै छै, चेहरा रेखा उभरै

गजल ८२९ : तान सूता तनै छै, बाना रंग जुड़ै

गजल ८३० : ढोल दूर बजै छै, रंग झण्डा लहरै

गजल ८३१ : पएर ढलान चढ़ै छै, कुहरा दूर सरै

गजल ८३२ : मधुमाछि भोर उड़ै छै, फूल गन्ध खोजै

गजल ८३३ : चन्द्र राति चमकै छै, छाँह धीरे चढ़ै

गजल ८३४ : पुल नदी लाँघै छै, दू कूल जुड़ै

गजल ८३५ : सीसा टाइप सजै छै, स्याही रोल चढ़ै

गजल ८३६ : रेडियो भोर बजै छै, दूर स्वर अबै

गजल ८३७ : पुरना फोटो खुलै छै, चेहरा मुस्की रहै

गजल ८३८ : ताला द्वार लटकै छै, हाथ धातु घुमै

गजल ८३९ : सूखल पात सरसरै छै, चिनगी छोट उठै

गजल ८४० : नहर खेत मुड़ै छै, नीर रेखा चलै

गजल ८४१ : पत्थर रेखा रहै छै, आखर धीरे घिसै

गजल ८४२ : बाँस हवा डोलै छै, जड़ि माटि थामै

गजल ८४३ : पतंग छत उठै छै, डोर हाथ तनै

गजल ८४४ : चूल्हा भोर जरै छै, दालि गन्ध फैलै

गजल ८४५ : राति आकाश खुलै छै, तारा झिलमिल करै

गजल ८४६ : पाखी झुण्ड उड़ै छै, आकाश रेखा बनै

गजल ८४७ : पैडल पएर घुमै छै, चक्का राह धरै

गजल ८४८ : नमक दाना पड़ै छै, दालि स्वाद बदलै

गजल ८४९ : भोर अजान उठै छै, घण्टा दूर बजै

गजल ८५० : लहर भोर उठै छै, क्षितिज रंग बदलै

गजल ८५१ : भोर कूप जागै छै, नीर तल चमकै

गजल ८५२ : पोथी पन्ना खुलै छै, छोट टिप्पणी जगै

गजल ८५३ : सीटी दूर बजै छै, लोहा ताल धरै

गजल ८५४ : माटि हाथ नमै छै, रूप बीच उगै

गजल ८५५ : मेह काँच पड़ै छै, बूँद रेखा बनै

गजल ८५६ : कलम डारि जुड़ै छै, नव फूल खुलै

गजल ८५७ : न्याय कक्ष खुलै छै, प्रश्न क्रम धरै

गजल ८५८ : राति नदी बहै छै, मचान दीप जरै

गजल ८५९ : भोर विद्यालय खुलै छै, आँगन हँसी भरै

गजल ८६० : बाढ़ नीर उतरै छै, खेत माटि दिसै

गजल ८६१ : झोरा काँध चढ़ै छै, माय नोर धरै

गजल ८६२ : पुरना बक्सा खुलै छै, कागज गन्ध उठै

गजल ८६३ : भोर बाड़ी खुलै छै, पात ओस चमकै

गजल ८६४ : दुपहर सूरज चढ़ै छै, गाछ छाह सिमटै

गजल ८६५ : मेह छत पड़ै छै, नाली नीर बहै

गजल ८६६ : बोर्ड बीच सजै छै, पहिल चाल खुलै

गजल ८६७ : बाजार भोर खुलै छै, दाना पलड़ा धरै

गजल ८६८ : नाव घाट लगै छै, नीर तेज बहै

गजल ८६९ : साँझ आँगन सजै छै, पहिल लौ उठै

गजल ८७० : कागज सफेद रहै छै, स्याही रेखा उतरै

गजल ८७१ : देहरी भोर चमकै छै, घर बाहर मिलै

गजल ८७२ : ढोल थाप पड़ै छै, बीच मौन रहै

गजल ८७३ : छत गमला रहै छै, बीज माटि धरै

गजल ८७४ : पुरना टीला रहै छै, गाछ छाह पड़ै

गजल ८७५ : राति झंझा बहै छै, दूर रेखा उगै

गजल ८७६ : पुरान रेखा खुलै, राह नक्शा बतबैए

गजल ८७७ : लोहारक श्वास उठै, आग भट्ठी धधकैए

गजल ८७८ : नीर बहै, भोर जाल पसारैए

गजल ८७९ : कचहरी सोझाँ छाह पसारैए

गजल ८८० : दीप मन्द जरै, राति सम्हारैए

गजल ८८१ : धान डोलै, बिजुका तकैए

गजल ८८२ : छोट कोन रहै, टिकट पहुँचबैए

गजल ८८३ : धूलि बीच अंक रहै, पत्थर गनैए

गजल ८८४ : ताल नीर झलकै, कुमुद खिलैए

गजल ८८५ : गन्ध उठै, मसाला पिसैए

गजल ८८६ : काँच हँसै, लहठी खनकैए

गजल ८८७ : पएर उठै, सीढ़ी चढ़बैए

गजल ८८८ : आँगन थाप धरै, ढेंकी कुटैए

गजल ८८९ : ओस काँपै, पाला जमैए

गजल ८९० : समुद्र बीच सूइ बतबैए

गजल ८९१ : जंगल साँस ले, पगडंडी मुड़ैए

गजल ८९२ : तिनका जुड़ै, घोंसला बसैए

गजल ८९३ : कपड़ा भीजै, रंगरेज रँगैए

गजल ८९४ : गाम गोल बैसै, सभा सुनैए

गजल ८९५ : धूलि हटै, अलमारी खुलबैए

गजल ८९६ : लहर चढ़ै, पदचिह्न मिटैए

गजल ८९७ : धूलि उठै, घोड़ा दौड़ैए

गजल ८९८ : रेखा बोलै, चित्र उभरैए

गजल ८९९ : श्वास उठै, शंख गुँजैए

गजल ९०० : नीर पार खुलै, क्षितिज पसारैए

गजल ९०१ : पोखर नीर चमकै, आस मखान खिलैए

गजल ९०२ : ओस पात चमकै, नेह पात महकैए

गजल ९०३ : सूत जुड़ै, चाव सुजनी सजैए

गजल ९०४ : रेशा तनै, मान सिक्की जुड़ैए

गजल ९०५ : पाखी खेल उठै, गीत सामा गबैए

गजल ९०६ : व्रत कथा खुलै, स्वर कथा गुँजैए

गजल ९०७ : आँगन रेखा खुलै, चाव अरिपन खिलैए

गजल ९०८ : भोर गन्ध उठै, आस मंजर महकैए

गजल ९०९ : पीयर खेत डोलै, प्रीत सरसों हँसैए

गजल ९१० : गरमी घटै, श्वास पंखा डोलैए

गजल ९११ : माटि पकै, ताल घड़ा झनकैए

गजल ९१२ : कपड़ा फाटै, नेह सुई सिअैए

गजल ९१३ : डारि हिलै, चाव झूला डोलैए

गजल ९१४ : पुरान नीर चमकै, भोर कुण्ड चमकैए

गजल ९१५ : माथ सजै, मान पाग दमकैए

गजल ९१६ : भोर थारी सजै, प्रीत भोज सजैए

गजल ९१७ : कागज देह जरै, आस लालटेन जरैए

गजल ९१८ : अन्हार घनै, आस जुगनू चमकैए

गजल ९१९ : फूल झरै, नोर मौलश्री झरैए

गजल ९२० : पाथर बाट बजै, ताल खड़ाऊँ बजैए

गजल ९२१ : ओस पड़ै, भोर जाल चमकैए

गजल ९२२ : धान रोपै, गीत रोपनी गबैए

गजल ९२३ : घाट पएर चलै, नोर गगरी छलकैए

गजल ९२४ : मेघ हटै, रंग इन्द्रधनुष उभरैए

गजल ९२५ : गाछ डोलै, पार पछिया बहैए

गजल ९२६ : सूत तनै, सार चर्खा घूमैए

गजल ९२७ : धान जुटै, मान बखार भरैए

गजल ९२८ : माटि कटै, ज्ञान फाल चमकैए

गजल ९२९ : नीर हटै, भोर चर उभरैए

गजल ९३० : पोखर गहिरै, आस कमलबीज पकैए

गजल ९३१ : पाथर टकरै, नोर चकमक झिलमिलैए

गजल ९३२ : रेशा जुड़ै, प्रीत पाटी बुनैए

गजल ९३३ : तार काँपै, गीत सारंगी रुवैए

गजल ९३४ : पात लहरै, भोर तिलकोर लहरैए

गजल ९३५ : लोक जुटै, मान सभा जुटैए

गजल ९३६ : पात खुलै, ज्ञान पंजी बोलैए

गजल ९३७ : रस्सी तनै, चाव डोल उतरैए

गजल ९३८ : आग धधकै, आस ईंट पकैए

गजल ९३९ : फूल खुलै, प्रीत चंपा महकैए

गजल ९४० : दाना जुटै, मान कोठी भरैए

गजल ९४१ : नील फूल डोलै, चाव अलसी हँसैए

गजल ९४२ : श्वास मिलै, गीत बाँसुरी सुसकैए

गजल ९४३ : पाथर भीजै, भोर झरना गबैए

गजल ९४४ : भोर खुलै, आस कुहासा हटैए

गजल ९४५ : राति ढलै, नोर चाँद झुकैए

गजल ९४६ : लहर हटै, आस सीपी खुलैए

गजल ९४७ : धूलि उठै, भोर गोधूलि उठैए

गजल ९४८ : खेत बँटै, मान मेड़ बोलैए

गजल ९४९ : छत गरमै, चाव धूप उतरैए

गजल ९५० : दूर रेखा खुलै, पार क्षितिज फैलैए

गजल ९५१ : राख अँगार खुलै, अँगार बचैए

गजल ९५२ : बीज अँकुर खुलै, मान फेर उठैए

गजल ९५३ : ओखरि मूसर खुलै, ताल धुनि बजैए

गजल ९५४ : कनेर फूल खुलै, आस फुलैए

गजल ९५५ : छप्पर बरखा खुलै, नोर टपकि खसैए

गजल ९५६ : भूसी पवन खुलै, राह दूर उड़ैए

गजल ९५७ : कछार कटान खुलै, मूल कटैए

गजल ९५८ : बिचड़ा खेत खुलै, रंग फेर हरियैए

गजल ९५९ : काई पोखर खुलै, नाम जल तिरैए

गजल ९६० : बाती दीप खुलै, पीर जरैए

गजल ९६१ : सूत तकली खुलै, बात सूत तनैए

गजल ९६२ : माटिक सोंध खुलै, रूप महकैए

गजल ९६३ : बबूल काँट खुलै, मेल भीतर चुभैए

गजल ९६४ : ओसार साँझ खुलै, अँगार फेर जगैए

गजल ९६५ : बान्ह जल खुलै, मान टिकैए

गजल ९६६ : कुट्टी खलिहान खुलै, ताल धूरि उड़ैए

गजल ९६७ : काँच चूड़ी खुलै, आस मृदु खनकैए

गजल ९६८ : बेल लता खुलै, नोर लहरैए

गजल ९६९ : नाल जल खुलै, राह नीचाँ बहैए

गजल ९७० : चन्द्र ज्योति खुलै, मूल दूर पसरैए

गजल ९७१ : पीतल लोटा खुलै, रंग चमकैए

गजल ९७२ : पोथीक पन्ना खुलै, नाम धीरे सरकैए

गजल ९७३ : रुई सूत खुलै, पीर ऊपर उड़ैए

गजल ९७४ : धूरिक बाट खुलै, बात उड़ैए

गजल ९७५ : साँकल द्वार खुलै, रूप राति खनकैए

गजल ९७६ : सिलौट लोढ़ा बजै, सोर धीमे थिरैए

गजल ९७७ : बाँस दउरा जुड़ै, मान सँचि उठैए

गजल ९७८ : तराजू पल्ला झुकै, विचार तोलि देखैए

गजल ९७९ : हँसुआ धार चमकै, सार फेर दमकैए

गजल ९८० : जाँता दाना पिसै, गान मृदु बजैए

गजल ९८१ : कोदो बालि डोलै, उमंग साँझ धरि डोलैए

गजल ९८२ : छत्ता मधु भरै, आस मधु सँ भरैए

गजल ९८३ : तितली रंग उड़ै, रंग पाँख पसारैए

गजल ९८४ : घोंघा पथ सरकै, पहिचान पाछाँ रहि जाइए

गजल ९८५ : कछुआ नीर काटै, राह नीरमे बहैए

गजल ९८६ : सनई फूल डोलै, रंग पवनमे लहरैए

गजल ९८७ : कनकौआ ऊपर उठै, डोर अकास चढ़ि जाइए

गजल ९८८ : सूप दाना छाँटै, धान सूपमे छँटैए

गजल ९८९ : झाँपी भीतर सजै, नाम भीतर बचि रहैए

गजल ९९० : ताड़पात आखर खुलै, ज्ञान पातमे बोलैए

गजल ९९१ : पीपर छाँह पसरै, राह छाँहमे टिकि रहैए

गजल ९९२ : खजूर रस टपकै, आस रस टपकैत रहैए

गजल ९९३ : बकुल फूल झरै, सुवास भोरमे महकि उठैए

गजल ९९४ : ओल माटि फोड़ै, मूल माटि फोड़ि निकलैए

गजल ९९५ : अरुई पात डोलै, बात पवनमे झूमैए

गजल ९९६ : मड़ुआ बालि झुकै, बाल नमि जाइए

गजल ९९७ : कुरथी दालि पकै, दाल भानसमे महकैए

गजल ९९८ : तिल घानी घुमै, हाथ घानी संग चलैए

गजल ९९९ : मकई भुट्टा खुलै, धान दाना झरि पड़ैए

गजल १००० : हजारम गजल खुलै, गीत आगाँ गुँजैत रहैए

गजल १००१ : दीप बाती जरै, विश्वास मन्दे मन्दे जरैए

गजल १००२ : चरखा सूत कातै, मान सूतमे गाँठि जुड़ैए

गजल १००३ : मखान पोखर जागै, थाह नीर तलसँ उठैए

गजल १००४ : पान पात भीजै, रंग ओस संग चमकि उठैए

गजल १००५ : सुपारी कटरनी चलै, विचार फाँक बनि खुलैए

गजल १००६ : सिकी डलिया बुनै, प्रीत बुनाइमे रूप धरैए

गजल १००७ : कुम्हारक चाक घुमै, आधार माटिसँ देह गढ़ैए

गजल १००८ : घैला नीर भरै, श्वास शीतल नेह भरैत जाइए

गजल १००९ : लाठी बाट चलै, साथ पएर संग टिकैत रहैए

गजल १०१० : रोपनी धान झुकै, मान पाँतिमे हरियैत जाइए

गजल १०११ : कदली पात बजै, पात बरखा संग थिरकैए

गजल १०१२ : आम मंजर फुलै, आस गाछ भरि गमकि उठैए

गजल १०१३ : लीची गुच्छा पाकै, रंग डारि संग झूलैत रहैए

गजल १०१४ : सिन्नुर डिबिया खुलै, मान माँगमे रँग भरैए

गजल १०१५ : कमल पोखर जागै, आस भोर संग खुलि उठैए

गजल १०१६ : चापाकल चलै, धार धरतीसँ नीर उठैए

गजल १०१७ : ढेकी धान कुटै, ताल धपधप सोर उठैए

गजल १०१८ : बेलना लोइ फैलै, आधार गोलाइमे फैलैत जाइए

गजल १०१९ : खपड़ा छान्ह टिकै, राह बरखा रोकैत रहैए

गजल १०२० : भूसा दउनी चलै, सोर पवन संग उड़ि जाइए

गजल १०२१ : बेंत पीढ़ी बुनै, मान बैसबाक आसन बनैए

गजल १०२२ : माटिक चूल्हि जरै, रात आँच भीतर जगैत रहैए

गजल १०२३ : दूब आँगन भीजै, राह पएर तले हरियैए

गजल १०२४ : झूला आमगाछ हिलै, उमंग पवन संग डोलैत रहैए

गजल १०२५ : कोसी धार बहै, इतिहास नकसा फेर लिखैए

गजल १०२६ : पगडंडी धूर — आस एतबे साँच नहि

गजल १०२७ : नाव पतवार — मान तखन अर्थ खुलैत अछि

गजल १०२८ : सनक रस्सी — राह मोन फेर पूछैत रहै

गजल १०२९ : सरकंडा चटाई — रंग नाम कतहु हराइत नहि

गजल १०३० : तसर कोया — सार रेशमक छुअन बचल रहत

गजल १०३१ : दही मथानी — गीत अपन बाट बनबैत अछि

गजल १०३२ : धानक कोठी — हाथ फेर घर दिस अबैत अछि

गजल १०३३ : खोंइछा अन्न — बात कथा एतय थमैत नहि

गजल १०३४ : पोखर घाट — सोर पएर आगाँ बढ़ैत रहै

गजल १०३५ : अरिपन रेखा — ताल रेखा घर सँ जुड़ैत अछि

गजल १०३६ : बाँसुरी स्वर — आस भीतर साँस लैत अछि

गजल १०३७ : गोरस मथनी — मान रस हाथे बदलैत अछि

गजल १०३८ : मिथिला चित्रक कूची — सोर रंग मौनहुँ बोलैत अछि

गजल १०३९ : माछक जाल — सार नीर जाल परखैत अछि

गजल १०४० : पोथीक जिल्द — गीत आखर देह धरैत अछि

गजल १०४१ : नीम पात — राह ओहि घड़ी भेद खुलैत अछि

गजल १०४२ : कांस फूल — रंग चिन्ह पवनोमे बचैत अछि

गजल १०४३ : बरगद जटा — हाथ काल फेर घुरि अबैत नहि

गजल १०४४ : पुआल गादी — मान घाम पुआलमे बचैत अछि

गजल १०४५ : तिलकोर पात — बात लता आँगन जोड़ैत अछि

गजल १०४६ : सिंघाड़ा पोखर — गीत नीर तले फल पाकैत अछि

गजल १०४७ : कमला धार — सार नीर सभ गप कहैत नहि

गजल १०४८ : चिरई घोंसला — सोर मौनहुँ उत्तर दैत अछि

गजल १०४९ : धानक लावा — ताल रूप बदलियो मूल रहैत अछि

गजल १०५० : आखरक यात्रा — आस अन्त एतय होइत नहि

गजल १०५१ : लोहारक धौंकनी — आस कथन एतेक पर थिर नहि

गजल १०५२ : करघाक ताना — मान सूत भीतर चिन्ह बचल अछि

गजल १०५३ : अलसी फूल — राह धुनि पवनक संग मुड़ैत रहै

गजल १०५४ : सरिसो खेत — रंग नेह बिना रंग पूरा नहि

गजल १०५५ : पगहा गाँठि — सार बंधन अपन राह चुनैत अछि

गजल १०५६ : जूटक बोरा — गीत बीज चुप्पे उत्तर धरैत अछि

गजल १०५७ : कुशक आसन — हाथ छाह बदललहुँ मूल नहि

गजल १०५८ : सोनारक हथौड़ी — बात थाप देहक भेद गनैत रहै

गजल १०५९ : जुगनू राति — सोर राति भीतर भोर पलैत अछि

गजल १०६० : ओसक बूँद — ताल घाम बिना चमक खुलैत नहि

गजल १०६१ : कमलनाल — आस नोरक अर्थ एक्के नहि

गजल १०६२ : माटिक पुतरी — मान साँस संग लय बदलैत अछि

गजल १०६३ : बढ़ईक रन्दा — सोर हाथक छाप मेटैत नहि

गजल १०६४ : पानक बारी — सार नीर नीचे जीवन जगैत अछि

गजल १०६५ : पोखरक पाँक — गीत मौनक सीमा एतय टूटैत अछि

गजल १०६६ : आम्रपल्लव तोरण — राह समय अपन गाँठि खोलैत रहै

गजल १०६७ : कुटजक छाल — रंग पवन संग देह झुकैत अछि

गजल १०६८ : मसूरक फूल — हाथ दूरिक राह मोन नापैत रहै

गजल १०६९ : चनाक फली — मान दाना भीतर ऋतु बसैत अछि

गजल १०७० : मूँजक चटाई — बात आँगन सभ कथा सुनैत अछि

गजल १०७१ : ताँतक गाँठि — गीत प्रश्नक डोर टूटैत नहि

गजल १०७२ : पलाशक फूल — सार धूपक रंग साँझ धरि रहैत अछि

गजल १०७३ : बकाइन छाह — सोर गंध पुरान घर चिन्हैत अछि

गजल १०७४ : चकरी पवन — ताल धारक मोड़ स्थिर रहैत नहि

गजल १०७५ : सुईक टाँका — आस आखर पाछाँ अर्थ चलैत रहै

गजल १०७६ : बाँसक सूप — आस दाना छनितहुँ भेद मेटैत नहि

गजल १०७७ : काँसक डलिया — मान बुनावट भीतर हाथक मान अछि

गजल १०७८ : घोंघाक खोल — राह खोल बदलि जीवन थमैत नहि

गजल १०७९ : सखुआ पात — रंग पात झरलहुँ गंध बचल रहै

गजल १०८० : कदंबक फूल — सार फूलक छाह समय धरि रहत

गजल १०८१ : बेंतक मोढ़ा — गीत बेंत नमितहुँ मूल टूटैत नहि

गजल १०८२ : मृदंगक चमड़ा — हाथ थाप पाछाँ मौन सेहो बजैत अछि

गजल १०८३ : मटरक फूल — बात पछिया संग पीयर रंग बहैत रहै

गजल १०८४ : तिलक फली — सोर दाना छोटो हो, कथा पैघ अछि

गजल १०८५ : भदई धान — ताल धानक गंध घर चिन्हैत रहै

गजल १०८६ : हंसुलीक चमक — आस चमक देहक मान बनैत नहि

गजल १०८७ : कनैल फूल — मान रंग विषक छाह ढाकैत नहि

गजल १०८८ : खपरैल छानि — सोर वर्षा बीतलहुँ छानि बोलैत रहै

गजल १०८९ : ताड़क पंखा — सार हवा हाथक संगति मानैत अछि

गजल १०९० : घैलाक मुँह — गीत मुँह छोट, नीरक राह पैघ अछि

गजल १०९१ : सिलौटक धार — राह घिसाइ पाछाँ धार उघड़ैत अछि

गजल १०९२ : लहठीक खनक — रंग खनक स्मृति केर डोर कसैत रहै

गजल १०९३ : चूल्हिक राख — हाथ राख भीतर आँच मरैत नहि

गजल १०९४ : कचनार पात — मान पात मोड़लहुँ हरियर नस चलैत अछि

गजल १०९५ : कपासक रूई — बात रूई हलुक, श्रमक भार हलुक नहि

गजल १०९६ : बेलनक घुमाव — गीत घुमाव बीच केन्द्र छुटैत नहि

गजल १०९७ : धानक भूसी — सार भूसी उडलहुँ दाना थिर रहै

गजल १०९८ : मधुक छत्ता — सोर मधु सँ पैघ श्रमक सार अछि

गजल १०९९ : रुद्राक्षक दाना — ताल दाना गनितहुँ जप पूरा नहि

गजल ११०० : घंटीक अनुनाद — आस अनुनाद दूर धरि बाट खोलैत रहै

गजल ११०१ : हँसियाक धार — मान पर राह खुलै

गजल ११०२ : इनारक डोल — सोर संग नेह रहै

गजल ११०३ : घूरक आँच — राह पर गप खुलै

गजल ११०४ : ईखक गाँठि — गीत बीच राह चलै

गजल ११०५ : गुड़क भेली — ताल कात धुन उठै

गजल ११०६ : झाड़ूक सींक — आस बीच रूप खुलै

गजल ११०७ : कोंहड़ाक बेल — सार पर भोर खुलै

गजल ११०८ : जामुनक गाछ — मान पर डोर तनै

गजल ११०९ : बेलक फल — सोर संग ताल बजै

गजल १११० : कौड़ीक चाल — राह बीच रंग झरै

गजल ११११ : खाटक पाट — गीत कात भोर खुलै

गजल १११२ : ढिबरीक काँच — ताल संग काज चलै

गजल १११३ : घुँघरूक नाद — आस पर थाह मिलै

गजल १११४ : झाँझक थाप — सार संग मान रहै

गजल १११५ : खुरपीक धार — मान पर साँच खुलै

गजल १११६ : बथानक खूँटा — राह संग गीत उठै

गजल १११७ : दूधक फेन — गीत बीच नेह रहै

गजल १११८ : लाहक चूड़ी — ताल संग धूप ढलै

गजल १११९ : बटखराक तोल — आस बीच छाह सरै

गजल ११२० : पालकीक डाँड़ — सार संग बीज उगै

गजल ११२१ : माछक शल्क — मान मे आँच जगै

गजल ११२२ : माटिक सुराही — सोर पर मोन नमै

गजल ११२३ : कुल्हड़क गंध — राह कात सोर उठै

गजल ११२४ : तुरहीक नाद — गीत संग राह बनै

गजल ११२५ : डमरूक ताल — ताल मे नेह जगै

गजल ११२६ : गोइठाक राख — सार पर अर्थ बचै

गजल ११२७ : लौकीक बेल — मान संग मोन घुरै

गजल ११२८ : कदम्बक फूल — राह बीच गप जुड़ै

गजल ११२९ : करघाक सूत — रंग कात साँच रहै

गजल ११३० : फूसक छानि — गीत मे नेह चलै

गजल ११३१ : बेरक काँट — बात पर छाप बचै

गजल ११३२ : बाँसक फाँक — सोर संग भेद खुलै

गजल ११३३ : पोखरिक घाट — ताल बीच सोर पहुँचै

गजल ११३४ : गाछक खोह — आस कात मान जगै

गजल ११३५ : पीपलक जड़ि — सार मे राह चलै

गजल ११३६ : चकईक पाँख — मान पर स्वर फूटै

गजल ११३७ : कागक ठोर — राह संग प्रश्न उठै

गजल ११३८ : मेघक बूँद — रंग बीच रूप बसै

गजल ११३९ : बिजुरीक रेख — गीत कात रंग मुड़ै

गजल ११४० : पूसक धुंध — बात मे धुन बदलै

गजल ११४१ : जेठक धूल — सोर पर साँस बढ़ै

गजल ११४२ : सावनक टपक — ताल संग काल बचै

गजल ११४३ : भादोक पाँक — आस बीच बीज चलै

गजल ११४४ : अगहनक बाली — सार कात पात पहुँचै

गजल ११४५ : फागुनक अबीर — मान मे भोर जुड़ै

गजल ११४६ : चैतिक पछिया — राह पर थाह रहै

गजल ११४७ : कार्तिकक दीप — रंग संग छाह ठहरै

गजल ११४८ : माघक धूप — गीत बीच नाद उड़ै

गजल ११४९ : नदीक बालू — बात कात गंध पलै

गजल ११५० : शंखक सोर — सोर मे फूल उघड़ै

गजल ११५१ : बेलपत्रक डारि — सार पर नेह जगै

गजल ११५२ : खेसारीक दाना — मान संग राह खुलै

गजल ११५३ : कुर्थीक दालि — राह बीच मान चलै

गजल ११५४ : जाँतक पाट — रंग कात रूप रहै

गजल ११५५ : सिलौटक लीक — गीत मे गप बनै

गजल ११५६ : चूल्हिक धूर — बात पर बीज उगै

गजल ११५७ : कूपक घेरा — सोर संग काल बहै

गजल ११५८ : नाँदक जल — ताल बीच छाप बचै

गजल ११५९ : भीतक लेप — आस कात डोर तनै

गजल ११६० : खपराक छत — सार मे थाह खुलै

गजल ११६१ : काठक छील — मान पर स्वर बजै

गजल ११६२ : ताड़क रस — राह संग साँच जनै

गजल ११६३ : पनसक बीआ — रंग बीच नेह बचै

गजल ११६४ : मखानक खोल — गीत कात राह मुड़ै

गजल ११६५ : सनक रेसा — बात मे रूप बदलै

गजल ११६६ : चूनक ढेरी — सोर पर गंध पलै

गजल ११६७ : घीक वास — ताल संग सोर फूटै

गजल ११६८ : मधुक मकरंद — आस बीच मान ठहरै

गजल ११६९ : कोठीक अन्न — सार कात डोर जुड़ै

गजल ११७० : ढोलकक थाप — मान मे छाह सरै

गजल ११७१ : काँसक थाल — राह पर भोर उगै

गजल ११७२ : जोतक लीक — रंग संग तर्क जँचै

गजल ११७३ : शालक छाल — गीत बीच अर्थ खुलै

गजल ११७४ : कुम्हारक भट्ठी — बात कात नाद बजै

गजल ११७५ : धानक खील — सोर मे साँच मिलै

गजल ११७६ : चानक डाकघर — पर पत्र जगै

गजल ११७७ : समयक खाली जेब — संग घड़ी चलै

गजल ११७८ : बादलक पोथीघर — बीच अक्षर तिरै

गजल ११७९ : सपनक रेल — कात सीटी बजै

गजल ११८० : छाहक सोपान — पर पाँति चढ़ै

गजल ११८१ : शून्यक पतंग — संग डोर हँसै

खण्ड २४ — अकुलाइत सुर : किशोर गजल आ कविता-गीत

मूल समीक्षा-पाण्डुलिपिसँ सूचीकृत शीर्षक : 268

गजल १–१३३ : मूल साझा पाठक विस्तृत समीक्षा

गजल १ : बार्बी

गजल २ : चान मामा

गजल ३ : सात रंग

गजल ४ : दादीक कथा

गजल ५ : तरेगन गनी

गजल ६ : बाटक खेल

गजल ७ : चिड़ैक गीत

गजल ८ : हँसीक आँगन

गजल ९ : कागजक नाव

गजल १० : दादीक चान

गजल ११ : पतंगक पाँखि

गजल १२ : मेहक खेल

गजल १३ : निन्नक कथा

गजल १४ : अपन सपना

गजल १५ : खेलक मैदान

गजल १६ : पोथीक पाँखि

गजल १७ : परीक्षाक बिहान

गजल १८ : मीतक संग

गजल १९ : पर्दासँ बाहर

गजल २० : अपन राह

गजल २१ : तुलना नहि

गजल २२ : जालजगतसँ बाहर

गजल २३ : विषय अपन

गजल २४ : लाइकसँ बाहर

गजल २५ : बात फरिछाउ

गजल २६ : फेर प्रयास

गजल २७ : अपन रूप

गजल २८ : अपन बात

गजल २९ : अपन गति

गजल ३० : ना कहू

गजल ३१ : निन्न बचाउ

गजल ३२ : समयक हिस्सा

गजल ३३ : बाट चुनैत

गजल ३४ : ना कहू

गजल ३५ : अपन गति

गजल ३६ : ना कहू

गजल ३७ : निन्नक समय

गजल ३८ : प्रश्न पूछू

गजल ३९ : मीत चुनू

गजल ४० : हारक बाद

गजल ४१ : परीक्षाक बाद

गजल ४२ : अपन विषय

गजल ४३ : अपन निर्णय

गजल ४४ : अपन ताल

गजल ४५ : तुलना छोड़ू

गजल ४६ : भरोसा

गजल ४७ : भूलसँ सीखू

गजल ४८ : कने आराम

गजल ४९ : सोझाँ बाजू

गजल ५० : अपन सुर

गजल ५१ : पर्दासँ परे

गजल ५२ : मीतसँ बात

गजल ५३ : ध्यानक डोर

गजल ५४ : मदद माँगू

गजल ५५ : भविष्यक बाट

गजल ५६ : निर्णय

गजल ५७ : एक परिणाम

गजल ५८ : स्क्रीनक बाहर

गजल ५९ : पहिल कमाइ

गजल ६० : प्रश्नक साहस

गजल ६१ : टीमक खेल

गजल ६२ : पहिल कमाइ

गजल ६३ : प्रश्नक साहस

गजल ६४ : टीमक खेल

गजल ६५ : कौशल

गजल ६६ : खराब दिन

गजल ६७ : टोली

गजल ६८ : निर्णयक समय

गजल ६९ : पहिल खर्च

गजल ७० : प्रश्न करू

गजल ७१ : समाचार

गजल ७२ : पहिल यात्रा

गजल ७३ : पहिल भाषण

गजल ७४ : पहिल असफलता

गजल ७५ : समूहक दबाव

गजल ७६ : डिजिटल विराम

गजल ७७ : समय बाँटू

गजल ७८ : पहिल जिम्मेदारी

गजल ७९ : साँच जाँचू

गजल ८० : अपन आवाज

गजल ८१ : परीक्षा बाद

गजल ८२ : मीतक सीमा

गजल ८३ : अपन लय

गजल ८४ : मीतक पहिचान

गजल ८५ : डरक पार

गजल ८६ : आरम्भ

गजल ८७ : रुचिक बाट

गजल ८८ : साँचक जाँच

गजल ८९ : नब मीत

गजल ९० : भूल स्वीकार

गजल ९१ : एखन करू

गजल ९२ : प्रश्न पुछू

गजल ९३ : काज बाँटू

गजल ९४ : अपन गति

गजल ९५ : नब हुनर

गजल ९६ : बात जाँचू

गजल ९७ : लिखि कऽ बुझू

गजल ९८ : एक काज

गजल ९९ : रिसक बेर

गजल १०० : अपन माप

गजल १०१ : मीत चुनू

गजल १०२ : कने-कने सीखू

गजल १०३ : अपन स्वर

गजल १०४ : भूलसँ सीखू

गजल १०५ : बेर बाँटू

गजल १०६ : साँच लिखू

गजल १०७ : सुनि कऽ बाजू

गजल १०८ : कौड़ी बचाउ

गजल १०९ : गाछ रोपू

गजल ११० : प्रश्न लिखू

गजल १११ : मीतक मान

गजल ११२ : सपन सँ काज

गजल ११३ : बेर बाँटू

गजल ११४ : पहिने सुनू

गजल ११५ : हुनर निखारू

गजल ११६ : सीमा राखू

गजल ११७ : पढ़ि बुझू

गजल ११८ : बाट चुनू

गजल ११९ : निज बात

गजल १२० : प्रश्नक साहस

गजल १२१ : दिनक क्रम

गजल १२२ : दबावमे निर्णय

गजल ५६१–५८० : अन्तरपाठीय अवलोकन

गजल १२३ : मीतक गोपन बात

गजल १२४ : अपूर्णतासँ सीख

गजल १२५ : अपन सीमा

गजल १२६ : प्रमाण देखू

गजल १२७ : धीरे बढ़ू

गजल १२८ : थाकल मोन

गजल १२९ : संग काज

गजल १३० : सहायता माँगू

गजल १३१ : अपन सीमा राखू

गजल १३२ : काजक क्रम

गजल १३३ : साँच जाँचू

कविता-गीत 001 — ट्रेनक गाड़ी

कविता-गीत 002 — के छथि

कविता-गीत 003 — राजा श्री अनुरन्वज सिंह

कविता-गीत 004 — सूतल

कविता-गीत 005 — अखण्ड भारत

कविता-गीत 006 — मोनक जड़िमे

कविता-गीत 007 — पुनः स्मृति

कविता-गीत 008 — कलम गाछी

कविता-गीत 009 — हाथीक मुँहमे लागल पाइप

कविता-गीत 010 — बानर राजा

कविता-गीत 011 — चिड़ियाखाना

कविता-गीत 012 — जमबोनी

कविता-गीत 013 — बौआ ठेहुनिया मारि

कविता-गीत 014 — ट्रिंग-ट्रिंग-ट्रिंग

कविता-गीत 015 — भोरक बसात

कविता-गीत 016 — छाहक करतब

कविता-गीत 017 — सपन

कविता-गीत 018 — कोइरीक कूकू

कविता-गीत 019 — शितलपाटी

कविता-गीत 020 — मकड़ीक जाल

कविता-गीत 021 — वायुगोलक

कविता-गीत 022 — हाथीक सूप सन कान

कविता-गीत 023 — छुट्टी

कविता-गीत 024 — बौआ गेल सुनि

कविता-गीत 025 — मिथिला

कविता-गीत 026 — बादुर सोंस

कविता-गीत 027 — की? किए? कोना? के?

कविता-गीत 028 — फेर आएल जाड़

कविता-गीत 029 — अंध विश्वास

कविता-गीत 030 — अभ्यास

कविता-गीत 031 — आँखिक चश्मा

कविता-गीत 032 — तीने टा अछि ऋतु

कविता-गीत 033 — दरिद्र

कविता-गीत 034 — रौह नहि नैन

कविता-गीत 035 — जूताक आविष्कार

कविता-गीत 036 — बूढ़ वर

कविता-गीत 037 — रिपेयर

कविता-गीत 038 — नोकर

कविता-गीत 039 — क्लासमे अबाज

कविता-गीत 040 — एस.एम.एस.

कविता-गीत 041 — टी.टी.

कविता-गीत 042 — खगता

कविता-गीत 043 — क-ख सँ दर्शन

कविता-गीत 044 — चोरकेँ सिखाबह

कविता-गीत 045 — नरक निवारण चतुर्दशी

कविता-गीत 046 — नौकरी

कविता-गीत 047 — मरकरी डिलाइट

कविता-गीत 048 — दीयाबाती

कविता-गीत 049 — फ्रैक्चर

कविता-गीत 050 — बापकेँ नोशि नहि भेटलन्हि

कविता-गीत 051 — दहेज

कविता-गीत 052 — बेचैन नहि निचैन रहू

कविता-गीत 053 — थल-थल

कविता-गीत 054 — क्रिकेट-फील्डिंग

कविता-गीत 055 — मैट्रिक प्लक

कविता-गीत 056 — काँकड़ु

कविता-गीत 057 — कैप्टन

कविता-गीत 058 — दूध

कविता-गीत 059 — अटेंडेंस

कविता-गीत 060 — शो-फटक्का

कविता-गीत 061 — भारमे माटि

कविता-गीत 062 — कंजूस

कविता-गीत 063 — पाइ

कविता-गीत 064 — असत्य

कविता-गीत 065 — समुद्री

कविता-गीत 066 — गाम

कविता-गीत 067 — लोली

कविता-गीत 068 — तकलाहा दिन

कविता-गीत 069 — बिकौआ

कविता-गीत 070 — गद्दरिक भात

कविता-गीत 071 — एकटा आर कोपर

कविता-गीत 072 — महीस पर वी.आइ.पी.

कविता-गीत 073 — गप्प-सरक्का

कविता-गीत 074 — फलनाक बेटा

कविता-गीत 075 — ट्रांसफर

कविता-गीत 076 — मजूरी नहि माँगह

कविता-गीत 077 — दोषी

कविता-गीत 078 — लंदनक खिस्सा

कविता-गीत 079 — प्रथम जनवरी

कविता-गीत 080 — ऑफिसमे भरि राति बन्द

कविता-गीत 081 — नानीक पत्र

कविता-गीत 082 — केवाड़ बन्द

कविता-गीत 083 — जेठांश

कविता-गीत 084 — सादा आकि रंगीन

कविता-गीत 085 — जोंकही पोखरिमे भरि राति

कविता-गीत 086 — गैस सिलिण्डरक चोरि

कविता-गीत 087 — फैक्स

कविता-गीत 088 — दीया-बाती

कविता-गीत 089 — इटालियन सैलून

कविता-गीत 090 — शव नहि उठत

कविता-गीत 091 — अतिचार

कविता-गीत 092 — रबड़ खाऊ

कविता-गीत 093 — बाजा अहाँ बजाऊ

कविता-गीत 094 — पिण्डश्याम

कविता-गीत 095 — पाँच पाइक लालछड़ी

कविता-गीत 096 — चोरुक्का विवाह

कविता-गीत 097 — भ्रातृद्वितीया

कविता-गीत 098 — नव-घरारी

कविता-गीत 099 — रिक्त

कविता-गीत 100 — प्रवासी

कविता-गीत 101 — वेद

कविता-गीत 102 — चोरि

कविता-गीत 103 — होली

कविता-गीत 104 — बुद्ध

कविता-गीत 105 — कोठिया पछबाइ टोल

कविता-गीत 106 — बुच्ची-बाउ

कविता-गीत 107 — आकक दूध

कविता-गीत 108 — केसर श्वेत हरित त्रिवार्णिक

कविता-गीत 109 — बेसी छुट्टी कम इसकूल

कविता-गीत 110 — कोनो सजाए नै

कविता-गीत 111 — बरखा भीजी

कविता-गीत 112 — बरखा गीत

कविता-गीत 113 — भरि दिन खेली-धूपी

कविता-गीत 114 — लवनचूश चूसी भरि दिन

कविता-गीत 115 — जे मोन भावै से करब

कविता-गीत 116 — सभ दिन जनमदिन मनाबी

कविता-गीत 117 — बानर

कविता-गीत 118 — दोकानसँ चिप्स मँगनीमे आनी

कविता-गीत 119 — खूब खेलाउ कमप्यूटर खेल

कविता-गीत 120 — नीक चित्र बनाउ छापू

कविता-गीत 121 — आउ खेलाउ कनियाँ पुतरा

कविता-गीत 122 — बरफ खाउ जाड़मे

कविता-गीत 123 — रातिमे अबेर धरि जागू भोर उठू देरीसँ

कविता-गीत 124 — सुरुज जेकाँ बरहम घूमै छथि

कविता-गीत 125 — सरस्वती मेधा

कविता-गीत 126 — बाजू मैथिली

कविता-गीत 127 — हम्मर माए

कविता-गीत 128 — अमृत पुत्री

कविता-गीत 129 — हे नाह चल आगाँ

कविता-गीत 130 — ध्येय पथिक साधक

कविता-गीत 131 — मेघ बरसि गेल

कविता-गीत 132 — स्वागतम

कविता-गीत 133 — बड़द करैए दाउन ने यौ

खण्ड २५ — स्वप्नमे मिज्झर होइत : पद्य

मूल समीक्षा-पाण्डुलिपिसँ सूचीकृत शीर्षक : 383

१. अनचिन्हार आखर — जोत, स्मृति आ स्वप्नक मिश्रित चेतना

२. मृत्यु गीत (लोकगीत) — सुग्गा, हंसा आ कायागढ़क लोक-मृत्युदर्शन

३. कालक धार पार अनन्तक उजास — इतिहास, क्षणिकता आ करुणाक दार्शनिक काव्य

४. प्रश्नक देहरीसँ मुक्तिक आकाश — ज्ञानक एकाधिकारसँ जीवन-सापेक्ष दर्शन धरि

५. हथेली भरि धरती, आँखि भरि सत्य — प्रत्यक्ष, देह आ नैतिक सुखक परीक्षा

६. एक पात पर सात दिशाक ओस — अनेकान्त, अहिंसा आ दृष्टिक विनम्रता

७. दुःखक गाँठ खोलैत भोर — कारणबद्ध पीड़ा आ करुणामुखी अभ्यास

८. लौ बदलैत रहैत, उजास चलैत — परिवर्तनमे कारण-सन्तति आ नैतिक उत्तरदायित्व

९. चार खिड़की आ एक खुलल आकाश — शून्यता, करुणा आ विचारक विविध मार्ग

१०. मुट्ठीक भीतर जे घर नहि — अस्मिताक आग्रह आ अनासक्तिक साहस

११. दर्पणक पार जे देखैत अछि — दृश्य, द्रष्टा आ विवेकक दोसर धरातल

१२. श्वासक भीतर एक स्थिर आकाश — ध्यानक अनुशासन आ अभ्यासक सामाजिक परीक्षा

१३. एक-एक कणक अपन चेहरा — पदार्थ, भेद आ यथार्थक बहुवचन

१४. धुँआक पार जे आगि अछि — अनुमानक विश्वसनीयता आ तर्कक आत्म-परीक्षण

१५. अनेक नामक पाछाँ एक अनाम उजास — स्तुति, ऋत आ नामक अतिक्रमण

१६. भीतरक आकाश, बाहरक आकाश — परिवर्तनशील अनुभव आ अनिर्वचनीय आधार

१७. तीन दुआर, एके अनन्तक दिस — अद्वैत, विशिष्टाद्वैत आ द्वैतक बहस

१८. दू हवाक बीच जागैत नव भोर — इतिहासक भेट, आत्मिक सम्भावना आ आलोचनात्मक आधुनिकता

१९. नजरि लागि जाइ छै — मायक नेह आ लोकविश्वासक भीतरी नाटक

२०. भाग्यशाली — थाकल प्रतिरोध, समूहीय उपहास आ आत्मगत विडम्बना

२१. जाइत जाइत — दूर देशक यात्रा आ प्रमाणक अनिर्णय

२२. बिलाइत आसक चेन्हासी — दृश्य-अक्षर आ अन्हारक गति

२३. शामिल बाजाक दुन्दभी वादक — इन्द्रिय-विपर्यय आ सहभागिताक अभिनय

२४. मन्दाकिनी जे आकाश मध्य — नदी-संगम आ विस्मयक रूपक

२५. नव व्यवस्थाक मनुक्ख — कम्पनीक व्यक्तित्व आ नागरिकक अवमूल्यन

२६. नव व्यवस्थाक दलित — चौबटियापर श्रम, भीख आ असमानता

२७. नव व्यवस्थाक पुरहित — लघु उद्योग आ जोखिमक असमान वितरण

२८. नव आ पुरान व्यवस्थाक हाट — प्रवासन, जाति आ दूहरा सामाजिक आचरण

२९. जखन मशीन आ बिलाड़ि दुनू बुझैए हमरा मृत — इच्छामृत्यु, स्वप्न आ काल-स्थानक विलयन

३०. हाइ रे कुमारिल!! — अस्पतालक असहायता आ ईश्वर-विवादक व्यंग्य

३१. आकांक्षाक अग्नि — इच्छा, दोहराइत दिनचर्या आ जलबाक जोखिम

३२. अनुक्रमणिका आ विषय सूचीसँ आगाँ — लोककारीगरीक ज्ञान

३३. व्यावहारिक आ सैद्धांतिक — ज्ञानक श्रेणीभेद आ लोकनिर्णयक साहस

३४. हमर शरीरक भाथीमे पैसैत अछि वायु — देहक भट्ठी आ आत्मप्रश्न

३५. कबिराहाक कनसीपर उठैत धुन — पूजा, कारीगरी आ सामाजिक अभिनय

३६. भुजनाठीसँ लाड़ैत आकांक्षाक अग्नि — स्मृति आ डरक धधक

३७. अतिखाइन — स्वादक भराव आ आकांक्षाक सीमा

३८. भैसाठ — चाउरक प्रक्रिया, स्वाद आ जिजीविषाक अग्नि

३९. धेनुआर घानी — तेल, नोन आ अवशिष्टक श्रम-ज्ञान

४०. मन्तुर पढ़ि छत्ता लग जायब — लोकमन्त्र आ रक्षा-कर्तव्यक नैतिक उलटफेर

४१. बकछुछरु खेलाइत भीखू संग — बाँसक शिल्प, पेशागत असमानता आ आत्मसम्मान

४२. उजाहिमे उपलाइत हम आ माँछ — शिकारीक अनुभवमे शिकार बनबाक भय

४३. ठाढ़ लत्तीकेँ पढ़ैत छी — पानक खेतीमे आत्मरूपान्तरण

४४. श्राद्ध ने मरा जाय — शोकक बीच कर्मकाण्डक द्वन्द्व

४५. शलातुर गाम — व्याकरणक इतिहास आ सीमाक राजनीतिक रूपक

४६. बड़का सड़क छह लेन बला — विकासक चमक आ गामक निर्वासन

४७. पक्काक जाइठ — पोखरिक संस्कार आ जातिगत प्रतिष्ठा

४८. पता नै घुरि कऽ जायब आकि... — प्रवासी श्रमिकक अनिश्चित घरफेर

४९. गजल — विराग, भूख आ नियत लयक भीतर विडम्बना

५०. प्रकृति, पुरुष — पर्यावरणक नकल, दूरीक सौन्दर्य आ लौटबाक दुविधा

५१. हाइकू/ शेनर्यू/ टनका — क्षणचित्रक बहुलता आ लोकभाषाक संक्षिप्त छवि

५२. कुण्डलिया — नैतिक निर्णय, हारि-विजय आ आवर्तक छन्द

५३. मिथिलाक ध्वज गीत — भाषिक पुनरुत्थानक सामूहिक प्रण

५४. जोति बड़द सोचमे पड़लौं — स्मृतिक भोथरायब आ अपन धरतीक अस्थिरता

५५. बिसरलौं फेर- कर्णक मृत्युक छोट-छीन रूप — स्मृतिच्युति आ असमर्थताक विडम्बना

५६. कटिहारी — अन्त्येष्टि, विधवाक स्थिति आ खबरक क्षणभङ्गुरता

५७. डैनियाही दुपहरिया — स्वप्नक हिंसा आ निद्राक हेरफेर

५८. खाम्ह अदृढ़ताक ठाढ़ — अदृश्य देबाल आ आकांक्षाक अस्थिर आधार

५९. निन्नक ओहि पार — स्मृति, कालमापन आ चेतनाक अस्थिर रील

६०. सङ गामक पोखरि कात — बंशीक प्रतीक्षा आ सूक्ष्म हिलकोर

६१. सङ सागर तटपर — समुद्रक लहरि आ इतिहासक टूटल तार

६२. सर्वज्ञाता — अनुमानक अनन्त शृंखला आ ज्ञानक आत्मसन्देह

६३. घृणाक तरहरिमे — प्रेमक जलाशय आ शत्रुताक रूपान्तरण

६४. जावत रहब — प्रेमक घेराबा आ मृत्युक बादक शक्ति

६५. चतुरहस्त — नृत्य, डफ-खजुरी आ रक्तबीजक विरोध

६६. बुढ़िया डाही — सर्जन-विरोधी हिंसा आ रुधिरसँ फुलैत प्रेम

६७. आ तखन, फैसला हेतै आब — बदलैत बोली आ हिंसाक पुनर्जन्म

६८. जँ विश्वास कऽ ली अहाँपर, ऐ प्रकृतिपर — आश्वासनक विघटन आ सत्यक अनेक अक्ष

६९. घड़ी पूजा — बहुधर्मी लोकाचारक भीतर प्रश्नक अनुशासन

७०. नाराशंसी — कविता, वैदिक स्वर आ लोकजगतक अन्तर्संवाद

७१. निगदति कुसुमपुरेऽभ्यर्चितं ज्ञानम् — आर्यभट आ चन्द्रयानक समय-संवाद

७२. सपना — ईश्वरक अनिश्चितता आ निद्राक टूटल सीमा

७३. चुप्पीक अपन बोली — आत्मप्रश्नसँ दोसरक पीड़ा धरि

७४. स्मृति-भय — बाल्यस्वप्नसँ दर्शन-विज्ञानक आलोचनात्मक मन्थन

७५. वादक सम्बल अर्थहीन — द्युलोकक शब्द आ शीतक भूख

७६. क्षणक अछोर — लिखबाक समय आ निष्कर्षक सावधानी

७७. चमत्कारक पोथी — ज्ञानक सीमा आ साधारणक विस्मय

७८. विचारक विराम — इतिहासक दूर उजास आ निकट पीड़ाक आवाज

७९. भयक पकड़ ढील होइत — मृत्युक कल्पनाक संग बैसबाक अभ्यास

८०. कलहक अभ्यास — नन्ह जीवक दृष्टिसँ अहिंसाक व्यवहारिक परीक्षा

८१. अपन परिचयक खाली ठाम — पद, पहचान आ दोसरक स्वतन्त्रताक नैतिकता

८२. घड़ीक बाहरी किनार — माप आ अनुभूतिक सीमा

८३. एतहि खोज — धार्मिक प्रतीक्षाक बदला रोजक करुणा

८४. प्राणक गवाही — घायल जीव आ सिद्धान्तक नैतिक परीक्षण

८५. शब्दशास्त्रम् — नाम, अनुभूति आ बोलक सीमा

८६. अपन दाबीक सोझाँ — आत्मप्रशंसाक भीतर नुकाएल भूल

८७. माया-अविद्या — अपन लोभक पर्दा आ दूसरेक घरक दीप

८८. चिन्तक — जगतक कारण आ जीबाक अर्थक दू अलग प्रश्न

८९. बीतैत दिनक संग — घरक निशान आ सीमित समयक उत्तरदायित्व

९०. देहक देहरी — संवेदन आ जागरणक दैहिक आधार

९१. चिन्हब आ बुझब — परिचयक मर्यादा आ मान्यताक गाँठि

९२. डीह — धरतीक स्मृति आ पूजाक जीवित अर्थ

९३. मनुक्ख — मानवकेन्द्रित पदानुक्रमक समक्ष आन प्राणक स्वर

९४. अन्तक प्रश्न, आइक दिन — क्षणिक देह आ कर्मक दीर्घ प्रभाव

९५. स्वप्नमे मिज्झर होइत — मिथकीय आख्यान, बलिक प्रश्न आ चेतनाक द्विस्वर

९६. स्थितप्रज्ञतामे लिबैत सत्य! — श्रमिक-मृत्यु आ सार्वजनिक सत्यक विडम्बना

९७. ई जिनगी कोनो बेजाय नै अछि — असफलताक पाछाँ जीवनक स्वीकृति

९८. महत्वाकांक्षा — कटैत पतङ्ग आ उपलब्धिक क्षणभङ्गुरता

९९. ओकरा हँसैत देखि जे आबि जाइ छौ तोरा नोर — पराजितक हँसी आ मुक्त करबाक प्रेम

१००. देहरीक ओहि पार — ओस, देह आ घरक सम्बन्धक बहुवचन

१०१. अनचिन्ह घाटक नेह — पत्रक जलछवि आ प्रत्यक्षक सीमा

१०२. बोलीक चिरै — चित्रसँ सम्बोधन धरि अर्थक उड़ान

१०३. मेघक पएरक चिन्ह — वर्षाक अनुमान आ बालिकाक करुण प्रतिसाद

१०४. अँगुरीमे बसल गीत — सिक्कीक बुनाइ आ मायक शिक्षाक उत्तरजीवन

१०५. पलकक ओहि पार — भयक स्वीकृति आ भीतरक गाँठिक ढील

१०६. अँजुरीसँ आगाँ — पकड़बाक सीमा आ खाली हाथक सम्भावना

१०७. पएरक अपन बाट — विरासतक जुत्ता आ करुणासँ मुड़ैत दिशा

१०८. बोलक भीतर बसात — मायक पुकार, बाँसक सुर आ चुप्पीक गमक

१०९. सभक लेल पाँति — भातक साझा अधिकार आ भीजल खाम्हक श्रम

११०. कुहेसाक बनल घर — स्वप्नक महल आ सम्बन्धक अनदेखल आधार

१११. एक नामक कतेक पात — सामान्य संज्ञा आ विशिष्ट जीवनक भेद

११२. फेर चिन्हल देहरी — परिवर्तनक बीच स्मृतिक प्रत्यभिज्ञान

११३. आधखुलल किवाड़ — सीमित नक्सा आ अनदेखल संसारक स्वीकार

११४. आँगनक खुलल दिशा — बहुसंस्कृतिक सहवासक गृह-रूपक

११५. नेनाक बोलीमे भोर — बालप्रश्नसँ सामाजिक सहकार्य धरि

११६. खाली खूँटीक छाँह — निषेधक अर्थ आ बाँचल सम्भावना

११७. दोसर आँखिक ठाम — नहरिक पानि आ दृष्टिबदलसँ उगैत हरियरी

११८. माटिक भीतर पाँखि — बीआ, घाव आ सामूहिक नवजीवन

११९. रंगक अनकहल स्वर — अरिपनमे भूलक नव पाँखि

१२०. भीतरक अचल ठाम — भावक आवागमन आ साक्षीक खुलल स्थान

१२१. निन्नक पाछाँ सेहो जागल — स्वप्नक क्षणिक सत्य आ दिनक जाँच

१२२. टेढ़ बाटक हरियरी — भूगोलसँ बदलैत लक्ष्य धरि

१२३. कंठसँ उड़ल चिड़ै — मौखिक गीतक पीढ़ीदर-पीढ़ी यात्रा

१२४. जड़िक नव पात — परम्परा, ऋतुचक्र आ विकासक नैतिकता

१२५. काल्हिक बीआ — उत्तराधिकारक अधिकार नहि, भविष्यक जिम्मेदारी

१२६. दू बाटक बीच — कर्मक भूख आ अन्तर्मुखी प्रश्नक समवाय

१२७. एक जल, अनेक लहरि — भेदाभेदक अनुभूति आ सम्बन्धक परीक्षण

१२८. खाली पीढ़ी — अनुपस्थितिक उपस्थिति आ स्मृतिक वस्तु

१२९. पयरसँ आगाँ प्रश्न — अनन्त विभाजनक तर्क आ चलैत देहक अनुभव

१३०. मोनक दूर किनार — दैनन्दिन कर्मक भीतर अन्तःयात्रा

१३१. रोटीक पाछाँक भूख — शरीरक तृप्ति आ अस्तित्वगत पियास

१३२. करघाक नव फूल — हस्तकला, स्त्रीस्मृति आ रूपान्तर

१३३. फेर अँकुरायब — कर्मक प्रतिफल आ करुणाक पुनरागमन

१३४. भोरक खुलल आँखि — स्वप्नभय आ जागरणक पुनर्परीक्षण

१३५. बोलैत आँगन — स्थान, सम्बोधन आ सामूहिक अर्थ

१३६. छुबैत धरती — संख्यात्मक नाप आ अनुभवक स्मृति

१३७. नक्शाक बाहर — प्रतिनिधित्वक सीमा आ घरक अप्रतिरूप अर्थ

१३८. चाहक आकार — व्यक्तिगत कामनासँ साझा प्रकाश धरि

१३९. आवाजक पुल — पियास, सम्बोधन आ अपूर्ण अनुभव-साझेदारी

१४०. सुखक सीढ़ी — बाँटबाक अभ्यास आ नैतिक सुखक विकास

१४१. अलपनाक दुआर — हस्तरेखाक लोककला आ स्वागतक रचना

१४२. बराबरक थारी — भोजनपाँति, मान आ समताक व्यवहार

१४३. जियबाक कारीगरी — अपूर्ण आत्म आ कर्मक आकार

१४४. आँखि आ हथेली — सौन्दर्यक अनुभूति आ अहानिक संयम

१४५. देखि रहल छी — बाह्य दृष्टिसँ आत्मबोध धरि

१४६. हमरा नीक लगैत अछि — तथ्य, रुचि आ साझा अनुभवक भिन्नता

१४७. अवश्य होयत? — गणितीय निश्चितता आ अनुभवजन्य अपेक्षाक भेद

१४८. अनमोलक छाँह — विनिमय-मूल्य आ मानवीय अर्थक भेद

१४९. मेहनतिक रंग — श्रमशरीर आ सौन्दर्यक सामाजिक स्वामित्व

१५०. नामक ओहि पार — संज्ञा आ बहु-इन्द्रिय अनुभव

१५१. बजबाक पहिल दिन — भाषा सीखबाक सामाजिक क्रिया

१५२. फेरसँ ताकू — इन्द्रियभ्रम, पुनर्जाँच आ विश्वासक संशोधन

१५३. हरेक पातक अपन हरियरी — सामान्य अर्थ आ विशिष्ट अनुभवक समवाय

१५४. रंगक सङ्ग रूप — गुणवाचक शब्दक प्रसंगाधीन अर्थ

१५५. गाँठिक भीतर बाट — अर्थबोधक धीरज आ सन्दर्भक बहुलता

१५६. किएकक अनेक रंग — कारणक प्रश्न आ आशयक प्रश्न

१५७. अञ्जुरीक उजास — कृतज्ञता, श्रद्धा आ करुणामय कर्म

१५८. प्रश्नक पाछाँक शान्ति — मापनक सफलता आ जीवनक अव्यक्त व्यथा

१५९. कहलासँ बचल — विरहक पुनर्भेटमे मौनक सकारात्मक अर्थ

१६०. खेलक बोली — वस्तु, भूमिका आ भाषिक व्यवहार

१६१. भीतरक नीरव घर — जागरण, स्वप्न आ निर्विषय विश्रामक प्रश्न

१६२. कारणक सीढ़ी — अनुमानक जाँच आ तर्कक पूर्वाधार

१६३. ओझरायल उजास — आत्मप्रतिमा, संशय आ खुलल हथेलीक अनुभव

१६४. नजरिक मिलन — अवधानक भूमिका आ वस्तुक उपस्थिति

१६५. सपनो जखन सुतल — गहिर निन्नक स्मृति आ साक्षीक अनुत्तरित प्रश्न

१६६. निन्नक तीन किनार — वियोगक तीन अनुभव-स्थिति

१६७. डगमग धरतीपर — संदेहक विवेक आ विश्वस्त क्रिया

१६८. काल्हिक भोर — अनुभवक पुनरावृत्ति आ आगत अनिश्चितता

१६९. सम्भवक खिड़की — कल्पनात्मक असाधारणता आ तार्किक विरोध

१७०. एहि क्षणक ताप — अनुभूतिक निश्चय आ बाह्य कारणक अनुमान

१७१. जागल की सपना? — सर्वसंशय आ साझा व्यवहारक कसौटी

१७२. पहिने ककर पहिचान — इन्द्रियसंसर्ग आ स्मृतिक अन्तर्सम्बन्ध

१७३. चाहीक स्वर — तथ्य-वर्णनसँ नैतिक निर्देशन धरि

१७४. अहाँक पीड़ा — अनुभूतिक निजता आ सहानुभूतिक व्यवहार

१७५. बोलक बसात — जनभाषाक श्रम, विनिमय आ भरोस

१७६. शब्दक घरमे — अमूर्त पदक व्यवहारिक ठाम

१७७. सीखल स्वर — भाषिक अर्जनक सामाजिक आ सर्जनात्मक आधार

१७८. सभक चौक — निजी संकेत आ सार्वजनिक अर्थ-परीक्षण

१७९. फूल आ फीता — शुद्ध मापन आ स्नेहक अप्रमेय आकार

१८०. अपन पयरक भार — स्वतन्त्रताक निर्णय आ उत्तरदायित्व

१८१. साँचासँ बाहर — पहिचानक सामाजिक घेरा आ आत्मनिर्माण

१८२. खुलल आकाशक नीचाँ — अनिर्णीत विश्वदृष्टिक बीच कर्तव्य

१८३. देहक घेरसँ — शरीरक दृश्य रूप आ अनुभूत अन्तरंग

१८४. जगतक सङ्ग जागब — ज्ञान, वस्तु आ सामाजिक उत्तरदायित्वक परस्परता

१८५. हथेलीक पाथर — स्पर्शक प्रत्यक्ष, परोक्ष पक्ष आ वस्तुक आग्रह

१८६. एकलसँ सङ्ग — स्वतन्त्र कर्तृत्व आ सामूहिक साधनक आवश्यकता

१८७. समयक पायल — स्मृति, कलात्मक पुनर्पाठ आ समयक अनेकता

१८८. अनगिन ढङ्गक फूल — कलाक माध्यमभेद आ सौन्दर्यक साझा अवकाश

१८९. कसौटीक उजास — परीक्षणक साधनक परीक्षण आ प्रमाणक मर्यादा

१९०. माप आ मापल — तराजूक पुनःपरीक्षा आ ज्ञानक सम्बन्धात्मकता

१९१. भेटक अनेक बाट — इन्द्रियसभक आंशिक गवाही आ संगत सत्य

१९२. सभ चाबी एक नहि — पद्धतिक विविधता आ अनुपयुक्त समानीकरणक दोष

१९३. अपनहि प्रकाश — आत्मप्रकाशक रूपक आ ज्ञाताक प्रत्यवमर्श

१९४. खुलल बैसार — विचारक बहुवचन आ असहमतिमे श्रोता-धर्म

१९५. प्रश्नकेँ खोलू — शब्दार्थक अस्पष्टता आ उत्तरक पूर्वशर्त

१९६. धीरे सुलझल डोर — प्रयोगभेदक क्रमिक विश्लेषण आ साधारण उलझन

१९७. नाव आ किनार — विधिगत सुरक्षा आ उद्देश्यक अनिर्दिष्टता

१९८. अर्थक खुलल वन — अर्थपद्धतिक विविधता आ अनुशासित सह-अस्तित्व

१९९. बातक भरोस — अर्थबोध, तथ्य-जाँच आ वचनक नैतिक आग्रह

२००. जाँचक दुआर — दावाक अर्थ आ परीक्षणक परिणामक भेद

२०१. अर्थक बाँचल ठाम — असमान ज्ञानक बीच साझा व्यवहार आ संशोधनशीलता

२०२. सभ उजासक अपन दिशा — मापनक पर्याप्तता आ करुणाक पृथक् कसौटी

२०३. भाषा जे भीतर घर करैत अछि — बहुभाषिक भारत, विचारक स्वाधीनता आ भाषिक न्याय

२०४. मैथिलीक नव खेत — व्यावहारिक ज्ञान-सृजन, शब्दनिर्माण आ पड़ोसी भाषाक संग संवाद

२०५. विचार जखन अपन बोली पबैत अछि — अनुवाद, बौद्धिक प्रसार आ मूल प्रश्नक जन्म

२०६. पुरान अक्षरमे नव प्रश्न — संस्कृतक पुनर्पाठ, तर्कपरम्परा आ बौद्धिक निरन्तरता

२०७. जड़िसँ क्षितिज धरि — दार्शनिक बहुवचन, परम्पराक आत्मसमीक्षा आ आगत प्रश्न

२०८. स्वराजक भीतर विचारक स्वराज — स्वातन्त्र्योत्तर भारतीय चिन्तन आ सामाजिक उत्तरदायित्व

२०९. अपन धरती, खुलल आकाश — विश्वचिन्तनक संवाद आ आत्मनिर्णयक विधि

२१०. प्रश्नक परिसर — उच्चशिक्षा, मौलिक अनुसन्धान आ सामाजिक प्रमाण

२११. जे प्रश्न अखनो उत्तर माँगैत अछि — अनुत्तरित वर्तमान, सार्वजनिक दर्शन आ संस्थागत उत्तरदायित्व

२१२. अनुभवक कसौटी — इन्द्रियज्ञान, आत्मनिरीक्षण आ सामाजिक अनुभवक प्रमाण

२१३. पाँच दशकक देहरी — स्वातन्त्र्योत्तर दार्शनिक इतिहासक आत्मपरीक्षण आ भाषागत अधिकार

२१४. दृश्यक पाछाँ जे प्रश्न अछि — तत्त्वमीमांसाक पुनर्विचार, अस्तित्वक भाषा आ आलोचनात्मक संयम

२१५. सृजनक भीतर मनुष्य — स्वतन्त्र कर्तृत्व, सांस्कृतिक उत्पादन आ लोकतान्त्रिक मूल्य

२१६. मूल्यक भीतर संस्कृति — जीवन-मूल्य, बहुधार्मिक सहजीवन आ प्रकृति-सापेक्ष नैतिकता

२१७. व्यक्ति आ समाजक बीच खुलल प्रश्न — अधिकार, समानता आ संस्थागत कारणक बहुस्तरीय परीक्षण

२१८. ज्ञानक तलघरमे दीप — ज्ञानक आधार, आत्मप्रकाशक सीमा आ प्रमाण-समीक्षा

२१९. देहक भीतर “हम” — शरीर, आत्मबोध आ प्रथमपुरुषक व्याकरणक दार्शनिक परीक्षा

२२०. सुन्दरक सीमा सँ पार कला — सौन्दर्यबोध, रुचिक इतिहास आ सृजनक सार्वजनिक रूप

२२१. अखंड आकाशक बाट — बहुस्तरीय साधना आ सामाजिक करुणाक नैतिक अर्थ

२२२. ध्वनिक पार अर्थक उजास — क्षणिक उच्चारण, अर्थनिर्माण आ भाषिक समुदाय

२२३. भीतरक दरबज्जा पर उजास — स्वर-शोध, आत्मस्वाधीनता आ सामाजिक सजगता

२२४. मनुखताक आँगनमे नव भोर — सामाजिक न्याय, अहिंसा आ लोकजीवनक पुनर्निर्माण

२२५. जतय मनुख मनुखक उजास — गरिमा, सार्वजनिक पहुँच आ दैनन्दिन न्याय

२२६. अदृश्य तराजूक उजास — मूल्यक्रम, न्याय आ अन्तरात्माक प्रश्नात्मक तौल

२२७. टूटल आइना मे अनेक आकाश — बहु-दृष्टिक इतिहास, सत्ताक भाषा आ आलोचनात्मक विघटन

२२८. निर्णयक धधकैत देहरी — चिकित्सा, जैवनीति, स्त्री-अधिकार आ निर्णयक अनिश्चितता

२२९. माटिक नाड़ीमे हमर श्वास — पारिस्थितिक अन्योन्याश्रय आ अगिला पीढ़ीक न्याय

२३०. अपन आँखिसँ भोर — भाषिक स्वराज, उपनिवेशित दृष्टि आ विवेकपूर्ण आत्मसम्मान

२३१. पुरान नदीमे नव धार — स्मृति, नव अनुसन्धान आ जीवित बौद्धिक परम्पराक अन्तरपीढ़ी संवाद

२३२. दीपक पाछाँक अनाम उजास — ज्ञानक अदृश्य श्रम, पुस्तकालय, अनुवाद आ संस्थाक सार्वजनिक नैतिकता

२३३. दिशा-दिशासँ आबैत दीप — अनेक ज्ञानमार्गक संगम आ बौद्धिक उत्तराधिकारक पुनर्निर्माण

२३४. जड़ चित्रक पाछाँ बहैत प्रश्न — विरासतक स्थिर चित्र विरुद्ध पदार्थ, संशय आ प्रश्नशील परम्परा

२३५. मुक्तिक धुरीसँ बाहर विचारक आकाश — दर्शनक साधन-मूल्य आ स्वायत्त जिज्ञासाक सम्बन्ध

२३६. मुक्ति एक प्रश्न, चिन्तन अनेक बाट — सत्तासम्बन्धी प्रश्न आ साधनागत लक्ष्यक प्रमाणिक अन्तर

२३७. श्रुतिक वनमे ककर स्वर मूल — पाठक क्रम, अनेक श्रुति-स्तर आ मूलत्वक इतिहासपरक प्रश्न

२३८. सीमाहीन कथनक भीतर मौन प्रश्न — उपनिषद-वचनक भिन्नता, चुनल ‘अन्तिम शिक्षा’ आ अनुपस्थितिक सावधानी

२३९. सूत्रक देह पर समयक अनेक लेख — पाठान्तर, भाष्य-साक्ष्य आ शास्त्रीय सम्पादनक प्रमाणमीमांसा

२४०. साक्षी आ प्रकृतिक बीच अन्तिम दूरी — सांख्यक कैवल्य आ मुक्तिपश्चात् दृश्यक अस्तित्व

२४१. भ्रमक गाँठिसँ अभेदक निस्तब्धता — अद्वैतक अज्ञान-सिद्धान्त आ ज्ञाता-ज्ञेय लोपक कठिनाई

२४२. एक नामक भीतर अनेक विपरीत दिशा — दार्शनिक पहिचान, ग्रन्थाधिकार आ मत-बहुलताक सीमा

२४३. अग्निक अर्घ्य आ कर्मक एकल लेखा — साझा कर्म-सम्बन्ध आ व्यक्तिगत नैतिक उत्तरदायित्व

२४४. चारि लक्ष्यक चौखटिसँ बाहर जीवन — पुरुषार्थ-व्यवस्थाक उपयोगिता आ सृजनक स्वतन्त्र मूल्य

२४५. सूचीक भीत नहि, प्रश्नक जीवित नदी — वर्गीकृत दर्शन-इतिहाससँ अन्तर्द्वन्द्वात्मक बौद्धिक इतिहास दिस

२४६. यज्ञक धुँआसँ तर्कक पहिल उजास — विधि, शब्दार्थ, लोककौशल आ प्रमाणक जन्मतर्क

२४७. वस्तुक सात दुआर, साक्षीक एक नेत्र — पदार्थ-वर्गीकरण आ चेतनाक दृष्टिस्थानक द्वैत

२४८. इन्द्रियक पवन थमलापर अन्तर आकाश — चित्तवृत्तिक निरीक्षण आ सजगताक स्वतन्त्र अनुशासन

२४९. शब्दक बीजसँ कल्पनाक वन — शब्दार्थक समग्रता आ कलात्मक सम्भावनाक सृजन

२५०. राजदण्ड, श्रम आ साझा घर — कार्यविभाजन, राजसत्ताक मर्यादा आ समान मानवीय दर्जा

२५१. क्षणक धार आ अनेक दृष्टिक किनार — क्षणवाद आ बहु-दृष्टिक अनुमानक अलग कसौटी

२५२. मतक भीत पारि प्रश्नक भूगोल — मत-नामसँ प्रभाव, प्रत्युत्तर आ बहु-अनुशासनिक इतिहास दिस

२५३. शब्द, शून्य आ अभेदक पूर्वराग — भाषा, क्षणिकता आ अद्वैतक ऐतिहासिक प्रतिध्वनि

२५४. सम्बन्धक सूक्ष्म जालमे ज्ञानक दीप — वस्तु-गुण-संबन्ध, अभाव आ व्याप्तिक भाषिक कसौटी

२५५. एक आ अनेकक अनन्त बहस — अद्वैत, भेद आ भक्ति-संबन्धक तर्कगत कठिनाई

२५६. प्रेमक पाँचम दिशा — पुरुषार्थक सीमासँ बाहर सम्बन्धगत मूल्य आ सौन्दर्य

२५७. सूक्ष्म भेदक नोक पर अर्थ — नव्य-न्यायक सम्बन्धक स्तर आ अनन्त विश्लेषणक सीमा

२५८. पुरान श्रुति आ नव आगमक संगम — श्रुति-आगमक प्रामाण्य आ जीवित अनुभवक इतिहास

२५९. परम्पराक भीतमे विद्रोही खिड़की — अन्तरपरम्परागत आलोचना आ विचारक स्व-संशोधन

२६०. लोकक कण्ठमे उतरैत चिन्तन — लोकभाषाक माध्यमसँ ज्ञान-संचार आ सामाजिक परम्पराक आलोचना

२६१. दू भाषाक बीच टूटल सेतु — औपनिवेशिक ज्ञानविभाजन, पाठ्यक्रम आ बराबरीक अनुवाद

२६२. टूटल परम्परासँ नव संश्लेषक पथ — सृजनात्मक पुनर्पाठ आ अन्धानुकरणसँ अलग वैचारिक संश्लेष

२६३. अजन्म मौनसँ जगक आवागमन — सृष्टि, त्रिगुण, मायाक भिन्न अर्थ आ प्रथम कारणक संशय

२६४. दुःखक प्रश्न पर नैतिक आकाश — कर्मफल, स्मृतिहीन उत्तरदायित्व आ पीड़ितक प्रति करुणा

२६५. श्रम, शक्ति आ सीमाक नगर — जन्माधारित कार्यबन्दी, राज्यक अवयव आ जनकल्याणक शर्त

२६६. रसक क्षणमे जगत आनन्द बनल — करुण दृश्य, साझा भाव आ कला-अनुभूतिक रूपान्तरण

२६७. समयक धूलिमे पदचिह्न खोजैत मन — पाण्डुलिपिक काल आ मूल रचनाक समयक प्रामाणिक अन्तर

२६८. अनेक दिशाक एक सत्य — अनेकान्त, प्रत्यक्ष-अनुमान आ दृष्टिक आत्मालोचना

२६९. कारणक सीढ़ी, सत्ताक ज्योति — श्रद्धा-विवेक, स्वरूप-अस्तित्व आ प्राकृतिक विधिक विवेचन

२७०. अपनहि उजासक प्रत्यभिज्ञा — प्रकाश-विमर्श, शिवस्वरूप आ कला-साधनाक अन्तर्सम्बन्ध

२७१. माटिसँ अतिमानस धरि — आरोहण-अवतरण, देहगत रूपान्तरण आ मानव-एकताक कल्पना

२७२. रूप, कारण आ मध्यम मार्ग — संभाव्यता-क्रिया, सद्गुणक अभ्यास आ लोकजीवनक तर्क

२७३. सन्देहक रातिसँ विश्वासक भोर — तर्कक आत्मपरीक्षण आ साधनामे अन्वेषणक कठिन मोड़

२७४. भीतरक प्रकाश आ दू नगर — इच्छाक क्रम, अशुभक अभाव आ नैतिक इतिहासबोध

२७५. शब्दक पार जे स्वर जागय — अभिधा-लक्षणा-व्यञ्जना आ सहृदय अनुभव

२७६. कहबो एकटा काज अछि — वचनक सामाजिक बल, प्रयोग-सन्दर्भ आ परिणाम

२७७. एकहि उजासक अनेक दुआर — सूफी अनुभूति, प्रेमक अनुशासन आ समावेशक एकत्व

२७८. प्रकृति नाचय, पुरुष देखय — सांख्यक द्वैत आ दुःखनिवृत्तिक विवेकज्ञान

२७९. तर्कक फूलसँ सत्यक अर्घ्य — ईश्वर-सिद्धिक अनुमान आ उत्तरदायी तर्क

२८०. हेतुक दीप, आत्माक साक्षी — वार्तिकपरम्परा, लिङ्गपरामर्श आ हेत्वाभास

२८१. पदार्थक गति, मनुष्यक मुक्ति — श्रमक परायापन, वर्गसम्बन्ध आ भौतिक इतिहास

२८२. अर्थक कसौटी — सत्यापन, तथ्य-मूल्य आ वाक्यक प्रकार

२८३. कण-कणमे भेदक व्याकरण — वैशेषिकक पदार्थ, समवाय आ अभाव-विवेचन

२८४. अपन आचरणसँ राज्य सँवारू — रेन, शू, ली आ सार्वजनिक नैतिक उदाहरण

२८५. अनुभवक साँचा, कर्तव्यक दीप — ज्ञानक पूर्वशर्त आ मानवीय गरिमाक सार्वभौमिकता

२८६. अर्थक नक्शा, भाषाक अनुशासन — सत्यापनसँ पुष्टियोग्यता धरि अर्थक सुधार

२८७. प्रतीकक जग, मनुष्यक अर्थ — भाषा-मिथक-कला आ मनुष्यक प्रतीकात्मक स्वातन्त्र्य

२८८. चुनावक क्षण, आस्थाक छलाँग — अस्तित्वक स्वतन्त्रता, चिन्ता आ व्यक्तिगत उत्तरदायित्व

२८९. प्रमाणक छह दीप — मीमांसाक ज्ञानसाधन आ अभावक सकारात्मक बोध

२९०. अनुभवक धरती पर समाजक विज्ञान — तीन वैचारिक अवस्थासँ सामाजिक स्थैतिकी-गतिशीलता धरि

२९१. राज्यक मूल प्रजाक हित — अर्थशास्त्रीय नीति, दण्ड आ सार्वजनिक कल्याण

२९२. अनुभूतिक रूप, इतिहासक स्वतन्त्रता — कला-अभिव्यक्ति आ इतिहासक पुनरानुभूतिक भिन्न विधि

२९३. अनुभवक किनार पर विश्वासक जाल — समग्रवादी ज्ञानजाल आ सिद्धान्तक संशोधनीयता

२९४. ज्ञानक चारि दुआर — न्यायीय प्रत्यक्ष, अनुमान, उपमान आ शब्दप्रमाण

२९५. सत्यक धागा, करुणाक करघा — अहिंसा, सत्याग्रह आ जाति-सम्बन्धी आन्तरिक विरोध

२९६. निद्राक चारि घाट पारि अजन्म उजास — जाग्रत-स्वप्न-सुषुप्ति-तुरीय आ उत्पत्तिक निषेध

२९७. संशयसँ निर्णय धरि — तर्क, हेतु, अपवाद आ उत्तरक संशोधनीयता

२९८. प्रेमक नाममे खुलैत अनन्त — भेदाभेद, ईश्वरक आश्रय आ प्रेमक सम्बन्ध

२९९. कर्मक पाछाँ अनदेखल सेतु — मीमांसाक विधि, अपूर्व आ कर्मफलसम्बन्ध

३००. समस्या सँ अनुभवक नव बिहान — प्रयोगवादी जाँच, शिक्षा आ सार्वजनिक लोकतन्त्र

३०१. क्षणक रूप, निषेधक भाषा — निर्विकल्पक प्रत्यक्ष, त्रैरूप्य आ अपोह

३०२. संशयक राखिमे निश्चित स्वर — विधिपूर्वक सन्देह आ आत्मचिन्तनक प्रथम निश्चय

३०३. क्षणक उजास, हेतुक पाँखि — प्रत्यक्षक प्रकार, स्वप्रकाश ज्ञान आ अनुमानदोष

३०४. शून्यक बीच सम्बन्धक ज्योति — परतन्त्र उत्पत्ति, चतुष्कोटि आ करुणाक अनुषङ्ग

३०५. भेदक भीतर अभेदक राग — शक्ति-शक्तिमान आ भक्ति-सम्बन्धक विशिष्ट अभेद

३०६. पुरान मूल्यक राखसँ नव अगिनि — जीवनस्वीकृति, मूल्य-परिवर्तन आ शाश्वत पुनरागमन

३०७. शब्दक देहमे अर्थक धड़कन — ध्वनिक क्षणिकता, सामान्य-बोध आ कर्मगत शब्दार्थ

३०८. चित्तक तरंग थमल तखन — योगक पाँच वृत्ति आ ध्यानक क्रमबद्ध अनुशासन

३०९. संशयक चुभन, कर्मक अर्थ — विश्वासक स्थिरीकरण, व्यवहारिक परिणाम आ अनुमानक तीन रूप

३१०. सूत्रक दाना, भाषाक अनन्त वन — व्याकरण, लौकिक प्रयोग आ शब्दार्थक परिवर्तन

३११. एक प्रतिवादक दीप — खण्डनीयता, साहसिक परिकल्पना आ खुलल समाज

३१२. कणसँ ध्वनि धरि जगक जाल — वैशेषिक परमाणु, गुण आ ध्वनितरंगक कारणबोध

३१३. वाक्यक संगति, ज्ञानक अपन उजास — स्वतःप्रामाण्य, भ्रम-स्मृति आ विधिवाक्य

३१४. छायाक गुफासँ रूपक सूर्य — प्लेटोनिक रूप, आत्मिक न्याय आ दार्शनिक शासक

३१५. देखल जगक मौन उजास — अनुभूति-आधारित वस्तु आ सामान्यधारणाक आलोचना

३१६. सूत्रक गाँठिमे अनन्तक स्वर — ब्रह्मसूत्रीय जगतकारण आ विरोधी भाष्यक स्थान

३१७. सुखक तराजू, समाजक प्रश्न — उपयोगितावाद, दण्डनीति आ अल्पसंख्यकक गरिमा

३१८. घड़ीक पारि बहैत जीवन — अवधि, सृजनशील उत्क्रान्ति आ जीवनक अन्तरकाल

३१९. टुकड़ाक पारि अखण्ड उजास — सम्बन्धक अनन्त क्रम आ समष्टिगत आदर्शवाद

३२०. नकारक सीढ़ी सँ स्वतन्त्र आत्मबोध — सीमा-भेदन, स्वनिर्धारण आ दार्शनिक स्वातन्त्र्य

३२१. शब्दक भीतर अखण्ड ज्योति — ध्वनि, स्फोट आ वाक्यक एकात्म बोध

३२२. पाँच भेदक बीच समर्पणक दीप — द्वैतक यथार्थवाद आ भक्ति-आश्रय

३२३. देहक आँखिसँ खुलैत संसार — देहगत प्रत्यक्ष आ अनुभवक अदृश्य क्षितिज

३२४. ज्ञानक दर्पण, हेतुक डोरी — ज्ञानक स्वप्रकाश आ प्रमाण-पद्धतिक बहुविधता

३२५. श्रमक हाथ, बदलैत जग — भौतिक सम्बन्ध, श्रमक विमुखीकरण आ समान अवसर

३२६. रहस्यक दुआर पर खुलल हाथ — स्वामित्व-त्याग, अस्तित्वगत आशा आ अनिर्णीत प्रश्न

३२७. स्वतन्त्र स्वर, सुखक गहिर माप — उच्चतर सुख, विचारस्वातन्त्र्य आ हानिक सीमा

३२८. ‘नीक’ केर अनिर्वचनीय उजास — खुलल प्रश्न आ मूल्यक अपरिभाषेयता

३२९. करुणाक अंकुर, जनक राज — मानवीय नैतिक अंकुर आ अन्नाधारित शासन

३३०. नेति-नेतिक पारि अन्तरतम साक्षी — आत्मसाक्षी, अवस्था-विवेचन आ भेदक सापेक्षता

३३१. सीमारेखाक आगिमे आत्मक उजास — मापनीय ज्ञानक सीमा आ निर्णयमे स्वतन्त्र अस्तित्व

३३२. तर्कक कण, भाषाक पारदर्शी आकाश — तार्किक संरचना आ सरल तथ्यक सम्बन्ध

३३३. भाषाक गाँठि, मनक अदृश्य चाल — श्रेणीगत भ्रम आ मानसिक शब्दक सार्वजनिक व्यवहार

३३४. पूब-पश्चिमक बीच एकहि उजास — वैज्ञानिक निरीक्षण आ अनुभूतिक संवाद

३३५. अनेक रूपमे एकहि आश्रय — विशिष्टताक सत्यता आ निर्भर स्वत्वक भक्ति

३३६. मनुष्यक हाथमे स्वतन्त्र भोर — मानवतावादी मूल्य आ विश्वनैतिकताक शर्त

३३७. वनक स्वतन्त्र साँससँ जन-इच्छाक नगर — प्राकृतिक स्वतन्त्रता आ सामाजिक समान नियम

३३८. निःशब्द धाराक सहज बाट — नामक सीमा, विपरीतक पूरकता आ अकर्मकर्म

३३९. अदृश्य केन्द्रसभक एक सुर — सूक्ष्म सत्ता, पर्याप्त कारण आ दार्शनिक सामञ्जस्य

३४०. अनुभवक कोरा पात पर स्वतन्त्र हस्ताक्षर — अनुभवजन्य ज्ञान आ सहिष्णु नागरिक स्वातन्त्र्य

३४१. विश्वासक आगि, अन्तरात्माक मुक्त स्वर — कृपाक व्यापार-विरोध, मातृभाषा आ अन्तरात्माक विवेक

३४२. श्रमक मुक्ति, बदलैत धरतीक गीत — द्वन्द्वात्मक परिवर्तन आ उत्पादनक न्याय

३४३. सत्य जगत पर कृपाक मधुर धारा — यथार्थ जगत, ईश्वराश्रित भेद आ भक्तिक व्यवहार

३४४. चेतनाक धारामे रूपक स्वप्न — क्षणिकता, नित्य आत्माक अस्वीकार आ निर्भर उत्पत्ति

३४५. अनेक बाटक बीच विवेकक सेतु — दार्शनिक बहुलता, अनुमानक व्याप्ति आ मतभेदक मर्यादा

३४६. प्रमाणक चारि दुआर, मुक्तिक एक बाट — न्यायप्रमाण, अभावबोध आ दुःखक ज्ञानमूलक उपचार

३४७. शब्दक खेलमे जगक सीमा — चित्रात्मक वाक्यसँ जीवित भाषा-प्रयोग धरि

३४८. नियमक जालमे अर्थ खोजैत मनुष्य — समाजक अर्थबोध, वैध सत्ता आ तर्कीकरणक द्वैध

३४९. क्षणक गर्भमे सृष्टिक अनन्त बहाव — प्रक्रियात्मक सत्ता, सम्भावना आ क्षणक नूतन जन्म

३५०. तीन परत पारि एकहि उजास — अवस्थात्रय, साक्षीबोध आ अभ्यासजन्य विवेक

३५१. वचनक विधिमे कर्तव्यक अदृश्य बीज — आज्ञार्थक वाक्य, विधि-निषेध आ कर्मफलसम्बन्ध

३५२. भेदक सूक्ष्म रेखा, सम्बन्धक मौन सूत्र — सत्ताक मितव्ययिता आ सम्बन्धक अस्थायित्व

३५३. सन्देहक पारि विश्वासक चारि आकाश — संशय, देह-मन सम्बन्ध आ नैतिक जीवन-स्वीकृति

३५४. अपनेक निर्माणक खुलल आकाश — अस्तित्व पहिने, स्वनिर्माण आ स्वातन्त्र्यक भार

३५५. इन्द्रियक शोर आ अन्तरक दीप — संस्कृतिक मानदण्ड, बाह्य अनुभव आ नैतिक सन्तुलन

३५६. पहिचानक धरती, वाक्यक मौन पूर्वशर्त — वर्णनात्मक तत्त्वमीमांसा आ दैनिक भाषाक रूपरेखा

३५७. एकहि अनन्त धारा, अनिवार्य जग — एकमात्र सत्ता, अनिवार्य कारणक्रम आ भावक ज्ञान

३५८. सरल बीजसँ बहुरंगी जग — विकासक जटिलता, विज्ञानक सीमा आ वैयक्तिक स्वतन्त्रता

३५९. फेंकल क्षणसँ मृत्यु-दिशि खुलल समय — जगतमे-होएब, चिन्ता आ निज मृत्युक सचेतना

३६०. भयक मैदान सँ अनुबन्धक नगर — इन्द्रियज्ञान, इच्छाक संघर्ष आ सार्वजनिक सुरक्षा

३६१. छापक आगिसँ आदतक कारण — अनुभूतिक प्राथमिकता, कारणक अनिवार्यता आ सीमित संशय

३६२. चेतनाक दुआर पर वस्तुक उजास — पूर्वमान्यताक विराम आ अन्तरविषयक जग

३६३. सात भंगीक खिड़की सँ अहिंसक सत्य — स्याद्वाद, प्रमाणक प्रसंग आ विचारक अहिंसा

३६४. विरोधक गर्भसँ पूर्णताक यात्रा — निषेध, मान्यता आ इतिहासमे स्वतन्त्रताक विकास

३६५. सन्देहक दीप सँ निश्चयक आकाश धरि — पद्धतिगत संशय, स्पष्ट विचार आ द्वैतक कठिनाई

३६६. अनुभवक धार पर कारणक प्रश्न — प्रत्यक्ष छाप, पुनरावृत्ति आ भविष्यक अनुमान

३६७. रूपक परदा सँ अखण्ड यथार्थ धरि — अनुभूतिक एकत्व आ सम्बन्धात्मक समग्रताक खोज

३६८. शब्दक गाँठ सँ तथ्यक उजास धरि — तार्किक विश्लेषण, विवरण आ दैनिक भाषाक प्रतिरोध

३६९. हाथक प्रमाण सँ विश्लेषणक सीमा धरि — सामान्यबुद्धिक प्रतिपक्ष आ अमूर्त अवधारणाक जाँच

३७०. प्रयोगक बाट पर अर्थक नगर — चित्र-सिद्धान्त, भाषिक प्रयोग आ परिवार-सादृश्य

३७१. एकाकी संकेत सँ साझा कसौटी धरि — निजी भाषा, नियमपालन आ दोसर मनक अर्थ

३७२. अनुभवक धरती सँ नियमक कसौटी धरि — वैज्ञानिक व्याख्या, सिद्धान्त-परीक्षण आ बहुकसौटी चयन

३७३. वस्तुक आभास सँ चेतनाक अन्तराल धरि — अनुभवक अभिमुखता, सारग्रहण आ अन्तरविषयकता

३७४. अभिमुख चेतना सँ स्वतन्त्र अस्तित्व धरि — विषयाभिमुखता, कल्पना आ देहगत सम्बन्ध

३७५. वाक्यक अर्थ सँ तार्किक सत्य धरि — प्रतिज्ञप्ति, अधिभाषा आ अर्थनिर्धारणक शर्त

३७६. विश्वासक प्रश्न सँ अशुभक अन्हार धरि — धार्मिक कथनक भिन्न प्रयोग आ दुःखक चुनौती

३७७. कालक धार सँ धर्मक सत्य धरि — समय, धार्मिक अनुभव आ इतिहासगत मूल्य

३७८. पवित्रताक आकाश सँ लौकिक जीवन धरि — नवजागरण, ऐहिकता आ धर्मक आत्मसमीक्षा

३७९. अनेक पथक संगममे एक सत्यक खोज — धार्मिक बहुलता, परम्परागत भेद आ न्यायपूर्ण सहअस्तित्व

३८०. ‘शुभ’क अर्थ सँ कर्तव्यक कसौटी धरि — वर्णन, मूल्यनिर्णय आ साधन-लक्षक नैतिक अन्तर

३८१. घटनाक क्रम सँ ऐतिहासिक बोध धरि — कारणसम्बन्ध, व्यक्ति-समाज आ इतिहासक अनेक स्तर

३८२. कानूनक अक्षर सँ न्यायबोधक अन्तःस्वर धरि — अधिकार, वितरण आ सार्वजनिक औचित्य

३८३. अक्षरक पार जे उजास — विधिक अक्षर, विवेक आ सामाजिक न्याय

खण्ड २६ — गजेन्द्र ठाकुरक समानान्तर दर्शन — प्रथम खण्ड

मूल समीक्षा-पाण्डुलिपिसँ सूचीकृत शीर्षक : 87

प्रकाशन आ प्रतिलिप्यधिकार

सम्पादकीय भूमिका

मूल ग्रन्थ, पाठाधार आ समीक्षा-सीमा

अध्याय १ : दर्शन की अछि? — प्रश्न, प्रमाण आ इतिहाससम्मत आत्मसमीक्षाक प्रतिज्ञा

अध्याय २ : प्रश्न, संशय आ प्रमाण — त्रुटिसंशोध्य ज्ञानक निर्माण

अध्याय ३ : सत्य आ दृष्टिकोण — बहुदृष्टिगतता आ प्रमाणक साझा कसौटी

मैथिली–अंग्रेजी पाठान्तर : अध्याय १–३क प्रमाणाधारित परीक्षण

अध्याय १–३क अन्तराध्यायिक समेकन

अध्याय ४ : ज्ञानक सीमा — संशोध्य निष्कर्ष आ संरचित अज्ञान

अध्याय ५ : समानान्तर दर्शनक पद्धति — बारह चरण आ आत्मपरीक्षाक अनिवार्यता

अध्याय ६ : वैदिक चिन्तन आ उपनिषदिक प्रश्न — बहुवचनता आ ऐतिहासिक सावधानी

अध्याय ४–६क समेकित दार्शनिक निर्णय

अध्याय ४–६क पुस्तकाधारित ग्रन्थाधार

अध्याय 7 : सांख्य

अध्याय 8 : योग

अध्याय 9 : न्याय

अध्याय 10 : वैशेषिक

अध्याय 11 : पूर्वमीमांसा

अध्याय 12 : वेदान्त

अध्याय 13 : बौद्ध दर्शन

अध्याय 14 : जैन दर्शन

अध्याय 15 : लोकायत आ भौतिकवादी प्रश्न

अध्याय 16 : भाषा, शब्द आ अर्थ

अध्याय 7–16 : तुलनात्मक निष्कर्ष

अध्याय 17 : विदेह: प्रश्नक भूगोल

अध्याय 18 : याज्ञवल्क्य, गार्गी आ मैत्रेयी

अध्याय 19 : न्याय-वैशेषिक आ मिथिलाक तार्किक संस्कार

अध्याय 20 : उदयनाचार्य

अध्याय 21 : वाचस्पति मिश्र

अध्याय 22 : गङ्गेश उपाध्याय

अध्याय 23 : नव्य-न्याय: भाषाक सूक्ष्म अनुशासन

अध्याय 24 : लोक, शास्त्र आ समानान्तर मिथिला

अध्याय 17–24 : तुलनात्मक निष्कर्ष

अध्याय 25 : यूनानी प्रश्न

अध्याय 26 : सुकरात, प्लेटो आ अरस्तू

अध्याय 27 : मध्ययुगीन दर्शन

अध्याय 28 : देकार्त, स्पिनोजा आ लाइबनित्स

अध्याय 29 : लॉक, बर्कली आ ह्यूम

अध्याय 30 : कान्ट

अध्याय 31 : हेगेल आ द्वन्द्व

अध्याय 32 : मार्क्स

अध्याय 33 : कीर्केगार्द आ नीत्शे

अध्याय 34 : प्रघटनावाद आ अस्तित्ववाद

अध्याय 35 : विश्लेषणात्मक दर्शन

अध्याय 36 : व्यवहारवाद

अध्याय 37 : विज्ञान-दर्शन

अध्याय 25–37 : तुलनात्मक निष्कर्ष

अध्याय 38 : व्यक्ति आ समाज

अध्याय 39 : राज्यक औचित्य

अध्याय 40 : स्वतंत्रता

अध्याय 41 : समानता

अध्याय 42 : न्याय

अध्याय 43 : जाति आ सामाजिक पदानुक्रम

अध्याय 44 : वर्ग आ आर्थिक सत्ता

अध्याय 45 : स्त्री, लिंग आ सत्ता

अध्याय 46 : भाषा, क्षेत्र आ अस्मिता

अध्याय 47 : लोकतन्त्र

अध्याय 48 : गांधी

अध्याय 49 : आम्बेडकर

अध्याय 38–49 : तुलनात्मक निष्कर्ष

अध्याय 50 : धर्म की अछि?

अध्याय 51 : ईश्वरक प्रश्न

अध्याय 52 : आस्था आ तर्क

अध्याय 53 : दुःख आ अशुभक समस्या

अध्याय 54 : कर्म, पुनर्जन्म आ मोक्ष

अध्याय 55 : धर्मबहुलता

अध्याय 56 : धर्म आ राज्य

अध्याय 57 : लोकधर्म आ संस्थागत धर्म

अध्याय 58 : आधुनिकता

अध्याय 59 : विज्ञान आ मनुष्य

अध्याय 60 : भाषा आ सत्ता

अध्याय 61 : इतिहास आ स्मृति

अध्याय 62 : ज्ञान आ डिजिटल संसार

अध्याय 63 : कृत्रिम बुद्धि आ मनुष्यक उत्तरदायित्व

अध्याय 64 : पर्यावरण आ भावी पीढ़ी

अध्याय 50–64 : तुलनात्मक निष्कर्ष

अध्याय 65 : बहुप्रमाणीय विवेकवाद

अध्याय 66 : सहअस्तित्वात्मक यथार्थवाद

अध्याय 67 : गरिमा-आधारित नैतिकता

अध्याय 68 : बहुकेन्द्रिक लोकतन्त्र

अध्याय 69 : धर्मक विवेकपूर्ण बहुलता

अध्याय 70 : समानान्तर इतिहास-दृष्टि

अध्याय 71 : समानान्तर दर्शनक सूत्र

अध्याय 72 : उपसंहार: समानान्तर रहबाक अर्थ

अध्याय 65–72 : तुलनात्मक निष्कर्ष

समग्र दार्शनिक मूल्याङ्कन

मूल ग्रन्थ-सन्दर्भ

खण्ड २७ — गजेन्द्र ठाकुरक समानान्तर दर्शन — द्वितीय खण्ड

मूल समीक्षा-पाण्डुलिपिसँ सूचीकृत शीर्षक : 104

प्रकाशन आ प्रतिलिप्यधिकार

सम्पादकीय भूमिका

अध्याय 1 — दर्शनक दोसर मोड़: चेतनासँ भाषा धरि

अध्याय 2 — बीसम शताब्दीमे दर्शन किएक बदलल?

अध्याय 3 — विश्लेषणात्मक आ महाद्वीपीय दर्शनक विभाजन

अध्याय 4 — भारतीय दर्शन एहि नक्शामे कतय?

अध्याय 5 — मिथिलाक समानान्तर प्रवेश-बिन्दु

अध्याय 6 — तुलनात्मक दर्शनक खतरा

अध्याय 7 — फ्रेगे: तर्क, अर्थ आ सन्दर्भ

अध्याय 8 — रसेल: वर्णन, तार्किक रूप आ जगत

अध्याय 9 — मूर आ सामान्य बुद्धि

अध्याय 10 — आरम्भिक विट्गेन्स्टाइन

अध्याय 11 — तार्किक प्रत्यक्षवाद

अध्याय 12 — कार्नाप आ तत्त्वमीमांसाक प्रश्न

अध्याय 13 — क्वाइन: विश्लेषणात्मक–संश्लेषणात्मक भेदक संकट

अध्याय 14 — विश्लेषणात्मक दर्शन आ नव्य-न्याय

अध्याय 15 — उत्तरकालीन विट्गेन्स्टाइन: अर्थ प्रयोगमे

अध्याय 16 — ऑस्टिन: कहब सेहो करब अछि

अध्याय 17 — सर्ल आ भाषिक क्रिया

अध्याय 18 — भाषा निजी भऽ सकैत अछि की?

अध्याय 19 — शब्दक अर्थ: वस्तु, प्रयोग कि सम्बन्ध?

अध्याय 20 — भारतीय शब्दमीमांसा

अध्याय 21 — मिथिलाक भाषिक विश्लेषण

अध्याय 22 — संरचना की अछि?

अध्याय 23 — सस्यूर: संकेतक आ संकेतित

अध्याय 24 — लेवी-स्ट्रॉस: मिथक आ संरचना

अध्याय 25 — संरचना आ व्यक्ति

अध्याय 26 — भारतीय भाषिक परम्परा आ संरचना

अध्याय 27 — संरचनावादक सीमा

अध्याय 28 — संरचनासँ उत्तर-संरचना धरि

अध्याय 29 — देरिदा: उपस्थितिक तत्त्वमीमांसाक आलोचना

अध्याय 30 — अर्थ-भिन्नताक स्थगित प्रक्रिया: अर्थक स्थगन आ भिन्नता

अध्याय 31 — लेखन, वाणी आ केन्द्रक प्रश्न

अध्याय 32 — विखण्डन की अछि—आ की नहि अछि?

अध्याय 33 — भारतीय दर्शन आ विखण्डन

अध्याय 34 — नव्य-न्याय विखण्डनक प्रतिपक्ष?

अध्याय 35 — समानान्तर उत्तरपक्ष

अध्याय 36 — ज्ञान आ सत्ता अलग अछि की?

अध्याय 37 — फूकोक पुरातत्त्व

अध्याय 38 — वंशावली: इतिहास लिखबाक दोसर ढंग

अध्याय 39 — अनुशासन, निगरानी आ सामान्यीकरण

अध्याय 40 — शरीर, संस्था आ ज्ञान

अध्याय 41 — फूको आ समानान्तर इतिहास-दृष्टि

अध्याय 42 — उत्तर-आधुनिकता की अछि?

अध्याय 43 — ल्योटार आ महाख्यानपर अविश्वास

अध्याय 44 — बौद्रियार: प्रतिरूप, माध्यम आ अधि-यथार्थता (hyperreality)

अध्याय 45 — सत्यक अन्त भेल की?

अध्याय 46 — विज्ञान, इतिहास आ उत्तर-आधुनिक आलोचना

अध्याय 47 — समानान्तर दर्शनक उत्तर

अध्याय 48 — हर्मेन्यूटिक्स: बुझब स्वयं समस्या किएक?

अध्याय 49 — गाडामर: परम्परा आ पूर्वबोध

अध्याय 50 — रिकोयर: पाठ, प्रतीक आ व्याख्या

अध्याय 51 — लेखकक अभिप्राय बनाम पाठकक अर्थ

अध्याय 52 — भारतीय भाष्य-परम्परा

अध्याय 53 — मिथिलाक शास्त्रार्थ एकटा व्याख्यात्मक अभ्यास (hermeneutic practice) केर रूपमे?

अध्याय 54 — फ्रैंकफर्ट स्कूल

अध्याय 55 — होर्खाइमर आ अडोर्नो: आधुनिक विवेकक आत्मालोचना

अध्याय 56 — मार्क्यूजे: उपभोक्ता समाज आ एक-आयामी मनुष्य

अध्याय 57 — हाबर्मास: संवादात्मक विवेक

अध्याय 58 — सार्वजनिक क्षेत्र आ लोकतन्त्र

अध्याय 59 — शास्त्रार्थ, वाद आ संवादात्मक विवेक

अध्याय 60 — स्त्रीवादी दर्शनक अनेक स्वर

अध्याय 61 — सिमोन द बोउवार: स्त्री बनाओल जाइत अछि

अध्याय 62 — देह, अनुभव आ सत्ता

अध्याय 63 — जूडिथ बटलर: लिंग (gender), प्रदर्शनात्मकता (performativity) आ पहचान

अध्याय 64 — अन्तर्संबद्ध असमानता (intersectionality): जाति, वर्ग, लिंग, धर्म आ क्षेत्र

अध्याय 65 — भारतीय स्त्रीवादी दर्शनक प्रश्न

अध्याय 66 — मिथिलाक समानान्तर स्त्री-दृष्टि

अध्याय 67 — औपनिवेशिक ज्ञान की करैत अछि?

अध्याय 68 — एडवर्ड सईद: प्राच्यवाद (Orientalism)

अध्याय 69 — गायत्री स्पिवाक: अधीनस्थ बोलि सकैत अछि?

अध्याय 70 — होमी भाभा: संकरता आ औपनिवेशिक अन्तराल

अध्याय 71 — अधीनस्थ अध्ययन (Subaltern Studies) आ इतिहासक हाशिया

अध्याय 72 — उत्तर-औपनिवेशिकतासँ औपनिवेशिकता-मुक्त (decolonial) विचार धरि

अध्याय 73 — भारतीय दर्शनक औपनिवेशिक वर्गीकरण

अध्याय 74 — मिथिला: साम्राज्य, राष्ट्र आ क्षेत्रक बीच

अध्याय 75 — मन-दर्शन (Philosophy of Mind) केर नूतन प्रश्न

अध्याय 76 — मन–देह समस्या

अध्याय 77 — व्यवहारवाद, तादात्म्य सिद्धान्त (identity theory) आ कार्यात्मकतावाद (functionalism)

अध्याय 78 — चेतनाक कठिन समस्या

अध्याय 79 — उद्देश्यता (intentionality) आ आत्मबोध (self)

अध्याय 80 — भारतीय आत्मा–अनात्मा–चित्त विवाद

अध्याय 81 — न्याय, बौद्ध आ आधुनिक मन-दर्शन (philosophy of mind) केर त्रिकोणीय संवाद

अध्याय 82 — वैज्ञानिक यथार्थवादक नूतन विवाद

अध्याय 83 — प्राकृतिक विज्ञान आ सामाजिक विज्ञान

अध्याय 84 — तकनीक केवल औजार नहि

अध्याय 85 — डिजिटल जगतमे सत्य

अध्याय 86 — एल्गोरिदम, वर्गीकरण आ सत्ता

अध्याय 87 — कृत्रिम बुद्धि: बुद्धि की अछि?

अध्याय 88 — मशीन चेतना: प्रश्न खुलल अछि

अध्याय 89 — कृत्रिम बुद्धि (AI) युगमे प्रमाण आ उत्तरदायित्व

अध्याय 90 — बहुप्रमाणीय विवेकवादक दोसर रूप

अध्याय 91 — सहअस्तित्वात्मक यथार्थवाद आ भाषिक मोड़

अध्याय 92 — गरिमा-आधारित नैतिकता आ नूतन पहचान

अध्याय 93 — बहुकेन्द्रिक लोकतन्त्र आ नेटवर्क-सत्ता

अध्याय 94 — धर्मक विवेकपूर्ण बहुलता आ उत्तर-धर्मनिरपेक्ष समाज

अध्याय 95 — समानान्तर इतिहास-दृष्टि: वंशावली-पद्धति (genealogy), अभिलेखागार (archive) आ प्रमाण

अध्याय 96 — आत्मसमीक्षा: समानान्तर दर्शन स्वयं अपन विखण्डन कोना स्वीकारत?

अध्याय 97 — संरचना अछि, मुदा संरचना नियति नहि

अध्याय 98 — भाषा सीमा अछि, मुदा कारागार नहि

अध्याय 99 — सत्ता ज्ञानकेँ प्रभावित करैत अछि, सत्यकेँ मनमाना नहि बनबैत अछि

अध्याय 100 — गजेन्द्र ठाकुरक समानान्तर दर्शन: खण्ड–१ आ खण्ड–२ केर समेकित प्रतिपादन

समग्र साहित्यिक आ दार्शनिक मूल्याङ्कन

मूल ग्रन्थ-सन्दर्भ

खण्ड २८ — तत्त्वचिन्तामणि

मूल समीक्षा-पाण्डुलिपिसँ सूचीकृत शीर्षक : 21

प्रकाशन आ प्रतिलिप्यधिकार

तत्त्वचिन्तामणि : प्रमाण, भाषा आ तर्कक समानान्तर पाठ

प्रथम समीक्षा : भूमिका आ दार्शनिक प्रस्तावना

द्वितीय समीक्षा : प्रत्यक्षखण्डक परिचय

तृतीय समीक्षा : अनुमानखण्डक परिचय

चतुर्थ समीक्षा : ईश्वरानुमानक परिचय

पंचम समीक्षा : उपमानखण्डक परिचय

षष्ठ समीक्षा : शब्दखण्डक परिचय

सप्तम समीक्षा : प्रत्यक्षखण्डक विस्तृत परिशिष्ट

अष्टम समीक्षा : अनुमानखण्डक विस्तृत परिशिष्ट

नवम समीक्षा : ईश्वरानुमानक विस्तृत परिशिष्ट

दशम समीक्षा : उपमानखण्डक विस्तृत परिशिष्ट

एकादश समीक्षा : शब्दखण्डक विस्तृत परिशिष्ट

द्वादश समीक्षा : अध्ययन-सहचर आ द्विभाषिक संरचना

त्रयोदश समीक्षा : द्विभाषिक पाठक सूक्ष्म परीक्षण

चतुर्दश समीक्षा : समेकित दार्शनिक निर्णय

मूल पाठाधारक विषयगत सूची

मूल पाठसँ चयनित प्रमाण-सङ्केत

द्विभाषिक पारिभाषिक शब्दावली

समग्र शोध-निर्णय : मूल्याङ्कन-सारणी

ग्रन्थसूची

खण्ड २९ — भामती

मूल समीक्षा-पाण्डुलिपिसँ सूचीकृत शीर्षक : 68

प्रकाशन-विवरण

आलोचनाक पद्धति आ पाठाधार

१. समीक्ष्य ग्रन्थक स्वरूप : चतुःसूत्री आ ओकर सीमा

२. मूल लेखक, भाष्यकार, अनुवादक आ समीक्षकक श्रेय

३. पाठमुद्रण, संस्करण-विवरण आ शोधनीय विश्वसनीयता

४. भामती–विवरण सम्बन्ध : मिलान आ असमानता

५. मङ्गलाचरण : ब्रह्माण्डीय बिम्ब आ लोकभाषाक सौन्दर्य

६. आत्मजिज्ञासाक निषेध : विरोधी मतक तर्क

७. प्रत्यभिज्ञा : बदलैत देह आ ‘हम’क निरन्तरता

८. ‘अहाँ’ आ ‘हम’ : विषय–विषयीक दार्शनिक दूरी

९. अध्यासक लक्षण : पूर्वदृष्ट, स्मृतिरूप आ परत्र

१०. ख्यातिवाद : भ्रमक प्रतिद्वन्द्वी व्याख्या

११. अनिर्वचनीयता : द्वन्द्वातीत कि परिभाषासँ परे?

१२. आत्माक स्वयंप्रकाशता आ अनवस्थाक दोष

१३. अविषय आत्मापर आरोप : आकाशक दृष्टान्त

१४. अविद्या आ लौकिक व्यवहार : मिथ्यात्वक व्यावहारिक शक्ति

१५. अथातो ब्रह्मजिज्ञासा : ‘अथ’क चारि सम्भावना

१६. साधनचतुष्टय : जिज्ञासाक अधिकारीक निर्माण

१७. जन्माद्यस्य यतः : तटस्थलक्षण आ कार्य–कारण

१८. शास्त्रयोनित्वात् : ज्ञानक स्रोत आ शास्त्रक कारण

१९. तत्तु समन्वयात् : वेदान्तवाक्यक एकवाक्यता

२०. ज्ञानक स्वतःप्रामाण्य : वस्तुतन्त्र आ पुरुषतन्त्र

२१. मोक्षक चारि कार्यता : उत्पाद्य, विकार्य, संस्कार्य, आप्य

२२. कूटस्थ नित्यता आ भेदाभेदक परीक्षा

२३. सिद्धवस्तुवाक्यक फल : शास्त्रीय भाषा-दर्शन

२४. नञ्, निषेध आ पर्युदासक व्यावहारिक तर्क

२५. जीवन्मुक्ति : ज्ञानक बाद जीवनक अवस्था

२६. मैथिली अनुवादक वाक्यगठन : पारिभाषिकता आ देशज प्रयोग

२७. अध्याय १ आ २क स्वतन्त्र समीक्षा : पाठक लेल सहायता कि पूर्वनिर्णय?

२८. मैथिली–अंग्रेजी रूपान्तर : शब्द-साम्य आ अर्थ-संरचना

२९. परिशिष्टक काव्यात्मक अङ्ग : रूपक प्रमाणकेँ कोना सहारा दैत अछि

३०. मिथिलाक समानान्तर बौद्धिक इतिहासमे स्थान

३१. ग्रन्थसूची : प्रामाणिक स्रोत आ अप्रमाणित विवरणक अन्तर

३२. समेकित निर्णय : सम्भावना, सीमा आ अगिला संशोधन

मैथिली–अंग्रेजी प्रमाण-सारणी

01 विषय–विषयीक आरम्भिक विरोध

02 मङ्गलाचरणक देशज बिम्ब

03 जिज्ञासाक प्रयोजन

04 देह-परिवर्तनक प्रत्यभिज्ञा

05 देह–आत्मवाक्यक गौणार्थ

06 व्यावहारिक आ पारमार्थिक प्रामाण्य

07 अध्यास-लक्षणक अतिव्याप्ति

08 ज्ञानक स्वतःप्रामाण्य

09 प्रथम सूत्रक शीर्षक

10 जिज्ञासा आ फल

11 धर्मज्ञान आ ब्रह्मज्ञान

12 आत्मा आ ईश्वर सम्बन्धी मतभेद

13 तत्त्वमसिक तात्पर्य

14 सुवर्ण–कङ्कण दृष्टान्त

15 वस्तुतन्त्र ज्ञान

16 शरीरित्वक मिथ्याज्ञान

17 आत्मा-अनात्माक अविवेक

18 मिथ्या बोध आ प्रमाणज्ञान

द्विभाषिक पारिभाषिक शब्दावली

समीक्षा-निष्कर्षक सारणी

1. आत्मजिज्ञासाक आवश्यकता

2. अध्यासलक्षण

3. ख्यातिवाद

4. स्वयंप्रकाशता

5. ब्रह्मजिज्ञासा

6. जन्माद्यस्य यतः

7. शास्त्रयोनित्व

8. समन्वयाधिकरण

9. मोक्ष

10. भाषा

11. द्विभाषिक पाठ

12. ग्रन्थसूची

ग्रन्थसूची : पुस्तक मात्र

खण्ड ३० — आत्मतत्त्वविवेक

मूल समीक्षा-पाण्डुलिपिसँ सूचीकृत शीर्षक : 43

प्रकाशन-विवरण

पाठाधार आ आलोचनात्मक पद्धति

1. ग्रन्थक वास्तविक रचना आ श्रेयक सीमा

2. मङ्गलपद्य, दुःख आ आत्मजिज्ञासा

3. आत्माक विरोधमे चारि दार्शनिक प्रस्ताव

4. क्षणिकताक सार्वत्रिक अनुमान

5. व्याप्ति, पक्ष आ हेतुक प्रामाणिकता

6. अपोहवाद : निषेध द्वारा शब्दार्थ

7. समावेश, बहिष्कार आ सामान्यता

8. संस्कार, संकेत आ शब्दार्थक नियमन

9. बीज-अङ्कुरक कारणगत दृष्टान्त

10. विलम्ब, अविलम्ब आ सहायक कारण

11. स्वभाव, सामर्थ्य आ उत्पादनक शर्त

12. उत्पादकता आ विरोधाभासक तर्क

13. विनाशक कारण आ क्षणिकताक दोसर मार्ग

14. स्थायित्वक सकारात्मक प्रतिपादन

15. जाति, व्यक्ति आ सामान्यक ज्ञान

16. सविकल्पक प्रत्यक्ष आ सामान्यता

17. चेतनामात्रवादक अनुमानक सीमा

18. चित्रज्ञान आ अनेकत्वक अनुभव

19. ज्ञाता–ज्ञेय सम्बन्धक अनिर्णय

20. ज्ञान-सम्बन्धक न्यायीय प्रतिरक्षा

21. अवयव–अवयवी आ संपूर्णक यथार्थता

22. परमाणु, माध्यमिक मत आ वस्तुनिष्ठता

23. गुण आ द्रव्यक भेद

24. सह-अवस्थान आ एके फल उत्पन्न करब

25. आत्माक प्रत्यक्ष, अनुमान आ अन्तरानुभव

26. प्रत्यभिज्ञा आ व्यक्तिक निरन्तरता

27. शरीर, चेतना आ आत्मत्वक मतभेद

28. आलयविज्ञानक प्रतिपक्ष आ स्मृतिक समस्या

29. ईश्वरानुमान आ कार्य-कारणक विस्तार

30. वेदप्रामाण्य आ शब्दप्रमाणक शर्त

31. देहरहित कर्ता आ उपाधि-दोष

32. सर्वज्ञता आ अनुमानक सीमित बल

33. मोक्ष : दुःख-निवृत्ति आ सुखक प्रश्न

34. अनुवादक गद्य आ पारिभाषिक अनुशासन

35. द्विभाषिक पाठ : उपयोगिता आ प्रमाण-सीमा

36. समीक्षा-पद्धति आ सम्पादकीय परिशिष्ट

37. समेकित मूल्याङ्कन : आत्मा-विवादक दार्शनिक कसौटी

समेकित मूल्याङ्कन

पारिभाषिक पद-सहचर

समीक्ष्य पाठक विषय–मानचित्र

ग्रन्थसूची : पुस्तक मात्र

खण्ड ३१ — न्यायकुसुमाञ्जलि

मूल समीक्षा-पाण्डुलिपिसँ सूचीकृत शीर्षक : 50

प्रकाशन-विवरण

पाठाधार आ आलोचनात्मक पद्धति

1. ग्रन्थ-परिचय : पाँच पुष्पगुच्छक अन्तर्सम्बन्ध

2. मङ्गलवन्दना, विनय आ ज्ञानक उद्देश्य

3. पाँच विप्रतिपत्ति आ प्रतिपक्षक न्याय

4. पहिल गुच्छ : कर्मफल आ अदृष्टक आवश्यकता

5. अकस्मात् उत्पत्ति : चारि अर्थक परीक्षा

6. कार्य–कारण : पूर्वता, नियमन आ परिमाण

7. सांख्यक कारण-सिद्धान्त पर प्रतिवाद

8. सामर्थ्य : गुण कि शर्तसम्बन्ध?

9. अभावक कारणता : अनुपस्थिति सेहो प्रभावी?

10. वैदिक कर्म आ कर्ताक संस्कार

11. चार्वाक प्रतिवादक तार्किक स्वरूप

12. सार्वक्षणिकतापर न्यायीय प्रश्न

13. दोसरा गुच्छ : प्रामाण्यक बाह्य परीक्षण

14. प्रामाण्यक प्रत्यय आ सन्देहक उत्तर

15. शब्दक अनित्यता आ अर्थक निरन्तरता

16. प्रलय : भौतिक विनाश आ परम्पराक विच्छेद

17. नव सृष्टि : आरम्भक अटकल

18. तेसर गुच्छ : अग्रहणसँ अभाव?

19. खरहाक सींग : निषेधक आश्रय

20. अनुमान-विरोधक आत्मविरोध

21. सादृश्य, उपमान आ ज्ञान

22. उपमानक स्वतन्त्र प्रमाणता

23. शब्दप्रमाण : वक्ता, संकेत आ सत्य

24. अन्वितार्थ आ वाक्यार्थक विवाद

25. अर्थापत्ति : नव प्रमाण कि अनुमानक रूप

26. अनुपलब्धि : अभावक ज्ञान

27. चारिम गुच्छ : ज्ञानक कारण आ स्वरूप

28. ज्ञातता : वस्तुक नव धर्म?

29. ज्ञान–वस्तु सम्बन्ध आ अनवस्था

30. पाँचम गुच्छ : आठ साधक हेतु

31. प्रतितर्कक शर्त आ आत्मविरोध

32. परमाणु-गतिपर चेतन नियमनक प्रश्न

33. कार्य-सिद्धि आ उत्पादक कारण

34. हेतु-पदक अर्थभेद आ पाठनिष्ठता

35. विधि आ निषेध : आज्ञा कोन प्रकारक ज्ञान?

36. प्रयत्न, इष्टसाधनता आ इच्छा

37. शास्त्रीय वचनक कर्तृत्व आ प्रामाण्य

38. नामकरण, संख्यासूचकता आ अनुमान

39. योगिक प्रत्यक्ष आ प्रमाणक सार्वजनिकता

40. पञ्चगुच्छी शैली : पूर्वपक्ष–उत्तरक लय

41. मैथिली पारिभाषिक शब्द आ भाषिक रचना

42. द्विभाषिक संस्करणमे अंग्रेजी रूपक भूमिका

43. ग्रन्थसूची आ स्रोत-प्रमाणक स्तर

44. समीक्षात्मक निष्कर्ष : तर्कक बौद्धिक नैतिकता

समेकित मूल्याङ्कन

पारिभाषिक पद-सहचर

समीक्ष्य पाठक विषय–मानचित्र

ग्रन्थसूची : पुस्तक मात्र

खण्ड ३२ — मिथिला आ मैथिली साहित्यक समानान्तर इतिहास

मूल समीक्षा-पाण्डुलिपिसँ सूचीकृत शीर्षक : 57

खण्ड ३२ : समानान्तर मिथिला आ मैथिली साहित्येतिहास

प्रथम संचयी आलोचना · अध्ययन ००१–०१६

००१. समानान्तर साहित्येतिहासक प्रतिज्ञा : प्रतिष्ठानसँ बहिष्कृत पाठ धरि

००२. भाषा, सांस्कृतिक आधिपत्य आ राजनीतिक प्रतिनिधित्व

००३. चर्यापद, पूर्व-मैथिली आ आदिकालक विवाद

००४. दू विद्यापतिक भेद : प्रतिज्ञा, कालक्रम आ पाठकर्तृत्व

००५. गङ्गेश उपाध्याय आ पञ्जीक प्रमाणशास्त्र

००६. सीमापार मैथिली : नेपालक रंगमंच आ असमक ब्रजावली

००७. अकाल-काव्य, सामाजिक यथार्थ आ पुरस्कार-प्रतिष्ठान

००८. स्त्रीस्वर, दलित रंगमंच आ डिजिटल प्रतिअभिलेख

००९. मागधी, अपभ्रंश आ मैथिली : भाषा-उद्भवक काल-विभाजन

०१०. तिरहुता, देवनागरी आ सांस्कृतिक अभिलेखक राजनीति

०११. सिद्ध, नाथ, ज्योतिरीश्वर आ जनभाषाक प्रारम्भिक रूप

०१२. मिथिला–नेपाल–असमक नाटक : तुलनात्मक रंगशास्त्र

०१३. आधुनिक नवजागरण आ साहित्यिक मान्यता : कारणक परीक्षण

०१४. लोकनायक, दीनाभद्री, सलहेस आ स्त्री-नायिकाक स्मृति

०१५. नूतन कथासाहित्य, सामाजिक विस्थापन आ पञ्जी-इतिहासक पुनर्विचार

०१६. राधाकृष्ण चौधरीक सर्वेक्षण : स्रोत, भाषा आ आरम्भिक साहित्य

०१७. ब्रजबुली आ ब्रजावली : साझा साहित्यिक भाषा अथवा एकदिश प्रभाव?

०१८. नेपालक मैथिली नाटक : पाण्डुलिपि, दरबार आ कीर्तनिया परम्परा

०१९. सत्रहम–उन्नीसम शताब्दीक ‘अवनति’ : मानक कसकर?

०२०. ग्रियर्सन आ चन्दा झा : औपनिवेशिक ज्ञान आ भाषिक नवजागरण

०२१. आरम्भिक पत्रिका-आन्दोलन : छपाइ, जाति आ पाठक-विस्तार

०२२. बीसम शताब्दीक आधुनिकता : कथा, नाटक, गीत आ स्वीकृति

०२३. राधाकृष्ण चौधरीक सर्वेक्षण : उपलब्धि आ आलोचनाक उचित कसौटी

०२४. तुलनात्मक कालरेखा आ ‘दाता सभ्यता’क निष्कर्ष : प्रमाणक बोझ

०२५. अनुलग्नकक उत्तरवर्ती विवाद : रामनाथ झा आ संस्थागत क्षेत्र-सीमा

०२६. अकादेमीक मान्य संगठनसभ : सूचीसँ प्रतिनिधित्व धरि

०२७. पुरस्कार-वितरणक आँकड़ा : आन्तरिक सङ्ख्यागत असङ्गति

०२८. संस्थागत उद्देश्य, लेखकीय उत्तरदायित्व आ सुधारक प्रस्ताव

०२९. विदेहक आरम्भिक डिजिटल इतिहास : माध्यमसँ साहित्यिक आन्दोलन

०३०. सूचनाक अधिकार आ चयन-आरोप : दस्तावेजी दावीक प्रमाणसीमा

०३१. मैथिली विकिपीडिया, तिरहुता आ तकनीकी मानकीकरणक इतिहास

०३२. जगदीश प्रसाद मण्डलक आगमन : युग-विभाजनक साहित्यिक कसौटी

०३३. गङ्गेश उपाध्यायक जीवनी : दार्शनिक प्रतिष्ठा आ विवादित वंशवृत्त

०३४. पञ्जी-प्रबन्धक कालक्रम आ श्रोत्रिय वर्गक ऐतिहासिक गठन

०३५. दूषण पञ्जीक पीढ़ी-क्रम : एकटा अभिलेखीय उदाहरणक व्याख्या

०३६. गङ्गेश-सम्बन्धी पञ्जी-प्रविष्टि : नाम, पारिभाषिक पद आ पाठ-साक्ष्य

०३७. प्राचीन न्यायसँ नव्य न्याय : बौद्धिक वंश-रेखाक पुनर्निर्माण

०३८. प्रत्यक्षप्रमाणक विवेचन : अनुभूतिक रूप आ ज्ञानक प्रामाण्य

०३९. अनुमानप्रमाण : व्याप्ति, उपाधि आ तर्कदोषक ऐतिहासिक भूमिका

०४०. उपमान–शब्दप्रमाण आ टीका-परम्परा : ज्ञानक प्रसार

०४१. यथार्थज्ञान आ परतःप्रामाण्य : प्रमाणक वैधताक प्रश्न

०४२. प्रत्यक्षक सीमा : लौकिक सन्निकर्ष, अवधारणा आ आत्मानुभूति

०४३. व्याप्ति, पक्षधर्मता आ हेत्वाभास : निष्कर्षक अनुशासन

०४४. उपमान, आप्तवाक्य आ वाक्यार्थ : साहित्यिक भाषाक दार्शनिक आधार

०४५. द्रव्यसँ अभावधरि : नव्य न्यायक सत्तामीमांसा आ संस्थागत इतिहास

०४६. गङ्गेशक नाम, काल आ पञ्जी-विवाद : जीवनी आ स्रोतक अधिकार

०४७. न्याय, मीमांसा आ वेदान्तक मतभेद : तुलनात्मक प्रमाणमीमांसाक पुनर्पाठ

०४८. गङ्गेश–उदयन–रघुनाथ : तुलना, आलोचना आ नव्य न्यायक गतिशील परम्परा

अन्तर-अध्ययन : प्रथम सोलह अध्ययनक समेकित परीक्षण

अन्तर-अध्ययन : कालरेखा सँ संस्थागत अभिलेखधरि · ०१७–०३२

अन्तर-अध्ययन : पञ्जीसँ नव्य न्यायधरि · ०३३–०४०

अन्तर-अध्ययन : ज्ञानक प्रमाणसँ शास्त्रीय परम्पराक परिवर्तनधरि · ०४१–०४८

पाठमिलान आ प्रमाणस्थिति

आगामी अध्ययनक क्रम

प्रयुक्त मूल पुस्तक

खण्ड ३३ — मिथिला, वज्जी आ अंगक इतिहास — खण्ड १

मूल समीक्षा-पाण्डुलिपिसँ सूचीकृत शीर्षक : 33

मिथिला, वज्जि आ अंगक राजनीतिक इतिहासक प्रमाणाधारित आलोचना

प्रकाशन-विवरण

आमुख : इतिहास, स्रोत आ प्रमाणक विभाजन

अध्ययन १ · Region, rivers, names, and method

अध्ययन २ · Archaeology and early food production

अध्ययन ३ · Late prehistoric and early iron-using horizons

अध्ययन ४ · Environment, mobility, and settlement

अध्ययन ५ · Videha in Vedic and Upanishadic textual worlds

अध्ययन ६ · Janaka, Sita, and the discipline of reading tradition

अध्ययन ७ · Vajji, the Licchavis, and Vaishali

अध्ययन ८ · Anga, Champa, and the Magadhan horizon

अध्ययन ९ · Buddhism, Jainism, and eastern Gangetic religious change

अध्ययन १० · Empires, inscriptions, and pilgrim itineraries

अध्ययन ११ · Licchavi Nepal and the problem of continuity

अध्ययन १२ · Tirabhukti and the early-medieval regional order

अध्ययन १३ · The Karnatas and Simraongarh

अध्ययन १४ · Oiniwar rule, Sultanate power, and political transition

अध्ययन १५ · Two Vidyāpatis: Maithili, Sanskrit learning, and law

अध्ययन १६ · Mughal-era Tirhut, Anga, and early-modern institutions

अध्ययन १७ · Company rule, Permanent Settlement, and Darbhanga Raj

अध्ययन १८ · Agrarian society, markets, caste, and labour

अध्ययन १९ · Rivers, calamity, transport, and the colonial state

अध्ययन २० · Education, print, language, reform, and nationalism

अध्ययन २१ · The Nepal Tarai, Rana rule, and the border to 1951

अध्ययन २२ · Land reform, democracy, and changing regional power

अध्ययन २३ · The India-Nepal borderland, migration, and exchange

अध्ययन २४ · Maithili and Angika: language, literature, and recognition

अध्ययन २५ · Mithila painting, gender, and the cultural economy

अध्ययन २६ · The Kosi, floods, infrastructure, and environmental risk

अध्ययन २७ · Madhesh, representation, and plural citizenship in Nepal

अध्ययन २८ · Conclusions: connected histories without false unity

समेकित आलोचनात्मक मूल्याङ्कन

ग्रन्थसूची : पुस्तकाधारित स्रोत

खण्ड ३४ — मिथिला, वज्जी आ अंगक इतिहास — खण्ड २

मूल समीक्षा-पाण्डुलिपिसँ सूचीकृत शीर्षक : 151

१५० अध्यायक पाठाधारित आलोचनात्मक अध्ययन

००१ समाजक भौतिक आधार १०

००२ प्रागैतिहासिक बसावट आ जीवननिर्वाह ११

००३ ताम्रपाषाण आ आरम्भिक कृषिसमुदाय १२

००४ खाद्य-पुरातत्त्व आ दैनिक जीवन १३

००५ पर्यावरण, गतिशीलता आ बसावट १४

००६ दोसर नगरीकरण १५

००७ आरम्भिक ऐतिहासिक गृहस्थी आ परिवार १६

००८ स्थिर जाति-आख्यानसँ पहिनुक सामाजिक विभाजन १७

००९ प्राचीन मिथिला–वज्जि–अंगमे स्त्री १८

०१० खेती आ ग्रामीण अर्थव्यवस्था १९

०११ शिल्प आ प्राविधिक ज्ञान २०

०१२ व्यापार, वणिक आ हाट २१

०१३ वैशाली : आर्थिक आ सामाजिक केन्द्र २२

०१४ अंग आ चम्पा २३

०१५ आरम्भिक मुद्रा आ मुद्रीकरण २४

०१६ बौद्ध–जैन संस्थाक अर्थव्यवस्था २५

०१७ शिक्षा, वाद-विवाद आ बौद्धिक समुदाय २६

०१८ स्वास्थ्य, चिकित्सा आ शरीरक सामाजिक इतिहास २७

०१९ वैदिक अनुष्ठानसँ क्षेत्रीय धार्मिक बहुलता धरि २८

०२० वज्जि–विदेहमे बौद्ध धर्मक सामाजिक संस्थापन २९

०२१ वैशाली–विदेहमे जैन धर्मक गतिशील सामाजिक भूगोल ३०

०२२ शैव, शाक्त आ वैष्णव संस्थाक ऐतिहासिक रूपान्तरण ३१

०२३ तीर्थ-भूगोल : स्मृति, जल आ आवागमनक निर्माण ३२

०२४ पर्व, पञ्चाङ्ग आ सामाजिक समयक इतिहास ३३

०२५ मृत्यु, पितृस्मृति आ जीवनचक्रक संस्कार ३४

०२६ भूमिदान आ कृषिसमाजक परिवर्तन ३५

०२७ गाम, हाट आ नगरक परस्पर निर्भरता ३६

०२८ श्रम, सेवा आ पेशागत समुदायसभक निर्माण ३७

०२९ सामाजिक श्रेणीकरणक ऐतिहासिक निर्माण ३८

०३० ब्राह्मणीय संस्था आ उत्तरकालीन जातिक प्रत्यारोपणसँ परहेज ३९

०३१ पञ्जीप्रबन्ध : वंश, विवाह आ अभिलेखक सामाजिक इतिहास ४०

०३२ मध्यकालीन मिथिलामे स्त्री, विवाह आ सम्पत्ति ४१

०३३ कर्णाट–ओइनिवार कालक सामाजिक अर्थव्यवस्था ४२

०३४ इस्लाम, प्रवास आ नव सामाजिक संसार ४३

०३५ फारसी-प्रभावित सांस्कृतिक संसार आ मिथिला–अंग ४४

०३६ आधुनिक मानकीकरणसँ पहिने भाषाक इतिहास ४५

०३७ साहित्यिक मैथिलीक क्रमिक निर्माण ४६

०३८ दू विद्यापति : काल, पाठ आ ग्रन्थकार-निर्धारण ४७

०३९ तिरहुता लिपि आ लिपिकारी संस्कृति ४८

०४० मौखिक संस्कृति : स्वर, अवसर आ सामाजिक स्मृति ४९

०४१ अंगिका आ पूर्वी भाषिक–सांस्कृतिक क्षेत्र ५०

०४२ बज्जिका आ पश्चिम मिथिलाक भाषिक इतिहास ५१

०४३ संस्कृत विद्या आ मिथिलाक विद्वत् संस्था ५२

०४४ स्थापत्य आ बसावट : निर्मित भूगोलक इतिहास ५३

०४५ वस्त्र, आभूषण आ देह-सज्जाक इतिहास ५४

०४६ भोजनक इतिहास : पारिस्थितिकी, श्रम आ स्मृति ५५

०४७ मिथिला चित्रकला : बाजारसँ पहिने आ ओकर बाहर ५६

०४८ बीसम शताब्दीमे मिथिला चित्रकलाक सांस्कृतिक अर्थव्यवस्था ५७

०४९ संगीत, गीत आ प्रदर्शनक सामाजिक इतिहास ५८

०५० नाट्यपरम्परा आ रंगमंचीय संस्कृति ५९

०५१ मेला, हाट आ सार्वजनिक सांस्कृतिक जीवन ६०

०५२ मुगलकालीन भूमि, राजस्व आ कृषिसमाज ६१

०५३ बंगाल, बिहार, नेपाल आ गङ्गा-विश्वक व्यापार ६२

०५४ ईस्ट इण्डिया कम्पनी आ कृषिसम्बन्धक पुनर्गठन ६३

०५५ स्थायी बन्दोबस्त आ भूमिधारी समाज ६४

०५६ नीलक खेती आ औपनिवेशिक व्यापारिक कृषि ६५

०५७ अफीम, शोरा आ अन्य वस्तु-व्यापारक जाल ६६

०५८ अकाल, अभाव आ खाद्यसुरक्षा ६७

०५९ औपनिवेशिक सर्वेक्षण आ सामाजिक श्रेणीक निर्माण ६८

०६० औपनिवेशिक कालमे शिक्षाक परिवर्तन ६९

०६१ मुद्रण-संस्कृति आ नव सार्वजनिक क्षेत्र ७०

०६२ रेल, सड़क आ बाजारक नूतन भूगोल ७१

०६३ मजदूर-प्रवास आ गृहस्थी अर्थव्यवस्था ७२

०६४ औपनिवेशिक आधुनिकता आ स्त्रीक सामाजिक परिवर्तन ७३

०६५ भारत–नेपाल सीमाञ्चलक ऐतिहासिक अर्थव्यवस्था ७४

०६६ जनकपुर : धार्मिक, व्यापारिक आ नगरीय केन्द्र ७५

०६७ नेपाल तराईमे भूमि, बटाइदारी आ कृषिसमाज ७६

०६८ वन-उन्मूलन, मलेरिया नियन्त्रण आ जनसंख्याक परिवर्तन ७७

०६९ प्रवास, पुनर्वास आ सामाजिक बसावट ७८

०७० नेपालमे भाषा, शिक्षा आ सांस्कृतिक संस्था ७९

०७१ मधेशमे स्त्री, नागरिकता आ गृहस्थीक अर्थव्यवस्था ८०

०७२ जनकपुरक कला, शिल्प आ सांस्कृतिक अर्थव्यवस्था ८१

०७३ सीमाबाजार, प्रेषित धन आ अनौपचारिक विनिमय ८२

०७४ स्वाधीनता, भूमिसुधार आ बिहारक कृषिपरिवर्तन ८३

०७५ जमीन्दारी उन्मूलनक असमान परिणाम ८४

०७६ स्वाधीनताक बाद कृषि : तकनीक आ विषमता ८५

०७७ कोसी–गण्डक नदी-परियोजना आ विकासक द्वैत ८६

०७८ बाढ़ि : जल, जोखिम आ सामाजिक पुनरुत्पादन ८७

०७९ ग्रामीण ऋण, कर्ज आ बैंकिंगक सामाजिक अर्थ ८८

०८० सहकारिता आ ग्रामीण संस्था ८९

०८१ औद्योगीकरणक विस्तार आ सीमा ९०

०८२ भागलपुर रेशम आ अंगक वस्त्र-अर्थव्यवस्था ९१

०८३ मखान, माछ, दुग्ध आ विशेषीकृत क्षेत्रीय उत्पादन ९२

०८४ स्वाधीनताक बाद शिक्षा आ सार्वजनिक अवसर ९३

०८५ स्वास्थ्य आ जनस्वास्थ्यक परिवर्तन ९४

०८६ सड़क, रेल, बिजली आ सञ्चार ९५

०८७ जाति-सम्बन्धक ऐतिहासिक निर्माण ९६

०८८ दलित इतिहास : श्रम, भूमि आ अधिकार ९७

०८९ आदिवासी आ वन-संबद्ध जनसमुदायक इतिहास ९८

०९० मिथिला आ अंगक मुसलमान समाज ९९

०९१ लिङ्ग-संबन्ध आ गृहस्थीक अर्थव्यवस्था १००

०९२ स्त्रीक वेतनयुक्त आ अवैतनिक श्रम १०१

०९३ विवाह, दहेज, उत्तराधिकार आ परिवारक बदलाव १०२

०९४ शिक्षा आ सामाजिक गतिशीलताक अवसर १०३

०९५ आरक्षण, सकारात्मक उपाय आ नव मध्यमवर्ग १०४

०९६ ग्रामीण अभिजन आ बदलैत भूमिक शक्ति १०५

०९७ प्रवासक दीर्घ ऐतिहासिक क्रम १०६

०९८ कलकत्ता आ मिथिला–अंगक प्रवासी सम्बन्ध १०७

०९९ दिल्ली, मुम्बई आ स्वाधीनताक बादक चलनशीलता १०८

१०० पञ्जाब–हरियाणामे मौसमी कृषिमजदूरी १०९

१०१ नेपाल–भारतक आवर्ती प्रवास ११०

१०२ खाड़ी देशक श्रमिक प्रवास १११

१०३ प्रेषित धन आ गृहस्थीक रूपान्तरण ११२

१०४ नगरीकरण : नगरसदृश कार्य आ प्रशासनिक सीमा ११३

१०५ अनौपचारिक अर्थव्यवस्था आ सड़ककिनारक व्यापार ११४

१०६ प्रवासी सांस्कृतिक संस्थाक निर्माण ११५

१०७ मैथिली मुद्रण आ साहित्यिक संस्था ११६

१०८ अंगिका मुद्रण आ क्षेत्रीय साहित्यिक संस्था ११७

१०९ रेडियो आ प्रसारणक सामाजिक इतिहास ११८

११० चलचित्र, वीडियो आ मुद्रित-ध्वनित प्रदर्शन ११९

१११ समाचारपत्र आ सार्वजनिक विचार-विमर्श १२०

११२ साहित्य अकादेमी आ साहित्यिक मानकक निर्माण १२१

११३ स्त्री साहित्यकार आ वैकल्पिक साहित्यिक सार्वजनिक क्षेत्र १२२

११४ विदेह आ डिजिटल मैथिली साहित्यक निर्माण १२३

११५ डिजिटल अभिलेख आ सांस्कृतिक संरक्षण १२४

११६ युनिकोड, तिरहुता आ तकनीकी मान्यता १२५

११७ जनसंख्याक संरचना आ परिवर्तन १२६

११८ एकैसम शताब्दीमे कृषि १२७

११९ भूमिखण्डन आ ग्रामीण जीवन १२८

१२० प्रवास-निर्भर अर्थव्यवस्था १२९

१२१ प्रेषित धन, उपभोग आ आवास १३०

१२२ शिक्षा-बाजार आ कोचिङ्ग प्रवास १३१

१२३ स्वास्थ्यक अर्थव्यवस्था १३२

१२४ सड़क, राजमार्ग, हवाई अड्डा आ सम्पर्क १३३

१२५ मोबाइल, डिजिटल भुगतान आ मञ्च-अर्थव्यवस्था १३४

१२६ पर्यटन, तीर्थ आ सेवा-अर्थव्यवस्था १३५

१२७ वैश्विक बाजारमे मिथिला चित्रकला १३६

१२८ भौगोलिक सङ्केत, धरोहर-ब्राण्ड आ बौद्धिक सम्पत्ति १३७

१२९ जलवायु परिवर्तन आ कृषिक जोखिम १३८

१३० बाढ़ि अनुकूलन आ लचीलापन १३९

१३१ सङ्घीय व्यवस्थाक बाद भारत–नेपाल सीमाक अर्थव्यवस्था १४०

१३२ परिवारक आधुनिक रूपान्तरण १४१

१३३ बदलैत विवाह-व्यवहार १४२

१३४ स्त्रीशिक्षा आ रोजगारक असमान संक्रमण १४३

१३५ युवासंस्कृति : शिक्षा, श्रम आ डिजिटल संसार १४४

१३६ सामाजिक मञ्च आ भाषाक सार्वजनिक प्रयोग १४५

१३७ धार्मिक परिवर्तन आ सार्वजनिक अनुष्ठान १४६

१३८ वर्तमान समाजमे जाति १४७

१३९ मधेश, सङ्घीयता आ सामाजिक नागरिकता १४८

१४० वर्तमान सार्वजनिक जीवनमे मैथिली, अंगिका आ बज्जिका १४९

१४१ सांस्कृतिक धरोहर आ जीवन्त संस्कृति १५०

१४२ क्षेत्रीय सांस्कृतिक अर्थव्यवस्थाक भविष्य १५१

१४३ सामाजिक परिवर्तनक दीर्घकालीन संरचना १५२

१४४ आत्मनिर्वाहसँ बाजारक सघन सम्बन्ध धरि १५३

१४५ गृहस्थी, जाति, वर्ग आ लिंगक दीर्घकालीन अन्तर्सम्बन्ध १५४

१४६ नदीय पारिस्थितिकी आ आर्थिक इतिहास १५५

१४७ भाषा सामाजिक आधारभूत संरचनाक रूपमे १५६

१४८ भारत–नेपाल : साझा संवादक्षेत्र, भिन्न राजनीतिक अर्थव्यवस्था १५७

१४९ सांस्कृतिक निरन्तरता, पुनराविष्कार आ आधुनिक संस्था १५८

१५० समापन : कालातीत सारवस्तुक भ्रमसँ बाहर सामाजिक–सांस्कृतिक–आर्थिक इतिहास १५९

खण्ड ३५ — पञ्जी-प्रबन्धक सिद्धान्त : प्रथम खण्ड

मूल समीक्षा-पाण्डुलिपिसँ सूचीकृत शीर्षक : 29

मूल ग्रन्थक अध्याय-पञ्जी (स्रोत DOCX अनुसार)

अध्याय 1 — वंशक्रम आ आनुवंशिकी : उपमानक सामर्थ्य आ सीमा

अध्याय 2 — दोसर अध्याय : अभिलेखीय वंशविज्ञान आ जैविक दावाक परीक्षण

अध्याय 3 — तेसर अध्याय : जाति, विवाह आ इतिहासक प्रश्न

दोसर संचयी विस्तार · मूल पुस्तकक अध्याय ४–६

अध्याय ४ — वंशवर्गीकरण, विवाह-गणना आ आनुवंशिक उपमानक प्रमाण-सीमा

अध्याय ५ — सामाजिक वंशरचना : श्रेणी, सत्ता आ स्त्रीक दर्ज उपस्थिति

अध्याय ६ — अभिलेखीय न्याय, सामाजिक निषेध आ ऐतिहासिक वृत्तान्तक पुनःपरीक्षण

संचयी निरन्तरता : मूल ग्रन्थक अध्याय ७ सँ अन्तिम अध्याय धरि

अनुसन्धान बैच · अध्याय ७–१२

अध्याय ७ — समग्र मार्गदर्शिका : पञ्जी-व्यवस्थाक परिचयसँ पुनर्निर्माण धरि

अध्याय ८ — स्त्री, दूषण आ सामाजिक प्रतिष्ठाक राजनैतिक अर्थ

अध्याय ९ — प्राचीन पञ्जीक प्रथम पृष्ठसमूह : ग्राम आ मूलक अन्तर

अध्याय १० — प्रथम खण्डक विस्तारित पृष्ठ : विवाह-उपसंहारक साक्ष्य

अध्याय ११ — राजकीय साक्ष्य, पाण्डित्यक पदवी आ आधुनिक समय

अध्याय १२ — उटीपक सहायक टिप्पणी : जीवित सम्बन्धजालक पुनर्पाठ

अनुसन्धान बैच · अध्याय १३–१८

अध्याय १३ — Genome Mapping Volume I: Analytical Report on Mithilak Pañjee Prabandha

अध्याय १४ — Pampilā Pañjī, Khaṇḍa 3 — Nāgarāma: Comprehensive Analytical Report (Volume I)

अध्याय १५ — Pampilā-Varga Pañjikā, Khaṇḍa 3 (Nagramī): Entries 226–358 (Volume I)

अध्याय १६ — Pañjī Prabandha, Khaṇḍa 3 (Nagramā): Blocks 359–466 (Volume I)

अध्याय १७ — Panji Prabandha of Mithila: Genealogical Mapping (450 AD – 2009 AD), Comprehensive Research Report

अध्याय १८ — The Dooshan Pañjī of Mithila: A Comprehensive Scholarly Report

अनुसन्धान बैच · अध्याय १९–२०

अध्याय १९ — Dūṣaṇa Pañjī — The Black Book: A Complete Study from Genealogical Theories

अध्याय २० — Dooshan Panji: An Interdisciplinary Research Report through Anthropological, Sociological, and Genealogical Lenses

अध्याय १–३क पूर्व अन्तरिम आलोचनात्मक निष्कर्ष

अध्याय १–६क समेकित अन्तरिम मूल्याङ्कन

मूल अंग्रेजी पाठक अध्यायानुक्रम : सत्यापन-पञ्जी

खण्ड ३६ — प्राचीन पञ्जी : प्रथम खण्ड

मूल समीक्षा-पाण्डुलिपिसँ सूचीकृत शीर्षक : 50

मूल ग्रन्थक अध्याय-पञ्जी (स्रोत DOCX अनुसार)

अध्याय 1 — पञ्जी : स्मृति, अभिलेख आ सामाजिक मानचित्र

अध्याय 2 — ‘प्राचीन पञ्जी’क पाठ-संरचना : ग्राम सँ वंश धरि

अध्याय 3 — सघन सूत्रक कठिनाइ : पाठालोचनाक मूल समस्या

दोसर संचयी विस्तार · मूल पुस्तकक अध्याय ४–६

अध्याय ४ — पञ्जी-प्रविष्टिक न्यूनतम एकाइ आ प्रमाणक क्रम

अध्याय ५ — सुत, सुता, सन्तति, अपत्य : सम्बन्ध-शब्दक बहुपद अर्थ

अध्याय ६ — ग्राम, वासी, डीह आ मूलग्राम : स्थानक बहुस्तरीय संकेत

संचयी निरन्तरता : मूल ग्रन्थक अध्याय ७ सँ अन्तिम अध्याय धरि

अनुसन्धान बैच · अध्याय ७–१२

अध्याय ७ — ‘सन्तति’ आ ‘अपत्य’ : वंशज आ तत्काल सन्तानक भेद

अध्याय ८ — ‘सँ’क बहुअर्थी सम्बन्ध : व्याकरणसँ वंश-पठन धरि

अध्याय ९ — कोष्ठकक संख्या : प्रमाण-संकेतक अनिश्चितता

अध्याय १० — संक्षेप, उपाधि आ विद्वत्ताक परिवर्तित प्रतिष्ठा

अध्याय ११ — पितृक्रम : नामक अनुक्रम आ प्रमाणित उतराधिकार

अध्याय १२ — मातृक चक्र : एकरेखीय परिवार-वृक्षक प्रतिवाद

अनुसन्धान बैच · अध्याय १३–१८

अध्याय १३ — Marriage Records

अध्याय १४ — Daughter’s-Son and Affinal Links

अध्याय १५ — Multiple Marriages and Secondary Links

अध्याय १६ — The Village Universe of Prachin Panji

अध्याय १७ — Village Clusters and Migration

अध्याय १८ — डीह, वासी, मूलग्राम, and Local Identity

अनुसन्धान बैच · अध्याय १९–२४

अध्याय १९ — Scholars, Poets, Priests, and Specialists

अध्याय २० — Panji as Literary History

अध्याय २१ — Panji as Social Structure

अध्याय २२ — Panji and Time

अध्याय २३ — How to Decode One Entry: A Demonstration

अध्याय २४ — How to Decode a Village Cluster

अनुसन्धान बैच · अध्याय २५–३०

अध्याय २५ — How to Decode a मातृक चक्र

अध्याय २६ — How to Decode a Marriage Entry

अध्याय २७ — How to Decode a Long Dense Passage

अध्याय २८ — Creating a Panji Family Tree

अध्याय २९ — Creating a Village Index

अध्याय ३० — Creating a Person Index

अनुसन्धान बैच · अध्याय ३१–३६

अध्याय ३१ — Creating a Term Glossary

अध्याय ३२ — Errors, Variants, and Editorial Discipline

अध्याय ३३ — Volume II and the Khand 1 Index Protocol

अध्याय ३४ — Khand 1 Master Structure and Chapter Link Map

अध्याय ३५ — गोत्र, मूल, मूलग्राम: Index-Wise Decoding

अध्याय ३६ — लौकित, चौगोला, श्रेणी, and पत्रांक Records

अनुसन्धान बैच · अध्याय ३७–३८

अध्याय ३७ — विद्वान, गुरु-शिष्य, गोत्र-प्रवर, and बीजी पुरुष Records

अध्याय ३८ — Khand 1 Gramaarambh Coverage Checklist

अध्याय १–३क पूर्व अन्तरिम आलोचनात्मक निष्कर्ष

अध्याय १–६क समेकित अन्तरिम मूल्याङ्कन

मूल अंग्रेजी पाठक अध्यायानुक्रम : सत्यापन-पञ्जी

खण्ड ३७ — उटीप पञ्जी

मूल समीक्षा-पाण्डुलिपिसँ सूचीकृत शीर्षक : 43

मूल ग्रन्थक अध्याय-पञ्जी (स्रोत DOCX अनुसार)

अध्याय 1 — वंश, ग्राम आ समाजक सघन स्मृति

अध्याय 2 — उटीप : परिशिष्ट नहि, सम्बन्ध जोड़यवला प्रणाली

अध्याय 3 — एक प्रविष्टिक पदच्छेद आ सम्बन्ध-परीक्षण

दोसर संचयी विस्तार · मूल पुस्तकक अध्याय ४–६

अध्याय ४ — उटीपक सङ्केत, संक्षेप आ मूल पाठक प्रतिलोम-पठन

अध्याय ५ — ४५०–२००९क काल-सीमा : वंशस्मृति आ दस्तावेजी तिथि

अध्याय ६ — ग्रामक स्मृति : सरिसब-पाहीटोलसँ शाखागत विस्तार

संचयी निरन्तरता : मूल ग्रन्थक अध्याय ७ सँ अन्तिम अध्याय धरि

अनुसन्धान बैच · अध्याय ७–१२

अध्याय ७ — स्थानान्तर आ वैवाहिक मार्गक असमान अर्थ

अध्याय ८ — उपाधि आ ज्ञानपरम्पराक स्मृति

अध्याय ९ — सरिसब–पाहीटोल–उजान : शुरुआती चौदह प्रविष्टिक सघनता

अध्याय १० — बढ़ियाम–पवौलीक समूह : शीर्षकग्राम आ शरीरग्राम

अध्याय ११ — भदुआर–चपाही–सोदरपुर : लौटैत शाखाक क्रम

अध्याय १२ — दिगौन्ध–गंगोली–नवटोल : बहुग्राम सम्बन्धक परीक्षण

अनुसन्धान बैच · अध्याय १३–१८

अध्याय १३ — Entries 52-58 - Kanhauli, Ujan, Mangrauni, Mani, Sarisab, and Bhattpura

अध्याय १४ — Entries 59-61 - Hati, Teterihar, Soderpur, Sarisab, and Mahiya

अध्याय १५ — Entries 62-78 - Mahishi, Pali, Ishahpur, Gangoli, Hatadh, Lohna, Pahitola, and Mangrauni

अध्याय १६ — Entries 79-99 - Balirajpur, Pahitola, Haripur, Bhattpura, Behat, Nagwar, Ghosaut, and Dharampur

अध्याय १७ — Entries 100-119 - Ruchouli and the Puwaripar/Fawaripar Expansion

अध्याय १८ — Entries 120-146 - Behat, Tarauni, Anilpur, Gangora, Dumra, Simarwad, Parhat, Ujan, Sharadapur, and Ishahpur

अनुसन्धान बैच · अध्याय १९–२४

अध्याय १९ — Entries 147-158 - Ratauli, Lohna, Shuklarahi, Gangoli, Najira, Betia, and Ujan

अध्याय २० — Entries 159-178 - Rajoura, Rampur, Lohna, Sihauli, Ishahpur, Raima, Gerki, Chanaur, and Lalganj

अध्याय २१ — Entries 179-195 - Madari, Sharadapur, Sulhani, Manglabani, Raima, Naduar, Naruar, Behat, and Navtol

अध्याय २२ — Entries 196-207 - Tripurauli, Pude-Naruan, Mahrail, Koilkhaha, Dharampur, Phulgama, Gangoli, Khokha, Purnia, and Sotipura

अध्याय २३ — Entries 208-214 - Loam, Sauria, Durgaganj, Bhakharouli, Kanhauli, Ruchouli, and Katihar

अध्याय २४ — Entries 215-224 - Khandbala, Bhaur, Rajgram, Hemnagar, Deodhi, Shubhankarpur, Uchouri, Garhbaneli, and Dhanoulia

अनुसन्धान बैच · अध्याय २५–३०

अध्याय २५ — Full Glossary of Panji Terms

अध्याय २६ — Abbreviation and Number-Key

अध्याय २७ — Index Link Box

अध्याय २८ — Personal Name Index

अध्याय २९ — Scholar, Title, and Status Index

अध्याय ३० — How to Reconstruct a Family Line from the Uptip

अनुसन्धान बैच · अध्याय ३१–३२

अध्याय ३१ — Limits, Gaps, and Editorial Principles

अध्याय ३२ — Conclusion: The Panji as a Civilization Archive

अध्याय १–३क पूर्व अन्तरिम आलोचनात्मक निष्कर्ष

अध्याय १–६क समेकित अन्तरिम मूल्याङ्कन

मूल अंग्रेजी पाठक अध्यायानुक्रम : सत्यापन-पञ्जी

खण्ड ३८ — नगराम पञ्जी

मूल समीक्षा-पाण्डुलिपिसँ सूचीकृत शीर्षक : 108

मूल ग्रन्थक अध्याय-पञ्जी (स्रोत DOCX अनुसार)

अध्याय 1 — नगराम अभिलेख : स्मृति, स्थान आ व्याख्याक सीमा

अध्याय 2 — ‘सुत’, ‘अपरा’, ‘प्र.’ आ ‘रिक्त’ : पाठचिह्नक व्याकरण

अध्याय 3 — ‘एक ग्रामसँ दोसर ग्राम’ : प्रवासक अपूर्ण निष्कर्ष

दोसर संचयी विस्तार · मूल पुस्तकक अध्याय ४–६

अध्याय ४ — व्यक्ति-पहिचानमे उपाधि, पेशा आ सम्बन्धक समवेत भूमिका

अध्याय ५ — रिक्तता आ अभिलेखक मौन : ‘रिक्त’क शाब्दिक मर्यादा

अध्याय ६ — सन्दहपुर–सिंहवाड़ : नगरामक आरम्भिक वंशमार्गक परीक्षण

संचयी निरन्तरता : मूल ग्रन्थक अध्याय ७ सँ अन्तिम अध्याय धरि

अनुसन्धान बैच · अध्याय ७–१२

अध्याय ७ — आँखी लाल–गुणाकर–उदन–गंगेश : पीढ़ीक संकेत

अध्याय ८ — सिंहवाड़ शाखाक प्रसार आ समान नामक समस्या

अध्याय ९ — शशिपुर : सहायक केन्द्र आ मूलग्रामक भेद

अध्याय १० — शशिपुर–पिण्डारुच आ सुवर्ण शाखाक विभाजन

अध्याय ११ — शशिपुरक उत्तरकालीन नाम आ संकलनक स्तर

अध्याय १२ — सन्दहपुरसँ कटका : शशिपुरक बादक विस्तार

अनुसन्धान बैच · अध्याय १३–१८

अध्याय १३ — Banailli, Purnea, Badhwas-Sarisab, Rahua, and the Empty Boundary: Entries (15)-(19)

अध्याय १४ — Khangur to Nahar, Danga, Pilkhwar, and the First Khangur Expansion: Entries (20)-(24)

अध्याय १५ — Pilkhwar, Bhatsimri, Ranitole and the Later Khangur Expansion

अध्याय १६ — Khangur to Pilkhwar, Yamsam and Dihiya: The Transition from Branch Genealogy to Modern Memory

अध्याय १७ — Khangur-Dihiya Continuations and the Kailakh-Kakraud Turn: Entries (35)-(40)

अध्याय १८ — Khangur to Yamsam, Kakraud, Saurath, and the Noane-Gopinath Continuation

अनुसन्धान बैच · अध्याय १९–२४

अध्याय १९ — Khangur, Khojpur, Pilkhwar, Kailakh, and the Transition to Sakuri

अध्याय २० — Sakuri, Sarisab-Sakuri, and the Badhiyam-Parvapalli Branches

अध्याय २१ — Badhiyam after Saurath: Navani, Chanpura, Shashipur, Tedhra, Jagati, Rajey, and Sakuri-Gangoli

अध्याय २२ — Sakuri-Gangoli, Bhadgam, Damodarpur, Ramnagar-Khajuri, and Jamuni-Ehu

अध्याय २३ — Jamuni, Pachahi, Kanhauli, and Mahiya: From the Jajival Register to the Soderpur-Kanhauli and Mahiya Lines

अध्याय २४ — Hasauli, Hati, Digaun, Raiyam, and the Return to Sarisab: Soderpur Registers after Mahiya

अनुसन्धान बैच · अध्याय २५–३०

अध्याय २५ — Sarisab, Gaur, Bali, Jagaur, and Khori: Soderpur Registers before Sukhet

अध्याय २६ — Sukhet, Katka, and Rohar: Soderpur Registers from Lagama to Kachhuwa

अध्याय २७ — Pachadhi, Kodariya, Sakuri, Phuldaha, Parhi, Haripur, Samaya, and Jamdauli

अध्याय २८ — Jamdauli to Dath and the Mahishi-Pali Register: Entries (207)-(220)

अध्याय २९ — Mahishi to Dath and the Mangrauni-Madari Continuation: Entries (221)-(229)

अध्याय ३० — Hati-Pali and Samauli-Pali: From Satlakha and Pilkhwar to Sanha, Jhanjharpur and Bagahi

अनुसन्धान बैच · अध्याय ३१–३६

अध्याय ३१ — Balirajpur-Hariamb and Siva-Hariamb: Settlements, Scholarly Lines and Marriage Networks, Entries (248)-(265)

अध्याय ३२ — Mangrauna, Ahil, and Rakhwari under the Hariamb Line: Descent, Titles, and Marriage Circuits

अध्याय ३३ — Akusi-Tankwal, Gandauli-Jalay, and the Opening Nagwad-Ghusaut Register

अध्याय ३४ — Nagwad-Ghusaut after Akaur: Bhachhi, Ranipur, Samaul, Masuriya, and Kakraud

अध्याय ३५ — Nagwad-Ghusaut Continued: Bhatsimari, Chapahi, Kaivalakh, Satlakha, and the Turn to Ananlpur-Karmaha

अध्याय ३६ — Nagwad to Pilkhwar and Rashadh, then Analpur-Karmaha before Tarouni

अनुसन्धान बैच · अध्याय ३७–४२

अध्याय ३७ — Tarouni-Karmaha: Ramnagar, Kaivalakh, Pindaruch, Virsayar, Nanour, and the Aama-Bounsi Extension

अध्याय ३८ — Naduar-Karmaha: Tharhi, Bharam, Kachhuwa, and the Scholarly Naduar Branches

अध्याय ३९ — Behat-Karmaha, Majhaura-Karmaha, and Majhiyam-Karmaha: Entries (336)-(343)

अध्याय ४० — Mahishi-Budhwal: Kailakh, Kachhuwa, Pokhrauni, Bhainsdiyar, and Parihari: Entries (344)-(351)

अध्याय ४१ — Pariyam, Gangaura, and Dumra: Budhwal Continuities, Entries (352)-(358)

अध्याय ४२ — Vichadhi, Kua-Tisaut, Parhat-Baheradhi, Chanpura-Parihari, Malichham-Bhachhi, and Mangrauni-Khanam-Phandah, Entries (359)-(370)

अनुसन्धान बैच · अध्याय ४३–४८

अध्याय ४३ — Khojpur, Mangrauni, Pilkhwar and the Khanam-Phandah Learned Branch: Entries (371)-(382)

अध्याय ४४ — Rajgram-Alay, Rashadh, Pilkhwar-Baligarh and Lagma: Entries (383)-(387)

अध्याय ४५ — Baigani-Alay and the Baneli-Ramgarh Royal Cluster

अध्याय ४६ — Paramgarh-Alay and Pindaruch: The Shyamlal, Akshaylal, Harikant, and Bechanlal Lines

अध्याय ४७ — Paramgarh, Babhaniam, Satlakha, Oini, Simraungarh, and Mahua-Khaual

अध्याय ४८ — Cutka-Soderpur, Tarouni, and Ranti-Pilerwad: Jatadhar Jha, Khadik-Khaual, and the Pilerwad Continuations

अनुसन्धान बैच · अध्याय ४९–५४

अध्याय ४९ — Simarwad-Khaual, Ahil-Gotham, Mahnaura-Bindhi, and Damodarpur-Kakraud

अध्याय ५० — Kaivalakh-Nahas-Khaual and the Bharam Continuation: Entries (420)-(422)

अध्याय ५१ — Manikouli, Nahas-Kaivalakh, and Nahas-Dhamdaha: Entries (423)-(428)

अध्याय ५२ — Chanpura and Basaith: Nahas-Khaual Continuities, Entries (429)-(432)

अध्याय ५३ — Basaith, Baghdas-Chanpura, Nahas-Chanpura, Khojpur, and Mahinathpur

अध्याय ५४ — Sukhait-Pilkhwar and the Learned Khaual Line: Entries (447)-(450)

अनुसन्धान बैच · अध्याय ५५–६०

अध्याय ५५ — Nahar and Parhat-Sakararhi: From Tharhi-Satlakha to Teldihā-Munger, Entries (451)-(460)

अध्याय ५६ — Hadari-Sakararhi, Batsar-Munger, Lohna-Sakararhi and Rohar-Haripur: Entries (461)-(466)

अध्याय ५७ — Rohar-Jhanjharpur, Tatail-Sakararhi and Chhamu-Sakararhi: Entries (467)-(474)

अध्याय ५८ — Bhakhrauli-Ramnagar and the Rajanpura Cluster: Entries (475)-(485)

अध्याय ५९ — Rajanpura-Kaivalakh, Shivipatti, Kanhouli, Navani, Ratauli, and Bhatsimari-Tharhi: Entries (486)-(497)

अध्याय ६० — Ratauli-Dhadhi, Dih-Darihara, Bargam-Pilkhwar, and Sihouli: Entries (498)-(508)

अनुसन्धान बैच · अध्याय ६१–६६

अध्याय ६१ — Rajoura-Sahpur and Rajoura-Tharhi: The Mandar Gramarambh

अध्याय ६२ — Rajoura-Pindaruch, Bihnagar-Kakraud, Bagahi-Kakraud, and Pindaschh: Entries (511)-(516)

अध्याय ६३ — Barauni, Bhadual, Belaunja, Katouna, and Satauli: Entries (517)-(528)

अध्याय ६४ — Satauli Continuations, Purnia, Jayanand, Virsayar, and Parihari: Entries (529)-(534)

अध्याय ६५ — Mahindrapur-Pandua and its Kakarod, Dhagjari, Rashady, Singhwar, Lagama, and Kailakh Branches: Entries (535)-(547)

अध्याय ६६ — Mahindrapur-Shivnagar, Bisfi-Saurath, Kabai, Vatswal, Shaktiraypur and Sagarapur: Entries (548)-(562)

अनुसन्धान बैच · अध्याय ६७–७२

अध्याय ६७ — Ojholi-Sagarapur-Pandoli and the Kapileshwar Pause: Entries (563)-(564)

अध्याय ६८ — Bhakhrauli-Kujouli: Chikni-Purnia, Porbarauni and Haripur, Entries (565)-(572)

अध्याय ६९ — Malangiya-Kujouli: Tharhi, Kakraud, Mahishi, Lagma and Sanha, Entries (573)-(580)

अध्याय ७० — Dadri-Panichobh, Nanour-Parasarma, Brahmoli and the Birpur-Panichobh Notice: Entries (581)-(588)

अध्याय ७१ — Ruchauli-Ekhara, Oda-Ekhara and Khadka-Ekhara: Entries (589)-(597)

अध्याय ७२ — Kasarauh-Ekhara, Sangram, Nahar-Shahpur and Ratipar-Mahesh: Entries (598)-(600)

अनुसन्धान बैच · अध्याय ७३–७८

अध्याय ७३ — Sudsuya-Belaunch: Banu Chhapra, Badhudhpara, Samauli and Tharhi-Sagarpur: Entries (601)-(606)

अध्याय ७४ — Kako-Belaunch, Kako-Kailakh, Shivnagar-Banpura, Chanpura-Haripur-Vira-Ekma, Barha Nagram and Satlakha-Visauni-Jhauwa: Entries (607)-(614)

अध्याय ७५ — Kako-Babu Chhapra-Dath, Dath-Ekma, Pokhrauni-Tarauni-Pindaruch, Kako-Kailakh-Pindaruch, and Satlakha-Belaunch-Halo: Entries (615)-(620)

अध्याय ७६ — Mardari-Baliyas and Sakuri-Baliyas: Entries (621)-(624)

अध्याय ७७ — Narsam-Baliyas Opening: Entries (625)-(629)

अध्याय ७८ — Narsam-Padna-Harinagar, Lalbag and Pindaruch: Entries (630)-(638)

अनुसन्धान बैच · अध्याय ७९–८४

अध्याय ७९ — Narsam: Dharmanath, Gunakar, Shalampur, Tabhka and Nagaram-Nahar: Entries (639)-(649)

अध्याय ८० — Narsam: Kaivlarav, Kakraud, Ranitol, Saurath and Sukhsena: Entries (650)-(664)

अध्याय ८१ — Baruwari-Baliyas: Nandishwar Invocation and Empty Closing Entries: Entries (665)-(668)

अध्याय ८२ — Major Lineage Nodes of the Nagram Panji

अध्याय ८३ — Major Village Nodes and Route Networks

अध्याय ८४ — Marriage Networks and Inter-Village Affiliation

अनुसन्धान बैच · अध्याय ८५–८७

अध्याय ८५ — Scholars, Priests, Officials, Lawyers, Engineers, Doctors, and Modern Professions

अध्याय ८६ — Migration, Memory, and Mithila Beyond Mithila

अध्याय ८७ — Problems of Reading: Scribal Variants, OCR-Like Distortions, and Editorial Decisions

अध्याय १–३क पूर्व अन्तरिम आलोचनात्मक निष्कर्ष

अध्याय १–६क समेकित अन्तरिम मूल्याङ्कन

मूल अंग्रेजी पाठक अध्यायानुक्रम : सत्यापन-पञ्जी

नगराम अध्याय ४१–८७ : पाठ-साक्ष्य जाँच-पञ्जी

खण्ड ३९ — वंशावली मानचित्रण

मूल समीक्षा-पाण्डुलिपिसँ सूचीकृत शीर्षक : 52

मूल ग्रन्थक अध्याय-पञ्जी (स्रोत DOCX अनुसार)

अध्याय 1 — पञ्जीक सङ्केतभाषा आ विवाह-अनुमतिक अभिलेख

अध्याय 2 — बल्लाल सेन, हलायुध आ विद्वानक प्रतिष्ठाक आरम्भिक आख्यान

अध्याय 3 — फूलसरा–हरौत–पोठिया सुलतानपुर : ग्रामजालक विस्तार

दोसर संचयी विस्तार · मूल पुस्तकक अध्याय ४–६

अध्याय ४ — शिव हरिअम्ब, सन्दहपुर-दिघोय आ दन्ती–चोपड़ा बखरीक वंशजाल

अध्याय ५ — महादेव दिघड़ी, बेहट–खण्डवला आ पद्मपुरक आधुनिक विस्तार

अध्याय ६ — डोम टेकारी ग्राम : विद्वान परम्परा आ कन्या-सम्बन्धक घनत्व

संचयी निरन्तरता : मूल ग्रन्थक अध्याय ७ सँ अन्तिम अध्याय धरि

अनुसन्धान बैच · अध्याय ७–१२

अध्याय ७ — घोड़ाघाट–रतिपाड़–बेलौंच : विवाहक विस्तारित क्षेत्र

अध्याय ८ — रतनपुर–रभिड़ा–बनैली : राजशाखाक प्रतिष्ठा

अध्याय ९ — बड़गाम–दरिहरा–असूरा : कविक वंश आ पदवी

अध्याय १० — बलियास–ओगही–बनैली : बीजी पुरुषक स्थान

अध्याय ११ — पकलिया–महिषी–पूर्णिया : क्षेत्रीय जाल

अध्याय १२ — धर्मपुर दक्षिण रघुनाथपुर : कवित्वक पदवी आ क्षेत्र

अनुसन्धान बैच · अध्याय १३–१८

अध्याय १३ — Katayi-Anhara Belepothia, Hemnagar: Hingu-Kamal, Matinath, Hira, Chiranjeev, Ugramani, Sundarmani, Devaraj Singh, and the Hemnagar-Khandwala Continuation

अध्याय १४ — Asura-Suptani Gangoli and Singholi Mandar Danti: Brijmohan, Anand Mohan, Kamal Mohan, Babuji, Jagu, Gangadhar, Harijiv, and the Asura-Andhasur Continuation

अध्याय १५ — Birwan Batheli: Mahamahopadhyay Batesh, Pashupati, Raghupati, Ratipati, Haladhar, Lakshminath, Rameshwar, Shulpani, and the Modern Continuation

अध्याय १६ — Badgam Darhiara-Dharmapur Desh Salampur-Salampur-Salempur and Badgam Shalampur: Abhiram, Jay Ram, Raghunath, Santosh, Chandīdatt, Pyarelal, Upendra, Narayandatt, and the Shalampur Register

अध्याय १७ — Khaual Simbarwad Gramaramabh: Jahanpur, Jamua-Baradbata, Chikni, Rahua-Balua, Mahamahopadhyay Prajapati, Vachaspati, Umapati, Ganapati, and the Nasira-Dighdi Threshold

अध्याय १८ — Nasira Desho Dighdi: Bhulek, Keuntu, Bhavanand, Anand, Bhairav, Manmohan, Ramanikant, Pashupatinath, Dharmanand, and the Purnia Modern Continuation

अनुसन्धान बैच · अध्याय १९–२४

अध्याय १९ — Rajanpura Pu Darhiara Koilakh, Sarouni, and Dharmapur-Deshe Hemnagar: Kanhaiya, Dwarikanath, Lakshman, Prayagdatt, Rohini, Vishnudatt, Jagatmani, and the Phoolsara-Baradbatta Continuation

अध्याय २० — Ratauli Darhiara, Jahanpur, Naili, Shrinagar, Ramai-Rahatmina-Bhadra: Kamalpani, Devdhar, Dharanidhar, the Poet-Line, Baburam, Nandan, Meghnath, Gungu-Manti, Ramai-Darhiara Ratauli, and the

अध्याय २१ — Rajora Mandar Nasira-Deshe Phulbadiya-Gondwara: Mahamahopadhyay Batesh, Pashupati, Raghupati, Ratipati, Yagyapati, Pothia Sultanpur, Palasi, Belbadi Jhotan Jha, and Shripur-Deshe Kodhila

अध्याय २२ — Satlakha-Satauli Gramaramabh: Chakrapani, Prithvidhar, Purushottam, Harikar, Shrikar, Ruchikar, Ratnakar, Maan, Murari, Jaydev, Ratnapani, Kouskidatt, Mushtauli-Phulwadi-Chakradhar, and Satl

अध्याय २३ — Jagatpur Pu Mandar-Chuna-Chu Pur Pu Belbadi: Nardev, Arjun, Gopal, Harikar, Jagannath, Vishwambhar, Rajora-Mandar Sheshansh, Khawaspur, and Bakhri-Harshdatt Jha

अध्याय २४ — Sodarpur Pu Mani Gramaramabh: Vishwanath, Gopinath, Batesh, Pashupati, Rameshwar, Ratnakar, Gondi, Krishn, Yagyapati, Lakshman, Modinath, Radhanath, and Khajuri-Bhikhari Mishra

अनुसन्धान बैच · अध्याय २५–३०

अध्याय २५ — Raiyam Ghoshiyam Gramaramabh: Manbodh, Mangani Ram, Tilaknath, Chandranath, Nasira-Haveli Pokharia, Harimohan, Krishnamohan, Kanchinath Kiran, and the Sakuri-Belauch Threshold

अध्याय २६ — Sakuri Belauch Gramaramabh: Shivdas, Tivyakara, Keuntu, Purai, Gunakar, Ramkrishna, Devanand, Ratnapati-Jhingur, Gauridatt, Buddhinath, Rajkumar, Vasukinath, and the Bhanupunur-Panichobh Thr

अध्याय २७ — Bhanupunur Pu Panichobh Gramaramabh: Ramdev, Thitho, Jiveshwar, Bhanukar, Chandrakar, Jivdhar, Shrinath, Hingu, Durgadatt, Narayandatt, Gangadhar, Anantram, Bhavdev, Ranjan, and the Ruchouli

अध्याय २८ — Ruchouli Ekhara Gramaramabh: Jyotirvid Harishwar, Gunishwar, Hridayeshwar, Baburaiya, Vyakaran Ramchandra, Shrotriya Gangesh, Rajendra, Dharbharan, Vishwambhar, Judge Rameshwar, and the Sulh

अध्याय २९ — Sulhani Naraun Gramaramabh: Mahidhar, Udayakar, Ratnakar, Dalu, Madhukar, Lakshman, Ramkrishna, Dharmeshwar, Tulakrishna, Khokha Devanath Jha, Jagmohan, Harimohan, and Ufarail Khokha

अध्याय ३० — Tripurau Pu Li Naraun Gramaramabh: Dakra-Dihiya, Vishweshwar, Gaurishwar, Mahamahopadhyay Harishwar, Saraswati Ram, Dharadhar, Gangadhar, Raghudev, Ruchidev, Lakshmipati, Rudrapati, and the

अनुसन्धान बैच · अध्याय ३१–३६

अध्याय ३१ — Nagwad Ghosot Gramaramabh: Vasudev, Divakar, Buddhikar, Govind, Lakshminath, Vidyapati, Damodar, Ramnath, Agamacharya Devanath, Gopinath, Madhusudan, Janardan, Haridas, Shubhankar, Fakir, Is

अध्याय ३२ — Asi Ekhara Gramaramabh: Nasira-Deshe Pada, Vishwanath, Nandan, Bhanjan, Bhairam, Kanhuram, Shambhunath, Kuli, Bhaynath, Pratapanath, Kalikant, Shivanand, Pokharia, and Nasira-Deshe Bhadari

अध्याय ३३ — Gangora Budhwal Gramaramabh: Gondwara-Phulbadiya, Haveli-Radheli, Lotan, Rudra, Rangai, Rameshwar, Shivdatt, Pitambar, Dharanath, Khushi, Domai, Bhola, Rajendra, and the Aamdanda Close

अध्याय ३४ — Badhiyam Pawauli Gramaramabh: Nasira-Haveli Sauria, Ravidatt, Bhagirath, Jagannath, Janardan, Vishwanath, Ram, Ramchandra, Ratinath, Kamal, Narayan, Manorath, Rajaram, and the Devhar Thresho

अध्याय ३५ — Devhar Devhar Mul-Mu Gramaramabh: Jaykar, Sagar, Matikar, Lakshmikar, Gunakar, Kameshwar, Rajoo, Haldhar, Narsingh, Brahmeshwar, Umapati, Narayan, Haradatt, Krishnadev, Nehal, Sitaram, Virna

अध्याय ३६ — Shandilya-Gotre Brahmpura Pu Sako(b)ra-Kobara, Masuria-Alay: Delhan, Kanh, Ram, Vishweshwar, Shrinath, Dharmnath, Vidyadhar, Yashodhar, Chintamani, Narhari, Dharmeshwar, Jaydev, Rupnarayan,

अनुसन्धान बैच · अध्याय ३७–४०

अध्याय ३७ — Kanhouli Parwaha: Ruchikar, Anandkar, Mitrakar, Jasai, Rajiv, Hariram, Vyakaran Halayudh, Baburam, Nityanand, Kalanand, Shardanand, Ramanand, Kripanand, Vibhuti, and the Ekhara-Sangram Thres

अध्याय ३८ — Ekhara Sangram Gramaramabh: Dom Tekari, Chaturvedadhyarya Kamdev, Yajnik Parashuram, Shridhar, Balbhadra, Shrirang, Santosh, Ratneshwar, Ruchikar, Harinath, Gangeshwar, Theghanand, Ramanand,

अध्याय ३९ — Ekhara Sangram Sirsia Gramaramabh: Bhorilal Jha, Choa Lal, Sona Lal, Achmit Lal, Ajwalal, Bhupal Lal, Achkalal, Banmali, Shivanand, Bhavani Kant, Madhurapati, Lalbihari, Mahopadhyaya Shrinat

अध्याय ४० — Cross-Analysis, Reference Apparatus, and Consolidated Reading Tables

अध्याय १–३क पूर्व अन्तरिम आलोचनात्मक निष्कर्ष

अध्याय १–६क समेकित अन्तरिम मूल्याङ्कन

मूल अंग्रेजी पाठक अध्यायानुक्रम : सत्यापन-पञ्जी

खण्ड ४० — दूषण पञ्जी

मूल समीक्षा-पाण्डुलिपिसँ सूचीकृत शीर्षक : 40

मूल ग्रन्थक अध्याय-पञ्जी (स्रोत DOCX अनुसार)

अध्याय 1 — सात प्रकारक पञ्जी : एकहि सामाजिक अभिलेखक भिन्न काम

अध्याय 2 — ‘वंशमे आएल क्षरण’ : स्रोतक वर्गीकरण आ मनुष्यक गरिमा

अध्याय 3 — अभिलेख निर्णय नहि : इतिहासलेखनक नैतिक अनुशासन

दोसर संचयी विस्तार · मूल पुस्तकक अध्याय ४–६

अध्याय ४ — सात प्रकारक पञ्जी आ संस्थागत वर्गीकरणक ऐतिहासिक बनावट

अध्याय ५ — हरिसिंहदेव, पञ्जीकार आ संस्थागत आरम्भक प्रमाण-परीक्षण

अध्याय ६ — उतेढ़, सपिण्ड आ विवाहयोग्यता : गणना आ अधिकारक सम्बन्ध

संचयी निरन्तरता : मूल ग्रन्थक अध्याय ७ सँ अन्तिम अध्याय धरि

अनुसन्धान बैच · अध्याय ७–१२

अध्याय ७ — गोत्र–प्रवर–मूल : दूषण-पञ्जी पढ़बाक न्यूनतम व्याकरण

अध्याय ८ — बीस गोत्र आ १६७ मूल : सूची बनाम ऐतिहासिक पुष्टि

अध्याय ९ — मूलग्राम आ प्रवास : वंशक स्थानिक स्मृति

अध्याय १० — दूषणक ९७ प्रविष्टि : निर्णय नहि, अनुसन्धानक एकाइ

अध्याय ११ — ‘अज्ञात’ : अभिलेखक सीमा आ सामाजिक सत्ता

अध्याय १२ — देवदासी, दासी आ मातृरेखा : स्त्री-अभिलेखक पुनर्पाठ

अनुसन्धान बैच · अध्याय १३–१८

अध्याय १३ — Dalit and Artisan Connections in Dushan Panji

अध्याय १४ — Muslim and Yavani Connections

अध्याय १५ — Widowhood, Remarriage, and the Hidden Social History of Women

अध्याय १६ — Gangesha, Tattvachintamani, and the Dushan Record

अध्याय १७ — Anandaa, Vallabha, Medha, Hira, Rahmu, Sohaago: Named Women and Hidden Mothers

अध्याय १८ — Entry-by-Entry Decoding: Cases 1-25

अनुसन्धान बैच · अध्याय १९–२४

अध्याय १९ — Entry-by-Entry Decoding: Cases 26-50

अध्याय २० — Entry-by-Entry Decoding: Cases 51-75

अध्याय २१ — Entry-by-Entry Decoding: Cases 76–97

अध्याय २२ — The “Sixth Generation” Question: When Does Dushan Fade?

अध्याय २३ — Panji Vocabulary: Offices, Titles, Scholars, and Social Rank

अध्याय २४ — Biji Purush and the Vamshavali Logic

अनुसन्धान बैच · अध्याय २५–३०

अध्याय २५ — Up-Tip and Nagaram: Regional Branching and the Pachhwari Par System

अध्याय २६ — Panji, Hierarchy, and Social Damage

अध्याय २७ — Plagiarism, Ownership, and the Struggle over Panji Knowledge

अध्याय २८ — Tirhuta, Devanagari, Scan Copies, and the Preservation Problem

अध्याय २९ — How to Read Dushan Panji Today

अध्याय ३० — Conclusion: Dushan Panji as Mithila’s Difficult Truth

अध्याय १–३क पूर्व अन्तरिम आलोचनात्मक निष्कर्ष

अध्याय १–६क समेकित अन्तरिम मूल्याङ्कन

मूल अंग्रेजी पाठक अध्यायानुक्रम : सत्यापन-पञ्जी

खण्ड ४१ — प्रबन्ध · निबन्ध · समालोचना — सिद्धान्त आ निबन्ध

मूल समीक्षा-पाण्डुलिपिसँ सूचीकृत शीर्षक : 62

सैद्धान्तिक प्रबन्ध आ निबन्धक समीक्षा

१. प्रबन्ध–निबन्ध–समालोचना, समीक्षाशास्त्र आ समालोचनाक समालोचना

२. मैथिलीमे पैटर्न कविता आ आकार-कविता

३. नव्य-न्यायक दृष्टि : प्रमा, अभाव आ प्रामाण्य

पहिल तीन प्रबन्धक अन्तर्सम्बन्ध

४. गद्य साहित्य मध्य विहनि कथाक स्थान आ विहनि कथाक समीक्षाशास्त्र

५. गद्य साहित्य मध्य लघुकथाक स्थान आ लघुकथाक समीक्षाशास्त्र

६. गद्य साहित्य मध्य उपन्यासक स्थान आ उपन्यासक समीक्षाशास्त्र

७. शिशु, बाल आ किशोर साहित्य आ ओकर समीक्षाशास्त्र

८. मैथिली लेल एकटा अनुवाद सिद्धान्त आ अनूदित साहित्यक समीक्षाशास्त्र

प्रबन्ध ४–८ : विधागत अन्तर आ साझा समीक्षा-पद्धति

९. पद्य साहित्य आ ओकर समीक्षाशास्त्र

१०. नाट्य साहित्य, समानान्तर मैथिली नाटक आ रंगमंच; आ नाट्य साहित्यक समीक्षाशास्त्र

११. मैथिली हाइकू / हैकू / क्षणिका

१२. दोहा / रोला / कुण्डलिया

पद्य आ नाटक : नवम सँ बारहम प्रबन्धक तुलनात्मक निष्कर्ष

१३. मैथिली गद्य आ पद्य साहित्यक समीक्षाशास्त्र

१४. मैथिली नाटक आ आधुनिक रंगमंच

१५. मैथिली नाट्य-समीक्षाक आधार : पाठ, मंचनीयता आ तुलनात्मक पद्धति

१६. कुणालक नाट्य-शिल्प : लोकनाट्य, शास्त्र आ आधुनिकता

१७. लालदासक मिथिला रामायणमे कुण्डलिया आ छन्द-विवेचन

१८. भाषा, छन्द आ काव्य-सौन्दर्य : रस, ध्वनि आ वक्रोक्ति

१९. वैचारिक धरातल : समानान्तर साहित्य-दृष्टि आ रंगमंच

२०. मैथिली लेल एकटा नारीकेन्द्रित समीक्षाशास्त्र : कामिनी आ शान्ति लक्ष्मी चौधरीक कृतिसभ

२१. मैथिली लेल दलित साहित्य समीक्षाशास्त्र — दोसर प्रकरण

२२. मैथिली लेल दलित साहित्य समीक्षाशास्त्र

२३. मैथिलीक एकटा समानान्तर व्याकरण, रचना आ भाषा-विज्ञान

२४. तिरहुता लिपिक उद्भव आ विकास

२५. कृषि–मत्स्य शब्दावली : क्षेत्रकार्यपर आधारित अध्ययन

२६. शब्द-प्रमाण, ज्ञान-तत्त्वमीमांसा आ भाषा-विज्ञान

२७. मैथिली विकीपीडिया, यूनीकोड तिरहुता–कैथी आ डिजिटल मैथिली

२८. रचना लिखबासँ पहिने...

२९. मैथिली–सुरजापुरी–राजबंशी

३०. साहित्यमे लोक-तत्त्व : गाथा, नृत्य आ नाटक

३१. हिन्दी आ मैथिली आ साहित्यिक शब्दावली

३२. भारोपीय भाषा परिवार मध्य मैथिलीक स्थान

३३. अभिनय पाठशाला

३४. मैथिली नाटक आ फिल्मक एकटा समानान्तर दुनियाँ

३५. विदेशी पूँजी निवेशक भाषापर (मैथिली सहित) प्रभाव

३६. जयकान्त मिश्र आ मैथिली शब्दकोष

३७. पञ्जी-प्रबन्धमे उपलब्ध किछु आधिकारिक आ सामाजिक शब्दावली

३८. मैथिली उपन्यासपर अंग्रेजी साहित्यक प्रभाव

३९. शब्द-विचार : सिद्ध सरहपाद, तिब्बती लिपि, कम्प्यूटर आ मैथिली

४०. कथा वाचन–लेखन पाठशाला : बाल कथाक विशेष सन्दर्भमे

४१. पाठक हमर पोथी किए पढ़थि

४२. वजन प्रबन्धन : एकटा व्यक्तिगत प्रयोग आ अनुभव

४३. एनी एर्नौ आ कपिलेश्वर राउतक कथा-संसार

४४. शरदिन्दु चौधरी विशेषांक आ समानान्तर साहित्य-विमर्श

४५. प्रेमलता मिश्र ‘प्रेम’ विशेषांक आ समानान्तर साहित्य-विमर्श

४६. मैथिली साहित्यक अन्तर्राष्ट्रीय प्रस्तुति आ समानान्तर साहित्य-विमर्श

४७. लोक-संस्कृति, साहित्य, कृति-समीक्षा आ समानान्तर दृष्टि

४८. साहित्य अकादेमी आ मैथिली साहित्यिक संस्था : एकटा विमर्श

४९. मैथिलीमे समानान्तर साहित्य आ विदेह मैथिली साहित्य आन्दोलन

५०. मैथिली साहित्यिक संस्था, साहित्य अकादेमी आ धूर्त्तसमागमक पुनर्पाठ

५१. साहित्य अकादेमी अनुवाद पुरस्कार (मैथिली) २०२२ प्रसंग आ साहित्यिक विमर्श

५२. साहित्य अकादेमीक मैथिली परामर्शदात्री समिति (२०२३–२०२८) प्रसंग

५३. मिथिला स्टूडेन्ट यूनियन विशेषांक : संस्था, आन्दोलन आ आलोचना

५४. भाषा आ प्रौद्योगिकी : संगणक, छायांकन, कुँजीपटल, अन्तर्जाल आ ई-प्रकाशन

५५. अन्तर्जाल आ मैथिली

५६. आत्म-छवि, भाषा-प्रौद्योगिकी आ समावेशी संचार

प्रथम खण्डक समग्र आलोचनात्मक मूल्याङ्कन

ग्रन्थाधार

खण्ड ४२ — प्रबन्ध · निबन्ध · समालोचना — अनुप्रयुक्त समीक्षा

मूल समीक्षा-पाण्डुलिपिसँ सूचीकृत शीर्षक : 117

अध्ययनक विधि

१. मायानन्द मिश्रक इतिहास-बोध : चारि ऐतिहासिक उपन्यासक सन्दर्भ

२. मिथिलाक बाढ़ि : धार, छहर आ सार्वजनिक उत्तरदायित्व

३. लोरिक गाथामे समाज ओ संस्कृति

४. मिथिलाक खोज : स्थलवृत्त, स्मृति आ अभिलेख

५. दूषण पञ्जी : वंशावलीक अभिलेख आ सामाजिक पुनर्पाठ

आरम्भिक पाँच समालोचनाक अन्तर्सम्बन्ध

६. मिथिला आ संस्कृत : शास्त्रीय परम्परा, रंगमंच आ विश्वविद्यालय

७. मिथिलासँ पलायन : भूगोल, श्रम आ सामाजिक परिवर्तन

८. मिथिलाक पञ्जी–प्रबन्ध : वंश, विवाह, दूषण आ सामाजिक स्मृति

छठम सँ आठम समालोचनाक तुलनात्मक विवेचन

९. 'कुसमा–सलहेस' : लोकमहागाथा, प्रतिरोध आ प्रेमक रंगदृष्टि

१०. 'अखियासल' : साहित्येतिहासक पुनर्पाठ आ समीक्षाक समीक्षा

११. 'हिआओल' : अनुमान, अभिलेख आ सामाजिक साहित्येतिहास

नवम सँ एगारहम समालोचनाक समेकित निष्कर्ष

१२. केदारनाथ चौधरीक 'चमेली रानी' आ 'माहुर' : उपन्यास-द्वयक समीक्षाक समीक्षा

१३. सुभाषचन्द्र यादवक 'बनैत बिगड़ैत' : कथा-शिल्प आ भाषा-विचारक आलोचना

१४. राजदेव मण्डलक 'अम्बरा' : कविताक आवश्यकता आ प्रतिरोधक बिम्ब

१५. मुन्नाजीक 'प्रतीक' : विहनि कथाक बीआ, रूपक आ कथात्मक अर्थ

१६. सुजीतक 'जिद्दी' : संवेदना, स्त्रीक निर्णय आ कथारचनाक सीमा

१७. 'पाथरक नाव' आ 'बलानक बोनिहार ओ पल्लवी' : परिचय, पाठ-पञ्जी आ मूल्याङ्कनक अन्तर

१८. 'मैथिलीक किछु नव पोथी' : अनेक कृतिक आस्वादन आ समीक्षाक कसौटी

१९. 'सगर राति दीप जरय कथाक कथा' : संस्था-स्मृति आ आरोपक प्रमाण-विवेक

कथा, उपन्यास आ साहित्यिक सार्वजनिकताक समेकित निर्णय : समीक्षा १२–१९

२०. डॉ. अमरेन्द्रक 'अंगिका बाल-साहित्य' : लोकस्मृति, द्विभाषिक अध्ययन आ आलोचनात्मक प्रमाण

२१. मैथिली बाल-उपन्यासक समीक्षाशास्त्र : सैंतीस कृतिक अन्तर्सम्बन्ध आ बालपाठकक स्वाधीनता

२२. संस्कृतसँ मैथिली अनूदित तेरह पुस्तक : तुलनात्मक कसौटी आ अनुवादक प्रमाण

२३. जगदानन्द झा ‘मनु’क ‘माटिक बासन’ : कारीगरी, पीढ़ीक संवाद आ कथाक अपूर्ण सामाजिक प्रश्न

२४. ‘पाठक हमर पोथी किए पढ़थि’ : आत्मप्रतिवेदन, पाठक-वितरण आ प्रमाणक प्रश्न

२५. ‘सझिया रोपनि’ : ४३ लेखकक ८६ विहनि कथा आ सम्पादनक कसौटी

२६. जगदानन्द झा ‘मनु’क ‘माटिक बासन’ : दोसर आलोचनात्मक टिप्पणीक पुनर्परीक्षण

२७. कृष्ण कुमार कश्यप आ शशिबाला : मिथिला चित्रकला, अनुवाद आ सामाजिक शिक्षाक कृतित्व

२८. पं. बाल गोविन्द ‘आर्य’ : वर्ण-प्रकरण आ स्वाधीन मैथिली व्याकरणक प्रश्न

२९. रमेशक ‘कथा-समय’ : विखण्डन, द्वन्द्व आ कथागत प्रमाणक समीक्षा

३०. उमेश पासवानक ‘मुजरिम’ : दोषारोपण, जाति-सत्ता आ लोकन्यायक प्रतिपाठ

३१. रा. ना. सुधाकरक ‘दीयरि’ : सीमा-भूगोल, स्त्री-अनुभव आ बहुपद्धतिगत आलोचना

३२. परमेश्वर कापड़िक कथा, पद्य आ नाट्य-संसार : समेकित आलोचनाक व्याप्ति आ सीमा

३३. केदारनाथ चौधरी विशेषांक : स्मृति, फिल्म, पुरस्कार आ साहित्यिक सार्वजनिकता

३४. केदारनाथ चौधरीक आत्मकथात्मक उपन्यासक पुनर्पाठ : फिल्मी शिल्प आ स्मृतिनिर्माण

३५. साहित्य अकादेमी युवा आ बाल पुरस्कार २०२२ : संस्थागत आलोचना आ प्रमाणक मर्यादा

३६. विस्मृत कवि पं. रामजी चौधरी : भक्ति-पद, रागविधान आ पाण्डुलिपिक इतिहास

३७. ‘विद्यापतिक पिआ देसाँतर’ : पदावलीसँ रंगमंच धरि रूपान्तरणक समीक्षा

३८. विद्यापति सम्बन्धी प्रचलित दावाक परीक्षण : पहचान, पञ्जी आ लोकपरम्परा

३९. रामदेव प्रसाद मण्डल ‘झारूदार’ : जनकाव्यक ‘झारू’ आ सार्वजनिक प्रतिरोध

४०. रामविलास साहुक ‘रथक चक्का उलटि चलै बाट’ : लघुपद्य, प्रकृति आ किसानक भाषा

४१. उमेश मण्डल जीक “निश्तुकी” कविता, लघु-कविता, हाइकू/टनका आ गजलक संग्रह

४२. उमेश पासवानक कविता संग्रह “वर्णित रस”

४३. रामलोचन शरणक मैथिली रामचरितमानस

४४. बूच जीक कविताक बहुविध आलोचनात्मक अध्ययन

४५. विदेह: लोगो:: विद्यापति: उगना: मिथिला: मैथिली

४६. ‘बज्जिका गीत-संगीत’: समेकित द्विभाषिक बहुआयामी साहित्यिक समीक्षा

४७. लालदासक मिथिला रामायण मे कुण्डलिया आ सम्पादक बा प्रूफरीडरक अज्ञानतावश ओइमे छन्दोभङ्ग

४८. मैथिली मे पहिल बेर १. पैटर्न (पुनरावृत्ति) कविता आ २. शेप बा कंक्रीट (आकार) कविता

४९. समानान्तर परम्पराक गोलगला बला ज्योतिरीश्वर पूर्व पदावलीबला महाकवि विद्यापति आ ज्योतिरीश्वरक बादबला पागबला संस्कृत आ अवहट्ठक विद्यापति ठक्कुर:

५०. कियो बूझि नै सकल हमरा-(गजलकार ओम प्रकाश झा)

५१. गजलकार मुन्ना जी बीहनि कथाकार मुन्नाजी

५२. कवि अशोक, कथाकार अशोक आ कथेतर गद्यक लेखक अशोक

५३. बूच जीक कविताक -मार्क्सवाद, ऐतिहासिक दृष्टि, संरचनावाद, जादू-वास्तविकतावाद, उत्तर-आधुनिक, नारीवादी आ विखण्डनवाद दृष्टिसँ अध्ययन संगमे भारतीय सौन्दर्यशास्त्रक दृष्टिसँ सेहो अध्ययन

५४. नचिकेताक नाटक नो एण्ट्री: मा प्रविश

५५. चारिटा उत्तर आधुनिक नाटक: सैमुअल बैकेटक फ्रेंच नाटक “वेटिंग फॉर गोडो”, हैरोल्ड पिंटरक अंग्रेजी नाटक “द बर्थडे पार्टी”, बादल सरकारक बांग्ला नाटक “एवम् इन्द्रजीत” आ उदय नारायण सिंह ‘नचिकेता’ क मैथिली नाटक “नो एण्ट्री: मा प्रविश”

५६. छुतहर/छुतहर घैल/छुतहा घैल

५७. चारिटा अंग्रेजी नाटक — डॉक्टर फॉस्टस, सैमसन एगोनिस्टेस, मर्डर इन द कैथेड्रल आ स्ट्राइफ

५८. नचिकेताक “मध्यमपुरुष एकवचन”

५९. नाट्य-नवग्रह

६०. मुन्नी कामतक’ जिन्दगीक मोल’ आ’ चुक्का’

६१. “कुसमा-सलहेस आ अन्य छओ गोट नाटक”: संग्रहक परिचय, स्थापत्य आ सर्वेक्षण

६२. “चालिस चोर आ गोनू झा उर्फ ज्ञान झाक खिस्सा”: बहु-दृष्टि नाट्य-समीक्षा

६३. “बिदापत”: लोकनाट्य, इतिहास, स्मृति आ काव्यक रंगमंच

६४. सातो नाटकक सीमा, कमी आ वैचारिक तनाव

६५. समग्र निष्कर्ष: कुणालक नाट्य-संसारक वैचारिक एकता

६६. महेन्द्र मलंगियाक छुतहर/ छुतहर घैल/ छुतहा घैल

६७. डॉ. बाबासाहेब आम्बेडकर (१८९१–१९५६)

६८. विदेह · समानान्तर साहित्य आन्दोलन

६९. राम भरोस कापड़ि ‘भ्रमर’ विशेषांक: साहित्यिक आ संस्थागत विमर्श

७०. दलित विमर्श आ डॉ. बाबासाहेब आम्बेडकर (१८९१-१९५६)

७१. मैथिलीमे छद्म समीक्षाक कमलानन्द झा प्रसंग

७२. बहस-पंकज पराशरक साहित्यिक चोरि मैथिली साहित्यक कारी अध्याय थिक

७३. अन्तर्जाल अपराध आ तकरा पकड़बाक विधि

७४. इन्फॉरमेशन सोसाइटी, सार्वभौम मानवाधिकार घोषणा आ भारतीय संविधान

७५. भारतीय दलित साहित्य: मैथिली अनुवाद, समीक्षा आ सौन्दर्यशास्त्र

७६. जयकान्त मिश्र आ मैथिली शब्दकोष

७७. गङ्गेश उपाध्याय

७८. भामती (चतुःसूत्री): ग्रन्थ-सार आ समालोचनात्मक मूल्याङ्कन

७९. आत्मतत्त्वविवेक: एकीकृत विस्तृत ग्रन्थ-सार आ समालोचनात्मक मूल्याङ्कन

८०. न्यायकुसुमाञ्जलि (उदयनाचार्यक मैथिली अनुवाद): एकीकृत विस्तृत ग्रन्थ-सार आ समालोचनात्मक मूल्याङ्कन

८१. तत्त्वचिन्तामणि (मैथिली अनुवाद): ग्रन्थ-सार आ समालोचनात्मक मूल्याङ्कन

८२. फील्ड-वर्कपर आधारित खिस्सा सीत-बसंत

८३. मुन्नाजीक “माँझ आंगनमे कतिआएल छी”

८४. विनीत ठाकुरक “बाँकी अछि हमर दूधक कर्ज”

८५. संतोष कुमार मिश्र — “एना किए..?” आ “पोसपुत”

८६. दूर्वाक्षत

८७. स्व. श्री वैद्यनाथ मिश्र “यात्री”

८८. स्व. श्री हरिमोहन झा (१९०८–१९८४)

८९. जगदीश प्रसाद मण्डल

९०. प्रेमशंकर सिंह

९१. अन्हारक विरोधमे “हाथी चलए बजार” — अरविन्द ठाकुर आ देवशंकर नवीन

९२. मैथिलक वर्तमान समस्या

९३. विदेह सम्पादकीयसँ

९४. गजेन्द्र ठाकुर विदेह ई पत्रिका http://www.videha.co.in/ ISSN 2229-547X क सम्पादक छथि आ आइ काल्हि दिल्लीमे रहै छथि।

९५. “प्रेम-प्रतिज्ञा उर्फ श्रुवावतीक जय!”: स्त्री-कर्तृत्व आ आत्मबल

९६. केदारनाथ चौधरीक समीक्षा

९७. “विश्वासक शक्ति उर्फ सुकन्याक विवाह”: विश्वास, पहचान आ रूपान्तरण

९८. केदार नाथ चौधरीक- अबारा नहितन

९९. “प्रेमक विस्तार उर्फ श्वेताक आविष्कार”: कला, स्वाधीनता आ प्रेम

१००. “प्रेमक परीक्षा उर्फ सुप्रभा आ अष्टावक्र”: ज्ञान, परीक्षा आ प्रेम

१०१. प्रेमलता मिश्र ‘प्रेम’ क बहन्ने

१०२. शेखर प्रसंग, ओ दिन ओ पल आ एहो छली सिनेह

१०३. शरदिन्दु चौधरीक समीक्षा

१०४. नचिकेताक समीक्षा

१०५. शरदिन्दु चौधरीक संस्मरण साहित्य

१०६. राम भरोस कापड़ि ‘भ्रमर’ पर एकटा समग्र दृष्टि

१०७. नरेन्द्र झा: काव्य आ साहित्यिक मूल्यांकन

१०८. रमानन्द झा ‘रमण’: कृतित्व आ ओकर सीमा-रेखा

१०९. स्व. श्री हरिमोहन झा (१९०८-१९८४), जगदीश प्रसाद मण्डल, प्रेमशंकर सिंह, स्व. श्री वैद्यनाथ मिश्र “यात्री” (१९११-१९९८)

११०. सुभाष चन्द्र यादवक समस्त साहित्यक समीक्षा आ मैथिली समीक्षाक कमलानन्द झा प्रसंग

१११. गोपाल झा ‘अभिषेक’ क ‘आउ स्वप्न साझी करी’: साहित्यिक अनुशीलन

ग्रन्थाधार

खण्ड ४३ — संस्कृत साहित्य-संग्रह : १३ पुस्तक-समूह

मूल समीक्षा-पाण्डुलिपिसँ सूचीकृत शीर्षक : 17

अध्ययनक आधार आ प्रमाण-सीमा

01 अभिज्ञानशाकुन्तलम् : प्रेम, विस्मृति आ राजकीय उत्तरदायित्व

02 आगमडम्बरम् : सम्प्रदाय, तर्क आ धार्मिक संस्थाक सत्ता

03 भगवदज्जुकम् : देह–आत्माक विपर्यय आ प्रहसनक दर्शन

04 भल्लट-शतक, कलाविलास आ कलियुग-विडम्बना : व्यंग्यक तीन शिल्प

05 चतुर्भाणी : एकपात्रीय नाटकक चारि संसार

06 दामक प्रहसनम् : रचनाकारक अनिश्चितता आ नाटकीय व्यंग्य

07 हास्यार्णवप्रहसनम् : नामकरण, व्यवस्था आ व्यंग्यक महासागर

08 कादम्बरी : कथाभीतर कथा, वर्णनाक विस्तार आ कालक आवर्तन

09 मृच्छकटिकम् : नगर, प्रेम, न्याय आ जनसत्ता

10 मत्तविलास प्रहसनम् : सम्प्रदायगत उपहास आ भिक्षापात्रक खोज

11 मुद्राराक्षसम् : मुद्रिका, गुप्तचर आ राजसत्ताक नैतिक गणित

12 पालाण्डुमण्डन प्रहसनम् : भोजन, जातिगत पद आ संस्कारक हास्य

13 उत्तररामचरितम् : करुणा, राजधर्म आ स्मृतिक पुनर्निर्माण

अन्तरकृतिगत तुलनात्मक अनुशीलन

समग्र मूल्याङ्कन

ग्रन्थाधार

खण्ड ४४ — मैथिली रेडियो नाटक : स्वयं सीखू मार्गदर्शिका

मूल समीक्षा-पाण्डुलिपिसँ सूचीकृत शीर्षक : 25

अध्ययनक आधार आ पद्धति

01 रेडियो नाटक : कानक सिनेमा

02 मैथिली रेडियो नाटकक परम्परा

03 विषय, श्रोता आ अवधि चुनब

04 मञ्चसँ माइक धरि : दृश्यकेँ ध्वनिमे बदलब

05 कथा-संरचना आ दृश्य-मोड़

06 मानक रेडियो-पटकथाक ढाँचा

07 पात्रक स्वर-परिचय, स्वर-अभिनय आ पात्र-चयन

08 कानक लेल स्वाभाविक मैथिली संवाद

09 कथावाचक : सेतु, बैसाखी नहि

10 ध्वनि-परिकल्पना, वातावरण आ ध्वनिक दूरी

11 सङ्गीत, संक्रमण आ मौन

12 पूर्वाभ्यास आ निर्देशन

13 सरल उपकरणसँ रिकॉर्डिङ

14 सम्पादन, मिश्रण आ मास्टरिङ

15 मैथिली उच्चारण, शब्द-निखार आ सुगम्यता

16 अधिकार, सहमति, श्रेय आ प्रकाशन

17 प्रसारण आ पॉडकास्ट

18 मत्तविलास प्रहसनम् : हास्य-कथाक ध्वनि-रूप

19 भगवदज्जुकम् : रूपान्तरण-विधि

पूर्ण रेडियो-पटकथा : आठ खण्डक नाट्य-परीक्षण

पटकथा-संकेतक पाठगत सत्यापन

चारू परिशिष्टक मूल्याङ्कन

समग्र साहित्यिक आ शिक्षणात्मक मूल्याङ्कन

ग्रन्थाधार

खण्ड ४५ — ए.आइ. सँ वीडियो बनाउ : स्वयं सीखू मार्गदर्शिका

मूल समीक्षा-पाण्डुलिपिसँ सूचीकृत शीर्षक : 45

स्रोत, सीमा आ समीक्षाक पद्धति

01 ए.आइ. वीडियो की आ की नहि

02 विचारसँ प्रकाशन धरि कार्यप्रवाह

03 उपकरण, खाता आ संचिका-व्यवस्था

04 विचार, शोध आ पटकथा

05 दृश्य-पट्ट आ कैमरा-भाषा

06 प्रॉम्प्ट लिखबाक कला

07 पाठसँ वीडियो : वेब औजार

08 चित्रसँ वीडियो : गति आ निरन्तरता

09 तत्काल पूर्ण वीडियो : कॅपकट कार्यप्रवाह

10 स्वर, सङ्गीत, ध्वनि आ डबिङ

11 सम्पादन : टाइमलाइनसँ अन्तिम रूप

12 उपशीर्षक, पहुँचयोग्यता आ मैथिली लिपि

13 यूट्यूब, शॉर्ट्स आ सामाजिक प्रकाशन

14 कॉपीराइट, सहमति, डीपफेक आ सुरक्षा

15 तीन पूर्ण व्यवहारिक परियोजना

16 सामान्य दोष आ समाधान

17 एकैस दिनक स्वयं-अध्ययन कार्यक्रम

प्रथम शिक्षणभागक समेकित आलोचना

दोसर भाग — विस्तारित व्याख्या आ अनुप्रयोग

01 ए.आइ. वीडियो आ प्रारम्भिक तैयारी

02 वीडियो योजना : विचारसँ पटकथा धरि

03 दृश्य-पट्ट : दृश्यक नक्शा

04 प्रॉम्प्ट लेखन आ परीक्षण

05 पाठ-सँ-वीडियो उपकरण आ पहिल क्लिप

06 चित्रसँ वीडियो : नियन्त्रणक बाट

07 स्वर, वाचन आ डिजिटल प्रस्तुतकर्ता

08 सङ्गीत आ ध्वनि-प्रभाव

09 सम्पादनक विस्तारित व्याख्या

10 उपशीर्षक आ सुगम्यता

11 सामाजिक प्रकाशन आ मिथिला-कथ्य

12 कॉपीराइट आ सार्वजनिक उत्तरदायित्व

13 पहिल वीडियो आद्योपान्त : व्यवहारिक परियोजना

14 शब्दावली, प्रॉम्प्ट-सङ्ग्रह आ उपकरण-दिशा

तेसर भाग — उन्नत तकनीकी अध्ययन

02 उन्नत प्रॉम्प्ट : बहुदृश्य-संयोजन

03 कैमरा आ प्रकाश : यथार्थक निर्माण

04 स्वर-अनुकरण आ भावनात्मक उच्चारण

05 अवतार आ लिप-सिंकक सीमा

06 VBench-2.0 आ दृश्य-मूल्याङ्कन

07 एपीआई, निर्गम-प्रारूप आ अन्तिम संयोजन

चित्र, सारणी आ शिक्षण-कार्यपत्रकक परीक्षण

मैथिली आ अंग्रेजी विभागक समानान्तर प्रस्तुति

समग्र आलोचनात्मक निष्कर्ष

ग्रन्थाधार

खण्ड ४६ — मैथिली-अंग्रेजी थिसॉरस

मूल समीक्षा-पाण्डुलिपिसँ सूचीकृत शीर्षक : 16

पद्धति आ अध्ययनक प्रमाण-सीमा

अनुक्रमणिकाक वर्णवार मूल संख्या

01 अक्षरक्रम आ मुख्य पञ्जीक संगठन

02 प्रविष्टि आ अर्थ-इकाईक अन्तर

03 अर्थलेखनक द्विभाषिक नीति

04 पदवर्ग चिह्न आ व्याकरणिक अनुशासन

05 पर्याय-सम्बन्धक आलोचना

06 विलोम-सम्बन्ध : परस्परता आ अर्थक्षेत्र

07 कृषि, भोजन आ लोकजीवनक शब्दावली

08 लिपि आ पाठ-विकृतिक परीक्षण

09 डिजिटल कोशक कृतिगत उत्तरदायित्व

10 वर्णक्रम आ स्रोत-सम्मत रूपक पुनर्संयोजन

11 नमूना-आधारित सत्यापनक प्रस्तावित कसौटी

यान्त्रिक पञ्जी-परीक्षण : परिणाम आ सीमा

निरूपण आ अन्तिम मूल्याङ्कन

ग्रन्थाधार

खण्ड ४७ — अंग्रेजी–मैथिली थिसॉरस

मूल समीक्षा-पाण्डुलिपिसँ सूचीकृत शीर्षक : 16

पद्धति आ अध्ययनक प्रमाण-सीमा

अनुक्रमणिकाक वर्णवार मूल संख्या

01 अंग्रेजी शीर्षशब्दक वर्णक्रम आ वितरण

02 मुख्य शीर्षशब्द आ अनेक अर्थक अन्तर

03 अंग्रेजीसँ मैथिली अर्थ-साम्य

04 व्याकरणिक पदवर्गक समरूपता

05 समानार्थी विभाग आ अर्थक्षेत्र

06 विलोम : निरपेक्ष विरोध नहि, अर्थगत सम्बन्ध

07 सूचना-प्रौद्योगिकी शब्दावली

08 लिप्यन्तरण आ पाठ-विकृतिक सावधानी

09 विशाल डिजिटल स्रोतक पुनरुक्ति-समीक्षा

10 द्विदिश कोशकेँ मिलानक सम्भावना आ सीमा

11 प्रामाणिक संस्करण आ लाइसेंसक प्रश्न

यान्त्रिक पञ्जी-परीक्षण : परिणाम आ सीमा

निरूपण आ अन्तिम मूल्याङ्कन

ग्रन्थाधार

खण्ड ४८ — समग्र अनुवाद खण्ड : भारतीय भाषासँ मैथिली

मूल समीक्षा-पाण्डुलिपिसँ सूचीकृत शीर्षक : 43

मूल स्रोत आ अनुसंधानक सीमा

गद्यक चौदह समूहक अनुक्रम

01 सदा लेल मित्र (जिगरी)

02 दलित लघुकथा : कौआ आ कारी मसि

03 ध्वस्त मन्दिर

04 अनुवादक कला (अंश)

05 क्रूरता

06 नानीलु : सूक्ति आ लघुपद्य

07 हमर चित्रकला गुरु

08 जुम्मा

09 अभिशप्त

10 दुःख अप्रमिता

11 सुन्दरमक दू कथा : माताक कोरामे आ माजा वेलोक निधन

13 नजीर मंसूरीक दू कथा : समुद्री बाज आ हंगामा

14 अन्हार

गद्य-विभागक तुलनात्मक समीक्षात्मक निष्कर्ष

अनूदित पद्य : चौबीस समूहक आलोचनात्मक पुनर्पाठ

01 बोयी भीमन्नाक तेलुगु कविता

02 तेलुगु दलित महिला कविता

03 रामा राव वी.वी.बी.क स्वानूदित कविता

04 एन. गोपीक पद्य

05 अरुणा एन.क तेलुगु कविता

06 शीला सुभद्रा देवीक तेलुगु कविता

07 के. शिवा रेड्डीक तेलुगु पद्य

08 अन्नवरम देवेन्द्रक तेलुगु कविता

09 नरसिंह मेहताक गुजराती पद्य

10 हेमांग देसाईक स्वयं अनूदित गुजराती कविता

11 राजेन्द्र पटेलक गुजराती कविता

12 पीयूष ठक्करक गुजराती पद्य

13 पन्ना त्रिवेदीक गुजराती कविता

14 बाबू सुथारक गुजराती कविता

15 गुजराती दलित कविता

16 गुलाम मोहम्मद शेखक गुजराती कविता

17 अजय सरवैयाक गुजराती कविता

18 गनी दहीवालाक गुजराती पद्य

19 बासुदेव सुनानीक उड़िया दलित कविता

20 भरत माँझीक उड़िया पद्य

21 इप्सिता सारंगीक स्वानूदित उड़िया कविता

22 इप्सिता सारंगीक हरिकृष्ण दास-अनूदित कविता

23 भिखारी ठाकुरक भोजपुरी गीत

24 रहमान राहीक कश्मीरी कविता

गद्य–पद्यक समेकित आलोचनात्मक निष्कर्ष

ग्रन्थाधार

खण्ड ४९ — नित नवल वृषेश चन्द्र लाल

मूल समीक्षा-पाण्डुलिपिसँ सूचीकृत शीर्षक : 10

पाठाधार आ आलोचनात्मक पद्धति

अध्ययनक मूल अनुक्रम

01 आन्दोलन : कविता, लोकतन्त्र आ प्रतिगमन-विरोध

02 ढोलक : बाल–ताल–नालक काव्य-रचना

03 गोलबा : कथामे पशु-दृष्टि आ मौनक नैतिकता

04 माल्हो : नौ कथा, स्मृति आ सामाजिक सम्बन्ध

05 मोदिआइन : महाभारतक मानवीय पुनर्पाठ

06 सुम्निमा : देह, आत्मा, लोक-बुद्धि आ अनुवाद

समग्र मूल्याङ्कन

ग्रन्थाधार

खण्ड ५० — राजदेव मण्डल : मैथिली लेखक

मूल समीक्षा-पाण्डुलिपिसँ सूचीकृत शीर्षक : 12

पाठाधार आ आलोचनात्मक पद्धति

अध्ययनक मूल अनुक्रम

01 राजदेव मण्डलक कृतित्व-परिचयक आलोचनात्मक ढाँचा

02 कवि राजदेव मण्डल आ ‘अम्बरा’क काव्य-स्वर

03 उपन्यासकारक मूल्याङ्कन : कथा-रूपक स्वतन्त्रता

04 कथाकार राजदेव मण्डल : पाँच चयनित कथाक प्रश्न

05 विदेह आन्दोलन आ साहित्यिक संस्था-विमर्श

06 पहिल परिशिष्ट : समानान्तर मैथिली साहित्य-इतिहासक प्रस्तावना

07 दोसर परिशिष्ट : जगदीश प्रसाद मण्डल आ साहित्यिक मोड़

08 भाषा, अनुवाद आ अंग्रेजी पाठकक ऐतिहासिक दूरी

समग्र मूल्याङ्कन

ग्रन्थाधार

खण्ड ५१ — नित नवल दिनेश कुमार मिश्र

मूल समीक्षा-पाण्डुलिपिसँ सूचीकृत शीर्षक : 13

पाठाधार आ आलोचनात्मक पद्धति

अध्ययनक मूल अनुक्रम

01 बन्दिनी महानन्दा : नदीकेँ कारागार रूपेँ देखबाक तर्क

02 कमला नदी : तटबन्धक विरोध आ स्थानीय ज्ञान

03 भूतही बलान : तकनीकी झाड़-फूँक आ ग्रामीण विभाजन

04 कोसी : दुइ पाटनक बीच आ नदीक चंचल भूगोल

05 न घाट न घर : पुनर्वास, आश्रय आ सामाजिक पहचान

06 बागमती : नदीक सद्गति कि प्रशासनिक विडम्बना

07 The Myth of Flood Control : विकासक वैधता आ वैकल्पिक नीतिक कसौटी

08 पानी का शाप : बाढ़ि आ सुखाड़क संयुक्त अध्ययन

09 आलोचकक पद्धति : नदी–इतिहास आ सम्पादकीय विश्वसनीयता

समग्र मूल्याङ्कन

ग्रन्थाधार

खण्ड ५२ — जगदीश प्रसाद मण्डल — एकटा बायोग्राफी

मूल समीक्षा-पाण्डुलिपिसँ सूचीकृत शीर्षक : 12

पाठाधार आ आलोचनात्मक पद्धति

अध्ययनक मूल अनुक्रम

01 जीवनीक स्रोत-आधार : संवाद, स्मृति आ अभिलेख

02 जन्म, परिवार आ संयुक्त जीवनक सामाजिक इतिहास

03 बेरमा : गामक जाति, धर्म आ सांस्कृतिक संरचना

04 शिक्षा, कृषि आ श्रमिक आत्मनिर्भरता

05 भूमि, न्याय आ संघर्षक दस्तावेजी जाँच

06 राजनीतिक सहभागिता, पंचायत आ जेल-यात्रा

07 साहित्यिक अवदान, कृतिपञ्जी आ जीवन–रचना सम्बन्ध

08 पाँचम संस्करणक सम्पादकीय गुण आ सीमासभ

समग्र मूल्याङ्कन

ग्रन्थाधार

खण्ड ५३ — नित नवल सुभाष चन्द्र यादव

मूल समीक्षा-पाण्डुलिपिसँ सूचीकृत शीर्षक : 12

पाठाधार आ आलोचनात्मक पद्धति

अध्ययनक मूल अनुक्रम

01 घरदेखिया : पहिल चरणक कथा आ सामाजिक विकल्प

02 बनैत बिगड़ैत : पुनरागमन आ कथाक संरचना

03 गुलो : श्रम, संपत्ति आ स्थानीय राजनैतिक अर्थव्यवस्था

04 रमता जोगी : यात्रा आ सामाजिक सम्बन्ध

05 मडर : पुरुष-संशय, स्त्री-श्रम आ अपराधक आख्यान

06 भोट : निर्वाचनक कथा, जनमत आ नाटकीय संरचना

07 नित नवल राजकमल : आलोचकक साहित्येतिहास

08 लेखन-अवरोध आ विदेह आन्दोलनक वैचारिक रूपक

समग्र मूल्याङ्कन

ग्रन्थाधार

खण्ड ५४ — नित नवल सुशील

मूल समीक्षा-पाण्डुलिपिसँ सूचीकृत शीर्षक : 13

पाठाधार आ आलोचनात्मक पद्धति

अध्ययनक मूल अनुक्रम

01 सुशीलक साहित्यिक जीवन आ कृतिपञ्जीक आधार

02 छद्म समीक्षा-विवाद : साहित्यिक प्राथमिकता आ प्रमाण

03 घराड़ी : भूमिकेन्द्रित उपन्यासक मूल्यांकन

04 गामबाली : मृत्यु, दाह-संस्कार आ सामाजिक अधिकार

05 भामती नाटक : रंगमंच, दर्शन आ स्त्री-पात्र

06 अस्मिता : लघुकथाक छोट आकार आ सामाजिक विडम्बना

07 सिद्धान्त : आलोचनात्मक औजारक उपयोग

08 सिद्धान्तोत्तर : विखण्डनक बादक आलोचना

09 समेकित पाठ : पुनर्मूल्याङ्कनक इतिहास आ न्याय

समग्र मूल्याङ्कन

ग्रन्थाधार

तेसर पञ्जी : विषयानुक्रमणिका

ई विषयानुक्रमणिका खण्ड-शीर्षक आ ऊपर सत्यापित रचनाशीर्षकमे प्रत्यक्ष रूपसँ उपस्थित पदक आधारपर बनाओल गेल अछि। एकर उद्देश्य विषय तक पहुँचब अछि, स्वतन्त्र ऐतिहासिक अथवा साहित्यिक दावा करब नहि।

अनुवाद — खण्ड २, ६, ७, ८, ११, १२, १४, १६, १८, २०, २५, २९, ३०, ३४, ४१, ४२, ४४, ४८, ४९, ५०

अभिलेख आ स्मृति — खण्ड २, ३, ४, ५, ६, ७, ८, १०, ११, १२, १३, १४, १६, १७, १८, १९, २०, २१, २३, २४, २५, २६, २७, २९, ३०, ३२, ३४, ३५, ३६, ३७, ३८, ३९, ४०, ४२, ४३, ४९, ५०, ५२

आलोचना-पद्धति — खण्ड २, ४, ५, ६, ७, ८, १०, ११, १२, १४, २१, २२, २५, २७, २९, ३०, ३१, ३२, ३३, ३४, ३५, ३६, ३७, ३८, ३९, ४०, ४१, ४२, ४५, ४६, ४८, ४९, ५०, ५१, ५२, ५३, ५४

उपन्यास — खण्ड २, ३, ४, ५, ६, ७, ८, १०, ११, १३, १४, १५, १६, २०, २१, २३, २४, २५, ३२, ३४, ३९, ४१, ४२, ४३, ४४, ४५, ४८, ४९, ५०, ५३, ५४

कथा आ विहनि कथा — खण्ड २, ३, ४, ५, ६, ७, ८, १०, ११, १३, १४, १६, २०, २१, २३, २४, ४१, ४२, ४४, ४५, ४८, ५०, ५३, ५४

गाम आ कृषि — खण्ड २, ३, ४, ५, ६, ७, ८, १०, ११, १२, १३, १४, १५, १६, २०, २१, २३, २४, २५, २६, २७, ३१, ३२, ३४, ३५, ३६, ३७, ३८, ३९, ४०, ४१, ४२, ४५, ४६, ४७, ४८, ५२, ५४

थिसॉरस आ कोश — खण्ड २, ११, २५, ३०, ४६, ४७

दर्शनशास्त्र — खण्ड २, ४, ६, ८, १०, ११, १३, २०, २१, २४, २५, २६, २७, २८, २९, ३०, ३१, ३४, ४१, ४२, ४३, ५४

दलित साहित्य — खण्ड २, ५, १०, ११, १३, १५, २०, २१, २५, २६, २७, २९, ३०, ३२, ३४, ३५, ३८, ४१, ४२, ४३, ४६, ४७, ४८, ५२

नव्य न्याय — खण्ड २, ३, ४, ५, ६, ७, ८, १०, ११, १२, १३, १४, १५, १६, २०, २१, २३, २४, २५, २६, २७, २८, २९, ३०, ३१, ३२, ३३, ३५, ३६, ४०, ४१, ४२, ४३, ४६, ४७, ५४

नाटक आ रंगमंच — खण्ड ३, ४, ७, १०, ११, १२, १३, २१, २२, २३, २५, ३२, ३४, ४१, ४२, ४३, ४४, ५३, ५४

नैतिकता आ न्याय — खण्ड २, ३, ४, ५, ६, ७, ८, १०, ११, १२, १३, १४, १६, १७, २०, २१, २३, २५, २६, २७, २९, ३०, ३१, ३२, ३४, ३५, ४०, ४१, ४२, ४३, ४४, ४५, ४६, ४९, ५२, ५३, ५४

पञ्जी आ वंशावली — खण्ड २, ६, ८, १०, ११, १२, १३, १४, १५, २७, ३२, ३४, ३५, ३६, ३७, ३८, ३९, ४०, ४१, ४२, ४६, ४७, ५२, ५४

पद्य आ छन्द — खण्ड २, ४, ५, ६, ८, ११, १३, १७, २०, २१, २३, २४, २५, ३०, ३२, ३४, ४१, ४२, ४४, ४५, ४८, ४९

बाढ़ि आ नदी — खण्ड २, ३, ४, ५, ६, ७, ८, १०, ११, १३, १५, १६, २०, २१, २२, २३, २४, २५, ३१, ३४, ४२, ५१

बाल आ किशोर साहित्य — खण्ड २, ३, ५, ६, ७, ८, १०, ११, २०, २१, २३, २४, २५, ४१, ४२, ४९, ५४

भाषाविज्ञान — खण्ड २, ३, ४, ६, १०, ११, १२, १३, १४, १६, १७, १८, १९, २०, २१, २३, २५, २६, २७, २८, २९, ३०, ३१, ३२, ३४, ३६, ३८, ३९, ४०, ४१, ४२, ४४, ४५, ४६, ४७, ४८, ५०

महिला आ लैङ्गिक प्रश्न — खण्ड २, ४, ५, ६, ७, ८, १०, ११, १३, १४, १७, २१, २५, २६, २७, २९, ३१, ३२, ३४, ३५, ४०, ४१, ४२, ४८, ५३, ५४

मिथिलाक इतिहास — खण्ड २, ६, ७, ८, १०, ११, १४, १५, १६, २०, २२, २३, २४, २५, २६, २७, २९, ३१, ३२, ३३, ३४, ३५, ३६, ३७, ३८, ३९, ४०, ४१, ४२, ४५, ४६, ४७, ५०, ५१, ५२, ५४

लोकसाहित्य — खण्ड ११, २५, ४१

विद्यापति — खण्ड ११, २०, ३२, ३४, ४२

समानान्तर साहित्य — खण्ड ८, १०, ११, १४, १६, २६, २७, २८, २९, ३२, ४१, ४२, ४५, ५०

साइबर आ डिजिटल — खण्ड ५, ६, १०, १४, १६, २३, २४, २६, २७, ३२, ३४, ४१, ४२, ४५, ४६, ४७

साहित्यिक संस्थासभ — खण्ड २, ३, ५, ६, ७, ८, १०, ११, १३, १४, १६, २१, २३, २५, २६, २७, ३२, ३४, ४०, ४१, ४२, ४३, ५०, ५३

साहित्येतिहास — खण्ड २, ६, ७, ८, १०, ११, १४, १६, २३, २५, २६, २७, २९, ३२, ३३, ३४, ३५, ४०, ४२, ५०, ५१, ५२, ५३, ५४

ग्रन्थाधार : खण्ड २–५४क समीक्षा-संस्करण

अन्तर्निहित सूची केवल उपलब्ध मूल सम्पादकीय Word समीक्षा-पाण्डुलिपिसभसँ संकलित। संदर्भगत त्रुटि-जाँच लेल प्रत्येक खण्डक स्वयं प्रकाशित संस्करण आ अनुक्रमणिका प्राथमिक आधार रहत।

गजेन्द्र ठाकुर समग्रक सम्पादकीय

खण्ड-१

गजेन्द्र ठाकुरक बहुविध साहित्यक सम्पादकीय अध्ययनक एहि पहिल खण्डमे उपन्यास, कथा, पद्य, नाटक आ आन विधाक आलोचनात्मक परिप्रेक्ष्य प्रस्तुत अछि। भारतीय काव्यशास्त्र, आधुनिक कथाशास्त्र आ प्रमाण-विवेकक संग अकुलाइत सुरक पद्य-विवेचन तथा सहस्रबाढ़नि आ सहस्रशीर्षाक पाठाधारित समीक्षा सेहो सम्मिलित अछि।

मूल पाठ विस्तृत आलोचना सम्पादकीय चयन

विदेह

विदेह डिजिटल संग्रह

© 2026 Gajendra Thakur / Preeti Thakur